

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

जन्म : २००८ साल, साओन, बघचौडा, जिला-धनुषा
शिक्षा : एम.ए. (त्रि.वि.वि.)
सम्प्रति : पूर्वसदस्य एवं संस्कृति विभाग प्रमुख, प्राज्ञ परिषद्
नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी।
पूर्व अध्यक्ष, साझा प्रकाशन, ललितपुर।
पता : 'भ्रमरकुञ्ज', जनकपुरधाम उ.म.न.पा.-१
सम्पर्क : ००९७७-९८५४०-२०८८९, ०४१-५२०२६७

प्रकाशित कृति

काव्य : बन्न कोठरी औनाइत धुंवा (कवितासंग्रह) : २०२९ साल, नहि, आब नहि (दीर्घकविता) २०३६ साल, मोमक पधलैत अधर (गीत, गजल), अप्पन अनचिन्हार (कवितासंग्रह) : १९९० ई., भयो अब भयो (अनुवाद) बस अब नही (हिन्दी अनुवाद),अन्हरियाक चान(गजल संग्रह) २०७०,युद्धभूमिक एसगर योद्धा (कविता संग्रह) (२०७५)।

कथासंग्रह : तोरा संगे जएबौ रे कुजवा (कथासङ्ग्रह) १९८४ ई., हुगली ऊपर बहैत गंगा (कथासङ्ग्रह) २०६५, एण्टी भाइरस(कथासंग्रह) २०७६।

उपन्यास : घरमुहाँ २०६९।

यात्रा संस्मरण : चीन जे हम देखल,२०७०। सीमाके आर-पार (२०७३ ई.)

साक्षात्कार : अहाँ जे कहलहुँ (२०७१)

डायरी : कोरोनाक संत्रासमे ओझराएल जिनगी(लकडाउन डायरी)२०७७,प्र.जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान।

नाटक : रानी चन्द्रवती : २०४५ साल, एकटा आओर वसन्त : २०५२ साल, महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक : २०५४ साल, भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरू (नेपाली अनुवाद) २०६४ भैया अएलै अपन सोराज (नाटकसंग्रह) २०६७। एकटा आओर वसन्त एवं अन्य नाटक(२०६९)साझा प्रकाशन। सूली पर इजोत एवं अन्य नाटक (२०७२)।

शोध : जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू : २०५६ साल, राजकमलक कथासाहित्यमे नारी : २०६४ साल, लोकनाट्य : जट-जटिन : २०६४ : Cultural Heritage of Janakpur : २०६२ साल। मैथिली लोकसंस्कृति (आलेख संग्रह) २०६६। तराईको फांट देखि हिमालको कांख सम्म (आलेख संग्रह), प्रकाशकः साझा प्रकाशन, २०६७, राजा सलहेस (जीवनी)२०७४)प्रकाशकः भोर,साँस्कृतिक संस्था,काठमाण्डू। मैथिल लोकसंस्कृति : विविध आयाम (२०७५) नेंप्र.प्रतिष्ठान।

विविध : आजको धनुषा : २०३९ साल, जनकपुर लोकचित्र : २०४६ साल। समयको अन्तराल पछ्याउदै(आलेख संग्रह, २०६६ साल) ठेकान पर (विचार संग्रह), समय-सन्दर्भ (निबन्ध संग्रह) २०६८,।

सम्पादन : मैथिली पद्यसङ्ग्रह : (नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठान) : २०५१ साल, लाबाक धान (कवितासङ्ग्रह) २०५१ साल, त्रिशूली (स्व. माथुरद्वारा लिखित खण्डकाव्य) २०४९ साल, नेपालक मैथिली पत्रकारिता : २०४४ साल, मैथिली लोकनृत्य : भावभंगिमा एवं स्वरूप (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान) २०६१, अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल : २०६५ साल, हम और तुम (हिन्दी कवितासंग्रह) : २०६६ साल। मैथिली नाटक-संग्रह (नाटक संग्रह) २०६७, महाकवि विद्यापति आ नेपाल(निबन्ध संग्रह) २०६८,साझा प्रकाशन। मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन,२०६९,लोकनायक सलहेस (निबन्ध संग्रह,खण्ड १, लोकनायक सलहेस (निबन्ध संग्रह,खण्ड २) २०६९,। लोक गाथा नायक :दीना भद्री (निबन्ध संग्रह) (२०७०) ने.प्र.प्रतिष्ठान।



मिथिला सेन्टर, अमेरिका



मिथिलाक लोकजीवन : लोक सन्दर्भ - राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

मिथिनाक नोकजीरन : नोक सन्दर्भ

मिथिलाक लोकजीवन लोक सन्दर्भ

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

मिथिलाक लोकजीवन : लोकसन्दर्भ

(सांस्कृतिक चिंतन)

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रकाशक

मिथिला सेन्टर, अमेरिका

Mithila Lokjivan : Lok Sandarbha

[Cultural thinking]

By Ram Bharos Kapari Bhramar

Publisher : Mithila Center USA

प्रथम संस्करण : २०२२ ई.,२०७८ साल

प्रति: ५०० (पाँच सय)

मूल्य: ५००।- नेरु, $ 20

ISBN : 979-8-9859885-0-5

मुद्रक : माला कलर प्रिन्टिंग प्रेस
जनकपुरधाम

मिथिलाक लोकजीवन : लोकसन्दर्भ

(सांस्कृतिक चिंतन)

लेखक : राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒖𑒲𑒫𑒢 : 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒦

(𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒢)

𑒪𑒹𑒐𑒏 : 𑒩𑒰𑒧 𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒏𑒰𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒦𑓂𑒩𑒧𑒩

प्रकाशकीय

कोनो संघ-संस्था अथवा ब्यक्तिविशेष जखन कोनो पाण्डलिपिके प्रकाशित करबाक नियार करैत अछि त तकर कारण अबश्य होइत छैक । ककरो छपबाक सेहन्ता पुरा होइत छैक । ककरो बिधागत श्रीबृद्धिक सुख भेटैत छैक त ककरो समाजके सुसंस्कृत करबाक लेल पाठ्यसामग्री उपलब्ध करएबाक ललकके शान्ति भेटैत छैक ।

हमरासभके एहि पुस्तकके प्रकाशन करबाक इएह अन्तिम विकल्प अर्थात समाजके लोक जीवनक विभिन्न परम्परागत बिधि-विधान, पर्व-तिहार, आहार-ब्यबहार आ आन-आन सान्दिर्भिक विषय-बस्तुसं अबगत करएबाक हेतुए एहि पुस्तकक प्रकाशन कएल जा रहल अछि ।

एत अमेरिकामे हमसभ काफीमात्रामे मैथिली भाषा-भाषीसभ छी । अपन भाषा, संस्कतिसं निरन्तर जूड़ल रहबाक प्रयास करैत रहैत छी । अपनासभक ओहि ठाम होबबला पाबनि तिहार एत्तहु अमेरिकामे मनएबाक काज होइत आएल अछि ।

कोरोना कालमे प्रत्यक्ष सम्बादक अभावमे अनलाइन भर्चुअल माध्यमे सेहो हमसभ जूड़ैत अपन भाषा, साहित्य, संस्कृति सम्बन्धी बिमर्श करैत रहैत छी । ताही बिमर्शक परिणाम ई प्रकाशन अछि ।

वास्तबमे एकर सोच गतबर्ष भर्चुअलरुपें आयोजित मिथिला महोत्सवक सन्दर्भमे आएल सुझाबसं आगा बढल अछि आ आई ई मूर्त्तरुपमे हमरासभक आगा आबि चुकल अछि । ई बिदेश (अमेरिका)मे बसल आ अपन माटि-पानिसं जूड़ल लोकक संस्था हयबाक कारणें अपन भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिकें संरक्षण-सम्बर्द्धनक संगहि ताहिसं नव पुरान पिढीके अबगत करएबाक उद्देश्यसं एकटा पुस्तकके प्रकाशनक नियार कएल गेल । आ एहिबर्षक अप्रैलमे होबबला मिथिला महेत्सबक अबसरपर तकर विमोचन अन्तराष्ट्रीय स्तरपर हो ताहि लेल एकटा पाण्डुलिपिक आबश्यकता भेलैक । तखन एहि काजमे सहयोग करबाक हेतु गतबर्षक मिथिला महोत्सवक सहभागी भाषा, साहित्य, संस्कृतिक क्षेत्रमे विगत पाँच दशकसं बेसी समयसं निरन्तर लागल प्राज्ञ राम भरोस कापड़ि भ्रमरसं सम्पर्क कयल गेल आ हमसभ अपन बिचारसं अबगत करौलहुं । समय कम रहैक , तथापि हमरासभक अनुरोधके स्वीकार करैत पाण्डुलिपि उपलब्ध करौलनि जे एखन पुस्तककाररुपें अपने सभक आगा प्रस्तुत अछि ।

मिथिलाक लोकजीवनः लोक सन्दर्भ नामक ई पुस्तक देश-बिदेशमे बैसल, अपन पेशागत ब्यस्तताक बाबजूदो अपन भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति प्रति

रुचि रखैत आएल जिज्ञाशुसभक संगहि ताहि सम्बन्धमे जानकारी रखबाक लेल उत्सुक नव पिढी समेतक हेतु सहायक सिद्ध हएत से बिश्वास अछि । अमेरिकामे रहनिहार मैथिल भाषी डा. विप्लव यादवजी एहि पुस्तकक प्रकाशन हेतु जे आर्थिक सहयोग उपलब्ध करौलनि अछि ताहि लेल हमसब हुनका प्रति आभार प्रकट करैछी । मिथिला सेन्टर युएसए भविष्योमे मैथिली भाषाके विविध बिषयक थप पुस्तक प्रकाशन करत से प्रतिबद्धता प्रकट करैत छी । धन्यबाद ।

अमित प्रताप शाह
संस्थापक अध्यक्ष
मिथिला सेंटर अमेरिका

लेखकीय

अप्पन सम्पदासँ जुड़बाक अवसर !

आइ मिथिलाक रहनिहार बहुतो लोक अपन धरतीसँ दूर रोजगारीक सुअवसरक खोजीमे लागल छथि । किछु स्थीर भ गेलाह, किछु संघर्षरत हयताह । मुदा हुनक हृदयमे अपन गामघरक माटिमे खेलल, खेत-पथारमे कृषि कर्म कएल आकि अपन पुर्खा द्वारा स्थापित लोक सांस्कृतिक परम्पराके निर्वाहन करैत-रमैत पर्व, तिहार, उत्सव मेलाक संग जिबैत रहैत छथि । इएह हमरा सभक विशिष्ट सम्पति अछि । जकरा चलते हम मैथिल आन क्षेत्रक लोकसँ भिन्न रहैत छी । आ सांच कही अपन परम्परा आ संस्कृति प्रतिक जे समर्पण आ आस्था रहल अछि इएह हमरा सभकेँ कतौ, कोनो अनकन्टारमे जीवन्तता प्रदान करैत रहैत अछि ।

अपन सश्य श्यामला भूमिसँ दूर पाथरके दुनियांमे रहितो बेर-मौका पर मिथिलामे मनाओल जाइत पावनि-छठि, फागु, चौरचन्द, दशैं, खीचड़ि आदिकेँ मनयबाक ओरिआओन कइए लैत छी । तकरा एहि कोरोना कालमे भर्चुअल माध्यमेसँ सही अपन माटिक संग, एतुक्का जन-जीवनसँ जूड़बाक प्रयास करिते रहैत छी । ओहि महान राष्ट्र सभक अत्याधुनिक सामाजिक, भौगोलिक परिवेशक बीच रहियो क अपन गाम, अपन पावनि-तिहार आ गामक सै-समाजकेँ स्मरण करैत रहब, प्रविधिक सहयोगे प्रत्यक्ष जूड़ैत रहब- एकटा सामाजिक आवश्यकताक उपक्रम छी, जकर निरन्तर उपयोग होइत रहल अछि । आ समयानुकूल होइत रहत ।

एकरा संगहि अपन मिथिलाक लोकजीवनमे एखनो जीवंत रूपें मनाओल जाइत एहने पावनि-तिहार, एहि क्षेत्रकेँ गौरव बढ़ौनिहार मूर्त् एवं अमूर्त् सांस्कृतिक सम्पदा सभक बारेमे जानकारी बूझि क राखब सेहो जरूरी मानल जएबाक चाही । खास क नवपीढ़ि जे उच्च आ आधुनिक शिक्षाक हेतु लागल रहैत अछि आ तकरा बाद अपन काज-धंधामे सेहो तहिना भिजल रहैत अछि, तिनको लेल अपन माटि-पानिक एहि सांस्कृतिक सम्पदा सम्बन्धमे जानकारी हयब जरूरी अछि ।

हमरा लगैत अछि एहि तमाम आवश्यकताकेँ लघुओ स्तर पर हमर ई आलेख संग्रह 'मिथिलाक लोकजीवन:लोक सन्दर्भ' अवश्य पुरा करत । एहिमे संग्रहित आलेखसब मिथिलाक विशिष्ट सांस्कृतिक सम्पदा सभक तरबोराक सप्तरंगी रंग जकाँ सहज जानकारी देबाक अवसर प्रदान क सकत से हमरा विश्वास अछि ।

'तरबोरा' हमरा सभक कृषि संस्कृतिक एकटा अभिन्न अंग थिक । बरिसातक मासमे पूर्व आ पश्चिमक मेघौन आकाशमे सप्तरंगी एकटा

धनुष आकारमे अर्धगोलाकार रंगीन छाया उपस्थित होइत अछि। पूर्व दिशक छायाकेँ 'पनिसोखा' कहल जाइछ। एकर आगमनसँ कृषक ई मानि लैत अछि जे आब पानि नहि हयत। तहिना पश्चिम आकाश पर जखन ई छाया अबैत अछि त लोककेँ आश जगैछै- आब मूसलाधार पानि पड़त जरूर ! इएह प्रकृतिक संकेत थिक 'तरबोरा'। 'तरबोरा' ताही सुखल धरती अर्थात् शून्य वा न्यून जानकारीक धरातलकेँ सिंचित करबाक अर्थात् ज्ञानबर्द्धन करबाक प्रयास थिक, संकेत थिक।

एहि संग्रहमे संग्रहित आलेख सभ लोकजीवनक विविध रंगकेँ दर्शन करबैत अछि। एकरा तीन खण्डमे बाँटल गेल छैक। पहिल खण्डमे मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदासबक जानकारी देल गेल अछि। दोसर खण्डमे मिथिलाक गौरवके स्मरण कएल गेल अछि त तेसर खण्डमे भाषा, साहित्य आ सरकार पर केन्द्रित कएल गेल अछि। तीनू खण्ड मिथिलाक लोक सम्पदा, लोक जीवन आ लोक सरोकारक विषय-बस्तु पर पाठकक ध्यान अबश्य आकर्षित करत से बिश्वास अछि।

आशा अछि अपन संस्कृतिसँ लग हयबाक ई पुस्तक अवश्य अवसर प्रदान करत।

एकर प्रकाशनक हेतु हम मिथिला सेन्टर, युएसए प्रति आभारी छी।

फागुपूर्णिमा,२०७८,१७ मार्च २०२२

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'
शिबपथ, जनकपुरधाम
ईमेल– rbkapari@hotmail.com

विषय सूची

खण्ड : एक

(मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा)

खण्ड : दू

(मिथिलाक गौरब)

खण्ड : तीन

(भाषा, साहित्य, सरकार)

खण्डः एक
(मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा)

मध्यकालीन मैथिली गीतक उद्धार जरुरी

नेपालक मैथिली साहित्यक स्वर्ण समय मल्लकालक रचना, कला, संस्कृतिक व्यवस्थापन रहलैक अछि। ओतबे नहि मैथिली साहित्य समग्रमे मल्लकालक अवदानक आगां ऋणी अछि। शुरुमे सुनिति कुमार चटर्जी लगायतक विद्वान लोकनि एत्तसं बहुत कछु उद्धार कएलनि । मुदा जे कछु उद्धार भेल ओ व्यवस्थित रुपें नेपालक राजलाइब्रेरी मे राखल छल, सएह । बहुतो सामग्री छिडिआएल रहि गेल छैक। विद्यापतिक दर्जनों पद एखनो एतुक्का गुठी सभमे नेवारी लिपिमे लिखल पड़ल छैक। किछुत देवनागरियो मे छैक जे शाहकाल (१६१६सं) क प्रारंम्भिक समयमे कोनो विद्वानसं उतारल वा स्मरणक आधार पर लिखल गेल छल । ताहिमहक भिछु पद हम प्रकाशित कराचुकल छी । (समय-सन्दर्भ) ।

डा. रामदेव झा, डा. लेखनाथ झा आदि काफी काज मैथिली गीत पर कएलनि अछि नेपालक मल्लकालक। ओत्तहु ओ गीत नहि आबि सकल अछि जे काठमाण्डू उपत्यकामे लोक जिह्वापर बैसिगेल छलैक आ जकर प्रयोग ओ अपन धार्मिक, सांस्कृतिक अनुष्ठानमे कर लागल छल । ओ कतहु लिपिबद्ध नहि भ सकल छलै आ तएँ ओ सम्भवत : छुटि गेलै । एहने गीत सभक एकटा महत्वपूर्ण उपयोग होइत नेपालक ऐतिहासिक उत्सव छैक “कार्तिक नाच” । काठमाण्डू उपत्यकाक पाटन राज्यक पहिल राजा भेलाह सिद्धिनरसिंह मल्ल वि.सं. १६७५ मे । हिनकामे धार्मिक भावनाक प्रवलता बढैत गेलनि । हुनका संस्कृत आ मैथिलीक विद्वानक रूपमे नेपालक इतिहासकार लोकनि स्वीकरैत छथि (नेपालको प्राचीन र मध्यकालीन इतिहास-प्रा.डा. श्रीराम प्रसाद उपाध्याय, पाँचम् संस्करण : २०६८, पृ-२१३) । ‘हरिस्चन्द नृत्य’ नामक नाटक हिनके समयक देन अछि। हिनक प्रशस्त भक्तिगीत मैथिलीमे लिखल लिपिबद्ध भेटैत अछि । मुदा कार्तिक नाचमे प्रयुक्त हिनक गीत एखन धरि लोपे भेल अछि।

पाटनक सुप्रसिद्ध श्रीकृष्णमंन्दिर हिनके बनाओल अछि । वि.सं. १६९३ मे मात्र पाथरक प्रयोगक बनाओल शिखर शैलीमे तीन तल्लाक ई मन्दिर स्थापत्य कलाक अद्‌भूत नमूना अछि। एहिमे एक्कैसटा वुर्जा छैक, जाहिमे एकटा वुर्जा सोनाक छैक । एकर भित्ता सभमे रामायण आ महाभारतक

घटनाक चित्र आ श्लोकसभ खोधल गेल छैक । आइ ई मन्दिर देशी, विदेशी पर्यटक सभक हेतु दर्शनीय बनल अछि । एहि मन्दिर निर्माणक उपलक्ष्यमे राजा सिद्धिनरसिंह मल्ल नेपाल सम्वत् ७६२मे कार्तिक नाचक प्रचलन कएलनि । ई नाच शुरुमे राजा सिद्धिनरसिंह मल्ल १६९७ मे ८ दिन कएने रहथि, बादमे हुनक बालक श्री निवास मल्ल १५ दिनक कएलक आ हुनक बालक योगेन्द्र मल्ल एकरा एक मासक कए देलनि । नेपालमे एतेक दिनधरि चल' बला कोनो कार्यक्रम नहि छल ।

आइ सं ३६० वर्ष पूर्वसंप्रचलित ई नृत्य नाटिकाक लेखक सेहो राजा सिद्धिनरसिंह छलाह । एहिनाचकें एखन जिआ क रखनिहार आ एहिमे वर्षहुंसं श्रीकृष्णक भूमिकामे अएनिहार हरिमानश्रेष्ठ २००७ सालक क्रान्तिक वाद ई दू दिनमे मात्र सिमित भ गेल हएबाक बात बतौलनि ।

कार्तिक नाचक जे पटकथा लिखल गेल ओ संस्कृत, हिन्दी आ मैथिलीमे छल ! संस्कृतक सम्वादकें नेपाल भाषा (नेवारी) मे बदलि देल गेल अछि आ जे हिन्दीक सम्वाद छैक तकरामे एना कने नेवारी सन्हिया देल गेल छैक जे देखिते आ सुनिते बनैत अछि । एकटा सम्वाद देखी –

“श्रीकृष्ण- हे प्रियादिलोक, अब हम सब भक्त जनको उद्धार करनेको जाये चलिये ।

सकसिंन- भो द्वारकानाथ विज्ये किजे ।”

(पृ–२१)

एहि गीतिनाटकक संकेत निर्देश निश्चय नेवारीमे अछि आ जे पूर्वोमे छल हएत । रहल एहिमे प्रयुक्त मैथिली गीत सभ त तकरो तेना क ने नेवारी गायक, कलाकार आ उतारक सभ धाँगि देने छैक जे रुप कुरुप भए गेल छैक । कार्तिक नाचमे प्रयुक्त २२८ गोट गीतमे अधिकांश मैथिलीमे अछि । मूल आरती राजा सिद्धिनरसिंह मल्लके लिखल छैक जे प्रत्येक कथानकवाद अन्तमे राखल गेल अछि । मैथिली गीत सभ राग रागिनीक नामक सँग राखल गेल अछि । अधिकांश गीतमे राजा सिद्धिनरसिंह अपने भनिता लिखल छैक । वादक किछु गीतमे हुनक पोता योगेन्द्र मल्लक भनिता अछि । पुत्र छलनि श्री निवास मल्ल । हुनक भनिता नहि अछि, बरु विष्णु मल्लक भनितावला कएक गोट गीत अछि । ललितपुर (पाटन) क इतिहासमे हिनकास पूर्व एकटा राजा विष्णु सिंहक चर्च भेटैत अछि । इतिहासमे छैक जे हिनक मृत्युकबाद हिनक मझिला बालक ललितपुरमे स्वतन्त्र शासन कायम कएलनि । पुरन्दर सिंह नाम रहन्हि हुनकर । तकराबाद ई शासन काठमाण्डूक राजा शिवसिंह मल्लके हाथमे चलि गेल आ एतहु मल्लवंश प्रारम्भ भेल से पछिलका राजाक गुणगान

किए ई सभ करितथि । एत्त कार्तिक नाचमे विभिन्न प्रसंगक अभिनयक हेतु तैयार कएल गेल सम्वादक विचमे राखल मैथिली गीतक वानगी राख चाहैत छी ।

'सुदामा' चरित्रक अभिनयक क्रममे देखी ई गीत जे श्रीकृष्ण आ सकलेंक विचमे राखल गेल छैक ।

"राग –काफी ‼ ताल –चो ‼
हे जदुनाथ सुन्दरी साथ आनन्द ग्येल ॥ धु ॥
मुख छबि हेमांकर भासे ॥
खगपति वाहन तनुज विदारुन पंकज लोचन ॥ १ ॥
नवधन नवनिधि श्याम ॥
काँचन मंचन अपरुब सुन्दर, खंजन नयन विसारे ॥ २ ॥
भूपति विष्णु मल्ल भाने ॥"
जगत जननीपद जुग सरसिज वर अनुदित केवल ॥ ३ ॥

(कार्तिक नाच, पृ–१४)

मूलगीतके जे तीन सय साठी वर्षसं लोक कंठमे अभ्यासें बसैत आबिरहल छल, तकरा विभिन्न समयमे नर्तक, गायक, लिपिकार लोकनि एनाकए तोडने छथि जे लय, ताल, मात्राकें कतहु कोनो संयोग नहि बैसैत छैक ! आ ई स्थिति प्राय : सभ गीतमे छैक ।

'राग केदार' मे लिखल ई गीत देखू–
"सुरभि कुसुम लिय, सव सखियन मिलि
चल हो माधवा नर गृह ॥
फुल्य गुलाफ, वेली, चमेली
फुल लिय नहान माधवानर रे ॥
भूपति श्री योग नरेन्द्र मल्ल देव ॥ चल हो ॥"

(पृ–४०)

एत्त सखी सभ फूल लए माधवके घर गेल आ से फूल लए माधव नहएलाह से वात कहल गेल अछि । मुदा" भूपति श्री योग नरेन्द्र मल्ल देव" क पदके विना तुक राखल गेल अछि । ई बात राजाके खुश करबालेल राखल गेल हएत अथवा एतुक्का किछु पद गोल भए गेल छैक ।

एकटा 'राग-गौरी' मे लिखल गीत देखू जे पूर्ववत् श्रीकृष्ण आ सकलेंक विच सम्वादक क्रममे राखल अछि -

"श्री मुरारीधर नमो नमो ॥ धु ॥
नील वदन छवि पीत वसनकर
मोर मकुट सिररंगत हे ॥
गावत नारद जंत्र बजावत
सुरनर मुनि सब ध्यान धरे ॥१॥
शंख, चक्र, गदा, पदम विराजीत
रुकमिनी सत्यभामा रंगत हे ।
गावत भूपति हरिहर सेवक
मक्षिंदर परजुग ध्यान धरे ॥ २ ॥

(पृ–७७)

एत्त भगवान् श्रीकृष्णक स्तुति कएल गेल अछि । तखन भनितामे 'भूपति हरिहर सेवक' जे उल्लेख अछि ओ कोना आएल कहल नहि जा सकैछ । 'हरिहर' नामक कोनो राजा मल्ल वंशमे मात्रे नहि, कोनो वंशमे नहि भेल अछि ।

पदक शुद्धताक बात छैक त देखी एकटा पदक अंश जे कतहुसं कुरुप नहि भए सएल अछि–

"राग–काफी
शिव परसन फल त्रिभुवन राज
पावल अव हम मनोरथ काज ॥ १ ॥

(पृ –२२४)

'कार्तिक नाच' मे संकलित पद आ जकर गायन एखनो कार्तिक मासमे आठदिन धरि आयोजित होब' बला एहि समारोहमे विभिन्न पात्रक मुखौटा लगा कलाकार सभ करैत अछि । मैथिली भाषाक उच्चारणमे कठिनाई होइत छैक आ तएं तकरा तोडि क नेवारीपन फेंटिकए गबैत अछि । तैयो मैथिली पद सभ अपन स्वरुपकें बचौने नेवार सभक विच जिबैत अछि । एकटा गीतक स्वरुप देखी–

"राग –सारंगा
आयल सुन्दर देवकी नन्दन ॥ धु ॥
वृजकुल नायक गोकुल संगे
साथस (संग) मोहन रुकुमिनी सत्यभामा
निजजन निजकुल आये ।

सकल कलारस गुणधर आयल
सररीत अर्ध तीन केशरी नन्दन /अधर मधुर फुल सुन्दर कुन्दल
प्रमुदित निर्मल कमलवदन
पद सोझे ॥ १ ॥

(पृ –२०७)

एहि तरहें कार्तिक नाचमे प्रयुक्त होब बला लगभग ई दू सयसं उपर गीत सभकें उद्धार हएब जरुरी छैक आ जखन ई काज सम्पन्न हएत, मैथिलीक भण्डारमे ऐतिहासिक श्रीवृद्धि हएत । मध्यकालीन मैथिली गीति साहित्यक एकटा विशिष्ट उपलब्धि हएतैक, जे नेपालक दोसर महत्वपूर्ण देन हएतैक ।



'सखी, मेघबा बरसन लागे ना !

कारी-कारी मेघक झूण्ड जखन ऐंठैत, नितराइत आकाशमें विद्युत तरंगक संग मन लुभावन बुन्नक मनमोहक वातावरण बनबैत अछि त कोनो पाथर सन निष्ठूर हृदय सेहो तरंगित भ जाइत अछि, रस प्लावित भ जाइत अछि।

'सखी, मेघबा बरसन लागे ना !

घनघोर घटाक बीच, विद्युतक संचरण आ ओहिस उत्पन्न सिहरनक अपन फूटे आनन्द हौइत अछि। ई आनन्द भौतिक आनन्दस परेक होइत अछि- नैसर्गिक आनन्द। लागत- भिंजतहि जाई बरसातक एहि मनोहारी बुन्नक बौछारमे।

हवाकं बेगमसं निरन्तर अपन स्थानक परिवर्तन कएनिहार एहि मेघक समूहके देखि क महाकवि कालिदासके एकरां 'दूत' बनएबाक प्रेरणा मिलल छल हएत। आजुक संचार युग जकाँ नहि छल ओ समय। विकट पहाडी अंचलके रामगिरीमे निर्वासित यक्ष अपन प्रेयसी यक्षिणीक मनोभावके स्मरण क व्यथित होइत रहैत अछि। खास क सावनक घनघोर घटांक जे दर्द हृदयमे उठबैत छैकं ओकर व्यथा सहब कठिन भइए जाइत छैक। प्रियास दूर श्रापित यक्षक तेहने व्यथाके कालिदास मेघ के 'दूत' बना क व्यक्त कएने छथि –

"संतप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियाया :
संदेशं मे हर धनपति क्रोध विश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
बाह्योद्यानास्थितहरशिरश्चन्द्रिका धौतहर्म्या॥

(मेघदूत, ७, श्लोंक)

एकांत निर्जन बनप्रांतरमे जखन उमरैत घुमड़ैत मेघ के देखैत अछि त यक्ष ओकरा अपन सटीक सम्वादवाहक जानि क अनुनय करैत अछिं- तों हमर प्रिया तक सन्देशा पहुंचा दे, अलका नगरीमें बैसलि, शोक सन्तप्त प्रियाके, जे हम एत्त ठीके छी..।

इएह अषाढ-श्रावण के एहने झिसी यक्षमे चेतना जगौने छल, आ कालीदास प्रेरित भेल रहए। यक्षके माध्यमस महाकवि कालिदास अपन मनोभावके जाहि उंचाईस प्रस्तुत कएने छल, वास्तवमे आइ वैह विश्वकीर्त्तिक रूपमे स्थापित अछि। कहबाक जरुरति नहि, हिन्दी-मैथिलीके महान कवि नागार्जुन एहने भावंके परखि क कालिदासस प्रश्न कएने छलाह–

"कालिदास, सच-सच बतलाना !
वर्षा ऋतुकी स्निग्ध भूमि का
प्रथम दिवस आषाढ़ मास का
देख गगन में श्याम घन घटा
विधुर यक्ष का मन जब उचटा
खड़े-खड़े तब हाथ जोडकर
चित्रकूट के सुभग शिखर पर
उसे बेचारे ने भेजा था
जिनके ही द्वारा संदेशा
उन पुष्करावर्त मेघों का
साथी बनकर उड़ने वाले

कालिदास, सच-सच बतलाना !
परपीड़ा से पूर-पूर हो
थक-थक कर और चूर-चूर हो
अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
प्रियवर, तुम कब तक सोए थे ?
रोया यक्ष कि तुम रोए थे ?
कालिदास, सच-सच बतलाना !"

यैह महिमा छै वर्षात्के समयके। आ बरसातक प्रथम माध्यम कारी -कारी उडिआइत-घुडिआइत मेघक । ऋतुसबकं सब विशेषता आब हमरासभस दूर होइत जा रहल अछि। नव-नव प्रविधिक सम्वाहकलोकनिं हमरासभक भावनांके पेनड्राइभ, चीप्स वा सिडिसबमे बन्द क देने अछि। ने हम ओइ मार्मिक क्षणसबक अनुभूतिके नैसर्गिक रूपस महशूस क पाबि रहल छी आने नहि ओकर आनन्दे ल पाबि रहल छी।

कत्त गेल ओ पावस, मलार, बाहमासा, छौमासा, झूला..! वर्षाक बाढ़िमे जेना वियोगिनीक जीवन वाटिकामे विरहक ज्वाला चतुर्दिक पसरि जाइत छै आ विरह वेदनाक तीव्र ज्वालामे संतप्त नायिकासभक दयनीय एवं करुण परिस्थितिक मार्मिक चित्रण पावस गीतक सवस पैघ विशेषता छै।

मिथिलाक ललनालोकनि एकरा गा गा क अथव सुनि क आनन्दक अनुभूति करैत अछि।

देखी एकटा गीत–

"सखी बोलन लागे मोर !
उमड़ि-घुमड़ि बरसत बदंरा रे, घन गरजत चहुँ ओर।
चमकि-दमकि दामिनी डेराबए,
तरसतु मनवाँ मोर।
रयन अन्हरि घटा भेलकारी,
मदन जलाबए जोर।"

पति वियोगमे छटपटाइत नायिकाक वर्णन त एहि गीतसबमे रहिते अछि, मुदा मिलनक साहस नहि होइछ। महाकवि विद्यापतिक नायिकालोकनि एहिस भिन्न भेल करैत छथि। धरती पर वर्षाक बौछार जारी अछि , राति अन्हरिया आ भयावह छै। विजलौकां चमकि रहल छै। एहनमे विद्यापतिक नायिका एहि भयावह व रोमाञ्चक समयके उपयोग प्रियामिलनके लेल करैत अछि– अभिसारके द्वारा।

"बरसि पयोधर धरनि बारि भर, रयनि महाभय भीमा।
तइओ चललि धनि तुअ गुन मने गुनि, तसु साहस नहि सीमा..। ॥"

(विधापति पदावली : रामवृक्ष वेनीपुरी, लोकभारती प्रकाशन, २००७, पृ-९६)

कहल जाइछ जें, एहि भयानक रातिमे मिलनक एहन तीब्र चाह ओकरा साहसी वना देने छै। एहन शक्ति निहित छै एहि बरसातके मौशममे। एकटा जमाना ओ रहैक जखन प्रिय मिलनक उत्कट इच्छा एना क पुरा कर पडैत छलैक, आ एकटा समय आब छै जे सब किछु घरेमे सिकुडि क रहि गेल अछि । ओना किछु शौभाग्यशाली नायिका तहियो सहज आनन्द उठएबामे पाछा नहि रहैत छलीह–

"सखी हे सावन के बुन्न झिंसी
प्रिया संग खेलु पचिसी ना...।"

(फिल्म एकटा आओर वसन्तक लोकप्रिय गीत)

आबी, हमहुंसभ वरिसातके एहि बुन्नकें प्रकृतिक बरदान समझि आनन्द उठाबी।



भक्तपुरक दरबार क्षेत्रमे एखनो तिरहुतिया संगीतक ताल सुनि पड़ैछ

कथा नव नहिं अछि आने हमर उदेश्य गओले गीतके फेरसं गाबि श्रोताके मोन दगध करबाक अछि। सभ जनैत अछि कर्नाटवंशी राजा हरिसिंह देवक राज्य पतनक बाद हुनक परिवार नेपाल (काठमान्डु उपत्यका) आएल आ भक्तपुर राज दरवारमे शरण ल अन्तत : एकटा शक्तिशाली आ प्रभावपूर्ण राज्य व्यवस्थाक प्रतिपालन करैत रहल।

कर्णाटवंशी सामन्त नान्यदेव (११५४-१२०५वि.स.) स ल अन्तिम शासक आ लाकेप्रिय चर्चित राजा हरिसिंह देव (१३६१-८४) वि.स. धरिक तिरहुत राज्यक कथा आव ततेक अबुझ नहिं रहल अछि। हं, तखन खोज बीनक काज एखनो बांकी छैक, जाहि दिश अनुसन्धाता लोकनि ध्यान नहिं द रहल छथि। वीरगंजक बासुदेव लाल दास जी कर्नाट शासक सभक शासन व्यवस्था पर गम्भीर अध्ययन कएने छथि, मुदा उनको प्रकाशित नहिं भेने सत्य तथ्य बुझबा योग्य नहिं अछि। तथापि मिथिलाक आ नेपाली विद्वान ईतिहासकार लोकनि तिरहुत राज्य (जकरा नेपालक प्रमुख प्रमाण मानल जाए बला गोपाल वंशावली कार लोकनि डोय राज्य कहैत छथि) खुब लिखलनि अछि। मुदा काठमान्डु उपत्यका पर तिरहुत राज्यक अमिट छाप रहितहु तकरा किछ उपेक्षित भावे गोपाल वंशावलीकार लोकनि देखएवाक प्रयास कएने छथि। डोय शब्द तेहने तुच्छता हेतु प्रदर्शित शब्द छैक, जे कतहु ने कतहु आक्रोश आ विवशताक द्योतक अछि। आक्रोश एहि दुआरे जे जाधरि सिमरौनगढमे तिरहुत राज्य रहल (लगभग २२८ वर्ष) ताधरि ओतुक्का राजा लोकनि काठमान्डु पर आक्रमण करैत रहलाह। एखन धरि प्राप्त सुचना अनुसार ६ बेर ई आक्रमण भेल रहए, जाहिमे दु - तीन बेर सफलता त नहिं भेटलै मुदा जखन भेटलै त सौसे उपत्यका दासोदास भ गेल रहए। तिरहुत राज्य हेतु कर देबाक लेल गछि क ओकरा अधीनता स्विकार क लेने रहए। आक्रमणक अन्तिम स्वरुप हरिसिंह देवक समयमे भेटैत अछि जखन मंत्री चण्डेश्वरक नेतृत्वमे उपत्यका विजय कएल गेल रहय आ जत्त चण्डेश्वर एक वर्ष रहि कर असुलने रहए आ अपनेसं पशुपतिनाथके पूजा पाठ क वागमतीक किन्हेरेमे अपन ओजन अनुसारक धन तुलादानमे देने रहए। गोपालवंशावलीकार एहिं वातके लिखवाक हेतु विवश भेल, मुदा ओ आक्रमण क विजयी तिरहुतक भारदारक नाम उल्लेख नहिं कएलक। ई त विवाद रत्नाकरमे कएल गेल चण्डेश्वरक वर्णनसं ज्ञान होईत अछि।

"श्री चण्डेश्वरमन्त्रिणा मतिमातानेन प्रसन्नात्मना
नेपालखिल भुमिपाल जयिना धर्मेन्दुदुग्धाब्धिना"

"अदित तुलितमुच्चैरात्मना स्वर्णराशि
निधिरखिल गुणनामुत्तर : सोमनाथ :"

वि.स. १३७१, मार्ग शुल्कमे कएल गेल ई तुलादान जतवे महत्वक अछि, ओतवे एहिमे चण्डेश्वरके *नेपालक राजा जितल* कहि सम्बोधन कएल गेलासं काठमान्डु उपत्यकामे सभकें परास्त क अपन सत्ता स्थापित कएने मंत्रीक रुपमे प्रस्तुत कएल गेल देखबैत अछि । एहि तरहे कर्नाट शासक लोकनि काठमान्डुक शासक सभक लेल आदर्श पुरुष रहल छलाह । आ बहुतो तरहक समाजिक, सांस्कृतिक रुपान्तरण उपत्यकामे तिरहुतेक देखाउसें कएल गेल ।

नेपालक ईतिहासकार लोकनि, अनुसन्धाता लोकनि मानैत छथि, तिरहुत राजा सभक निरन्तर आक्रमण, काठमान्डुमे बसोवास आ बढैत प्रभावके कारणे *उपत्यका बासी मैथिली भाषा, सभ्यता आ रहन सहन जानबा पर विवश भेल* । १ हरिसिंह देव द्वारा सिमरौनगढसं भगैत काल अपन कुलदेवी तुलजा भवानीके संगे ल पहाड दिश पडएलाह, जकर स्थापना भक्तपुर दरवारमे कएल गेल आ जे तकरा बाद काठमान्डु उपत्यकाक सभ राज परिवारक मान्य कुलदेवीक रुपमे प्रतिष्ठित भेलथि । प्राप्त एकटा टिपोट अभिलेखमे कहल गेल अछि - तुगलक द्वारा पराजित कएलाक बाद परिवार आ मंत्रि सहित तिरहूतक राजा जंगल पैसल । पुत्र एवं पत्नि देव लक्ष्मी सहित सहायता मांगवाक लेल नेपाल प्रवेश कएल । २

यद्यपि विवादक विषय रहिए गेल अछि जे हरिसिंह देव की उपत्यका गेल छलाह अथवा जेना गोपाल वंशावली कहैत अछि दोलखा जएवाक बाटमे सिंन्धुली लग तिंपाटन मे हुनक मृत्यु भ गेलनि । ३

विदेशी विद्वान (हडशन आ लेलक) सभक द्वारा देल उदारणसं हरिसिंह देव काठमान्डु पैसल छलाह । डी. राइट सेहो कोनो बंशावलीक आधार पर एकरा मानैत छथि । मुदा इतिहासक अनेको प्रसंग, शिलालेख सभक प्रमाणिकतासं ई संम्भव नहिं बुझना जाईछ । भक्तपुर दरवारमे हरिसिंह देवक पत्नि देवल देवीक उपस्थिति, सत्ता विस्तार आ अन्ततः पुत्र जगतसिंहकें राजअधिकार बनएवाक संगहि पोती राजल्ल देवीके महारानी बना अत्यन्त शक्तिशाली रुपें राज्य संचालनमे मुख्य भूमिका देखि पडब हरिसिंह देवक अनुपस्थिति बोध करबैत अछि । पोती राजल्ल देवीकें मधेशसं (दक्षिणसं) जयस्थितिकें आनि

विवाह क सत्तापर पूर्ण अधिकार, देवल देवीक राजनीतिक चतुरता दखवैत अछि । स्मरणीय रहए - तत्कालीन भक्तपुरक राजा रुद्रमल्ल देवल देवीक भाई छलखिन्ह आ हरिसिंह देवक सार । एहन अवस्थामे हरिसिंह देवक भक्तपुरमे उपस्थिति अन्ततः राज सत्ताक केन्द्रविन्दुमे रहितैक, देवल देवीक नहिं । तएं बाटमे हुनक स्वार्गारोहन बेसी समीचीन बुझाईत अछि ।

हम अपन मूल विषय पर अएवांस पुर्व कर्नाटवंशीय राजा लोकनिकें काठमान्डु उपत्यकाक राजपरिवारसं पुर्वोमे सम्बन्ध स्थापति रहैक ताहि दिश ध्यान आकृष्ट कर चाहैत छी । यद्यपि एकर उल्लेख एतुक्का वंशावलीकार लोकनि दबल मुहे कएने छथि, कोनो अभिलेख आगां लएवाक प्रयास नहिं भेल अछि । तथापि हम सभ नेपालक अनुसन्धानता सभक टिपोटमे देखैत छी जे भक्तपुरक रद्रमल्लक बहिन देवल देवीसं हरिसिंह देवक विवाह भेल छल, नान्यदेवक दिआद श्याम सिंह देवक बेटी नरेन्द्रलक्ष्मीक विवाह सेहो उपत्यका राजपरिवारमे भेल छल आ भक्तपुरक राजा राजदेवक विवाह सेहो कर्णाट कुलमे भेल छलन्हि । तैयो तिरहुतक राजा लोकनि काठमान्डु उपत्यका पर आक्रमण करैत रहलाह । ई आक्रमण आर्थिक वेसी रहैक, राज्य प्राप्ति कम । सर्वप्रथम राजा न्यायदेवक समयमे ११११ ई. मे काठमान्डु उपत्यकार पर तिरहुतिया सेनाक आक्रमण भेल रहैक । ४

सफलता नहिं भेटलैक त राजा रामसिंह अपने दू वेर उपत्यकामे आक्रमण कएने छलाह । वि.स. १३०१-२ मे आ वि. स. १३५६ मे । अन्तिममे नीक सफलता भेटल छलनि ।

अर्थात काठमान्डु उपत्यकाक राजधरानामे सम्बन्ध रहितो आक्रमणक क्रम जारि छल । तैयो दुनू प्रदेशक वैवाहिक सम्बन्ध निरन्तर चलैत रहल जे हरिसिंह देव धरि आ तकरावाद जयस्थिति मल्ल धरि जारी रहवाक प्रमाण भेटैत अछि ।

आब हम कनेक फरिछा लेब चाहैत छी जे कर्णाट वंशक राजाक संगहि भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिक जे उच्च सम्बन्ध काठमान्डु उपत्यका, वादमे भक्तपुर दरवार सं छल तकर पृष्टभुमिमे आर कोन कारण सभ छलैक । यद्यपि किछु आनो अनछुअल प्रसङ्गके राखब हम समीचीन बुझैत छी ।

पहिने हरिसिंह देवक आ देवलदेवीक प्रसंग

गोपाल वंशावलीकार हरिसिंह देवक मृत्यु दोलखा जाईत तीनपटनक जङगलमे १३२५ ई. मे भ गेलैक से बात स्पस्ट रुपें कहने छैक । वास्तवमे अपन गुप्तचरक गलत सुचनाक आधार पर विना तैयारीके दिल्लीक बादशाह

गयासुदीन तुगलक विशाल सेनासं भीड गेल छलाह । कहवाक जरुरति नहिं तखन तक हरिसिंह देव अत्यन्त शक्तिशाली सेनाक अधिपति छलाह, मुदा तकर अवसर नहिं भेटल छलनि । जं कि दिल्लीक बादशाह पछिमसं लुटैत धुरि रहल छल, हिनका भेलनि जे सिमरौनगढ सेहो लुटत आ तएं कोनो तैयारीके युद्धमे बाझि गेलाह आ नीक जका परास्त भेलाह । ज ओ चुपचाप अपन राजमे सिमिति रहितथि त मिथिलाक ईतिहास दोसर रहितैक, हं, पृथ्वीनारायण शाह सन राजासं दू चारि हाथ कर पडितनि । तखन कि होईतैक, के जनैत अछि । जे से गोपाल वंशावली आ आन दोसर वंशावली हुनक मृत्यु ओतहि हएवाक उल्लेख करैत अछि । किछु मे नेपाल प्रवेशके बातो कएल जाईछ । जं कि गोपाल वंशावली हिनके वंशक राजा जयस्थिति मल्लके समयमे लिखल गेल अछि । तएं ओकर विश्वसनीयताके सोझे अस्विकार करवाक अबस्था नहिं छैक । वादमे प्रसङग एहिवातके पुष्टि करैत छैक ।

हिनक मृत्युक वाद देवल देवी कोनो तरहे अपन भैया लग भक्तपुर पहुचैत छथि । पुत्र आ किछु मंत्री, सैनिक राजग्राममे कैद क लेल गेल रहैत छन्हि से प्रसङग आएल अछि ।

एहि तरहे देवल देवी १३२५ ई. मे अपन भैया लग जा शरण लैत छथि । वादमे हिनक मंत्री चण्डेश्वर राजग्राम जीति पुत्र आ मंत्रिलोकनिकें छोडा अनैत छथि । एहिसं लगैंत अछि चण्डेश्वर हिनका संगे भक्तपुर आएल छलाह आ हिनका संग पुरैत रहलनि । यद्यपि वादमे कतहु ओकर चर्च नहि अबैत अछि ।

राजा रुद्र मल्लके *युथुनिमम दरबार* मे रहैत राजनीतिक धटनाक्रम एतेक तेजीसं घटित भेल जे देवल देवी रसे रसे शक्तिशाली होइत गेलीह । रुद्र मल्लके दू गोट वालक बच्चेमे कालकलवित भऽ गेल छल । एक गोट वेटी छल,जकर पालन हुनक दाई श्री पदुमल देवी करैत छलीह, तकरा सहयोगमे देवल देवी लागि गेलीह । रुद्रमल्लके बेटी नायक देवीक विवाह बनारसक कोनो राज कुमारसं वि.सं. १३८६ (१९२९ ई)मे कएल गेलनि । नायक देवी गद्दीक हकदार छलीह तएं पति सेहो हकदार भेलाह । मुदा पति हश्चिन्द्र देवकें राजधरानाक खडयन्त्रमे बिष दऽ मारि देल गेल । तकरावाद विधवा नायक देवी आ ओही दरबारमे रहैत देवल देवीक पुत्र जगत सिंह देवक विच प्रेम सम्बन्ध बढल आ विवाह भऽ गेलै । ५ राजकाजक क्रममे जगतसिंह कैदमे पडि गेलाह आ ओत्तहि हुनक मृत्यु भ गेलनि । मुदा हुनका एकटा कन्या भेल छलनि राजल्ल देवी जकरा बड जतनसं देवलदेवी पोसलनि । ओ गद्दीक उत्तराधिकारी छलीह । ८ बर्षमे हुनक विवाह अपने कुलके सिमरौनगढे

दिशसं जयस्थिति मल्लके आनि कऽ देलकनि । काठमाण्डू उपत्यकाक राज परिवारमे जं लडका नहि रहैक त लडकीक विवाहक हेतु दक्षिणदिशसं लडका खोजि लाओल जाइक आ तकरा डोलापर चढा मंगाओल जाइक । वादमे ताहि युवक संग विवाह सम्पन्न होइक । एकरा ‘‘डोलाजी प्रथा‘‘कहल जाइत छलैक । से जयस्थिति मल्ल मंगाओल गेलाह आ १३५४ ई. मे राजल्ल देवीसं विवाह करा देल गेल । देवल देवी अपन ४० वर्षक भक्तपुर दरवारक सत्तामे उपस्थितिक सभसं सुखद आ शक्तिशाली रुपमे तखने अएलीह जखन अपने पोतीक विवाह अपने कुलक व्यक्तिसं करएवामे सफल रहलीह । हिनक मृत्युक (१३६६ ई) धरिक ई पूर्ण राजकीय सत्ताक १२ बर्षक अवधि देवलदेवीक हेतु महत्वपूर्ण रहल । वास्तवमे इएह हुनक चालिस बर्षक एकछत्र प्रभावपूर्ण उपस्थिति आ अन्नततः अपने सन्तानक हाथमे काठमाण्डू उपत्यकाक शासन व्यवस्था आवि जएवाक संयोग कर्णाटवंशी राजालोकनिक सम्पूर्ण उपस्थिति भक्तपुर राजदरवारमे देखवैत अछि । आ तएं कला, भाषा, साहित्य, संस्कृतिक विकास चरम पर पहुंचैत अछि । जयस्थिति मल्ल नेपालक इतिहासमे अपन कृतित्वसं एकटा अमीट छाप छोडने छथि, जकर एत्त चर्च अप्रसांगिक हएत ।

तिरहुतक कर्णाटवंशी राजपरिवारक सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्थाक अनुकरण पूर्वहुसं काठमाण्डूक राजपरिवार, एतुक्का लोक करैत छल,जखन स्वयं राजगद्दीए भेटि गेलैक त तकर विकास हयव स्वभाविक रहैक से भक्तपुरक दरबार क्षेत्रमे एखनो तकर अवशेष देखल जा सकैछ । हं, ई दोसर वात छैक तकरा एतुक्का इतिहासकार लोकनि, अनुसन्धाता लोकनि अबडेरवाक प्रयास करैत रहल अछि । आ जखन तथ्य वाहर नहि अओतैक त मिथिलाकक अन्वेषक लोकनि बुझताह कोना ।

भक्तपुर दरबारक बर्तमान स्वरुप आ मिथिला कला

काठमाण्डू उपत्यकाक प्रमुख अध्यात्मिक, सांस्कृतिक नगर भक्तपुर एखन विश्वसम्पदा सूचीमे राखल गेल अछि आ विश्वभरिक पर्यटक एत्त दरवार अवलोकनक हेतु तांती लागल रहैत छैक ।

हम सभ जखन मुख्य दरबज्जासं दरबार परिसरमे प्रवेश करैत छी तं मंत्रमुग्ध भऽ जाइत छी । लगैए कोनो पुरना दरबारमे आवि गेल होइक । नजरि पडैत अछि शिखर शैलीक किछु मंदिर पर । पैगोडा छाप मंदिर नेपालक अपन स्वरुप छैक मुदा शिखर त दक्षिणक प्रारुप थिक । नेपालमे ई सत्रहम् शताव्दी अर्थात भक्तपुरक राजा भुपतीन्द्र मल्लक समयमे आएल से विद्वान लोकनि कहने छथि । वास्तवमे भक्तपुर दरबारमे भूपतिन्द्रं मल्ल बड सुधार कएने छलाह, नव नव वस्तु खडा कएलनि । ई मंदिर सभ हुनके देन सभ अछि प्रायः । हं दरबार आ तलेजु भवानीक मंदिर दिश मुह कएने हाथ जोडि प्रणाम

करैत एकटा नमहर स्तम्भ पर प्रतापी राजा भूपतिन्द्र मल्लक पीत्तरिक वैसल मूर्ति ढलौटमे बनाओल जड़ित अछि । लगमे जा निहारि कऽ मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृतिक प्रेमी राजाके नमस्कार कऽ वाम कातक स्वर्णदार दिश बढैत छी । ई स्वर्णद्धार भक्तपुरक अन्तिम मल्ल राजा रणजीत सिंह बनौने छलाह । दर्शनीय एहि दरबज्जाक उपरी घेरामे तुलजा भवानीक भव्य स्वर्णमूर्ति बनाओल गेल छैक । मंदीरमे पूजारी छोड़ि दोसर ककरो प्रवेश नहि होइछ । मात्र एक दिन बिजयादशमीके लोक हुनक जात्राक क्रममे दर्शन कऽ पवैत अछि । तएं मां के प्रणाम कऽ भीतर प्रवेश करैत छी । अंगनई, फेरसं कोठरीक विच दऽबाट आ तखन दरबारक अंगनई जे दहिन कात घूमि, उत्तर जा फेर पछिम घूमि मूल दरबारक मूल चौकमे प्रवेश भेटैत छैक । सभ सुरक्षाक दृष्टिसं बनाओल सन । हिन्दूक हेतु मात्र आ विदेशी नहि । भारतीय विदेशी नहि गनल जाइछ । अंगनईमे गेलाक बाद मल्ल कालक छ सय वर्ष पूर्वक इतिहास आंखिक सोझा नाचए लगैत छैक । चारु कात काठ आ ईट, पाथरक भवन । काठक कलात्मक खिडकी, दरबज्जा आ महिला सभक हेतु झरोखा । आगनमे चबुतरा । हमरा त लगैत अछि ओहि पर नाटक मंचन, गीत गायन आ आन समयमे प्रजाक फरियाद सुनबाक काज होइत छलह एत । तुलजा भवानी मंदिर दरबारक चौघरामे अछि । दरबज्जा बन्द छैक । ओत्तहिसं प्रणाम करी.... ।

आई महज दरबार टा देखवाक अथवा धूमवाक उद्देश्य नहि रहि गेल अछि । मिथिला संस्कृतिक कोन रुपे छाप एत्त छैक आई हमरा सभक विरासत कतेक समृद्ध अछि तकरो खोजवीन हमर लक्ष्य अछि । आ तकरा लेल हमरासंगे छथि नेपालक गनल गुथल मैथिल पुरात्वविद तरानन्द मिश्र आ एखन त्रि.वि.वि.मे इतिहासक प्राध्यापक आ इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्वमे अध्ययनरत डा. पुरुषोत्तम लोचन श्रेष्ठ । नीक अध्ययन छन्हि । नेवार छथि तएं मैथिल संस्कृति प्रति इमानन्दार छथि । कर्णाट वंशीय संस्कृति आ परम्परा सम्बन्धमे ठोस रुपमे बतबैत जा रहल छथि । हुनके अनुसन्धानसं हम सभ चारि गोट तथ्य जानबाक आ देखवाक अवसर पवैत छी जे सम्भवतः एखन धरि अज्ञात छल ।

हमरा कएक बेर डा. प्रफुल्ल कुमार मौन कहैत छलाह । भक्तपुर दरबारमे कोनो ठाम मल्लराजा सभक काठक मूर्ति छैक, ज अवसर भेटए त खोजू आ फोटो उठाउ । हम अपन जिज्ञाशा श्रेष्ठजी के कहलिएनि आ हमरा सभके मंदिरक पछिम दिश दोसर कात लऽ गेलाह जकरा नेवारी में जह्रौंचोक, जलद्रोनी चोक कहल जाइछ । मंदिरक ई पृष्ट भाग अछि जकर छज्जीसं निचांक भागमे एक पंतिमे मल्ल राजा लोकनिक चित्र काठमे खोधल बनाएल

अछि । दहिनकात भक्तपुरक मल्ल राजा सभक जाहिमे भूपतिन्द्र मल्ल आ हुनक बालक रणजीत मल्ल घरिक चित्र अछि आ वामकात कर्णाटक राजा लोकनिक नान्यदेवसं लऽ हरिसिंह देव धरिक । दूनूक विचमे तलेजु भवानीक मूर्ति अछि । सभ राजा लोकनि शाही पोशाकमे हाथ जोडने प्रणाम मुद्रामे अछि । सभसं खूबीक बात छैक सभ मूर्तिक उपर काठक पट्टीमे राजा सभक नामो खोधल अछि । राजा भूपतीन्द्र मल्लद्वारा बनाओल गेल उक्त चित्र ऐतिहासिक अछि जकर चर्च कतहु नै भऽ सकल अछि । फोटो खिचबाक मनाही छैक तएं मोनमारिकऽ रहि जाइ छी ।

हम सभ फेर अंगनई मे अबैत छी । आगांमे श्री खण्ड खिडकी अछि । एत्त सेना सभ मात्र रहि सकैत छल । मुदा ओहि ठाम अनेकौ महत्वपूर्ण शिलालेख, अभिलेख सभ अछि, भितरमे भव्य सूर्यक मुर्ति छैक । कहल जाइछ कर्णाटवंशी लोकनि सूर्यवंशी छलाह । ओसभ दक्षिणमे जा सामन्त बनि काज करैत रहथि । नान्यदेव सेहो उत्तरी भारतक एहि क्षेत्रक सामन्त नियुक्त कएल गेल छलाह चालुक्य राजक दिशसं । तुलजा भवानी आ आव ई भव्य सूर्य मुर्ति चित्रमे । ओहु ठाम कर्णाट राजा आ भक्तपुरक राजा सभक रंगीन चित्र बनाओल अछि । संरक्षणक अभाव छैक । सत्रहम शताव्दीक ओ चित्र सभ वदरंग भऽ रहलैक अछि । किए केओ तकरा संरक्षित सुरक्षित करत ।

हम सभ दरबारसं बहराइत छी दरबज्जा पर । आव दोसर महत्वपूर्ण धटना दिश लऽ चलैत छथि श्रेष्ठजी । सिमरौनगढ सं आइ धरि कोना भक्तपुरक तलेजु भवानीक सम्बन्ध छैक तकर रोमांचक कथा कहैत छथि । ई एहन प्रसंग अछि जकरा केओ लिखबो जरुरति नहि बुझलथि आने कतहु प्रचार छैक । हम ध्यान मग्न भऽ बिजयादशमीक दिन तलेजु भवानीक पूजा अर्चना आ नगरपरिक्रमाक विवरण श्रवण कर लगैत छी ।

बिजया दशमीक राति ९–१० बजेसं तलेजु भवानीक पूजनोत्सव प्रारंभ होइत अछि । ई पूजा एत्त आइ छः सय बर्षसं सिमरौनगढक प्रतिनिधि एहि दिन करैत आवि रहल अछि । मूल दरबार आ मंदिरसं बहराइत छी त खुल्ला जगह छै जत्त छोटछीन चबुतरा छैक । दशमीक रातिमे तलेजु भवानीकें युद्ध पहिरनक स्वरुपमे पूजारीद्वारा एहि खुल्ला ठाममे लाओल जाइछ । एत सिमरौन गढसं आएल दूगोट प्रतिनिधिक संग पुजारीक रोचक सम्वाद होइछ ।

पुजारी प्रश्न करैछ-अहां सभ कत्तसं आएल छी ?

प्रतिनिधि उत्तर दैत अछि-तलेजु भवानी देश परिक्रमा करथिन्ह से सूनि हम सभ सिमरौनगढसं दर्शन कर आएल छी ।

तखन पुजारी फेर प्रश्न करैछ– ठीके । जं ठीक छै त बताउ ओम्हरक हालचाल की छैक ? कुशल क्षेम केहन छैक, ओतुक्का नगरवासी के एक दामके नौ पाथी भेटि रहल छै कि नहि ?

प्रतिनीधि उत्तर दैत अछि- सभ ठीक ठाक छै, कुशल मंगल छैक । पहिने जेहन छल, एखनो तेहने अछि । एक दामके नौ पाथी चाउर भेटिते छैक ।

तखन पुजारी आश्वस्त होइत कहैत छैक–तखन ठीक छैक । अहां सभ पूजा आजा कर जाउ ।

तखन ओ सभ अपना संगे लाओल फल फूलसं तुलजा भवानीके पूजा पाठ करैत अछि । पूजा कएलाक बाद भवानीके स्वर्णद्वार लग लऽ जाएल जाइत छैक आ चन्द्रमाक गतिके देखि निचका आ उपरका भागमे भक्तपुरके वांटि परिक्रममा कएल जाइछ ।

इतिहास, संस्कृतिविद् डा. पुरुषोत्तम लोचन श्रेष्ठ भावुक होइत कहैत छथि- एहुसं सैयौं बर्ष पूर्वक सिमरौनगढ आ भक्तपुर विचक सम्बन्ध अर्थात तिरहुत राज्य आ भक्तपुर राज्य विचक धार्मिक, सांस्कृतिक सम्बन्धके जारी रखने अछि ।

मन प्रशन्न भऽ जाइत अछि । स्वर्णद्वारसं बहार भऽ आव विश्वप्रसिद्ध पचपन्न खिडकी बला दरबार (पचपन्न झयाले दरबार) लग जाइत छी । दरबार परिसरमे उत्तर दिश अवस्थित ई दरबार भूपतीन्द्र मल्लद्वारा निर्मित अछि । देश विदेशक हजारौ लोक दैनिक एकर अवलोकन करैत अछि । कलात्मक खिडकी जे एक्कै पतिआनमे पचपन्न गोट जड़ल छैक, अद्‌भूत नमूना छैक । मुदा हमरा सभक बिषय ई खिड़की आ भवन नहि छल । डा. श्रेष्ठ अपना तेइस दिनक श्रमसं उद्धार कएल एउटा ऐतिहासिक बस्तुके देखएवाक हेतु उताहुल छथि । निचांस देखबैत छथि– भवनक छज्जीक निचांक काठक कलात्मक पट्टी आ ताहि पर बनल सुन्दर चित्र सभक बिचमे रागरागनीक चित्र आ उपर तकर नाम खोधल देखि हम सभ आश्चर्यचकित भऽ गेल छलहुं । भूपतीन्द्र मल्ल एहि तरहक संगीत प्रेमी रहथि ई बात ई चित्र सभ देखला पर स्पष्ट भऽ जाइछ । ओहुना मल्ल राजा लोकनि एकस एक गीतिरचना, राग रागिनीक संग करैत छलाह जे अभिलेखालय सभमे प्रमाणिक रुपमे विद्यमान अछि । एत्त त कमाल भऽ गेल छै–रागरागिनीक विधान अनुसारक काष्ठ चित्र आ उपर तकर नाम...वाह, जय हो भूपतीन्द्र राजा । वि.सं. १७६५ अर्थात् १७०५ ई मे निर्मित ई दरबार राजाक सांस्कृतिक सोचके प्रतिनिधित्व करैत अछि । एहि खोपा. (खोधरि मुदा समतल चौकसं) समभे १४९ गोट राग रागिनीक चित्र अंकित अछि । भैरब रागसं प्रारंभ भऽ नदनबर्द्धन रागिनी धरि अंकित अछि । सभक चित्र फूट-फूट अछि । जं कि

सभकें वर्णन करब एत्त संभव नहि अछि, भविष्यमे आने लेखमे चित्रक संग राग-रागिनीक उत्कीर्ण चित्र सभकें पूर्ण विवरण देबाक प्रयास करब । एत्त चित्रमे तकर एक झलकी देखल जा सकैछ ।

भक्तपुर दरबार स्क्वायरक भ्रमण आ उपलब्ध जानकारी एवं तथ्य सभक अवलोकन मोनकें हरियर कऽ दैत अछि आ मोन होइत अछि काठमाण्डू घूम अबैत मैथिल लोकनि अपन छः सय वर्ष पूर्वक जिवित इतिहासक एतेक सुन्दर संरक्षण कएल ई ठाम अवश्य देखथि । ओहुना नेपाल मैथिली साहित्यक अजस्र भण्डारकें दुनियांक आगा लओने अछि, एखनो हजारौ पाण्डुलिपि जे बचल छैक एत्त सुरक्षित मुदा अनपढ धएल छैक । आ आब त सांस्कृतिक सम्बन्धक जीवंत क्षण सेहो एहि ठाम पड़ल अछि । भक्तपुर दरबार पर मैथिलक हक अधिकार ककरासं कम छैक ?

सन्दर्भ स्रोतः

१. डा. राजाराम सुवेदीः नेपालको तथ्य ईतिहास, प्रकाशकः साझा प्रकाशन, २०६५ पृष्ठ - १०२

२. तुरकैदुरिकृत सपरिवार तिरहुत राजा मन्त्रिभिः सहाररायं प्रविष्टः । पुत्रेण सहिता पत्नी देवलक्ष्मी च स्वकुटुम्बै सहवल याचितुं नेपाले प्रविष्टति ॥

'दोलखाक टिपोट पत्र, प्राचिन नेपाल अंक १३ पृष्ठ -४६'

३. गोपालवंशावली (४६ पत्र) जगतसिंह देवसमाहित संगृह्य कृतं नायक देवी ॥ (२८ पत्र)

४. धनव्रज वज्रचार्य : गोपालवंशालीको ऐतिहासिक विवेचन, किर्तिपुर, २०६४ । पृष्ठ-८६

५. गोपालवंशावली (कर्णाटक वंशज जगतसिंह देव समाहित संगृह्य कृतं नायक देवी ॥ (२८ पत्र)



धनुषा मकर

कनेक रामायण कालमे पलटु । विश्वामित्रक सँग राम आ लक्ष्मण मिथिलाक यात्रा करबाक हेतु विदा भेलाह । बाटमे महर्षिगौतमक पत्नि अहिल्याके उद्धार करैत जनकपुर आबि गेलाह । एकटा रमणिक स्थानपर विश्वामित्र बास देलनि ।

विश्वामित्रक आगमन सूनि राजा जनक पुलकित होइत अपन राज पुरहित शतानन्दक सँग स्वागतक हेतु आबास स्थलपर अबैत छथि । विश्वामित्र राम आ लक्ष्मणक वीरताक कीर्ति सुनबैत छन्हि आ परिचय करबैत छनि । जनक जी यज्ञ समारोहमे अएबाक निमन्त्रण सेहो दैत छनि ।

विश्वामित्रके यज्ञस्थलसँ सटले एकटा अत्यन्त रमणीय ठाममे बैसाओल जाइत छनि । तखन दोसर दिन राम, लक्ष्मण आ विश्वामित्रके आदरपूर्वक बजा धनुष यज्ञक प्रयोजन विस्तारसँ बतबैत छनि ।

धनुषक कथा कहैत जनक महराज बजलाह-ई धनुष शिवजीक छनि आ हमरपूर्वज देवरातक संगमे धरोहरक रुपमे रहैक । तकरा बाद ई क्रमश हमरा लग आयल ।

ई धनुष अत्यन्त भारी अछि, अद्‌भूत अछि । एकरा ने केओ उठा सकैछ आने एकरा डोरी केओ तानि सकैछै । खेतमे हर जोतैत काल उत्पन्न बेटी सीताक हेतु हम एकटा प्रण कएने छी जे जनिका बुते एहि धनुषक प्रत्यंचा उठाओल भऽ जाएत तकरे सँग अपन बेटीक हम विवाह करब ।

हमर प्रतिज्ञा सुनि बहुतो राजा लोकनि एत्त अएलाह । मुदा केओ एकरा उठाएब त दुर हिलाइनो ने सकल । परिणमतः सभ अपमानित भऽ चलिगेलाक बाद एक वर्ष धरि मिथिलापर आक्रमण करैत रहलाह । परास्त होइत रहलाह ।

एखन हम यज्ञक आयोजन कएने छी । ओ धनुष हम राम लक्ष्मणके सेहो देखाएब । जँ श्री राम एहि धनुषक प्रत्यञ्चा चढ़ा देथि त हम सीताक विवाह हिनकेँ सँगे कऽ देबनि ।

मुनि विश्वामित्र बजलाह-राजन ! अपने धनुष तँ मगाउ । तुरत धनुष लाओल गेल । आठ पहियाबला लोहाक बढ़का सनुकमे राखल छल जकरा बहुतो सेवक ठेलि कऽ एत्त धरि लओने छल । जनक जी धनुषके देखबैत सगर्व बजलाह-सौसे देवता, असुर, राक्षस गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, नाग आदि धरि धनुषक डोरी नहि चढ़ा सकल तखन फेर प्रत्यञ्चापर टंकार देबाक लेल अथवा हिलएबाक हेतु मनुष्यसँ संभव भऽ सकैछ ?

विश्वामित्र एकटा विश्वास भरल नजरि राम दिश फेकलनि । राम तकरा आज्ञा मानि उठलाह । धनुषके बीचसँ सहज रुपसँ हाथमे पकड़ि उठा लेलनि आ प्रत्यञ्चा चढा देलनि ।

कहल जाइछ ताही धनुषक एकटा टुकड़ा उछटिकऽ वर्तमान धनुषाधाममे खसि पड़लै जे अद्यावधि अछि । आ ताही धनुष महाराजक पूजा अर्चना सालमे एक मास भरि माघ होइत अछि । खासकऽ प्रत्येक रविकऽ लाखो श्रद्धालु जन धनुषक दर्शन हेतु एत्त अबैत अछि आ अपन मनोकामनाक पूर्तिक हेतु भण्टाक भार कबुलैत अछि ।

जनकपुरधामसँ पूर्व उत्तर कोणामे ५-६ कोसपर अवस्थित धनुषाक विकट जंगल छल हयत तहिया । एखनो वन जंगलक भयंकर नाश होइत अवस्थामे जंगल अछि । आब त तकरा आर विधिपूर्वक लगाओल जा रहल अछि ।

सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलेमे नहि पहाड़ क्षेत्रक ग्रामीण महिला सभ हेतु सेहो धनुषा एकटा अत्यन्त महत्वपूर्ण मेलाक रुपमे मान्य अछि । धार्मिक आस्थाक सँग अपन-परारसँ भेट घाट हयबाक एकटा प्रमुख मिलन स्थलक रुपमे सेहो धनुषाके मानल जाइत अछि ।

ओहुना एतेक वृहत रुपसँ मेलाक आयोजन आब एम्हर नहि भऽ रहल छैक । त्रीवेणी सेहो अछि, मुदा ओ ततेक पैघ नहि । धनुषाधामक अपन फूट क्षेत्र छै ।

तेजपात आ टारा-टारी एहि मेलाक प्रमुख खरीदारी । ा दरुपीबा सभक हेतु तरल माछ आ दारु तारीक सेहो फूट विशाल बजार लगैछै । उड़नखटोला, जादुक खेल कहियो काल छोटकी सर्कस, प्रदर्शनी-अतिरिक्त आकर्षणक वस्तु होइछ ।

गाम-गामसँ जनानीसभक हेंज एत्त घुमैत देखल जा सकैछ । आन ठाम सहजे वहार हएबाक उपयुक्त बहानाक अभाव धनुषा दिश चलबाक प्रेरणा दैत छैक-एहि ग्रामीण महिला सभके । रातिमे वगिया, पुरी, चूडा, दही, मीठा अथवा सोहारी आ तरकारी अपना औकात अनुसार तैयार कऽ मेलाक हेतु चलि पडैत अछि ।

धनुषा जएबाक हेतु कोनो निश्चित बाहनक अभाव छैक । जनकपुरसँ बस चलि रहल अछि । टेम्पो सेहो चलैत अछि । अपन अपन साधनसं सेहो लोक जाइत अछि ।

तैयो लोक धनुषा जएबाक लेल पैदलो जाइत अछि । भरि मासक रबि धनुषा भरल रहैत अछि । 'धनुषामकर' ग्रामीण जनजीनसँ सम्वद्ध भऽ गेल अछि - एकर एकटा अंग भऽ गेल अछि - जकर प्रतिक्षा लोक साल भरिसँ करैत अछि ।



नमन गंगे, जय जय गंगे

मिथिलाक जान प्राणमे बसल अछि गंगा । जन्मसँ मरन धरि गंगाजलक आसरा पवित्रता आ मोक्षक हेतु जरुरी मानल जाइत छैक । तँ कोनो घरमे कमसँ कम एक बोतल गंगाजल ओरिआ क अवस्से राखल जाइत अछि ।
गंगा नेपाल भारत बिचक आत्मियता अभिवृद्धिक माध्यम सेहो अछि । कएक गोट एहन अवसर छैक जाहि पर लोक नेपालसँ गंगा स्नानक हेतु भारत पहुँचैत अछि । खास क पहलेजा आ सिमरिया घाट तँ नेपाली श्रद्धालु सभक हेतु विरिष्ट तीर्थस्थल रहल अछि ।
कतिकी पूर्णिमामे गंगाक पहलेजा, सिमरिया आ पटनासँ सटल कतेको घाट सभपर करोड़ो हाथ एक्कहि बेर जखन गंगाक जय जयकारमे उठैत अछि तँ ओहिमे गोटेक लाख हाथ नेपालीयोक रहैत अछि । श्रद्धा आ भक्तिक एहि समुद्रमे स्नान क अपनाके धन्य माननिहार सभक हेतु दुनू देशक भौगोलिक सीमा कोनो अर्थ नहि रखैत छैक । एकात्मकताक ई स्वरुप अलौकिक होइछ, दर्शनिय होइछ ।
मिथिलाञ्चलक एखुन्का क्षेत्रफल लगभग तीन हजार वर्गमील मानल जाइत अछि ई बात डा. जयकान्त मिश्र अपन मैथिली साहित्यक इतिहास (खण्ड १) मे लिखने छथि । ओहुना जखन मिथिलाक सीमाक बात अबैत छैक तँ गंगासँ प्रारंभ होइते छैक । गंगा आ हिमालय पर्वतक माध्यमे पन्द्रह गोट नदीसँ अभिसिंचित होबयबला पवित्र पावन देश तीरभुक्ति थिक -
"गंगा हिमलवतोर्मध्ये नदी पंचदशांतरे ।
तेरभुक्तिरितिख्यातो देश : परम पावन : ॥"

-मिथिला महात्म, १४।२।५,
रामेश्वर छापाखाना, दरभंगा, पृ १४

मिथिलाक सीमा निर्धारणक कममे कविश्वर चन्दा झाक प्रसिद्ध पंक्ति -"गंगा बहथि जनिक दक्षिण ...."त अछिए पं. मुकुन्द झा 'बक्सी' अपन पुस्तक मिथिला भाषा इतिहास (प्रथम संस्करण, बनारस सिटी) मे मिथिलाक सीमा एना निर्धारण कएने छथि -
"गंगा गण्डकी कोशिकी हिम बद्धन परिवेष ।
दक्षिण पश्चिम पूर्व उत्तर जाहि से मिथिला देश ।" पृ १
मिथिलाक जनजीवनसँ एहि तरहैं जूडल गंगाक स्मरण मिथिलाञ्चलक लोक गाथा, गीत सभमे सेहो प्रचूर मात्रामे आएल अछि । यद्यपि कमलाक उपस्थिति जाहि रुपैं होइत छैक ततेक तँ नहि, मुदा अपन प्रभाव शक्तिकैं

लोक गीतक माध्यमे गंगोक विस्तार देखना जाइछ। राजा सलहेसक गाथाक क्रममे चुहड़मलक प्रसंगमे गंगाक शक्तिसँ लोक प्रभावित होइत अछि।

तेहने एकटा लोकगाथा 'लोरिक मनिआर' मे मिथिलाक चर्चा करैत गंगाकेँ एकटा अभिन्न अंगक रुपमे सीमांकित कएल जाइत अछि -

"पूरब जे पुरनिया पुजली पछिम रे विहार।
उत्तर जे नेपाल पुजलिये दछिन गंगाधार॥"

डा. तेजनारायण लालः मैथिली लोकगीतोंको अध्ययन,
विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, १९६२, पृ ४६)

प्रसिद्ध लोक गाथा सलहेसक प्रारंभिक चरणमे सुमिरन करैत कालक एकटा गीतक अंश देखू -

"दक्षिणे सुमिरनमा करैछी गंगा हुनमान के,
दक्षिणे के राजा लगइअ गंगा हनुमान ने।
उनको चढइअ हे माता, बीचे धार गोरुआ ऐ,
उनको चरण मे हे माता, सिरमा नबाबई छी ए॥"

(श्री राजगीर प्रसाद (सं.) श्री सुरमा सलहेस नाटक, दरभंगा, पृ-४-५)

एहि तरहें गंगा हमरा सभक मातृतुल्य,जीवनदायिनी रहलीह अछि।



विलुप्त भ रहल होलीक सौन्दर्य

दृश्य : एक

गामक एकटा दलानमे साँझक समय दिनभरि खेतमे काज क क घर घुरल गृहस्थ, खेतीहर मजदुर, आ समान्यगामबासी अपन लगक दलानमे जम्मा भ रहल अछि। सभगोटे तरोताजा, उत्साहसँ भरल छथि।

श्रीपञ्चमीकबाद प्रायः प्रत्येकदिन एहने जम्मा होइत ई ग्रामीणसभ होलीगीत गाबि मनोरञ्जन कएल करैत छथि।

डम्फ आ झालि सभगोटे सम्हारि लेलक। बभनटोलीसँ गुजनझाके आबएमे देरी भ रहल छैक। सभगोटे हुनके लेल रुकल छथि। सम्पूर्ण ब्राह्मण टोलमे गुजनझाके अपन तालमे होलीगायनके जोडा नहि अछि। एम्हर बेलदार टोलमे पल्टा राउतके सुर, झालिमे एकहि प्रकारसँ डम्फाके तालमे बिनु थकने बजएबाक कला मनमोहके छैक। गायनमे पालो राउत, जगरुप आ बोदल।

गुजनझा सेहो आबि गेल छथि। आब त सुरु हएबाक चाही। टोलक धीआ-पुता, युवा आ घरक आंगनमे होली सुनए लेल जम्मा भेल महिलासभ साकांक्ष भ जाइत अछि।

पल्टा बेलदार एक बेर गाल साफ क क सुर तनैत अछि -

वृन्दावन मोहन दधि लुटै, वृन्दावन।

कहमा छाँछ कहाँ नकबेसरि, कहाँ मोतियनके लर टुटै

गोकुला छाँछ मथुरा नकबेसरी कुञ्जगली मे लर टुटे।

वृन्दावन मोहन...........।

डम्फा आ झालिके आवाज घनकि रहल अछि। सुर आ तालमे होली गाबएबला पल्टु आ ओकरा पछोर धएने सभ गायक मस्तीमे डुवि चुकल अछि। घरक महिलासभ सेहो आंगनसँ स्वर लहरिमे तरंगित होलीगायनके आनन्दमे लिन भ गेल अछि।

गुजनझा अन्तरा जोडैत छथि -

किनकर हाथ कनकपिचकारी, किनकर हाथ अवीर झोरी

कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी राधाके हाथअबीर झोरी

वृन्दावन ....।

रस रंगक ई उत्सव आधा राति धरि चलैत रहैत अछि।

टोलमे छुटल युवा, प्रौढ क्रमशः गायनमे सामिल होइत जाइत अछि। होलीके मादकता जनमानसमे बढल जा रहल छैक। लगभग १५ दिनधरि एहने होलीक लोक मनोरंजनक लेल गायन होइत अछि। जाहिमे सम्पूर्ण गाम सरावोर रहैत अछि। स्वच्छ, पवित्र आ आनन्ददायी सर्व हितेषु टोलीक शुभ आगमनके एहिना स्वागत कएलजाइत अछि।

दृश्य : २

गामक कोनो सार्वजनिक खुल्ला जगह। दिन-खास होलीक दिन। पूर्णिमाक बादक एक दिन मात्र। श्रीपञ्चमीसँ होलीके सुरुवात भवानात्मक आ तथ्यात्मक रुपमे मात्र। आई पूर्णिमामे अन्तरगृह परिक्रमा क गाम घुरलाकबाद होलीके तैयारी चलि रहल अछि। किछु वुढ वृद्धा पुरान डम्फ, ढोलक झालि कतहु कतहु मजिरा ल क होली गएबाक प्रयास क रहल छथि-

मिथिलामे राम खेले होली, मिथिलामे

किनकर हाथ कनकपिचकारी, किनकर हाथ अवीर झोरी

हो किनकर हाथअवीर झोरी

मिथिला मे ....।

रामजी के हाथ कनकपिचकारी

सीताके हाथ अवीर झोरी

हो सीता के हाथअबीर झोरी,

मिथिला मे राम खेलै होरी

मिथिलामे.................।.

गायन सुरमे रहए कि युवासभके एकटा हुल कतहुँसँ अबैत अछि आ हाथमे रहल बेलुनसभ धमाधम होलीगायनमे मस्त रहल प्रौढसभके देहपर फोरैत भगैत अछि। कारी, लील, लाल, पियर रंगक बर्षा होइत अछि। गायकसभके सुर ताल भंग भ जाइत छैक। डम्फा आ झालिमे बाजि रहल सुर ताल बेकाबु भ जाइछ। गायन अवरुद्ध होइत अछि। ओसभ अपना उपर रंग पड़ाबएबला लड़कासभ दिस पिताएल आँखिएँ देखैत अछि- हे भगवान ओसभ त अपने गंजी, कमीज फाटल, मुहमे पेन्ट लगाकए विभत्स भ बनमानुस बनलसभके की कहबै, अपनासँ श्रेष्ठके मर्यादा कर नहि सकबलासँ मुह सेहो नहि लगएबाक अछि। कीसभ खएने हएतैक, गारि देबएमे सेहो देरी नहि लगाएत।

आबक होली एहि त्रासक वातावरणमे मनएबाक वाध्यता रहल अछि। दू तीनदशक भितर समाजमे पावनि तिहारके आत्मसात करबाक प्रवृतिके ई अन्तर होलीमे अधिक पीड़ादायक होबए लागल अछि। घरसँ निकलिकए

अपन साथीभाइ, मित्र-सखाके घर धरि जाकए होली खेलबाक, रंग-अवीर लगएबाक परम्परागत वातावरण आब नहि रहल ।

की त सिन्थिटिक पेन्टसभ मुहमे लगाकए निकलए पड़त, की त जाईत जाईत कोनो होली खेलएबलासँ अनाहकमे दुख देबए बलाँसं मुहमे रंग लगाबएलेल सहज बनि कए रह पड़ैत अछि। अन्यथा किछु होबए सकैत अछि।

होलीके तथ्यांक छैक। कतहुँ नहि कतहुँ दुखद घटना भेले अछि। जी जानक धरिके खतरा रहैत अछि।

की ई होलीउत्सव एकरेलेल आएल अछि । वसन्तऋतुके सभसँ उत्कृष्ट उपहार भेल होलीमहोत्सव। कलर फेस्टिभल। अर्थात रंगक उत्सव। एक रंग कारीके अनेको रंगसँ नुकएलाक बादे स्वच्छ आ पवित्र रंगक उत्पति होइत अछि। जे जीवनके रंग अछि।

मनक कलुषता नुकाकए एकहि रंगमे रंगाकए ई सम्पूर्ण मानव समाज होलीक दिन सद्‌भाव आ प्रेमक सम्बाहक बनैत अछि।

रंग अवीरक सँग नीक निकुत खानाके परिकार ओहुमे एक दोसरके सँग बाँटिकए, ई परम्परा परापूर्व कालसँ चलैत आबिरहल अछि । जकरा विकृत बनाबएके काज होबए लागल अछि । नहि संस्कार, नहि सम्मान, नहि स्वच्छताक खियाल। दारुके अधिक प्रयोगे सभसँ घातक होइत अछि।

होलीक सदभावपूर्ण मनएबाक प्रयोग हमसभ अपने गाममे क चुकल छी । हमेशा होलीमे मारिपिट हएब, अड्डाखाना हएब। गामक माहौले बिगड़ैत अछि। एकबेर हमसभ होलीमहोत्सव गाममे कएल। एक दिन पूर्व गाममे होलीदिन दारु पिबएलेल मना कएल गेल। से भेल आ आश्चर्यजनक रुपमे दिन भरि गाममे घुमि घुमि क लोक होली खेललक। जोगिरा प्रतियोगिता सेहो सम्पन्न भेल आ पुरा गाम शान्त छल। एकरा आबो कियाक नहि प्रयोग कएल जाए।

होली पावनिके कथा

होली कहियासँ मनाबएके सुरु कएलगेल एहिमे एक मत नहि अछि । मुदा सभसँ अधिक प्रचलित कहबी प्रहलाद-होलिका-हिरण्यकश्यपके रहल अछि।

ब्रम्हासँ अपनाके जीवजन्तु, देवी देवता, आ दास अथवा आदमी, राति दिन, पृथ्वी- आकाश, घर, बाहर कतहु,कोनो गोटे मारि नहि सकए तेहन बरदान प्राप्त क हिरण्यकश्यप बहुत कठोर राजा बनि गेल । भगवान बिष्णुके मानएबलासभके दण्ड देबए लागल । तहिना ओकर बेटा प्रहलाद प्रखर विष्णुभक्त निकलल । बाबुद्वारा विष्णुके भक्ति नहि करबालेल कतबो मना कएलाकबादो ओ नहि मानलक । अन्तमे प्रहलादके जानसँ मारबाक निर्णय कएलक । प्रहलादके मारबाक प्रयास कएलाकबादो प्रभुकृपासँ बंचैत देखि

हिरण्यकश्यप आगिमे नहि जडबाक बरदानप्राप्त अपन बहिन होलिकाके स्मरण कएलक । होलिका प्रहलादके ल क आगिमे बैसलीह । आगिमे जड़ाकए प्रहलादके मारबाक निर्णय कएलीह ओ । मुदा ओहिठाम होलिका डहि गेलीह, प्रहलाद जीवित निकलल ।

होलीकाके दहन भेलाकबाद ओकरे स्मृति स्वरुप सम्मत दहनके परम्परा सुरु भेल आ दोसर दिन होली पावनिके सुरुवात भेल । वर्तमान समयमे आर्यसभ द्वारा कएल जाएबला एहि पावनिके प्रारम्भिक प्रमाणके रुपमे ३०० सय ईं पूर्वके एकटा शिलालेख विन्ध्य क्षेत्रक रामगढमे प्राप्त भेलाकबाद ओकर प्राचीनताके इतिहासकारसभ निर्धारिण कएलनि ।

राजाहर्षवर्द्धन सेहो सातम सताव्दीके अपन ग्रन्थ-हर्षरत्नावलीमे होलीकोत्सवके वर्णन कएने छथि । १६ म् शताव्दीक मंदिरसभमे बनाओलगेल मुर्तिसभमे सेहो होलीकोत्सवके अनेको प्रसंगसभ प्राप्त भेल अछि । एहिना ई अतिप्राचीन परम्परा रहल देखल जाइत अछि ।

नेपालक काठमाण्डू उपत्यकामे फाल्गुनशुल्कपक्षके अष्टमी तिथिमे विभिन्न रंगीचंगी कपड़ासँ सजाएल चीर खड़ा क, होलीके शुरुवात भ पूर्णिमाक राति चीरदहनके बाद समाप्त होइत अछि ।

आव की करब

एखन होलीक प्राचीनमर्यादा आ रंग उत्सवके अन्तरनिहित प्रेम सम्बन्धके भावनाक पुनर्स्थापना कए होलीदिनके समाजिक उत्सवक रुपमे एकटा नीति नियम अन्तर्गत राखि मनएबाक सुरुआत करए पड़त । एहिमे ऐन कानुनसँ मात्र नहि हयत ।

समाजक सभ वर्ग अपने आचारसंहिताक निर्माण क एहि पवित्र आनन्दमय रंग उत्सवके जीवन्त आ सर्वग्राही बनएबा लेल पहल करए पड़त । आ एहिबेर त आर सजगता आ सतर्कता जरुरी अछि । कोरोना कहर चलि रहल अछि । नेपालमे कनेक मध्यम भेल सन लगैत छैक तएं लोक सब बेसी निश्चिन्त अछि आ ने मास्क आ ने सामाजिक दुरी कायम कर चाहैत अछि । मुदा भारतमे जाहि तरहक अबस्था आबि रहल छैक ओत्त फेरसं लकडाउनक अबस्था आबि गेल छै । कतेक ठाम त रात्रीकालीन कर्फ्यु सेहो लगाओल गेल छैक । एहि सब बातके ध्यानमे राखिए क होरीक आनन्द लेबाक सोच राखी त उत्तम हएत ।

अगामी होली चैत १६ गते मिथिलाञ्चलमे मनाओल जाएत । खुशी आ उमंगके एहि पावनिके सभ गोटे सदभाव आ सभ्यतापूर्वक स्वास्थ्य सुरक्षाक संग मनाबी ईएह कामना करैत हार्दिक शुभकामना सेहो व्यक्त करैत छी ।



नवल वसन्त नवल मलयानिल....... ।

कखनो काल मोन होइए महादेव अनेरे कामदेवकेँ भस्म कऽ जिआ देलखिन्ह । संसारमे जे जतेक उत्पात मचैत अछि तकर बहुत किछु इएह कामदेवक प्रताप छैक । पहिने तँ सदेह रहैत छलाह । लोक देखिते कात भऽ जा सकैत छल, नुका रहल जा सकैत छल आ तहन हुनक वाणसँ बचल जा सकैत छल । मुदा ओत लोक कल्याणक हेतु हुनका जीआ देलखिन्ह-मुदा अदेह । आर झंझटि बढ़ि गेल । कखन-कत्तसँ ककरा वाण मारि देताह, कहब कठिन । आ दोसर दिश बबाल शुरु-पछोड, नेहोरा-विनती, जीद आ जवर्दस्ती होइत बलिदान धरि । कहाँदन लोक एकरे 'प्रेम' कहैत छैक । आ ई- प्रेमकेँ जाहिर करबाक हेतु कोनो वसन्तक वेगरता कहाँ होइछै । तखन किए वसन्त एतेक हौआ बनि गेल छैक लोकक आगाँ । खास क रीतिकालीन कवि लोकनि तँ वसन्तकेँ बढा चढा कऽ ऋतुराज बना देने छैक । तखन भोगु तकर ताप, संताप आ प्रताप ।

नहि, हमर उद्देश्य कोनो तरहेँ वसन्तक गरिमाकेँ कम करव नहि अछि । मुदा आब वसन्त ऋतुमे अनेरे मोनमे मिलनकेर चाह जागब हमरा गलासँ निचाँ नहि अरघैत अछि । साँच बात तँ ई अछि वसन्तक समय छैक चैत आ वैशाख । कहु विहाड़ि, पानि, सुख्खा वातावरणमे कतौ कोनो संवेग उठि सकैत छैक । तएँ कहाँदन आठो ऋतु अपनामे विचार कऽ पाँच-पाँच दिन वसन्तकेँ दऽ देलकै । तखन ई ऋतु चालिस दिन पूर्वेसँ अर्थात वसन्त पंचमीसँ अपन करामत शुरु क दैत अछि ।

ओना एहि बेर प्रकृतियो अपन उत्पादनकेँ जोगा नहि सकल । अर्थात जड़कलाक जे रुप धुनी आ मेघक पथारसँ शुरु भेल ओ सभ रेकर्डकेँ तोड़ैत फागुनक पूर्व संध्या धरि वायुमण्डलकेँ सर्द कएने रहल । एहनमे ने लोक वाहर कतौ खूलि कऽ जा पौलक ने ओ वसन्तक राग रंगमे डुबि सकल । कोना वसन्त अएलै ई फेर सँ साहित्येमे लिखल गेलै आ तखन मधुमासक आभास लोक पौलक ।

समयो केहन ! एही मास आ ऋतुक अभ्यन्तर सरस्वती पूजा, भेलेन्टाइन डे, फगुआ आ मकर मेलाक संयोग जुड़ैत छैक । खूजल आकाश, घरसँ बहरएबाक छुट आ मिलन एवं विछोड़क अनुभूतिक सत्य ।

वसन्त ऋतुक मादकता प्रति हमरा कनेको संदेह नहि अछि । ई एकटा विशिष्ट प्रकारक ऋतु छैक । धनकटनी समाप्त भऽ गेल रहैत छैक । गाछ वृक्षमे नव नव पल्लव आबऽ लागल होइछ । फूलवारी , गौछली सभमे फूल

सभ अपन जवानीक छाप छोड़ लागल होईत छैक । जखन फूल फूलएतै तखने भमरा ओहि पर बैसतै आ रस चुसि कऽ आनन्द उठौतै । एहि खिल खिल हँसैत प्रकृतिक स्वरुप आन कोनो ऋतुमे देखबामे नहि अबैत अछि तएँ ई ऋतुराज भेल । भगवान श्री कृष्ण तएँ ने गीतामे वसन्तकेँ अपने रुप कहलनि अछि - ऋतु नाँ कुसुमाकरः' अर्थात ऋतु सभमे फूलक भंडार वसन्त ऋतु हम स्वयं छी ।

ई सभ तँ भेल कवि, साहित्यकारक बात जे प्रकृतिकेँ अपना भितरक उमंगकेँ पर्याय बना सदैव सँ प्रस्तुत करैत अएलाह अछि । रीतिकालीन कवि लोकिनक समयमे प्रकृतिक एहि सौन्दर्यकेँ रसपान करबाक वातावरण छल हएतैक । आजूक समयमे वन जंगल समाप्त छै । वर्षाक अभाव आ गाछ बीरिछमे फूलबला गौछलीक तेहने उपेक्षा । ने फूल फूलएतै, ने वसन्त अएतै । आ कतौ आबियो गेलै तँ तकरा भोगतै के ?

विआह कएल नवकी घरबालीकेँ छोडि विदेश जाएलेल नागरिकता, पासपोर्ट आ भीसाक हेतु फिरिशान आजुक युवा, रोजी रोटीक खोजमे परिवारक बोझ कान्हपर उघैत रनेबने बौआइत पढुआ बौआसभ, अथवा कोनो निस्सन निकास नहि पएने मादक पदार्थक संग ड्रग्समे रमल भकुआएल, बौखल परिवारक भविष्य सभकेँ पलखति कहाँ छैक जे ओ बौआ बौआ कऽ फूलल गाछ खोजत, गाछ सभमे आएल नव पल्लवसभकेँ गनत अथवा भमराकेँ रसचुसैत देखि मोनकेँ विचलित करैत छाती पीटत । कहु छैक पलखति .... ।

प्रेमक लेल नम्हर समयक अपेक्षा होइछ । सत्संग आ समन्वय मोनमे प्रेमक संचार करैछ । कवि सभक प्रेमक चर्च एहने छल-जनम अबधि हम रुप निहारल, तील तील नूतन होए... । जन्म भरि रुप निहारब आब की संभव थिक । चट मंगनी पट विआह । ताहु सँ नहि भेल तँ जवर्दजस्तीयो कऽ लेलहुँ । आतेककेँ आगाँ पाछाँ करैत, मान मनौवलि आ वात कहिनी सुनओ ....।

एहनमे वसन्तक चर्च कतेक प्रासंगिक होइछ । मुदा से कयल त जएबे करत, एहु दुआरे जे एहि ऋतुक सभ सँ मादक, मनोरंजक आ रागात्मक उत्सब होरी लोक हृदय खोलि कऽ मनबैत अछि । वसन्त पंचमीक दिनेसँ एकर शुरुवात भऽ जाइत अछि । हँ ढोलक, झालि आ मृदंगक संग पहिने जे एक डेढ मास लोक होरी गबैत छल, तकर सर्वथा अभाव भऽ गेल अछि । मुदा होरी मनाओल जाइछ ओहने भव्यताक संग ।

सप्तरंगी आभरणक उपस्थापना करैछ होरी । लोक साल भरि एकर प्रतिक्षा करैत अछि- जे जिए सँ खेले फागु, जे मरे से लेखा लिए । ताहु सँ एहि मासक अपन आनन्द होइछ, मोजर होइछ ।

वसन्तकेँ स्वाद लेबाक कहाँदन एकटा उमेर होइछ। ओना कवि लोकनि ओ कालिदास (ऋतु संहारम्) हो, हर्ष (रत्नावली), गोस्वामी तुलसी दास (रामचरित मानस) हो, जायस (पद्मावत) हो अथवा महाकवि विद्यापति (पदावली) हो- अपन उमेर देखि कऽ वसन्तकेँ नहि भोगलनि। तएँ उमेरक वात कहि साठा तँ पाठाक पुरान कहबींकेँ निरर्थक बनएबाक अथवा बुझवाक भूल केओ नहि करओ। देहक मांशमे पेशी कमजोरी भऽ सकैछ। मोनमे उठऽबला रागक तरंग कखनो बन्न नहि होइछ, तएँ वसन्तक आगमनक स्वागत समाजक जेष्ठ नागरिक सेहो तहिना प्रफुल्लित भऽ करैत छथि। हँ ओ युवा जकाँ ने बजैत छथि, ने करैत छथि। आने हाथमे गुलाबक फूल ल क कोनो कथित प्रियसीक पाछा दौगब उचित बुझैत छथि। तखन एकटा अवसर जरुर अबैछै जखन ओ अपनाकेँ रंग आ अबीरक संग सरजमिन पऽ उझलि दैत अछि- होरीमे बुढिआ जुआन लागे सदिखन।

एहि उमंग भरल मासमे होरीक आगमने होइछ - राग आ स्नेहक सनेस बँटबाक लेल। वसन्तक ई चरमोत्कर्ष थीक। महाकवि विद्यापति की खूब वसन्तकेँ भोगलन्हि अछि -

'नव वृँदावन नव नव तरुगण, नव नव विकसित फूल।

नवल वसंत नवल मनयानिल, मातल नव अतिकूल॥'

आउ, हमहुँ सभ एहि अलोकिक वसन्तोत्सबक अवसरपर उल्लासमय पर्व होरीक अबीर आ रंग सँ अपन मोनक सभ कलुसित विचारक कारी कोनकेँ एकरंगाह, सहज आ स्वाभाविक प्रेमक रंगमे बोरि ली।



गाबथि मंगल सोहागिन हे चहुँ दिसि आनन्द छाइ..

राजा जनकके भव्य महल। आई ई विशाल आ सुन्दर महल मात्र नहि सम्पूर्ण जनकपुर दुलहिनके जकाँ सजाओलगेल छैक। महिलासभ आकर्षक परिधानमे एमहर-उमहर कऽ रहल छथि। राजा जनकके खुशीके ठेकान नहि। कखनो घरमे जाकए पत्नि सुनयनासँ दू चारि बात करैत अछि, कखनो दरबज्जा पर आबिकए उचकि कऽ मुख्यद्वारके दिस देखैत छथि। आँखि चंचल छैक, ककरो आबएके इन्तजार छैक।

महलके विशेष पण्डालमे शहनाई वादक सुमधुर धुनसँ पुरा परिवेशके मोहक बना रहल अछि। अतिथिसभ राजा जनकके अभिवादन करैत यथा स्थान बैस रहल छैक। सभ गोटेके नजरिमे एकटा उल्लास छैक, उत्साह छैक, किछु पाबएके खुशी छैक।

महिला अपन प्यारी सखी सीताके दुलहा रामक स्वरुप स्मरण कराकए हंसी, मजाक कऽ रहलीह अछि। तहिना अन्य तीन बहिनसभके सेहो अपन दुलहा राजाके आगमनके सुखद इन्तजार छैक। सभदिस खुशी एवं उल्लासक माहौल छैक।

आई अग्रहन शुक्ल पञ्चमीक दिन छैक। शुभ मुहुर्तमे राम-सीता विवाह बन्धनमे बन्हाएबला छथि। फुलबारीमे जखनसँ आँखिमे हुनकर छवि बैसल छैन, सीता स्वयमके सम्हारि नहि पाबि रहल छथि। धनुष यज्ञके कठोर क्षण, अन्य राजा- महाराजासभके धनुष खण्डित करएके प्रयास। जँ कोनो दोसरे गोटे ई काज कऽ दैत तऽ ! सीता एखनो सिहरि जाइत छथि। मुदा अन्तःस्थलमे बैसल रामके चित्रके भला के तोड़ि सकैत छल। विधिके ई खेल अन्ततः अपन मोकाम पर आबिकए समाप्त भइएटा गेल अर्थात् राम धनुष तोड़ि देलथि आ सीताके बरमाला पहिराबएके हकदार बनि गेलाह।

आजुक एहि पावनि तिथिमे अयोध्या नरेश राजा दशरथ अपन बरियातीके सँग जनकपुर आबि रहल छथि ! सभ गोटे एक ठामपर जुमताह। चारु भाइ दुलहाके रुपमे विवाह विधिमे बनहएताह।

लिए, मुख्य दरबज्जापर हल्ला शुरु भऽ गेल। द्वारपाल दौड़ैत राजा जनकके सूचना दैत अछि- 'बरियात आबि रहल छैक।' राजा जनक रानी सुनयनाके जानकारी करबैत छथि आ बरियातीके स्वागत करएलेल मूल दरबजाके दिस झटकारैत बढ़ैत छथि।

महिला सभ भला कहाँ पाछाँ रहबाली छलीह। एक ठाम जम्मा भेलीह आ विविध व्यवहारक सभ सामग्री एकट्ठा कऽ रामके परिक्षण करए चलि पड़लीह। बस, माहौल सुललित कंठसँ सराबोर भऽ गेल -

“कओने नगरियासं एलै बरियतिया हे रसप्रीति माती ।
कओने नगरिया भेलै शोर हे रस प्रीति माती ॥
अबध नगरियासं एलै बरियातिया हे सस प्रीति माती ।
मिथिला नगरिया भेलै शोर हे रस प्रीति माती ॥
परिछय चललनि सखिया सहेलिया हे रस प्रीति माती ।
रोशनी सं भइ गेलै इजोर हे रस प्रीति माती ॥”

(वैदेही विवाह संकीर्त्तनः स्नेह लता)

मिथिलामे प्रचलित विवाह पद्धति अनुसार राम-सीताक विवाह सम्पन्न होइत अछि । आ जेना होइत आएल छैक- सीता जी रामजीके सँग विदा कऽ देल जाइत छथि । बस ! मिथिलावासीसभ एकरा बादक कथा स्मरण नहि करए चाहैत अछि ।

जानकी मन्दिरके महन्थ महामण्डलेश्वर राम तपेश्वर दास वैष्णव बहुत आवेशसँ कहैत छथि- ‘बहुतही’ जतनसँ सीताजीके लालन पालन कएलगेल आ एक विश्वास आ आशाके सँग अयोध्या भेजल गेल । मुदा ओकराबाद की भेल ? की हुनका सँग अयोध्यावासी न्याय कऽ सकलनि ?’ सीता वनगमन प्रसँगके पचा नहि पबैत अछि मिथिलावासी !

महन्थ दासजी के ई मर्मसँ भरल अभिव्यक्ति एक मिथिलावासीक उच्छवास छैक । एहि लेल सेहो अग्रहन महिनामे मिथिलामे बेटी विवाह करएके चलन नहि छैक । एखनो आदमी एकरा मानि रहल अछि, मुदा आब एहि पर कोनो बन्देज नहि छैक । सांस्कृतिक विचलन पर किनकर अधिकार हेतै । उपयोगितावादी संस्कृति आ हमरासभके समाज !

जनकपुरमे जगत जननी जानकीक जन्म होनाई आ पुरषोत्तम श्री रामक धनुष तोड़िकए हुनका सँग विवाह बन्धनमे बन्हएनाई- एकटा विधि विधान छल, एहन हमरासभके धर्म ग्रन्थ कहैत अछि । मुदा मिथिलावासी अपन सीताके अपने घरसँ, अपन हृदयस कखनो जाए नहि देलक, विभिन्न रुपमे हुनका स्मरण करैत रहल आ एहि लेल सेहो जनकपुरधाममे प्रत्येक वर्ष मार्ग शुल्क पञ्चमीके भव्य विवाह पञ्चमी महोत्सवके आयोजन कऽ हजारों वर्ष पूर्वके ओहि क्षणके जीवीत कऽ अपन श्रद्धा व्यक्त करैत आएल अछि मिथिलावासी ।

किछु दशक पहिने विवाह पञ्चमी महोत्सव पन्द्रहसँ एक महिना धरि भव्य मेलाके रुपमे आयोजित कऽ मनाओल जाइत छल । सर्कस, थिएटर, जादूखेल, मौतके कुंआ जेहन खेल-तमाशा अबैत छल तऽ भारतके पंजाब लुधिआनाक गर्म कपड़ाक दोकान, जडी-बुटीक प्रमाणिक कैम्प, खाद्य सामग्री-मशालाके बाजार, भाडा-वर्तनके बड़का-बड़का दोकान । दाँत बनबबला त महिनो दिन

अपन कैम्प लगौने रहैत छल । अन्य बहुतो सामान विक्री होइत छल । तिरहुतिया गाछी रमझम करैत छल । टुरिगं टाकिजमे फिल्म देखए लेल गांम-गांमसँ आदमीसभ अबैत छल । पंक्तिलेखक सेहो पहिल सिनेमा एही टुरिंग टाकिजमे पछाड़ीक सीट पर देखने छल । देवानन्दक फिल्म रहैक-दुश्मन ।

पहड़िया गाछी,जत्त (वर्तमान नगरपालिकाके नजदिक) पहाड़सँ आबि महिलालोकनि पति चुनैत छलीह, विवाह होइत छल । भटमास, समतोला पहाड़सं आनल जाइत छल । जड़ी-वुटि आनल जाइत छल । ओ सब एम्हरसं नून,मशाला,कपडासभ ल जाइत छल । बारहबीधामे घोड़ा-हाथीक दौड़ होइत छल । इनाम बला । लोक खूब आनन्द उठबैत छल । आब ने ओ देवी आने ओ कराह छैक ।

पूजाके फूलके लेल राम-सीताक बागमें जेनाई, एक दोसरके देखनाई, मोहित होनाई, नगर दर्शन प्रकरण, धनुष यज्ञ, धनुषक खण्डन, राम-परशुराम सम्वाद, राम-सीता विवाह, राम कलेवा, विदाई,सभ अत्यन्त विधिवत् आयोजित होइत छैक । मटकोरके सुन्दर विधि महिला अत्यन्त दत्तचितसँ सम्पन्न करैत छथि । ई सम्पूर्ण विधि विगत पाँच दिनसँ चलति रहैत छैक ।

आ तखन मार्ग शुक्ल पञ्चमी तिथिके जानकी मन्दिरके महन्थके नेतृत्वमे भव्य सरियातीक लश्कर राम मंदिरके महन्थके नेतृत्वमे चलल बारातीके स्वागत करएलेल आ प्रसिद्ध रंगभूमि मैदानमे मालाफेर अर्थात् स्वयंबर विधि सम्पन्न करएलेल निकलैत अछि तऽ सम्पूर्ण नगरके वासी सड़क पर सँगमे रहैत छैक से त रहबे करैत छैक, अपन-अपन अटरिया पर ठाढ़ भऽ एहि अलौकिक दृश्यके अपन नयनमे जी भरिकए समेटैत जय-जयकार करैत रहैत अछि- बोलो श्री सीता-राम की जय !

वारहबीधामें स्वयंबरके वाद नगर पक्रिया होइत अछि । फेर मंदिरके प्राङ्गनमे विशेष रुपसँ बनाओलगेल बेदी पर निर्धारित समयमे विधिपूर्वक राम-सीताक विवाह प्रकरण सम्पन्न कएल जाइत अछि । हजारों दर्शनार्थी, जे नेपाल-भारतके विभिन्न ठामसँ एत देखएलेल आएल रहैत छथि ओ सभ एहि रसभावन प्रसंगके देखि मंत्र मुग्ध भऽ जाइत छथि । हुनकासभके आगा त्रेतायुगीन विवाहोत्सवके सुमधुर क्षण अनायास प्रकट भऽ जाइत छैक -

"गरदनि में लपटल चादर हे आगू-आगू सीया माइ
करथि मंडप परिक्रमा हे दुलहा चारु भाइ
बसहा जकां सब घुमथिन हे नहि चलै प्रभुताइ
गाबथि मंगल सोहागिन हे चहुँ दिसि आनन्द छाइ...।"

(वैदेही विवाह संकीर्त्तनः स्नेह लता)

'सियावर रामचन्द्र की जय, जनक सुता सिया सुकुमारी की जय'- पुरा पण्डाल जय-जयकारसँ गुंजित भऽ जाइत छैक । जानकी मन्दिरके प्राङ्गनमे बनल मड़बा पर ई अद्‌भूत दृश्य देखएलेल आएल दर्शनार्थीके सेहो भीड़के सुरक्षाकर्मी समहारए नहि पाबि रहल अछि । चारु दिस अफरा-तफडी मचल छैक, बस एक झलक मडबा पर घुमैत राम-सीताके पवित्र जोड़ीके देख लेल जाए ।

ई क्रम प्रत्येक वर्ष होइत छैक । प्रत्येक बर्ष मार्ग शुक्ल पञ्चमीके दिन भव्य विवाहोत्सव जनकपुरमे मनाओल जाइत अछि जत अयोध्यासं आएल सन्त महन्त बरियातीक रुपमे आबि शोभा बढ़ाओल करैत अछि ।



झूला झूले सिया सुकुमारि ना ....

प्रथम दृश्य

सैयोक संख्यामे दर्शनार्थी जानकी मन्दिरमे झूला देखबाक लेल उमटाम करैत । अंगनई सँ मुख्य मन्दिरक प्रकोष्ठ परिसरमे सजाओल झुलन कार्यक्रमकेँ एक नजरिसँ देखबाक लेल कर्रह पड़ैत लोककेँ सम्हारबाक हेतु प्रहरीकेँ दम फुलैत । लोक श्रीराम चन्द्रकी जय , सियासुकुमारी की जय..सन, सन नाराक संग निचका खाढीसँ आगाँ बढ्बाक साहस आ ठाओं पएबाले अपस्याँत ।

भितर कोनो नचनियाँ पार्टी झूला, मलार, बारहमासा आदि गबैत दर्शककेँ मनोरंजन कऽ रहल होइछ । शास्त्रिय विधाक सामान्य ठुमकी चालि बला नाचमे नचैत नचनियाँक बोल बाहरमे आफन तोडैत भीडकेँ आर उत्तेजित करैत अछि -

बरिसन चाह बदरबा हे उधो !

खन बरिसय, खन दामिनी दमसय

खन-खन बहय बयरबा हे उधो !

पुरा मन्दिर परिसर भक्तिमय भऽ उठल अछि । सभतरि एकटा श्रद्धा, आनन्द आ शाँन्तिकेँ अपेक्षा ।

दोसर दृश्य

जानकी मन्दिरमे झुलनोत्सव । प्रकाश कमजोर अछि । महन्थजीक अनुहारपर ओ रौनक नहि छनि । आयक सम्पूर्ण श्रोत अरगजा पर आ तेलहा मोरहाक मोहारपर बनल दर्जनो पक्की घर तोडि देल गेल छैक । मात्र चढौनापर आश ... से कते कोना ककरो पत्ता नहि होइछ । महन्थजीक अनुहार पर भले उदासी होइक , लोकमे उत्साहक कमि नै छैक । मुदा तेहन उत्साही लोकक संख्या बड़ थोड़ अछि । पहिनुका नाच गान नापता अछि । ने ओ देवी आ ने ओ कराह । तखन झुलाक विधि पुराओल जा रहल अछि ।

ई दुनू दृश्य जनकपुरक झुलनोत्सवक तीन दशक भितरक कथाकेँ स्पष्ट करैत अछि । पहिने जनकपुरक दर्जनो कुटीमे झुलाक कार्यक्रम होइत छल । जानकी मन्दिरमे शास्त्रिय नाच गान, रामन्दिरक झुला झुलाघरमे फिल्मी नाच आ गान । तहिना सरंचिया,बहुअर्बा कुटीमे छोकरवाजी नर्तक सभक कमाल ।

रत्नसागर , विहारकुण्ड, रामानन्द आश्रम, बहुअर्वा कुटी आदि महत्वपूर्ण कुटीसभ छल । जत्त लोक सम्हरि कऽ झूला देखय जाइत छल आ नाच गानकेँ आनन्द उठबैत छल । आव तँ ओ बितल दिनक कथा भऽ गेल अछि ।

झुलाक आयोजन प्रत्येक वर्ष साओन द्वितियासँ पूर्णिमा धरि होइत अछि । सिंहासनपर रामजानकीक मूर्ति राखल जाइछ । रेशमक डोरीसँ बान्हि निरन्तर झुलाओल जाइछ । गीत नाद भक्ति-अध्यात्मक माहौल होइछ ।

एकर प्रारम्भपर एक नजरि

वास्तवमे झूलाक प्रारम्भ सन्त परम्पराक शुरुआत संगे भेल हएत एहिमे शंका नहि । सन्त लोकनि खुला चौरमे, अथवा कोनो वृक्षक निचाँ बास बसितो अपन झोरीमे श्रद्धापूर्वक रखने शालिग्रामकेँ छोटका आसनमे राखि झुलाओल करैत छलाह । ई क्रम चलल से आइ धरि जारी अछि । सन्त सम्प्रदायक गढ मानल जाइत अयोध्या आ कृष्ण सम्प्रदायक गढ मानल जाएबला वृन्दावनसँ ई झुला मिथिलाक एहि प्राचीन नगरी जनकपुरमे आएल हएबाक अनुमान स्थानीय सन्त लोकनिकेँ छनि । कहल जाइछ जनकपुर सँ जखन सीताजीकेँ विदाई भेलनि सासुर दिश अर्थात अयोध्या दिश तखन दहेजमे जे जतेक सोना, मणि, आभूषण सभ देल गेल तकरा रखबाक हेतु महलमे ठाम कम भऽ गेलैक तएँ बाहर राखऽ पडलैक जे पहाड जकाँ टलिआ गेलैक । ओ मणि पहाडपर राम सीता साओनमे झूला झूलथि । तकरे अनुसरणपर जनकपुरक बारहविग्घामे झूलाक प्रारम्भ दिन सभ मठ मन्दिरक मूर्ति सहित आएल सन्त महन्थ झूलाक आयोजन प्रथम दिनमे करैत छथि जकरा मणिमण्डप कहल जाइछ । पहिने तँ बाबन गोट कुटीसँ युगल मूर्तिक आसन अबैत छलैक । भव्य मेला लगैत छलैक । आबतँ जनकपुरोकेँ लोक मणिमण्डप विसरि गेल अछि । ओना सन्त महन्थ एखनो ई परम्परा कायम रखने अछि ।

अयोध्या आ वृन्दावन दिश होइत झूला जनकपुरमे जानकी मन्दिरक निर्माणक बाद व्यवस्थित रुपें हएबाक बात पुरना सन्त लोकनि कहैत छलाह जकर आदि श्रोत भेलथि जानकी मन्दिरक प्रथम महन्थ महात्मा सूरकिशोर दास । महात्मा सूर किशोर दासक जनकपुर आगमनक समय सन् १७६० मानल जाइत अछि । अर्थात २५४ वर्ष पूर्व एत्त झुलाक प्रारम्भ भऽ चुकल छल । मुदा एकरा व्यवस्थित कएलनि मौनी बाबा । जनकपुरक आध्यात्मिक विकासक पुरोधा व्यक्तित्व । झूलामे आकर्षणक कमि आ लोकक सहभागिता वर्तमान समयमे बेसी भऽ गेल अछि । साँझ कऽ जखन गामघरसँ आएल लोकक भीड़ मन्दिर दिश जाइत देखल जाइत अछि तँ स्थानीय लोक झूलनोत्सव हएबाक बोध करैत छथि । ई घटैत आकर्षणक पाछाँ सुरक्षाक भावना प्रवल रहलैक अछि । एहि ठामक बुजुर्ग सन्त लोकनि जनकपुर चुरोट

कारखानाक निर्माणक बाद क्रमशः झूलामे ह्रासक बात बतौने छलाह कहियो । हुनक तर्क रहनि- ई कारखाना अएलाक बाद लोकक जमात नगरमे बढलैक । जनकपुरमे विजली नहि छलैक । मन्दिरमे पैट्रोमैक्स तँ रहैक, बाट-घाट कोन उपाय । रातिक मेला । महिला सुरक्षाक प्रश्न आ दू चारि घटना तेहन भइयो गेलैक । दर्शक पतराय लागल । मन्दिरसभ मठेर लागल । सम्पतिक खेल शुरु भेल । मठ रहि गेल, मन्दिर गाएब होबय लागल आ ताहि संगे झूलनोत्सव सेहो ।

मुदा सन्त सम्प्रदायक एकटा धार्मिक अनुष्ठानक रुपमे झूलाक निरन्तरता जरुरी अछि । एखन जाहि रुपमे रहल अछि, तकरा आर देखगर रुपमे लाबऽ पडत । एद्यपि जानकी मन्दिरक महन्थ रामतपेश्वर दास वैष्णव जानकी मन्दिरक झुलनोत्सव परम्परामे कोनो कमि नहि आएल, मात्र दर्शकक आभाव देखबैत छथि । अपना ठाममे ओहो ठीक भऽ सकैत छथि, मुदा दर्शक, श्रोताकेँ आगा लएबाक हेतु आधुनिक प्रविधिक प्रयोग करैत झुला महोत्सवकेँ भव्य बनाओल जएबाक चाही । जाहिमे मणिमण्डप अर्थात मणि जडित पहाडक दृश्य बना कऽ ओहिपर झुलामे राम सीताकेँ झुलएबाक मनोरम दृश्य जानकी मन्दिरक प्रांगनमे जँ राखल जाए तँ एकरा प्रति आकर्षण बढतैक । मुदा से करओ के ?

मन्दिरकेँ ट्रष्टरुपमे लऽ जएबा लेऽ बेहाल पक्षक आगाँ एहन कोनो योजना छैक कि नहि । सार्वजनिक हएबाक चाही । धर्मशाला आ मोहार कब्जा सँ मात्र जनकपुरक सौन्दर्य आ गरिमा नहि बढतैक ।

एतुक्का साँस्कृतिक मूर्त अमूर्त एहने सम्पदा सभकेँ संरक्षण सम्वर्द्धन कएलासँ एकर विशिष्टता बाहर जएतै । जाहि सँ पर्यटक सभ लाभान्वित होबऽ एत्त आएत ।

राम मन्दिरक झूला सेहो नामी होइत छलैक । मुदा पन्द्रह दिनक झूलाक हेतु गुठी संस्थान सँ तीस हजार टकाक दरवन्दीमे कोना झूला होइत छलैक ई महन्थे सभकेँ बुझल हएतनि । आबोक अवस्थामे बेसी सुधार हएत से सम्भव नहि । तहन दुर्गा पूजामे जाहि तरहे स्थानीय युवाक्लब सभ सक्रिय होइत अछि, झूलनोत्सव सन प्राचीन आ गौरबशाली परम्पराकेँ आर आकर्षक बनएबा लेल समाजिक संगठन सभ आगाँ आबए तँ एकर गरिमा अवश्य बढतैक ।

जनकपुरमे साओनक इजोरिया भरि मठ मन्दिरक प्राङ्गन सँ आबबला स्वर लहरी- झूला झूले जनक दुलारी, झूले सीया सुकुमारी ना ....क प्रतिक्षा करैत झूला प्रेमी लोकनिक हेतु आबबला समय पुनः तेहने गुलजार होइक आ रेशमकेँ डोरीक तानपर सजल सिंहासनपर झूलैत युगल जोडीक दर्शन सुख प्राप्त होइत रहैक, इएह शुभकामना ।



नयाँ वर्ष मनएबाक लोक परम्परा : जूडशीतल

मिथिला क्षेत्र प्राचीन समयेसँ प्रकृति प्रेमी रहल अछि। एकर प्राचीन वास सदानीराके मोहारमे रहल विराट जंगल आ दल दली माटिके कड़ा आ सफा क क बसाओलगेल तथ्य सम्मत कथा अछि। ओही समयमे एहि क्षेत्रक राजा आ प्रजा प्रकृतिपूजक बनल आ कृषि संस्कृतिक निरन्तर साधक भ अपन जीवनयापनके आधार बनाकए रखलक । सम्भवतः तकरे कारण सेहो मिथिलाञ्चल बासीसभ मनाबएबला अधिकांश पावनि-तिहारसभ कृषि जन्य उत्पादनसँ सम्पन्न कएल जाइत अछि। अध्यात्म आ संस्कृति परम्परा प्रतिके प्रतिबद्धता एहि क्षेत्रक बासिन्दासभके मूल जीवनी मन्त्र रहैत अएलाक बादो आब ओहि रुपमे देखब दुर्लभ होइत गेल अछि।

कर्मक्षेत्रमे निरन्तर व्यस्तता, घरसँ विदेश रहिकए धन कमएबाक बाध्यता या ईच्छासँ परिवार आ समाजसँ दुर होइतगेलसभ अपन पुर्वजसभ कायम रखने ई लोक परम्परासभके आब आगा ल जा सकबाक अवस्थामे नहि अछि। ताही कारणें सेहो ओझलमे पड़ैत गेल अछि।

एहि परम्परामे रहल कृषितन्त्रमे आधारित पर्यावरणीय चेतनाक प्राचीनतम सम्वाहक लोकपावनि जूडशीतल अछि, जकर स्वरुप आब बहुतो परिवर्तन भ गेल छैक। अपन घर आंगनामे देवी-देवताके साक्षी राखि मनाओल जाएबला ई जूडशीतल पावनिमे दू दिनक अन्नपूर्णा महोत्सवके बदला नयाँ वर्षक आगमनमे कतहुँ घरसँ दुर जाकए पिकनिकके नाममे जथाभावी खान-पीन करबाक चलन होबए लागल अछि। एहि पावनिमे होबएबला सतुआइनके समय गहुमके सतुवा आ आमके टिकुलाक चटनीके स्वादके माधुर्यके दारु आ माछ-मासुक स्वाद संग बदलबलासभके सांस्कृतिक विरासत प्रति उपेक्षा व्यवहार देखएलासँ ओकर क्षति समाजके चुकाबए पड़ि रहल छैक। समय रहैत एहि दिस ध्यान पहुँचाबए पड़त।

की अछि जूड़शीतल

विक्रम सम्वतके शुरुवातके पहिल दिन अर्थात बैशाख १ गतेसँ शुरु होइत अछि ई पावनि। यद्यपि बैशाखके प्रारम्भ संगहि विभिन्न समूदायमे अनेकों प्रकारके उत्सवसभ मनाओल जाइत अछि। नेपालमे विक्रम सम्वतके आधारमे राज्य व्यबस्थाके संचालन भेलासँ एकर महत्व स्वतः बढल अछि। मिथिलाञ्चलमे ई पावनि नयाँ वर्ष, लोकपर्वके रुपमे परम्परागत रुपमे कृषि संस्कृति आ पर्यावरणके संरक्षणके सन्देशक सँग मनाओल जाइत अछि। बैशाख १ गते सतुआइनक रुपमे विधि विधान कएल जाइत अछि। घरक

देवताके जौके सतुआ आ पचीस गोट आमके टिकुला चढाकए पूजा-आजा कएलाकबाद प्रसादके रुपमे सतुआ खाएल जाइत अछि।

ओकरबाद घरमे भात आ बेसनके बरी बनाकए ओकर तरकारी बनाओल जाइत अछि। दहीमे मसाला मिलाकए करही आ बेसनके बरी राखि तरकारी बनाकए ओहे भात आ करही-बरही खाएल जाइत अछि । एहि क्रममे तरुवासभ सेहो तड़िकए सपरिवार आनन्दसँ खाइत अछि । बनल खानाके दोसर दिनकेलेल सुरक्षित राखल जाइत अछि। पहिने फ्रिज नहि रहैत छल, भातमे पानि मिलाकए राखल जाइत छल। नहि बिगरैक से मानि क।

दोसर दिन २ गते बैशाख वास्तवमे जूड़शीतल पावनिके मूल आयोजन दिन होइत अछि। ताहि दिन भिनसरे बड़का आदमीसभ अपनासँ छोटसभके हाथमे रहल लोटाके पानि दाँया हाथमे राखि माथमे रखैत थपथपाकए आशिर्वाद दैत अछि । ओएह आशिर्वाद देबाक परम्पराके जूड़शीतल अर्थात शीतलतासँ जूडैबाक अर्थमे लेल जाईत अछि।

तकराबाद घरके सदस्यसभ अपन-अपन बारी, फुलबारीसभमे रहल गाछके जड़िमे पानि रखैत अछि । गाछसभके सिंचन एहि पावनिके महत्वपूर्ण पक्ष होइत अछि।

घर घुरलाकबाद युवासभ पहिने पीबाकपानीके एक मात्र श्रोत इनार आ नहाएबला, कपडा धोबएबला पोखरिके सफाई करैत छल। ईनारमे चुना राखि स्वच्छ बनाओल जाइत छल । आब त पीबाकपानीके श्रोतसभ चापाकल आ नहाएबला टंकी भेलाकबाद इनारसभ उजाड़ होइत गेल अछि त पोखरिसभ माछ पालनके केन्द्र भ चुकल अछि।

दोसर दिन अर्थात जूड़शितल पावनिमे एक राति पहिने बनाओलगेल खानाके बचाकए राखल गेल खएबाक चलन अछि जकरा चैतके खाना, बैशाखमे खाएब कहल गेल छैक । जूड़शीतलके दिन थालोसँ एक-दोसरसँग खेलबाक चलन सेहो रहल अछि जकरा धुरखेल कहल जाईत अछि। ई स्वच्छताक हेतु लोक शिक्षा होइछ।

खानामे आमके चटनी आ सोहीजनके तरकारीके विशेष प्राथमिकता सँग खाएल जाइत अछि।

पावनि भितरके निहितार्थ

जूड़शीतल पावनि सही अर्थमे पर्यावरण संरक्षण आ सर-सफाई प्रतिके जनचेतना जगाबएबला लोक अनुष्ठान अछि । आई सरकारी, गैर सरकारी निकायसभद्वारा लाखो, करोडों खर्च क क, फेसबुकमे अपन समाजसेवी तस्वीर शेयर क क, अपना सहितक सफाई करैत कालक चित्रसभके टैग क

क स्वच्छता अभियन्ता बनबाक अवस्थाके सृजना कएल जा रहल अछि। मुदा हमरसभके पूर्वजसभ जीवनशैलीमे एहन लोकपद्धतिक विकास कएलनि जे कमसेकम एक दिन अर्थात सालके प्रारम्भ होबएबला दिन सालभरिके लेल मार्ग दर्शन होय तएं अपन समाज, परिवारक सदस्यसभके भाई-चारा, प्रेम-सदभाव सँगहि पानिके बुन्नसँ सिंचित करैत सदैव शीतल आ सहज रहबाकँ आशिर्वाद दैत छथि । बैशाखमे गर्मी शुरु होइत अछि । गर्मिके तापसँ बाँचएलेल प्रतिकात्मक रुपमे पानिके प्रयोग-शीतलता प्रतिके जनरुचि बढएबाक ई उपक्रम अछि त पानिके जीवनमे रहैत आएल महत्वके प्रतिपादित करैत एकर संरक्षण आ सम्बर्द्धन दिस दृष्टि सम्पन्न बनएबाक अबसर सेहो अछि।

गाछ वृक्षसभके जड़िमे पानि सिंचित क क ओकर दीर्घ जीवनके कामना कएल जाइत अछि। की मानव, की पशु, निर्जिव गाछ-वृक्ष सेहो जूड़शीतलमे सुरक्षित-संचित रहबाक सन्देश देल गेल अछि । गर्मिके महिना मात्र नहि आवश्यकता अनुसार पानिके आवश्यकता पृथ्वीके ई तीनू पक्षके होइत अछि आ एकर आपुर्ति होइत रहबाक चाही से सन्देश सेहो दैत अछि।

ईनार आ पोखरिसभके सर-सफाई स्वच्छता अभियानक परम्परागत स्वरुप अछि जकरा करबाक अवसर आब कमे भेटैत अछि । पहाड़ी क्षेत्रमे कतहु-कतहु पानिके अभावमे ईनार, कुवा रहल त अछि मुदा ओहिठाम जूड़शीतल पावनिके प्रक्रियासभ प्रायः नगण्य हयत । सर-सफाई स्वच्छता अभियानके अर्थ समाहित भेलासँ एहि पावनिमे बिशेष रुचि देखल जाइत अछि । ई समाजके बड़का सन्देश देने अछि । मुदा आब ई विना बजेट सम्भव होबएबला नहि अछि।

खान-पीनमे प्रयोग होबएबला सतुआ, गर्मिमे प्रयोग भ रहल शीतल पेय आ खाएबला पदार्थ अछि । एकर प्रयोग स्वास्थ्यके लेल बढिया भेलासँ निरन्तरताके सन्देश दैत रहैत अछि। फलके राजा आमके चटनी आम प्रतिके सजगता देखबैत अछि त चैतके खाना बैशाखमे खएबाक परम्परा सदैव अर्थात सालभरि अन्न, धन, लक्ष्मीसँ परिपूर्ण रहैक से कहबाक अन्तरनिहित कामना नुकाएल बुझल जाइत अछि।

हमरासभके कृषि संस्कृतिमे आधारित सभ पावनि- तिहार सहजरुपमे अपन मनबाँछित अनुष्ठानसभ विना कोनो ताम-झाम, पंडीत-पुरहित अपने क सकबाक बिभान बनाओल गेल अछि। एकरा कारणसँ उपभोक्ता सुलभ आ आरामसँ अपन पावनि मना सकैत अछि, बिना कोनो ताम झामके।।

आब एहिमे व्यापक कमि आएल अछि । मदा तैयो परम्पराके बँचाकए रखबाक लेल गाम-घरमे आ शहरी क्षेत्रमे सेहो कतहु-कतहु ई पावनि विधिवत् रुपमे मनाओल जाइत अछि ।

बैशाख १ गतेके विशिष्ट पक्ष

ई पावनि मनाबि रहल समयमे किछु महत्वपूर्ण परिघटनासभ दिस ध्यान देबए पड़ैत अछि । एकरासँ बैशाख महिना आ नयाँ वर्षके शुभारम्भके महत्व देखाइत अछि ।

- नेपालमे बैशाख १ गते नयाँ वर्षके शुभारम्भ मानल जाइत अछि ।
- हिन्दु संस्कृतिमे विक्रम सम्वत्के महत्व बिशेष देखल जाइत अछि ।
- गौतमबुद्धके ज्ञान आ निर्वाण प्राप्त भेल दिनके रुपमा मान्य अछि ।
- सिखसभके दशम गुरु गुरु गोविन्द सिंह खालसा पंथके स्थापना कएने दिन ई अछि ।
- आचार्य दयानन्द सरस्वती १८७५ ई.मे आजुक दिन आर्य समाजके स्थापना कएने छलथि ।
- थारु समूदायमे आजुक दिन सिरुवा पावनिके रुपमे तीन दिनक महोत्सव मनएबाक चलन छैक ।
- मैथिली लोकगाथाक युग पुरुष राजा सलहेसके जन्मोत्सव सेहो सिरहाक सलहेस फुलवारी लगायत हुनकर गहबरसभमे आजुके दिन मनाओल जाइत अछि ।

सारमे

जूड़शीतल पावनि परम्परागत तरिकासँ समाजमे पर्यावरण सुरक्षा प्रति जनजागरण अभियानके सन्देश देबएके सँगहि स्वच्छता प्रति जनजागरुकता बढाबएबला वातावरण निर्माणके काम सेहो करैत अछि । एहन सहज, स्वभाविक आ आनन्दायी परम्परागत लोक पावनिसभके फेर एक बेर पुनर्स्थापना दिस जाए पड़त ।



नदी संस्कृतिक जीवंत आख्यान : कमला

कमला नदीक लोकप्रियता

बास्तवमे नेपाल-भारत बीच बहयबला अनेको नदीसभ बीच कोशी, कमला बागमती आ गंगा लोकजीवनमे अपन उपस्थिति लोकगाथा, गीत आ कथा उपकथासभद्वारा स्थापित कएने अछि । एहिमे कमला, कोशी आ गंगाकेँ कनिक बेसिए आदरणीय आ पूज्यनीय नदी मिथिलांचल क्षेत्रमे मानल जाइत अछि ।

राजा सलहेसमे गंगानदीक महागाथा, ओकर प्रभाव आ सम्पूर्ण कथानकमे सदेह उपस्थिति हुनक देवी स्वरुप प्रतिकेँ आस्था देखबैत अछि तँ कोसी नदीकेँ कनि बेसीए उछृंखल, कठोरक रुपमे लोकगाथासभमे वर्णन कएलगेल अछि । कमला नदीकेँ कल्याणकारिणी, भक्त बत्सला, निरन्तर सहायक बनि अपन सन्तानसभकेँ रक्षा करयबला देवीक रुपमे पूजा अर्चना कएलजाइत अछि । ओहि कारणसँ मलाह जातिमे कमलाकेँ जातीय देवीके रुपमे प्रत्येक वर्ष बहुत धुमधामक संग पूजा अराधना करबाक चलन अछि । कार्तिक महिनामे कमलामे स्नान कएलासँ पूण्यक प्राप्ति होइत अछि से् विश्वास अछि ।

मैथिली लोकगाथा दुलरादयालमे दयालसिंहक प्रति कमलाक स्नेह एतेक विराट अछि जे दुलरा दयाल सिंहके गौना करएबाक भार धरि कमलाके द देल गेल अछि-

जेहे कमला मइया राजबखरीमे गौनाके मंजूरी केलक
ताहि बेरमे बोलिआ बोलइअ कमला मइआ के दुलरादयाल सिंह
जे कटके कटके जार हिनका भेजी आ दिन ठीके कैने जाएब
ताहि बेरमे मइया कमला ब्रह्माके सुमिरन करइअ
जे अनेको प्रकारके कटके हमरा भेजू जे हम बखरी भेजब
त एलैन इनरासन से अनेको प्रकारके भार
ताहिबेर मे मइया कमला इनरासन से एक जोडा
कुसुम रंगके सारी मंगबइअ जखनी आब........।

(मैथिली- लोक- गाथा: सं.सम्पादन-डा. विश्‍वेश्‍वर मिश्र, प्र.:सा. प्र., सरसिव-पाही, मधुवनी, २०१४ ई.,पृ.सं.८७

तएँ ने दयाल सिंह दुलरा दयाल कहौलक । परोपट्टाक नामी नटुआ छल दयालसिंह । कमलाके अपन नुत्यसं मुग्ध क अधिष्ठात्री बनालेने छल ओ ।

मलाहसभ कमलामाई पूजामे दुलरादयाल सिंहके सेहो पूजा करैत अछि आ कमलाके पाठी चढबैत अछि त दयाल सिंहके खसी ।

माछ संस्कृतिक परिसरके ब्यापक बनबैत कमला चुरे पर्वतश्रृंखलासं निःसृत भ सिन्धुली जिल्लाक कमलामाई ,कमलाखोंज होइत मिथिलाक धरतीके सश्यश्यामला बनबैत महासमुद्रमे विलिन भ जाइछ । मिथिलासं कामरुप-बंगाल धरि भरल पुरल नदीसभक जीवनचक्र कोशी- कमलाक नेतृत्वमे एतुक्का मानवजीवन पद्धतिके निरन्तर प्रभावित करैत आएल अछि तकरे छाप हमरासभक लोकगीत आ गाथापर पड़ल देखि सकैछी ।

लोकगाथाक महान अन्वेषक डा. मणिपद्म कमलाके एहिरुपें देखैत छथि-माँ, चिरवत्सला, स्रोतस्विनी, करुणामयी, विपतितारणी, मधुहासिनी, कमलमइी, तिरहुतिनी आ नृत्य मोहिनी छथि । रोहुमाछपर छल नीलकमल । ताहि कमलपर आसीन छथि ओ । हुनका एक हाथमे धानक झुट्टी, दोसरमे अरुणकमल, तेसरमे कमण्डल आ चारिम हाथ वरद्मे छन्हि ।

(मैथिली लोकगाथाक इतिहास, प्र.-कर्णगोष्ठी, कोलकाता, २००६ई., पृ.सं.१३४,१३५)

चुरे पर्वत श्रृंखलासँ दक्षिण दिसक मधेशमे कमला नदीक इएह लोकप्रियता आ अध्यात्मिक महत्वक कारण एकर प्रारम्भिक विन्दुमे एकर स्वरुप सहितक मन्दिरके स्थापना कएल गेल - जे कमला माई मन्दिर अथवा माइथानक नाम सँ प्रसिद्ध अछि ।

जनकपुरधामसँ करिब ६३ किलोमिटर उत्तरमे रहल कमलामाई मन्दिरकेँ माइस्थान कहि चिन्हल जाइत अछि । कमलामाई नगर पालिका वार्ड नं १० स्थित ई मन्दिर नदी देवी कमलाक मन्दिर रहलासँ सेहो बहुत चर्चित रहल अछि । कमलामाइक मन्दिर अन्य स्थानमे रहल पक्ति लेखककेँ जानकारी नहि अछि । नेपाल भारतक विस्तृत क्षेत्रमे बहयबला कमला नदी सम्पूर्ण मैथिल लोक संस्कृति आ लोकजीवनकेँ निरन्तर प्रभावित कऽ रहल समान्य नदी नहि अछि ।

कमलानदीक अवस्था

कमला नदी चुरिया पर्वत श्रृंखलाक सिन्धुली गढी नजदिक माइथानक लग होइत ३९०० फीट उपरसँ निचा दिस बहैत अबैत अछि । ई दक्षिण दिस ढलानमे कमलाखोज होइत चिसापानीसँ तराई क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि । धनुषा आ सिरहाक सीमाना बनैत ई भारतमे मधुबनी जिल्ला अन्तरगत जयनगरसँ ३.५ किलोमीटर उत्तरमे प्रवेश करैत अछि । बादमे ई बागमतीमे बदलाघाट (खगडिया जिल्ला, बिहार)मे मिलैत अछि तँ एकटा छोर कोशीमे सेहो मिलैत अछि । शुरुके अवस्थामे एकर अवस्था निरन्तर परिवर्तन भऽ रहल

होइतो एखन ई निश्चित दिशामे बहैत आएल अछि। कमला नदीक लम्बाई ३२४ किलो मिटर रहल अछि जाहिमे २०८ कि.मि. नेपालमे आ १२० कि.मि. भारतमे परैत अछि। अपन एहि यात्रामे ई अपना भितरकेँ ताओ, बैजनाथ नदी, मैनावती, धौरी, सोनी, बलान, त्रिशुला आ चडहा नदीसभकेँ समाहित करैत गेल अछि।

माइस्थान मन्दिरक इतिहास

माइथान मन्दिर जिल्ला सदरस्थानसँ बहयबला गौमति नदी आ कमला नदीक संगम स्थलमे अवस्थित अछि। ई मन्दिर अति प्राचीन मन्दिर अछि। एकर उत्पतिक सम्बन्धमे यकिनक संग कहल तँ नहि जा सकैत अछि मुदा चढौनासभसँ एकर निर्माण समयक अनुमान कएल जा सकैत अछि। मकवानी राज्य अन्तर्गत रहल समयमे एहिमे सेन राजासभ, इतिहासक विभिन्न काल खण्डमे एतय आएल प्रमुख व्यक्तित्व, राज्य संचालनक प्रशासकसभ चढौने बस्तुसभसँ एकर आयुक अनुमान कएल जा सकैत अछि। वि.सं. १८८६ सालक माघ महिनामे चाँनीक मुकुट चढाबय काजी भीमसेन थापा अपन छोटकी कनियाँ भक्त कुमारी सहित आएल बात मुकुटमे लिखल अछि। मकवानी राजा हरइन्द्र सेनक पालामे कमलामाई मन्दिरमे चाँनीक पानससभ चढाओल गेल अछि। एकटा पानसमे वि.सं. १६९२ माघ बदी ३ रोज शुभम कहि स्पष्ट अक्षरमे लिखल गेल अछि - चढाबयबलासभमे श्री दल दिपबहादुर पाण्डे लिखल गेल अछि। एहिसँ सेहो एहि मन्दिरक निर्माण ३८१ वर्ष पूर्व भऽ चुकल देखल जाइत अछि। स्रोत त महानन्द सापकोटाक एकटा लेख कुशेश्वर महादेवक सम्बन्धमे वि.सं. १५३०मे मकवानी राज्यक राजा राघव नरेन्द्र सेन कमलामाई मन्दिरकेँ जिर्णोद्धार कएने बात लिखाएल दावी कएने छथि। मुदा पक्ति लेखक एहि लेखक स्रोत एखनधरि पता लगाबय नहि सकल होइतो ई मन्दिर चारि सय वर्ष पूर्व निर्माण भऽ चुकल तथ्य स्पष्ट देखल जाइत अछि।

किएक जाएब माइस्थान !

एक त प्राचीन अध्यात्मिक केन्द्र रहलासँ ई मन्दिर भक्तजनसभक श्रद्धाक केन्द्र बनैत आएल अछि। कमला नदीके देवी स्वरुपमे एतेक विधी प्राचिन मन्दिर अन्यत्र नहि रहलासँ सेहो जन समान्यक आस्थाक केन्द्रके रुपमे पूजित ई स्थान फलाफल देबाक, मनोकामना पूर्ति करबाक हेतु सेहो बहुत प्रसिद्ध भेल मानय पड़त। एतय अएलासँ धार्मिक आस्थाकेँ तुष्टि होइत अछि।

दोसर ई राजमार्ग (बरदीबास) सँ २५-३० किलो मिटर उत्तरमे अवस्थित रहल आ बाट घाटो सेहो आब बहुत नीक बनलासँ सहज पहुँचक एकटा महत्वपूर्ण गन्तव्य बनल अछि।

तेसर ई स्थान प्राकृतिक मनोहारी परिवेशक कारण अत्यन्त आकर्षक आ स्वास्थ्यबर्द्धक रहल अछि। कमलापूल परसँ उतरि निचा नदीमे रहल लोहाक लचका पुलसँ मन्दिरमे पहुँचल जा सकैत अछि। एखन पानि खासे नहि रहल, अधिकांश क्षेत्र सुख्खा रहलासँ सेहो पैदलो नदी भऽ मन्दिरमे पहुँचल जा सकैत अछि।

जनकपुरसँ १ घण्टा २० मिनेटक सीधा यात्रामे गन्तव्य धरि पहुँच सकबाक बाट रहलासं माइथानकेँ धार्मिक पर्यटनक लेल महत्वपूर्ण स्थलक रुपमे विकास करब आसान अछि। प्रत्येक वर्ष माघ १ गते संक्रांतिमे एतय मेला लगैत आएल अछि। जतय परवा, पाठीक बलि देल जाइत अछि। मेला देखयकेँ लेल नेपाल भारतक हजारो दर्शनार्थी अबैत अछि आ ओतय रमैत अछि।

विशेषता

एकहि स्थानमे धार्मिक आस्था, साँस्कृतिक पहिचानक तथ्यात्मक अवशेष, लोकजीवनक देवी कमलाक मन्दिर आ प्राकृतिक सौन्दर्यसँ परिपूर्ण स्थल आ सहज यातायातक गन्तव्य सहित कमलामाई मन्दिर परिसर निश्चय जिज्ञासु आ पर्यटन प्रेमीसभकेँ महत्वपूर्ण स्थल बनल अछि। जनकपुर आबी त एकबेर कमलामाईक दर्शन करबाक समय अवश्य निकाली।



सम्राट कनिष्क आ हर्षबर्द्धनकें मिथिला- नेपालसँ सम्बन्ध

किछु मास पूर्व देशक महत्वपूर्ण अखबारमे एकटा समाचार आएल छल जे धनुषा जिल्लाक मुखियापट्‌टी मुसरनियाँ गाँउ पालिका-२ मे किछु प्राचीन ईट, मूर्ति, भाड़ा-वर्तन सभ भेटलैक अछि, जकरा पुरातत्व विभागक अधिकृत सुशील कुमार गौतम दाबीके साथ ओहि मूर्ति आ अवशेष सभके कुषाणकालीन कहने छलाह । हुनक चित्रो छपल छल जाहिमे ओ अवशेषक सँग देखल जा रहल छलाह । कान्तिपुर सम्वाददाता श्याम सुन्दर शशिक नामसँ छपल ओ समाचारमे इहो आश्वासन दैत हुनका उद्धृत कएल गेल छन्हि जे एहि भग्नावशेषकें पुरातत्व विभागमे थप परिक्षण कएल जाएत आ मूर्ति प्राप्त स्थानक उत्खनन बैशाखमे औपचारिक रुपें हयत ।

यद्यपि ओ एत्त लऽ गेल अवशेषके आइ धरि की कएलनि, वैशाखमे उत्खनन नहि भेल । आ ने कोनो औपचारिक प्रतिवेदन पुरातत्व विभागके जारी भेल । एहिसँ पूर्वो एहन तमाशा पुरातत्व विभाग एहि तरहक क्षेत्रक सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक सम्पदा प्रति कऽ चुकल अछि । ओ चाहे सिम्रौनगढ होइक, सर्लाहीक मूर्तिया होइक, धनषाक दुहबी होइक, सप्तरीक एकागढ़, चन्द्रभागा, आदि क्षेत्र होइक । कुषाणकालीन प्राप्त अवशषेसँ जनकपर क्षेत्रक इतिहास दू हजार वर्ष पुरान भऽ जाइत छैक जे सम्भवतः किछु गोटेके पचब कठिन आ वात चुप्पे राखल गेल ।

अपन अध्ययनके क्रममे पुरातत्व विभागक ओ अधिकृत गौतम हमरो सम्पर्क कएने रहथि साइट पर चलबा लेल, मुदा हम नहि जा सकल रही । मुदा जे सूचना ओ तत्काल देलनि ओ अद्‌भूत छल । हुनके शब्द रहनि- एहिसँ पूर्व पश्चिमी नेपालमे मात्र कुषाणकालीन अवशेष प्राप्त भेल छल, आब पूर्बि नेपालमे सेहो भेटल । प्रायः पुरातत्व विभागके जानकारीमे नहि छल हयत- एहिसँ पूर्वो एहि पूर्वि क्षेत्रमे सिक्का लगायतक अवशेष भेटि चकल छैक, मुदा ओहिपर ध्यान नहि देल गेल रहैक । एहि तरहक जथगर अवशेष निश्चय पहिल बेर भेटल रहैक, तएँ एकर महत्व बेसी रहैक मुदा तकरा पता नहि किए दबा देल गेल छैक ।

कुषाणकालीन अवशेषसँ एहि क्षेत्रक इतिहासमे व्यापक परिवर्तन भऽ सकैछ एहि वातसँ पुरातत्वविद लोकनि एकर सुरक्षापर तत्काल ध्यान देल जएबा पर जोड द रहल छथि (वातचीतक आधार पर : स्रोत-पुरातत्वविद् तारानन्द मिश्र, काठमाण्डू) ।

आब प्रश्न उठैत अछि ई कुषाणकालीन की भेल ? एकर समय की छल ? किए ई एहि क्षेत्रक हेतु महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि ?

कुषाणवंश आ कनिष्क

इतिहास कहैत अछि तिव्वतके उत्तर-पश्चिम स्थित तकलानकमक मरुभूमिके सिमान्त क्षेत्रमे 'युची कविला'क वास छलैक । इएह कविला तत्कालीन कारणसँ दक्षिण दिश ससरैत गेल आ अन्ततः कुषाण वंशक स्थापना कएलक । वास्तवमे युइशि जातिक कुषाण शाखामे जन्म लेबाक कारणें एकर राजा कुषाण कहाब लगलाह । जेसे हिनका लोकनिक राज्य (३० ई. सं. लगभग २२५ ई धरि) ईशाक प्रारंभे सँ शुरु भेल छल । कावुल-कंधार होइत भारत धरि अपन राज्य विस्तार कएनिहारमे 'कनिष्क' जनिका कनिष्क प्रथम सेहो कहल जाइछ सभसँ प्रतापी सम्राट भेलाह जनिक शासन (७८ई. सं. १०१ -१०२ ई.धरि) अनेको महत्वपूर्ण उपलब्धिक हेतु जानल जाइत अछि ।

कनिष्क अपन राज्य कौशलक सँग विद्वान सभके सेहो सम्मानपूर्वक दरबारमे रखैत छलाह । अश्वघोष जे वुद्धचरित लिखि अनेको ऐतिहासिक तथ्यके उदघाटन कएलनि । चरकसंहिता हिनके कार्यकालक देन छैक । हिनक दरबारमे पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष, संघरक्ष आ नागार्जुन सन सन विद्‍वत वर्ग रहैत छलाह । हिनका समयमे संस्कृत भाषा प्रगतिपर छल । मूर्तिकलाक विकास नीक भेल छल । कनिष्कक समयमे तीन तरहक मूर्तिकलाक विकास भेल छल । एक गान्धार मूर्ति कला शैली (५० ई.पूर्वसं ५०० ई.), दोसर मथुरा मूर्तिकला शैली (१५०ई.सं ३००ई.), तेसर अमरावती मूर्ति कला शैली (१५०ई.सं ४००ई.) । धनुषा, नेपालमे पाओल गेल माटिक मूर्ति प्रायः मथुरा शैलीक भ सकैछ । कुशाानकालक मूर्तिकलाक सबसं पैघ संग्रहालय मथुरामे मथुरा संग्रहालय छैक जत्त कनिष्कक मूर्ति सेहो राखल गेल अछि ।

ऐतिहासिक दस्तावेज सभमे एहि वातकें स्पष्ट कएल गेल अछि जे कनिष्क शासनक क्षेत्र वंगाल, नेपाल धरि पसरल छल । कल्हणक रचना 'राजतरंगिणी' आ फारसी विद्वान अबलरुनीके रचनासँ एहि बातके पुष्टि होइत छैक ।

कुषाणकालमे 'सोना'क पहिल सिक्का निकलल छल । यद्यपि ई कम पाओल जाइछ, मुदा ताँबाक सिक्का नेपालहुमे भेटल हयबाक बात पूर्ब संस्कृति विभाग प्रमुख (रा.रा.ब.क्याम्पस, जनकपुरधाम) स्व. नमोनारायण झा कतेकोठाम उद्धारण कऽ चुकल छलाह ।

मुखियापट्टी मुसरनियामे भेटल आन खण्डित वस्तुक सँगहि ठोस माटिक माथक मूर्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि । ओकर रुप, बनावट आ अवशेषक अवस्थासँ ओकर कुषाण कालक कहल गेल अछि, जे महत्वपूर्ण नहि, नेपाल

माने मिथिलाञ्चलक एहि क्षेत्रपर सेहो कुषाण राजा, खास क कनिष्कक आधिपत्यक इतिहास साक्ष्य प्रमाणित होइत अछि । ओना एहि पर आर गंभीरतासँ अध्ययन अनुसन्धान आवश्यक अछि ।

सम्राट हर्षबर्द्धनक साम्राज्य (६०६-६४७ ई.)

हर्षबर्द्धन ईशाक पहिल शताब्दीक ओ महान सम्राट भेलाह जे अपन शासनक ४१ वर्ष धरि राज्य विस्तारक करैत पंजाबके छोडि सम्पूर्ण उत्तरी भारत पर अपन झंडा पहरौलनि । इतिहासकार हिनक राज्यक सीमाक चर्च करैत काल नेपाल धरि कहैत अछि । वास्तवमे तहिआ काठमाण्डू उपत्यका नेपाल छल, जत्त हिनक शासनक कोनो साक्ष्य नहि प्राप्त अछि । तखन मिथिलाञ्चल पर हिनक अधिकार छल ई सर्वसत्य अछि ।

पहाड़क निचका तराई क्षेत्रमे रहल छोट-छोट राज्य पर हिनक अधिकार रहैक तकर अनेको प्रमाण उपलब्ध अछि । तखन काठमाण्डू आ चीनसँ सेहो नीक सम्वन्ध रहैक से वात सेहो प्रमाणित अछि । ६४१ ई.के आस पास ओ कोनो ब्राह्मणके दुत बना कऽ चीन पठौने छलाह । तकराबाद ओम्हरसँ दुत सभ सेहो ६४३ई. आ ६४६ई.मे आएल छल । ऐतिहासिक साक्ष्य अछि -प्रसिद्ध चिनी यात्री ह्वेन् सँग हुनक दरबारमे आठ वर्ष टिकल छलाह । हर्षबर्द्धन हिन्दु धर्माबलम्बी छलाह । मुदा बादमे ह्वेन सांगक संगतिमे ओ बौद्ध धर्मक प्रति सेहो आशक्ति देखब लगलाह । तकरे फलस्वरुप कन्नौजमे बृहत बौद्ध सभाक आयोजन कएने छलाह । ह्वेनसांगक अध्यक्षतामे भेल ओहि सभासं बौद्धधर्ममे महायान शाखाक उदय भेल जे बादमे अत्यन्त लोकप्रिय भ गेल । ओहिसभामे बौद्धधर्मक बेसी प्रचार प्रसार देखि ब्राम्हनलोकनि नाराज भ गेल छलाह आ एकटा पण्डालमे आगि लगा देने छलखिन्ह । सम्राट हर्ष तत्काल ५००सयसं उपर ब्राम्हनके पकडि सजाय देने छलाह से इतिहासकार लोकनि लिखने अछि ।

सम्राट कनिष्कके प्रयागमे पाँच -पाँच वर्षमे धार्मिक सम्मेलन करबाक श्रेय सेहो प्राप्त छन्हि । कहल जाइछ तहिएसं कुम्भ मेलाक शुभारंभ भेल अछि । इलाहाबाद (प्रयाग)मे सम्राट हर्षबर्द्धनक विशाल कारी पाथरक मूर्ति एहि बातक साक्षी बनल ठाढ अछि ।

हर्षबर्धनक दरबारमे रहल वाणभट्ट हुनक जीवनगाथापूर्ण संभवतः संस्कृतक पहिल पुस्तक 'हर्ष चरित' लिखलनि, जाहिसँ सम्राट हर्षक सम्बन्धमे प्रयाप्त जानकारी भेटैत अछि । तहिना हिनका बारेमे चिनी यात्री ह्वेन सांग जे लिखने अछि ताहुसं हिनक ब्यत्तित्वपर उचित प्रकाश पडैत अछि । हँ,तखन ई दुनू गोटे सम्राट हर्षबर्द्धनसं उपकृत छलाह तएं हिनक बर्णन कनेक अतिशयोत्तिल मानल गेल अछि, मुदा जानकारीक आन कानो प्रमाणिक स्रोत

नहि हएबाक कारणें इतिहासकार लोकनि एकरे प्रमाणित मानैत अएलाह अछि।

हर्षबर्द्धनक राजधानी कन्नौज छल। एही समयमे नेपाल उपत्यकामे लिच्छवी राजा अंशुवर्माक राज्य छल। ई हर्षबर्द्धनक प्रारंभिक समयमे छल। राजा नरेन्द्र देव वि.सं. ६९९ मे नेपालक राजा भेलाह। सन् ६४२ ई. (६९९ वि.स.) मे हर्षबर्धन जिवित छलाह। जँ कि हिनक नीक दौत्य सम्बन्ध चीनसँ छल आ नरेन्द्र देव के सेहो चीनसँ आ तीव्वतसँ सम्बन्ध प्रगाढ छलन्हि, एकटा नीक टिकरी छल मित्र सभक। एक बेर चीनक राजदूत वाड युन्चे प्रशस्त उपहारक सँग राजा हर्षबर्द्धनसँ भैंटकरबाक हेत कन्नौज पहुँचल। सुरक्षाक हेतु किछु फौजी सेहो रहैक। वि.स. ७०३ (लगभग ६४६-४७ ई.दिस) तखन हर्षबर्धनक मृत्यु भ गेल रहैक। आ छलसँ गद्दीपर हुनके सामन्त अरुणाश्व हथिया क बैसि गेल छल। से जखने ओ चिनिया सभके देखलक सभकें पकड़ि लेलक। एहि अफरातफरीमे राजदूत भागि क नेपालक शरणमे आएल। आ तखन चीन जा कऽ अरुणश्वपर आक्रमण करबाक तैयारीमे नेपालक राजा नरेन्द्र देवसँ मदत मंगलक। तखन चीनसँ १२०० सेना आ मदतमे नेपालसँ ७००० जवान घोडचढी चिनिया सेनामे थप क पठाओलगेल। घनगर लडाई भेल। अरुणाश्व परास्त भेल। पकडल गेल। ओकरा चीन ल जाएल गेल रहैक। कहल जाइछ-अरुणास्वक पतनक बाद वा कही हर्षबर्द्धनक मृत्यक बाद मिथिलाक ई क्षेत्र अराजक स्थितिमे आबि गेल।

सारमे -

एहि तरहें नेपाल, मिथिलासँ भारतक ई दुनू सम्राटके अपना-अपना समयमे लागि स्पष्ट भ रहल अछि। तखन एकरा बारेमे आर विस्तृत अध्ययन के आवश्यकता अछि। कुषाणकालीन सिक्का आ भाडावर्तन जखन जनकपुर क्षेत्रमे भेटैत छैक त एकर उत्खनन् जरुरी छैक। संभव थिक मिथिलाकालीन कोनो अवशेष भेटए। बाज्जि महासंघक बादक इतिहास त मिथक नहि थीक, तकरा इमान्दारीसँ खोजल जएबाक चाही।

तहिना सम्राट हर्षबर्द्धनक समयमे मिथिला आ भारतक सम्बन्धक विस्तृत अध्ययन आवश्यक अछि। हुनका समयमे की अवस्था छल एहि भू भागक, एकर राजनीतिक, साँस्कृतिक अवस्था पर अध्ययन जरुरी अछि। बहुत गोटे एही संक्रमण कालमे लोक नायक सलहेसक उदयक बात लिखैत छथि। उत्तर सं लडाई, किरात अंगरक्षक आ जंगल-प्रान्तरक भौगोलिक परिवेश।

हर्षबर्द्धन मात्र असल शासके नहि कुशल साहित्यप्रेमी सेहो रहथि। हुनक दरबारमे वाणभट्ट सन महाज्ञानी व्यक्तित्वक उपस्थिति रहनि जे हर्षचरित लिखि क इतिहासक बहुतो शंका-उपशंकाक निवारण क देलनि। राजा स्वयं

कवि एवं नाटककार रहथि । कहल जाइछ ओ नागानन्द, रत्नावली, एवं प्रियदर्शिका, नामक नाटकक रचना कएलनि । चिनीयात्री ह्वेनसाँग हुनक आश्रयमे कतेको वर्ष बितौलनि । ओ बौद्धक सेहो समर्थक छलाह । ६४३ ई. मे विशाल बौद्धसभा कएने छलाह जत्तसँ बौद्ध धर्ममे एकटा नव शाखाक उदय भेल-महायान ।

सम्राट हर्षबर्धन सँग-सँगे हिन्दु धर्मके प्रति तेहने समर्पित छलाह । प्रयाग इलाहाबाद मे प्रत्येक निर्धारित तिथिपर होब बला कुम्भ मेला कहल जाइछ हुनके शुरु कएल छन्हि । तएँ इलाहावादक चौक पर सम्राट हर्षबर्द्धनक विराट प्रतिमा स्थापित कएल गेल अछि ।

भारतीय इतिहासकार लोकनि हर्षबर्द्धनक मृत्युक बाद हुनक साम्राज्य छोट-छोट राज्यमे विभक्त भ गेल से लिखलनि अछि । आ एक्केबेर कन्नोजपर यशोबर्मा(प्रायः ६९०-७४०ई.)क शासनक बात लिखलनि अछि । हर्षपश्चातक ई चारि दशकक अबस्थापर इतिहास मौन अछि । ओत मिथिलाँचलक शासक सेहो रहथि । की अबस्था भेलैक एहि क्षेत्रक । तखन एकरा लेल नेपालक इतिहासके पढ पडत । तकर चर्च उपर भ चुकल अछि । हमरा लगैत अछि एखन एहि विषयपर काफी काज करबाक बाँकी छैक । तखन एहि काजक माला उठौनिहार ब्यक्तित्वक खोज जारी रखबाक चाही,तखने मिथिलाक बास्तविक इतिहास लिखल जा सकैछ ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. सेन राज्यको राजनैतिक इतिहास, लेखकः मोहन प्रसाद खनाल । प्रकाशकः नेपाल र एशियाली अनुसन्धान केन्द्र, त्रि.वि.वि., कीर्त्तिपुर, काठमाडौ । प्र. वर्षः २०६१ साल ।

२. नेपालको तथ्य इतिहास, लेखकः डा. राजाराम सुवेदी । प्रकाशकः साझा प्रकाशन, काठमाडौ । प्रकाशन वर्ष : २०६१ साल ।

३. नेपालको प्राचीन र मध्यकालीन इतिहास, लेखकः प्रा.डा. श्री रामप्रसाद उपाध्याय । प्रकाशकः रत्नपुस्तक भण्डार, काठमाडौ । प्रकाशन वर्ष २०६८ साल ।

४. भारतका का प्राचीन इतिहास, लेखकः रामशरण शर्मा । अनुवादकः देवशंकर नवीन, धर्मराज कुमार । अक्सफोर्ड युनिवरसिटी प्रेसद्वारा भारतमे प्रकाशित । प्रकाशन वर्ष : २०१८ ई. ।

५. भारत का इतिहास, लेखक : एल.पी. शर्मा । प्रकाशक : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल । प्रकाशन वर्ष :२०१०ई. (दशौं संस्करण) ।



मैथिली बालगीतक स्वरूप

संस्कृति मनुक्खर्के मानवीय गुणसं सजल प्राणी बनबैछ । कोनो समाजमे संस्कृतिप्रतिक चाह ताहि समाजक जीवन्तताके प्रमाण होइछ । यद्यपि आजुक विज्ञान, प्रविधि आ आधुनातन सञ्चारक युगमे परम्परागत संस्कारसब कात पड़ैत गेल अछि । आब त अपन सन्तानसबके मिथिलाञ्चलमे सेहो "एक तरेगन, दू तरेगन, ताराबेटी हाक पारे..." कहि अपन बाल-बालिकाके सिखएबाक बदला "ट्विंकल-ट्विकंल लिटिल स्टार" कहब बेसी सहज भ गेल अछि । अपसंस्कृति एना क गछरने अछि जे सांस्कृतिक विरासत खण्डित होएबाक अवस्थामे आबि गेल अछि । तैयो ग्रामीण क्षेत्रमे अवशेषके रूपमे समाज एखनो एकरा जिआ क रखने अछि।।

बालगीत माय-बापक संग सहज, सुलभ सम्बन्धर्के देखबेत अछि । ई बालमस्तिष्कमे पारिवारिक आ प्रकृतिजन्य सम्बन्धके सेहो बड़ सहजतापूर्वक अभिव्यक्ति करैत अछि । बालगीतमे लोकधुनके आधारमे एहन कर्णप्रिय सङ्गीतक मिश्रण होइछ, जकरा सुनि क बाल-बालिकासभ स्वतः ताहि दिश आकर्षित भ जाइछ् । शिशु कनैत काल 'लोरी' सुनाओल जाइछ । परम्परागत धुनमे गाओल जाइत ओहि गीतक बोल आ सङ्गीत बच्चासभके मुग्ध क दैतछैक आ ओ आनन्दसं सुति रहैछ ।

बाल-गीतर्के सुविधाक लेल पाँच अवस्थामे बाँटि अध्ययन करब उपयुक्त हयत ।

सुत कालक गीत-

बच्चासभक जन्मसँगे शिशुगीतक प्रारम्भ भ जाइछ । स्वस्थ कामना करैत गीतसब पाओल जाइछ । सुतएबा लेल प्रयोग कएल जाए बला 'लोरी' गीतमे मायद्वारा बालकके ज्ञानवृद्धिक निमित्त समाजके आर्थिक आ सांस्कृतिक जीवनपद्धतिक बड़ सहजरूपमे चित्रण क सुनाओल जाइछ । मिथिलाञ्चलक जनकपुर क्षेत्रमे किछु वर्ष पूर्वतक जङ्गली फल, जड़ी-बुटी, जाड़निसब लाबि क बेचबाक चलन छल । माय सन्तानर्के लोरी गीत आ अन्य बालगीत सबके माध्यमद्वारा ओहि समयक सामाजिक अवस्थाक वर्णनयुक्त गीत सुनौलासं बालक शब्दक अर्थ नहियो बुझने अभिव्यक्तिमे आएल साङ्गितिक मिठाससं एकटक्क ध्यान लगाबि गीत सुनल करैत अछि आ प्रशन्न होइत रहैत अछि ।

गीतक किछु अंश देखी-

"चुप-चुप बौआ, धोकड़ीमे ढौ़आ
बाप गेलौ गरीपर, मतारि एसगरुआ...।"

ताहि समयमे बयलगााड़ी मुख्य ब्यबसायके साधन रहैक। नेना जखन कनैक त ओकरा माय अपन पारिवारिक मजबूरी आ अबस्थासं बच्चाके अबगत करएबाक प्रयास करैक।!

“बौआके बाप गेलै पहाड़
ओत्तस लैतै समतोलाके भारं
बौआ चुप रह- ।”

जंगलसं लकडी लएबाक नियमित रुटीन रहैक तहिया । जङ्गलसं लकडीक संग जडी-बूटी आ समतोला सेहो लाओल करैक।

सुताब बला गीतके क्रममे- “आगे निनियां निनपुरसं, पटिया लइहे शिवपुरसं, बच्चा सुततै अपने सं... ।” माय निनियाके अपन नेनाक आँखिमे अएबाक लेल बजबैत छथि।

शिशु गीतसबमे बहुत शब्द लयात्मकताके ख्याल क क राखल गेल रहैछ्। ओत अर्थ नहि बरु ओकर शब्द आ अर्थ स बेसी सङ्गीत पक्ष प्रबल होइछ। जे लोकसंगीतकार सभक कमाल मानल जएबाक चाही। एहने एकटा लयात्मक गीतक अंश देखी-

“आगे निनियां आ, भन्टा पका
तोहर भन्टा जरि गेलौ, बौआके खेला...।”

यी सहजता आ सौन्दर्य ताहि समयमे आर् परिष्कृत भ क अबैत अछि जखन माय अपन नवजात शिशुके चुम्बन लेबालेल सेहो गीतेके माध्यमद्वारा भाव प्रकट करैत अछि-

“अटकन-मटकन, दहिया चटकन
बारीमे करैला फड़े, से करैला लदबद
चुम्मा लऽकऽ सदबद...।”

झुलुआ गीत-

धीआपूताके ठेहुन प ध क झुलएबाक क्रिया थिक ई । एकरा “घुघुआमाली” कहल जाइछ । ठेहुनपर झुलैत धीआपूता गीतक मधुर संगीतक आनन्द लैत ओहिमे जोड-ल अपन घर-आँगन,परिवेशक लोकाचारक जानकारी सेहो प्राप्त करैछ(

“घुघुआमाली-घुघुआमाली
बैआ खाए दूध भतुआ
बौआके ऐंठ कुठ के खाए
पप्पु खाए !
पप्पुके ऐंठ कुठ के खाए
प्रियंका खाए !

प्रियंका के ऐंठ कुठ के खाए
कुत्ता खाए !”
एकटा गीतक अंश देखू-
“घुघुमना-घुघुमना, उबजे धना
बौआ मातृक की सभ विकाय !
अंगा टोपी, रीठी विकाय
कीन दे मामी रीठी, पुत कथी के ?
अनन-चनन कस्तुरी के !”

एहि एकटा सामान्य बालगीतमे लोकजीवनक बहुत किछु नुकाएल छैक । कृषि आ बनक सरसामानपर आधारित तत्कालीन सामाजिक, पारिवारिक जीवनक जीवन्त चित्रण एत्त भेल अछि । धानक उब्जासं पहिरन आ जंगलक उत्पादन स कपड़ा धोअ बला रीट्ठी । ई कस्तुरीसं किनबाक बात एत्त कहल गेल अछि जे जंगलमे मात्र भेटैत छलैक , जंगलक अबरजात कृषकसभक लेल नवबात नहि छल ।

कृषिमे आधारित समाजके अर्थतन्त्र धानके उब्जापर निर्भर छल । माय अपन बेटाके चित भरैत कहैत अछि- बौआ, धानके उब्जा नीक भेल त तोहर दुनूकानमे सोना बना देबौ । अर्थात् ओहि समयक प्रचलित बालकक आभूषण ‘कनौसी’ आ ‘कुण्डल’ दिश सङ्केत एहि गीतमे छैक-
“घुघुमना, घुघुमना, उपजे घना
बौआके गढ़ा देब, दुनूकान सोना-”

आकाश गीत-

शिशु जखन खुब कान लगैछ, माय, दिदी, मामी आकाश दिश देखबैत कखनो चन्द्रमा (चन्दामामा), कखनो तारा (तरेगन) त कखनो सतभैया (सप्तऋषि), ‘डंडी तराजु’के बारेमे त कखनो भगबान चलबला एकपेड़िया आकाश गङ्गाक रहस्यके बारेमे बतब लगैत अछि । शिशुक हेतु अजगूत ओ वस्तुसबके रोमाञ्चित होइत एकटक्क लगा देखैत रहैत अछि, सब किछु बीसरि ।

इजोरिया राति शिशुसभक हेतु रहस्य रामाँचसं भरल होइछ । विस्तृत खुला आकाश आ ताहिमे चमकैत चान आ तारासब । ‘चन्दामामा’ सदैब धीआपूता सभकहेतु केरा, दूध, भात, पुआ आदिक स्रोत रहैत आएल अछि । माय चन्द्रमादिश नेनाके देखबैत गबैत अछि-
“चन्दामामा, आरे आब, पारे आब
सोनाके केटोरबामे दुध भात लेने आब,
बैआके मुहंमे घुटुक !”

कोनो आर्थिक स्तरक परिवार हो, माय अपन सन्तानक लेल चन्दामामासँ सोनेके कटोरीमे दूधभातक आशा करैत अछि । एकटा गीतमे तेहने कमजोर आय बाली माय अपन सन्तानके रोटीक जोगाड़ कोना करी तकरा अत्यन्त मनमोहक गीतक माध्यमद्वारा प्रस्तुत कएने अछि् । एहि गीतमे शिशुके मनोरञ्जनक संगे कृषि पेशाप्रतिक ज्ञानमे सेहो वृद्धि होइछ-

"चन्दामामा-चन्दामामा, हंसुआ दा
सेहो हंसुआ काहेला, खरही काटेला
सेहो खरही काहेला, वंगला छबाबेला
सेहो वंगला काहेला, गैया बन्हाबेला
सेहो गैया काहेला, गोबरा हगाबेला
सेहो गोबरा काहेला, खेतमे पटाबेला
सेहो खेतबा काहेला, गहुम उपजाबेला
सेहो गहुमा काहेला, चिकसा पिसाबेला
सेहो चिकसा काहेला, रोटिया पकाबेला
सेहो रोटिया काहेला, बौआके खिआबेला...।"

एहि गीतमे खरही घास काटक लेल हँसुआक आवश्यकतासं घर बनएनाई, ओहिमे गाई पालब, गाईसं गोबर हएब, गोबर खादक रूपमे खेतमे छिटब, गहुम उब्जाएब, गहुँमक आँटा पिसा रोटी बनाएब आ ओ रोटी बाबुके खुआएब ! कृषिजन्य व्यवहारक अद्‌भूत अभिव्यक्ति छै एत्त ।

तहिना एकटा आर गीत आकाश, तारा आ मेघके लक्षित करैत गाओल जाइछ-

"एक तरेगन, दू तरेगन
ताराबेटी हाक पारे
मेघनी कोदारि
मेघनीके धीआपूता बड़ बुधिआरि
कटलनि साबे, बंटलनि जौर
तैमे बझौलनि मनिका चोर...।"

खेलगीत-

शिशु कनेक बढैत अछि आ खेलकूदमे भागलेब लगैत अछि त ओहन अवस्थामे ग्रामीण क्षेत्रमे प्रचलित खेलसबमे कबडी, चीका-चीकी, अन्हरिया-इजोरिया, कोइल-पतरो,कोइल-पतरो उरुक-बुरुक सन-सन सङ्गीतात्मक, लयपूर्ण खेलगीतसब गाओल जाइछ् । एहन खेल गीतसबमे अक्षरज्ञान, अङ्कज्ञान धरि सिखएबाक इलम नुकाएल होइछ-

"अटपटा, बौआके पांचटा बेटा

एकटा गेल बकरीमे दोसर गेल..."

एना क गनैत पाँचो बेटाके काममे पठाओल जाइछ आ अन्तमे हाथक तरहत्थी होइत औरीके चलबैत काखमे जा गुदगुदी लगा देल जाइछ। एना कएलासं शिशु आनन्दित भ अपने फेर हाथके अगाडि बढा खेल आ गीतके पुनरावृत्ति करबाक आग्रह करैत अछि।

सम्बन्धबोधक गीत-

बालगीतसबमे मामा-मामीक प्रयोग बेसी होइत अछि। तकर कारण सेहो स्पष्ट अछि। मिथिलाञ्चलमे पहिल सन्तान नैहरमे हएबाक प्रचलन रहल अछि। आ तखन मामागाम आ मामा प्रतिक शिशुक लगाव बेसी हएब अस्वाभाविक नहि-

"हाजीपुरमे तार छै, सोनाके बजार छै
मामा सुतलै अंगना, मामा घरमे चोरी भेलै
दोड़ हो भगिनमा !"

मामाघरमे चोरी भेलापर भगिनाके पहिने दौड़बाक बात त भइए गेलै ने ! अपन नैहरमे खास अबधि भरि माय रहैत अछि। तकराबाद नेनाके ल घर अबैत अछि। मुदा अपन मामागाममे विताओल क्षणके स्मरण क कहियोकाल ओत्त जएबाक लेल जिद करैत अछि। तखन माग बेटाके समझबैत कहैत अछि-

"मामा अबै छैक मामा,
कथीपर गे कथीपर
हाथीपर गे हाथीपर
बैसू मामा चौका पर-"

मामा हाथीपर चढि क अबैत दृश्यक कल्पना गीत माध्यमसं कएलापर बच्चाक लेल मामा आ हाथी दुनूक आकर्षण ओकरा शांत होएबा लेल बाध्य करैत अछि। तेहने जिद्दी करैत बालमनक एकटा चित्र एत्त खिंचल गेल अछि-

"घर पछुअरबामे बंसबा,
तैपर नाचे हंसबा
हंसबा कहे हम सरबर जाएब
बौआ कहे हम ममहर जाएब।"

(आलेखमे प्रस्तुत गीतसब लेखकके निजी सङ्ग्रहसं लेल गेल अछि)

अन्तमे-

मिथिलाञ्चलमे अखनो शिशु गीतक प्रचलन लोप नहि भ सकल अछि, बरु कम भेल अछि आ से आधुनिक प्रविधि, पढाइलिखाइक पद्धतिमे भेल फरकके कारण भेल अछि। एहन अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदासबके जोगा क

राखब हमरासभक दायित्वभितरमे अबैत अछि । बालमनोविज्ञानर्के एहिगीतसबक माध्यमसं एक सूत्रमे बाँन्हब अपन परिवेशप्रति जागरूक बनाएब आ एकटा रोचक संसारमे ल जा क लोकसङ्गीतक सुमधुर रसमे डुबा मायके दु:ख देबाक प्रवृत्ति रोकबाक अद्‌भुत सामर्थ्य हमरासभक शिशु गीतसभमे छैक । आ इएह एकर विशेषता सेहो छै ।



श्री पंचमी : जखन कृषक सभ
कोदारिकफालपर भुजल अन्नसं ज्ञात करैछल किसानीक भेद

श्रीपंचमीके शारदीय पूजाक रुपमे सेहो विद्यार्थी लोकनि द्वारा मनाओल जाइत अछि। 'वसन्त पंचमी'क नामसँ ख्यात ई उत्सव जाड़क भयसँ पीण्ड छुटबाक प्रशन्नता सेहो अपनामे नुकोने अछि। हाड़के हिला देबबला जाडक प्रस्थान आ मधुर वातावरण बला वसन्तक आगमनक सुखद अनुभूति दैछ-पंचमी।

एहि पंचमीके सरस्वतीजीक पूजा आ वसन्तक आगमनक प्रशन्नताक अतिरिक्तो एकटा वृहत समुदाय द्वारा मिथिलाञ्चलमे बेस सम्मान देल जाइछ-श्रीपञ्चमीक रुपमे।

खास क गृहस्थ लोकनि जकरा भगवान हर-फार आ दुरापर एक जोड बैल देने छनि-एहि पावनिके बड निष्ठासँ मनबैत छथि। अदभूत बात ई जे एहि पाबनिमे धार्मिक अंधविश्वासक कतहु लेस मात्र गुंजायश नहि, परम्परागत रीति रीवाज पर आधारित एकटा पावनि।

गृहस्थलोकनि एहीदिन नव जनवोनिहार रखै छथि। पुरनाके हटबैत छथि। गाम-घरमे साधारणतः तीन कठ्ठा जमीन उबजएबाक हेतु दऽ साल भरि आवश्यक कामधन्धा करबाक नैतिक बन्धनसँ आबद्ध करैछ जाहि व्यक्तिके ओ जन कहैत अछि।

श्रीपंचमी दिन हर ठढा होइछै। मूलवात इएह छैक। पंडीत जी कोन मुहे हर ठाढ हयत से एकदिन पूर्वे सूचना कऽ दैत छथि। श्रीपंचमी दिन जन नहा-धो क अबै छैक। आंगनमे अरिपन लिखल जाइछ। पीठारसँ हर, पालो, हेंगा, कोदारि आ तकरा पकड़ने जन कोदारि पकड़ने गिरहतक चित्र बनाओल जाइछ।

पहिने लोहारके ओत्त जाएल जाइछ/सालभरि ककरासँ काज कराओल जाए से लोहारी एहीमे कीटल जाइत छैक। जकरा ओइठाम गीरहत पहुँचि गेल सएह लोहार पक्का भेल।

गिरहतनी डलियामे धान आउस आ मरुवा कनेक-कनेक कऽ राखि ओहिमे दूवि फूल आदि धऽ गृहस्थके दैत छैन। एक लोटा पानि सेहो। गृहस्थ कोदारिके कान्हपर राखि वामहाथसँ डलिया, दाहिन हाथस लोटा पकडने लोहारक पसार पर जाइत छथि। जन फार लेने रहैछ। ठाकुरक ओत्त कोदारिके भाथीसं गरम कयल जाइछ आ ओहिपर धान आंसु आ मरुवाके भुजल जाइछ। जे जतेक फूटैत छैक-विश्वास छैक ओ फसिल ओइवेर ओतेक बेसी हयत।

एहि क्षेत्रमे साधारणतः धान, आँसु आ मरुवा होइत छल-तएँ तीन वस्तु जाँचल जाइ छल। आब आँसु धान त होइते छैक मरुवा लोक करब छोड़ि जका देने अछि। तथापि परम्पराक निर्वाह कइए रहल अछि।

पसारमे लावा भुजलाक बाद फारके पीटल जाइछ। तखन फार ल दरबज्जा पर राखल हरमे सन्हिया देल जाइछ। वयलके लऽ जाहि मुह हर खडा करवाक साइत रहै छै लगक कोनो खेतमे लऽजा कऽ ताही मुहे हरवाह अढाई मोड़ खेत जोतैत अछि। खेत जोतलाक बाद गृहस्थ कोदारिसं पाँच छओ माटि तमैत छथि। तकरा बाद डलियामे राखल धान फूल दुभिसँ वयलक माथ आ दहिन खुर पुजल जाइछ। हाथमहक लोटासँ पानि ढारल जाइछ। तकराबाद कोदारिके सेहो ताही बीधि पूजि पानि ढारि पूजाक समाप्ति कयल जाइछ।

खेतक वीधि समाप्त भेलाकबाद हरवाह हर आ वलयक सँग एवं गृहस्थ कान्हपर कोदारि आ हाथमे डलिया, लोटाक सँग आँगन घूरैत छथि।

आँगनमे गृहस्थनी द्वारा बनाओल चेन्ह(अरिपन)पर हर राखल जाइछ। कोदारिबला चिन्हपर कोदारि। आब गृहस्थनी दू गोट काज करै छथि।

पहिल त पिठारसँ हर पालो कोदारिपर हाथक ठप्पा धरैत छथि। जनक पीठपर सेहो छाप देल जाइछ। दोसर, धानसँ हरक नासके झाँपल जाइछ। कोदारिक पासीके सेहो झाँपल जाइछ। हरक नासधरि झाँपल धान जनके होइछै-कोदारि वला गृहस्थके।

एतेक भेलाकबाद जनके जलखई दऽ विदा कऽ देल जाइछ। आव आवश्यकता पड़लापर खेतमे हरबाही शुरु भऽ जाइछ। आनो कोनो काज पड़ैत छैक त जन सदैब आगामे हाजिर रहैछ।

श्रीपंचमीमे होबबला विधिसँ ई स्पष्ट भऽ जाइछ जे कृषक सभक हेतु नव सालक आरम्भ श्रीपंचमीसँ होइत अछि जखन नव जनक व्यवस्था करैत अछि। खेतमे अढाई मोर चला हरवाहीक शुरुआत करैए, कृषि उपयोगी साधनके पूजा-पाठ कऽ साल भरि इच्छित फल प्राप्तिक हेतु संकल्प करैत अछि।

लाबा फोड़ि कोन अन्न बेसी हयत तकर अनुमान कऽ ताही अन्नके बेसी स बेसी खेती करबाक इन्तजाम करैत अछि।

मुदा आब एहन बात नहि अछि। गामघरमे बूझलापर बहुतो बूढ-पुरान बजै छथि-पहिने एक्कोटा बयल बला लोक कोनो भजैताके खोजि अवश्य हर ठरा करै छल। आब त गृहस्थो सभ अनठादेने छैक। बहुत कम रुचि रहि गेलए एहिदिश लोकके।

बातो साँच छैक। अपन संस्कृतिके साथ लऽ चलब पछुआएल हयबाक बोत करबैछ लोकके-तएँ द्रुतगामी संस्कृतिक पाछा बेहाल अछि लोक।



व्यबसायिक गन्तव्य लेल अहुरिया कटैत
मिथिला लोकचित्र

'मिथिला लोक चित्र'के चर्चा कएला पर एकटा विशेष प्रकारके चित्र प्रणालीके इंगित करैत अछि, जे ग्रामीण क्षेत्रमे परम्परागत रुपमे महिलासभके हाथसँ घर, टाटमे समयानुकूल चित्रसभ बनाओल जाइत छल । ओ चित्र की अछि, बनओनिहारके सेहो नहि जानकारी छल । मनमे उठल स्वभाविक उद्बेग घरके सामग्रीसँ रंग तैयार कऽ अपने कल्पना कएने विभिन्न स्वरुपके आकृति गढबाक काम करैत छलीह । एहन काजसभ सामान्यतः विवाह, घरमे होबएबला सत्यनारायण भगवानके पूजा, अन्य ब्रत, त्योहार, परम्परागत सांस्कृतिक विधि-विधान आदिमे लिखबाक चलन छल ।
ई क्रम दशको धरि चलल । घर-आँगनके सुन्दर, आकर्षक बनएबाक लेल लिखल जाएबला ई चित्रसभ मात्र शोभाक बस्तु होइत छल । एहिमे नहि कोनो अर्थ होइत छल नहि कोनो प्रकारके प्रतीकात्मक विम्ब । बस भुईयाँ आ देबाल होइत छल आ ओहिमे अबोध मानसिकतासँ लिखल गेल देवी, देबता, गुल-फुल, पोखरि, माछ, पुरैनक पात, साँप, हंस, सुगा आदि एहनेसन आकृतिक निर्माण कएल जाइत छल । ने रंगके संयोजन ने रुपके गढनि । मात्र भावप्रधान अंकन । आ ओ सेहो विवाह, ब्रत-त्योहार, पूजा-अराधनाक लेल क्षणिक महत्वके सँग गढल जाइत .. ।
स्वान्तः सुखाए गढलगेल ओहि चित्रसभमे प्राण भरबाक काम ओहि समय होएब संभब भेल जखन ई व्यवसायके एकटा माध्यम बनबाक स्थितिमे आएल । आ एकर शुरुआत तत्कालीन ब्रिटिश भारतके मधुबनीमे कार्यरत आइ.सी.एस. अधिकृत विश्व विख्यात कलामर्मज्ञ डब्लु.जी.आर्चर (१९३४-४०) मे मार्ग, भाग ३, बम्बईमे मैथिल पेन्टिङ्ग शीर्षकमे लेख लिखकए एहि कलाके सर्व प्रथम मैथिल चित्रकला नाम देलनि । बादमे पुपुल जयकर, उपेन्द्र महारथी सन कलामर्मज्ञसभके प्रयासमे ई घर-आँगन-टाटसँ उठि क कागज प गढए लागल आ 'मिथिला लोकचित्र' अथवा 'मधुबनी लोकचित्र'के नामसँ प्रसिद्ध भेल ।

नेपालमे मिथिला लोकचित्र

नेपालमे मिथिला लोकचित्रके प्रारंभ सम्बन्धमे यकीन कहब कठिन रहलाक बादो विगतके क्रियाकलापसभके आधारमे ई जनकपुरधामसँ औपचारिक पहिचान प्राप्त करबामे सफल भेल से कहल जा सकैछ । भारतीय क्षेत्र जकाँ नेपालक गामसभमे सहज चित्र गढबाक परम्परा त छलहे । जखन एकरा प्रति जिज्ञासा बढल आ एकरा व्यवसायिक रुपमे सेहो आगा आनल जएबाक

संभावना बूझि पड़लाक बाद नेपालके एहि मैथिली भाषी क्षेत्रमे एहि सम्बन्धमे गन्थन-मन्थन शुरु भ चुकल छल । भारतीय विद्वान संस्कृतिविद् डा. प्रफुल्ल कुमार मौन आ जनकपुरधामके रा.रा.ब. क्याम्पसमे मैथिली विभागाध्यक्ष प्रा. धीरेन्द्र सेहो जनकपुर क्षेत्र (नेपालीय भूमि) मे लिखल जाएबला लोकचित्रके *जनकपुर लोकचित्र* कियाक नहि कहलजाए एहि सम्बन्धमे अपन विचार पत्र-पत्रिकामे देबए लागल रहथि । ई पंक्तिकार स्वयं जनकपुर लोकचित्र (२०४६ वि.स.) नामक लघु पुस्तिका तैयार कऽ एहि क्षेत्रमे लिखल जाएबला चित्रसभके बारे छोट जानकारी देबाक प्रयास कएने छल ।

वास्तवमे भारतीय क्षेत्रमे मिथिला लोकचित्रके व्यवसायिक स्वरुप सँग सँगै चित्रमे उपयोग कएलगेल रंगसभ, चित्रके आकार-प्रकार, पृष्टभूमि आ चित्रांकनके सुक्ष्मता सम्बन्धमे सेहो विश्लेषण शुरु भ चुकल छल । मिथिला लोकचित्र सँगहि सिकी घाससँ बनाओल जाएबला अनेको आकर्षक उपयोगी सामग्रीसभके विकास होबए लागल छल । ओही समयमे विद्वान डा. उपेन्द्र ठाकुर *मिथिलाक चित्रकला ओ शिल्पकला* (प्रकाशक : मैथिली अकादमी, पटन, १९८६ ई.) नामक पुस्तक प्रकाशित कऽ मिथिला लोकचित्र एवं शिल्पकला सम्बन्धमे विस्तृत जानकारी उपलब्ध करओने रहथि ।

एतेक भेलाकबादो नेपाल भितर कोनो पुस्तक अगवा प्रशिक्षणके अभाव छल । गाम-घरमे चित्र गढबाक चलन यथावत् छल । व्यवसायिकता प्रति कोनो चाखि अथवा उपक्रम करबाक जानकारीए नहि छल ।

जनकपुरधाममे ०४६-४७ साल दिस जनकपुर लायन्स क्लब लोकचित्र एवं शिल्पके एकटा आयोजना शुरु कएलक । वास्तवमे एकर पृष्टभूमिमे अमेरिकाक एक स्वयंसेविका क्लियर वर्केटके सूझ-बूझ आ प्रयास छल । ओ जनकपुरधाममे नेपाल परिवार नियोजन सम्बन्धी वृतचित्र बनाबए आएल छलीह । ताही क्रममे ग्रामीण महिलासभसँग सम्पर्क आ हुनकासभके जीवन शैली बुझ्बा लेल गाम-गाम जाए लगलीह । ओ गाममे पैसलाकबाद महिलासभ द्वारा घरके टाटमे लिखलगेल चित्रसभक बारेमे जिज्ञाशा रखला पर तकरा मिथिला लोकचित्र कहल जाइछ आ एकरा भारतमे बहुत विकास भ रहल हएबाक जानकारी ओकरा कराओल गेल । क्लियर बहुत संभावनाक संग एत्त आएल छलीह । ओकरामे ब्याबसायिक सोच आ प्रबन्धन नीक जकाँ भरल छल । ओ मिथिला लोकचित्रमे रुचि लेबए लगलीह । स्थानीय सहयोगीसभक सहयोगसं ओ जनकपुर लायन्स क्लबके पदाधिकारीसभसँग भेटए पहुँचलीह । ओहि समयमे क्लबक अध्यक्ष ई. सत्यनारायण साह रहथि । बात मिलल आ १९९० ई. (२०४७ वि.स.) दिस लायन्स क्लब महिला

विकास केन्द्रके नाममे संस्था खोललक । ग्रामीण महिलाके एहिमे आबद्ध कऽ कागजमे लोकचित्र गढबाक काज शुरु करौलक । ओहि समय एकटा उत्सवके माहौल बनि गेलै । गाम-घरमे ओहिना बनाओल जाइत चित्र जखन पाई सेहो द सकैछ ई भावना गामक कमजोर आय वा एकल मलिासभक हेतु अत्यन्त सुखद अनुभूतिक क्षण छल । जहाँ धरि जनकपुरक्षेत्रक महिलासभक बनाओल चित्रक प्रश्न छल ओ भारतीय क्षेत्रक महिलासभसँ फरक छल । ओहुसँ एकरा अन्तर्राट्रीय बाजारमे मिथिला पेटिंग्सके नामसँ बाजारीकरण क सकबाक संभावना ओ महिला देखने रहथि ।

लायन्स क्लबद्वारा प्रारभ कएलगेल ओहि संस्थागत लेखन परियोजनासं नेपालक पहिल मिथिला लोकचित्रके संसथागत शुरुवात मानल जा सकैत अछि । बादमे ई संस्था युनडीपीसँ लगभग ५० हजार डलरके सहयोग सेहो पओने जानकारी करबैत तत्कालीन लायन्स क्लब अध्यक्ष ई.सत्यनारायण शाह कहैत छथि, -मुदा कालान्तरमे परम्परागत चित्र लिखल जाए कि फरक ढंगसँ चित्र लिखल जाए, चित्र लिखबालेल संस्थामे महिलासभके राखि काम कराओल जाए कि घरेमे राखि काम देल जाए आ ओहिठामसँ चित्र संकलन क बाजारमे पठाओल जाए कि की कएल जाए एहि विषयमे मतान्तर भेलाकबाद क्लियर अपन प्रभावके उपयोग करैत हटले जनकपुर नारी विकास केन्द्र खोलि अपन स्वतंत्र संस्था ठाढ कएलक आ बादमे ई संस्था एहि क्षेत्रके सम्पन्न आ चारि दर्जनसँ अधिक महिलासभके रोजगार प्रदायी संगहि मिथिला लोकचित्रके पारखीसभके लेल आकर्षणके केन्द्र बनि गेल । जनकपुरमे अएनिहार एक बेर एत अबस्से आब लागल ।

यद्यपि अपन व्यवसायिक यात्राके उत्कर्षमे रहलापर नारी विकास केन्द्र महिलासभके प्रजनन कालीन चित्रसभ बनौनाई शुरु कएलापर विवादमे सेहो पड़ल छल ।

व्यवसायिक भविष्य

कोनो समय ५०-६० लाखसं करोड़ धरि एसगरे व्यापार करएबला जनकपुर नारी विकास केन्द्र एखन आन्तरिक समस्याक कारण अस्तव्यस्त बनल अछि । ग्रामीण परिवेश जकाँ पक्की घर आ माहौल बनएबालेल पककी मकान नहि बना गाम-घरके खर-फुसक घर जकाँ बनल कच्ची घरसभ एखन कोन समय खसत कहल नहि जा सकैत अछि । मरम्मत संभार धरि करबाक सामर्थ्य नहि जुटा सकल अछि संस्था ।

एकराबाद किछु लोक संस्थागत रुपमे सेहो मिथिला लोकचित्रके राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय बाजारधरि पहुँचएबाक काम करैत अछि । जनकपुरक आर्टस एण्ड क्राफ्टक संचालक अजीत साह एखन अमेरिकामे लोकचित्रके

व्यवसायिक आ प्रशिक्षणात्मक काममे व्यस्त रहैत अछि । ओ स्वयं बनबैत अछि, विक्री सेहो करैत अछि । आ ओहिठामके इच्छुकसभके सिखबैत सेहो अछि ।

मिथिला चित्रकलामे दखल राखबला प्रवुद्ध चित्रकार जीत बहादुर रायमाझी मैथिल, नेपाल ललितकला प्रतिष्ठानसँ २०७० सालमे *तराई नेपालका लोककला* नामक लोकचित्र सम्बन्धी एकटा पुस्तक प्रकाशन करएबामे सफल भेल अछि । हुनका लोकचित्रके बढिया ज्ञान रहलाकबादो एखन ओ कातमे पडल छथि । हुनकर लडका सेहो एहि क्षेत्रमे लागल छथि । एस.सी. सुमन तहिना राष्ट्रीय स्तरके सम्पन्न कलाकार छथि । जिनकर पैन्टिंगसभके प्रदर्शनी लगैत रहैत अछि आ जाहिठाम पसन्द करएबलासभ लाखौंके चित्र किनैत अछि । मिथिला लोकचित्रके अंकनमे महिला एकाधिकारके ई प्रशिक्षित कलाकारसभ तोड़ैत नयाँ कीर्तिमान स्थापित कएने अछि ।

यद्यपि महिला कलाकारसभके कमि नहि अछि । मुदा ओहिमेसँ बहुत कम अपन संस्था वा चित्रके बलपर राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय बाजारधरि पहुँचबामे सफल भेल अछि ।

मिथिला लोकचित्रके अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर पहिल बेर जापानमे एकर संग्रहालय खोलिकऽ स्थापित करबाक प्रयास भेल छल । तकराबाद भारत आ नेपालमे अपन-अपन ढंगसं एकरा विश्व बाजारमे पहुँचएबाक काज भेल अछि ।



एही कड़ीमे नेपालक उत्साही अमेरिकावासी नेपाली लोकनि अमेरिकामे मनबैत आबि रहल मिथिला महोत्सवके आर भव्यतासँ २०१९ कऽ अप्रैल महिनाक ८ ता. सं १२ तारिख धरि मनौलक जे अपन आयोजनक विशिष्ट पक्षक रुपमे अमेरिकामे रहल चित्रकार अजीत साहक चित्र सहित जनकपुर नारी विकास केन्द्रक महिला कलाकार सभक बनाओल १७ गोट चित्रके संग 'आर्ट्स फोर एडीजी : दी मिथिला हेरिटेज' शिर्षकमे भव्य प्रदर्शनी संयुक्त राष्ट्र संघक मुख्यालयमे सजाओल गेल छल । एहि आयोजनक हेतु आवश्यक चित्र सभ मिथिला सेन्टरके प्रमुख सल्लाहकार नवल यादव अमेरिका पहुचौने

छलाह । एकर आयोजन विवाह पञ्चमीक अवसर पर आयोजित मिथिला महोत्सवक संयोजक अमित साहक सक्रियता आ संयुक्त राष्ट्र संघमे नेपालक स्थायी नियोगक देखरेखमे भेल छल, जाहिमे मिथिला आर्ट एवं कल्चर सेन्टर आ मिथिला महोत्सव, युएसएक प्रमुख जिम्मेवारी छल । एहि सम्पूर्ण कार्यक्रममे नवल यादव जीक भूमिका महत्वपूर्ण रहल अछि ।

ओतबे नहि ताहि प्रदर्शनीमे प्रर्दशित चित्र महक सत्रह चित्रके डाक टिकटक रुपमे सेहो नेपाल सरकार २९ दिसम्वर, २०२१ मे लओलक जे एसडीजी के मान्यता अनुरुप डाकटिकट आ डाक टिकट प्रबन्धनके इतिहास मे ई पहिल बेल भेल छल जाहिमे नेपाल सरकार सूचना तथा प्रबिधि मंत्रालय सत्रहो चित्रपर डाकक मोहर लगौलक । मंत्री ज्ञानेन्द्र बहादुर कार्की एहि शुभकाजके आगा बढौलनि ।

एहि प्रदर्शनसँ मिथिला चित्रक मात्रे नहि, जनकपुर क्षेत्रक कलाकार महिला लोकनि चित्रक संगहि अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान एवं चर्चा पओलनि ।

जहाँधरि कला व्यवसाय सम्बन्धमे यथार्थ जानकारी पएबाक बात अछि ओ संभव नहि भ सकैत अछि । व्यापार एकद्वार माध्यम द्वारा सुव्यवस्थित नहि भेलासँ ओहि सम्बन्धमे बुझब कठिनाई अछि । एक मात्र जनकपुर नारी विकास केन्द्र, कुआ, जनकपुरधाम औपचारिक रुपमे कलाकारसभके तलबी राखि लगत व्यवस्थापन कएने अछि । आ तएँ ओ अपन आर्थिक अबस्था बारेमे सार्बजनिक क सकैत अछि ।ओना केन्द्र एखन आर्थिक कठिनाई बेहोरि रहल अछि । विगतके वर्षदिस क्लियर महिलासभके स्वतन्त्र रुपमे घरसं वाहर आबि आय आर्जन क सकबाक वातावरण त बनौलक आ ताही धारणाक करणें अपन पूर्व संस्थासँ अलग होबए पडलै । समयके अन्तराल संगहि ओकर ई प्रयास रंग लौलक । स्थानीय परम्परागत पारिवारिक संस्कृतिके लोक लज्जा आ सामाजिक दायित्वसं वाहर अएने बिरोधो सहए पड़लै आ तकरे कारण संस्थापक संस्थासं बाहर भेल रहए ओ ।

अन्य कालाकार अपने उत्पादन करबाक आ स्वयं बेचैत अएलासँ सेहो तकर यकीन व्यवसाय सम्बन्धमे किटान नहि कएल जा सकैत अछि । मुदा तैयो कलाकारसभके एकल प्रदर्शनीसँ होबएबला विक्रीके अनुमान कएलापर ओ रकम, कलाकारसभके व्यक्तिगत श्रम आ शीपके परिणाम भेलाकबादो तकर लेखा-जोखा राखबाक अथवा सार्वजनिक करबाक चलन नहि अछि ।

जनकपुरधामके जानकी मन्दिरमे अपन विक्री केन्द्र खोलिकए बैसल सुनैना आर्टके संचालिका सुनयना ठाकुर अमेरिका प्रवासमे अपन एकटा कलाकृति एघारह सय डलरमे विक्री भेल आ अन्य न्यूनतम सात-आठ सय डलरमे विक्री भेल दावी कएने अछि । किछु दिन पूर्व प्रसारित एकटा टी.भी.

अन्तरवार्तामे ओकर कएल एहि दावीके सत्यता जाँचबाक कोनो आधार त नहि अछि मुदा कलामे जाहि सूक्ष्मताके आवश्यकता आ चित्रके मनोविज्ञान बुझिकए गढबाक शीप हएबाक चाही तकर अभाव रहलोपर सेहो कलापारखीसभ मिथिला लोकचित्रक नामपर चित्रके लाखो टकामे खरिद करैत अछि ई निश्चय कलाक सफलता मानक चाही ।

मुदा सभ कलाकार सुनैना ठाकुर सन शौभाग्यशाली नहि होइत अछि । अमेरिकाके आधार बनाकए अपन कला/शीपके व्यवस्थापन करैत आएल अजीत साह मिथिला लोकचित्रके अन्तर्राष्ट्रीय बाजार भेलाकबादो तकरे व्यवस्थित आ आओर उपयोगी बनाबि नहि सकल अछि से जिकिर करैत अछि । कोन कलाकार कथी पओलक ई ओकरासभक निजी उपलब्धि भ सकैत अछि मुदा मिथिला लोकचित्रके बाजार निरन्तर कमजोर होइत जा रहल ओकर धारणा छैक ।

निश्चय एहन व्यक्तिगत आधारमे कलाकृति बनाकए बेचब निजी प्रयास भेलाक बादो ई समग्र राष्ट्रके प्रतिनिधित्व नहि क सकैछ । ताहिसँ जँ संघीय सरकार एकटा ठोस बाजार व्यवस्थापन दिस मिथिला आर्टके ल जाए त ई ब्यबसायिक रुपें पैघ बाजार पाओत से पक्का अछि ।

तहिना प्रदेश सरकार सेहो व्यापार प्रबर्द्धनके लेल एकर ब्यबसायिक प्रबन्धन क सकैत अछि ।

एकरालेल व्यापार प्रबर्द्धनक हेतु कला-शिल्प प्रतिष्ठान सन प्रतिष्ठान गठन क खण्ड-खण्डमे रहल एहि कला/कलाकारसभके एकसूत्रमे आवद्ध क ओकराासभक कला कृति एक ठाममे खरीद क राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय बाजारधरि पहुँचएलासं कलाकारसभ सेहो उचित पारिश्रमिक पाओत आ प्रदेश सेहो एहि अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिके कलाक व्यापार प्रबर्द्धन क राज्यके कोषके सेहो बढा सकैत अछि ।

<u>सुदृढ आर्थिक विकास कोना ?</u>

सर्वप्रथम कला प्रशिक्षणके व्यवस्था करए पड़त । एहि क्षेत्रमे आएल कलाकारसभ अधिकांश दोसरके सिखासिखी आएल अछि । बड़का आँखि, नमहर,नोकगर नाक आखिर कियाक बनाओल जाइत अछि । माछ, पोखरि, केछुवा, कमल फूल, पुरैन पात आदिक की अर्थ होइत अछि । रंग संयोजन मात्र आँखिके आकर्षणक हेतु होइछ वा कोनो अन्य प्रयोजन छैक । कोन रंग कत आ कियाक प्रयोग होइत अछि ई कला प्रशिक्षक बताबि सकैत अछि । तकरा लेल प्रशिक्षणके आवश्यकता छैक ।

दोसर संगठित व्यापारके व्यवस्थापन । ई प्रदेश सरकार क सकए त उत्तम । सभ कलाकारसभके एक छाताके निचा आवद्ध क ओकर कलाकृति खरीद क

मदत करबाक सँगहि ओहि कलाके राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय बाजारधरि पहुँचाबएके काम सरकारी वा गैरसरकारी तवरसँ कएल जा सकैत अछि। एना व्यस्थित रुपमे मिथिला लोकचित्रके आगा बढाओल जा सकत त एहि क्षेत्रमे नीजि प्रभुत्व आ मनमानी व्यवसायके अवस्थाके अन्त हएत आ वास्तविक कला एवं कलाकारसभ उचित संरक्षण पाओत।



दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा : झिझिया

पृष्ठभूमि

एहि परिवर्तनशील दुनियाँमे. सभ किछु बदलि रहलैक अछि । लोक आनक सभ्यताक नकलकऽ अपनाकैं धन्य बूझऽ लागल अछि । एहि विकट परिस्थितिमे एखनो गाम-घरक हमरा सभक अपन मौलिक संस्कृति ओहिना अविच्छिन्न रूपमे देखबामे अबैत अछि । विभिन्न लोककथा, लोकगाथा, लोकगीत सदृशे लोकनाट्य आ लोकनृत्य सेहो ग्रामीण ललनाक संरक्षणमे जीवित अछि- प्रस्फुटित अछि । एहि जीवित परम्परामे एकटा सशक्त अध्याय अछि लोकनृत्य- झिझियाक ।

झिझिया मिथिलाक अधिकांश क्षेत्रमे बड़ उल्लासक संग विजयादशमीक शुभ उपलक्ष्यमे कलश-स्थापनासँ लऽ दशमी धरि मनाओल जाइछ । झिझिया पाँचसँ लऽ बीस धरि युवती सभक (अधवयसुओ रहैछ !) एकटा टोली होइछ, जाहिमे कोनो दू वा बेसियो गोटेक माथपर कलश राखल रहैछ जाहिमे अनगनित भूर कयल गेल रहैत छै । कलशक मुँहपर राखल ढ़कनामे गोइठाक आगि रहैछ जाहिमे कनेक-कनेक कालक बाद मटिया तेल राखल जाइत छैक जकर प्रकाश बेस ऊँच धरि लहरा उठैछ । ओहि छौंड़ी सभ महक किछु गोटे माथपर कलश राखि गाओल जाइत गीतक तालपर अपन हाथसँ थपड़ी पाड़ि एकटा विशेष ढ़ंगसँ नाचल करैछ । एहि तरहैं विभिन्न सम्पन्न लोक सभक दरबज्जापर नाचिकऽ झिझियाक पूर्णाहुतिक लेल अन्न-पाइ मांगल करैछ । एहि माङल पाइक अनुसार अन्तिम दिन अर्थात् दशमी दिन बड़ धुमधामक संग भोज-भात ओ प्रसाद वितरण होइछ । आ विभिन्न तरहक नाच-गानक संग झिझिआक विसर्जन होइछ ।

गाममे एहि तरहक कैक गोट टोली होइत छैक । सभ एक दोसरासँ नीक होयबाक लेल प्रयत्नशील रहल करैत अछि ।

झिझिआक कलशमे असंख्य भूर जे बनाओल रहैछ तकरा नाचऽवाली सदैव ड़ोलबैत रहैत छैक, जाहिसँ केओ ओहि भूरकैं गनि ने लेअय । कहल जाइछ जे केओ ओकरा गनि लैत छैक तँ नचनिहारक मृत्यु भऽ जाइछ । तैं जँ स्थिर रहबो करैत अछि तँ नचनिहार कलशाकैं अनेरे घुमबैत रहैत छैक ।

भिझिया कहियासँ प्रारम्भ भेल तकर ठोस प्रमाण नहि भेटल अछि । ओना ई परम्परा तान्त्रिक विधिसँ पूर्ण होयबाक कारणैं अन्दाज ई लगाओल

जा सकैछ जे मिथिलामे जखन तन्त्र-मन्त्रक नीक प्रभाव छल होयतैक तखने ई प्रारम्भ कयल गेल हायतैक। एकर प्रारम्भ आठम् शताब्दीक पहिनेसँ भेल होइक से अनुमान कयल जा सकैछ।

झिझियाक परम्परा

एकर प्राचीन रूप आ एखनुका रूपमे कोनो खास अन्तर नहि भेल बुझाइछ। पहिने तान्त्रिक विधिक ज्ञाता माली आ मालिन भेल करैत छल तेँ देवी-देवताक पूजा-अर्चा एहि वर्गसँ सम्पन्न होइक। आइयो धरि देवी-देवताक लेल आवश्यक फूलमाला तथा विभिन्न उपादान मालिएक द्वारा प्राप्त कयल जाइछ। तेँ झिझिया, जे पूर्ण रूपसँ देवीक आराधना थिक, माली द्वारा संरक्षण पौलक। मालिनी सभक द्वारा भगवती दुर्गाक अराधना स्वरूप प्रस्थापित झिझिआ नृत्य क्रमशः आइ समाजक अन्यान्य वर्गमे सेहो प्रचलित तथा संरक्षित होबऽ लागल अछि।

तान्त्रिक 'कल्ट' सँ प्रभावित ई झिझियाक बनावटि सेहो एकटा विशेष अर्थ रखैछ। कलशक ऊपर राखल ढ़कना आत्माक प्रतीक थिक आ ओतहिसँ निकलैत ज्वाला, आत्मासँ ज्योति निकलबाक बोध करबैछ। संगे ई झिझिया ड़ाइन, जोगिनकेँ प्रभावहीन बनयवा ले' बनाओल गेलाक कारणेँ आत्मासँ निःसरित प्रकाशक इजोतमे ड़ाइन-जोगिन रूपी अन्हार किछु नहि बिगाड़ि सकत तकर ज्ञान सेहो करबैछ। ई काज पूर्ण रूपसँ हमरा सभक उपनिषद्सँ प्रभावित अछि- "तमसोमा ज्योतिर्गमय" अर्थात भगवतीसँ अराधना कऽ ई झिझिया टोली "अन्धकारसँ प्रकाशमे लऽ जाउ" क भावना व्यक्त करैत अछि। आ साँच कही त' यैह एहि लोकनृत्यक मूल उद्देश्य थिक।

झिझियाक संरक्षण मिथिला क्षेत्रमे मोरङ, सप्तरी, सिरहा, धनुषा, महोत्तरी, सर्लाही तथा बिहारक उत्तराखण्ड़क किछु भाग पद्मा, बेनीपट्टी, मधुबनी आदि क्षेत्रमे देखल जाइत अछि। किछु साल बीचमे ई किछु गुम जकाँ भऽ गेल छल, मुदा फेर एम्हर आबि जोर शोरसँ प्रारम्भ भेल अछि।

एकर प्रदर्शनसँ पूर्व स्वच्छ घैला आनि ओहिमे असंख्य छेद कऽ तैयार कयल जाइछ आ ओकरा धामीसँ बन्हा देल जाइछ। धामी अपन मन्त्रसँ झिझियाकेँ बन्हैक- "सभ्य गुरुक बन्दे पाँउ। बजर, बजर, बजर केबाड़ी बजर बान्हों दशो दुआरी। मटिआ बान्हो। मसान बान्हो, टोना बान्हो, टामर बान्हे...।" मंत्रयलाक बाद झिझिया टोली सभ ब्रह्मस्थान लग जा सर्वप्रथम अराधना करैछ। आ तखन ओहि ठामसँ विभिन्न गोटेक ओतऽ जाइछ। आब मंत्रयबाक क्रिया नहि कएल जाइछ।

झिझियाक गीतमे सामाजिक चेतना

झिझिया टोलीसँ गाओल गीत मुख्य दू प्रकारक होइछ । एकटा' भगवती सम्बन्धी आ दोसर ड़ाइन सम्बन्धी । ओना झिझियाक मुख्य लक्ष्य ड़ाइनकेँ गारि देब होइछ तेँ बेसी ओही तरहक गीत गाओल जाइत अछि ।

झिझिआक गीत सभ विभिन्न ढ़ंगसँ गाओल जाइछ, मुदा लय आ छन्द वैह होइछ- शब्दमे मात्र फरक रहैछ ।

देवीक अराधना क्रममे हुनक कामरूप (कामख्या-असाम) देश जयबाक वर्णन बड़ सजीव होइत अछि । प्रचलित गीत- "कोन बने बोले मैयागे, कारी कोइलियागे- ।" मे देवीक विदाइक बड़ रोचक वर्णन भेटैछ । ओ साड़ी पहिरैत छथि । जूड़ा बन्हबैत छथि । आँखिमे काजर लगबैत छथि... । आ अपन गन्तव्य दिस विदा होइबा ले' तैयार भऽ जाइत छथि- "केकरा अगनमा मैयागे जुरबा बन्हौले गे, केकरा अगनमा मैयागे कजरा पेन्हलेगे- ।" जिज्ञासाक शान्ति गीतमे भेटैछ "बा" आ 'भैया' गामक प्रमुख देवता ब्रह्मा आ भैरवक लेल प्रयोग भेल अछि । अपन कन्या वा बहिनकेँ बिदा करब एकटा सांस्कृतिक परंपराक अनुरूप आइ भगवती विदा भऽ रहलीह अछि 'कमरूआ (कामरूप-कामख्या) देशकए...। सभ तैयार । ड़ोली भव्य रूपसँ सजाओल छनि । लील ड़ोली छनि । लाल ओहार लागल अछि । विभिन्न कलात्मक ढ़ंगसँ सजाओल ड़ोलीकेँ बत्तीस गोट कहार उठबैछ- आ भगवतीकेँ अश्रुपुरित नेत्रसँ विदा करैत छथि ब्रह्मबाबा...।' -लील रंग ड़ोलिया, सबुजेरंग ओहरिया, मैयागे भीड़ि गेलाह बतिसो कहार, कमरूआ देश मैया कब जइहैँ गे ।

दोसर तरहक गीतमे डाइनकेँ गारि पढ़ल गेल छैक । एहिमे सभ गीतगाइनि सभ डाइनकेँ खूब जोशमे आबि गारि पढ़ल करैत छैक । एहिमे विभिन्न किसिमक गारि होइत छैक । जे आवश्यकतानुसार गीतगाइनि सभ द्वारा थपघट कयल जाइत रहैत छैक ।

देखल जाय तँ ई स्पष्ट भेल जे गारि सभमे ड़ाइनक व्यवहारक पूर्ण चित्रण ओहिमे कयल गेल रहैछ । एकटा आमधारण छैक जे ड़ाइनसभ दशमीक बीचमे गामसँ बाहर जा ओहिना नङटे नाचल करैछ । एहि नाचक क्रममे ओ अपने द्वारा मारल कोनो बच्चाकेँ जियाकऽ आगाँमे राखि लैछ-ईहो कथन छैक । एहि कथनक सजीव-चित्रण एहि गीतमे भेटैछ-

"बरहमेक पछुआरीये ड़ैनियाँ, मत करिहैँ सिंगार ।"

वामे लेल आरती, दहिने तरुआरि गे,

नचैत-नचैत गेलै डैनियाँ, सीमा ओइपार गे,
संगे-संगे गेलै ड़ैनियाँ,राजकोतबाल गे,
देख लेलकौ आगे डैनियाँ, नङ्टे-उघार गे ।"

एहिसँ अतिरिक्त गाबऽवाला विभिन्न तरहक गीतसभ ड़ाइनक कयल गेल क्रियाकलापक चित्र उपस्थित करैछ । एहिसँ ओकरा सभक कृत्य स्पष्ट भऽ जाइछ ।

"कोठाके उपरी ड़ैनियाँ खीड़की लगैने ना,
खीड़की ओत्त ड़ैनियाँ गुणवा चलैले ना ।
आगे किछु होएतो ड़ैनियाँ, गदहापर चढ़ेबौ'
गदहा चढ़ाए ड़ैनियाँ नमुआँ हसैबौना-"

साधारणतया ड़ाइनक कृत्यसँ लोककेँ जानकारी होइत छलैक तँ ओकरा गदहापर बैसा गाम भरिमे घुमाओल जाइत छलैक सैह वस्तु ऊपरो कहल गेल अछि । से ओहि गीत सभमे एतुक्का सांस्कृतिक परम्पराक स्पष्ट चित्र देखबामे अबैछ जकर प्रतिपालन एखन धरि भऽ रहल अछि ।

डाइन समाजमे कोना तिरस्कृत कयल जाइछ तकरो वर्णन गीत सभमे प्राप्त भऽ जाइत अछि ।

"ड़ैनियाँक बेटा मरल पड़ल है,
अन्हार घर झिझिड़ी (झिझिया),
कोई नै बाँस कटबैया हे,
अन्हार राति झिझिड़ी-' ।

एहि तरहेँ बहुत रास गीत अछि जाहिमे डाइनकेँ समाजक शत्रु तथा विनाशक कहल गेल अछि आ तकर भर्त्सना कयल गेल अछि ।

झिझियाक विसर्जन समारोहक लेल किछु मङ्गबाक परंपरा छैक । एहि क्रममे विभिन्न गोटेक ओहि ठाम जा कटाक्षपूर्ण गीत गाओल जाइछ । उद्देश्य होइछ घर-धनीसँ किछु नगद वा अन्न प्राप्त करब ।

"जाबे भैया सुनलनि
झिझियाके अबैया,
ताबे भैया ठोकलनि केबार-' ।
आ, लोक किछु ने किछु देबे करैत छैक ।

कलशक उपर राखल ढ़कनामे आगि प्रज्वलित करबा लेल मटिया तेल देबाक सेहो अनुरोध कयल जाइछ-सोहो गीतमे । जाहि ठाम जतेक तेल

भेटैछ-जतेक देखरगर लहास चमकैछ-ओतय ओ सभ ओतेक मोनसँ गबैछ तथा नचैछ। तेल माँगक क्रममे-

"एक ड़िबिया तेल ला
झिझिया रुसल जाइ छै-'
दूमहिला के कोन सिंगार- ।"

एहिमे घरक बनौटपर निर्भर करैछ जे ओ ककर कोन सिंगार कहओ।

संरक्षण आ सम्बर्द्धन जरुरी

एहि तरहे देखैत छी, परिपाटीक-रूपसँ झिझिया एखन धरि हमरा सभकेँ अपन अतीतक सांस्कृतिक उपलब्धि दिस मोड़ि अनैत अछि। एकरा आर बेसी नीक जकाँ परिमार्जित करबा ले' पुरुष-वर्गक भूमिकाक आवश्यकता छै। मुदा, से भेटै नहि छै। तकर संरक्षण जरुरी...। सांस्कृतिक परम्परे तँ आब अपन रहि गेलैक अछि-खालिस अप्पन...।

एहन अवस्थामे समाजसं रसे-रसे विलुप्त होइत जाइत झिझियाकें संरक्षण-संबर्द्धन जरुरी अछि। पहिने जत्त प्रत्येक गाममे समाजक विभिन्न वर्गक महिलाद्वारा परम्परागत गीतद्वारा झिझियाक प्रदर्शन होइत छल से आब ई शहरमे आ हाट-बजारमे सिमित भेल जा रहल अछि। एकरा मनोरंजन संग आयक माध्यम बनाओल जा रहल छैक। ने झिझियामे मौलिकता आने ओ श्रद्धा आ विश्वास। वास्तवमे बालबच्चाकें डाइन जोगिनसं बचएबाक लेल भगवती दुर्गाकि अराधना आ तेहन डाइन-जोगिनकें गारि पढ़ि सचेत करबाक परम्परागत लोक व्यवहारक रूपें समाजमे स्थापित झिझिया अपन स्वरूपसं मात्रे नहि विचार आ चिंतनसं सेहो विस्थापित भेल जा रहल अछि। एकरा फेरसं समाजमे लौटाब' पड़त- मौलिक रूपमे। तकरा लेल प्रयास हएबाक चाही।

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, संस्कृति विभाग गत वर्ष एकटा झिझिया महोत्सव कऽ एकर संरक्षण-संबर्द्धनक हेतु प्रयास सुरू कऽ चुकल अछि। मुदा ई त प्रारंभ छलै। एकरा आगां बढ़एबाक चाहीँ। उचित प्रोत्साहन दऽ एहि नृत्यकें पुन:स्थापित कऽ मिथिला क्षेत्रक विशिष्ट नृत्यक रूपमे राष्ट्रिय-अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रमे देखाओल जा सकैछ।



खेतीबारीक लोक ज्योतिष : घाघ... !

कृषि क्षेत्रमे जाहि एक व्यक्तिक नाम आम कृषक जनैत छथि ओ अछि-घाघ। कहल जाइछ-घाघ बड पैघ ज्योतिषी छलाह मुदा ओ अपन ज्ञानके पोथी पतरामे मात्र नहि राखि जनसाधारण बीचमे सेहो समान रुपसँ बटबाक उदेश्यसँ सरल भाषामे तकरा पद्यरुपमे प्रचार-प्रसारमे अनलनि । परिणाम भेल आई गाम-घरमे अशिक्षितोलोक घाघक कहिबी मुह जवानी याद रखैछ जकरा आधारपर ओ अपन खेती गृहस्थीके काज चलबैत अछि।

खेतीक हेतु नक्षत्र विचारसँ लऽ वीछन गीरएबाक, खेत तैयार करबाक, विभिन्न अन्नक खेती करबाक तरिका सम्बन्धमे, फसिल कटबाक, पानि पटवएबाक आदि सम्बन्धमे त छैहे ताहिसँ सम्बन्धित वयल, भैंस, गाइ, हर गृहस्थ सम्बन्धमे सेहो प्रशस्त विचार व्यक्त कयल गेल अछि।

आजुक वातावरणीय असन्तुलनक समयमे भऽ सकैत अछि ई विचार ओतेक खड़ा नहि उतरए तथापि बहुतो एहन वात अछि जकरा सोझे अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ।

कहल जाइछ उत्तम खेती, मध्यम बान, निसिद्ध चाकरी, भीख निदान। एहिमे जं नहि बदलल अछि त ई नै 'भीख निदान' । आन सभ अपन परिभाषा बदलि चुकल अछि। एखन नोकरी करब सभसँ उत्तम, दोमसमे व्यापार आ तेसरमे खेती । लोक आब गामघर मे रहल खेत पथार बेचि शहरमे कोनो व्यवसाय करबाक हेतु धमाधम आबि रहल अछि। तथापि देशमे ६१ प्रतिशत लोक खेती करैत अछि जाहिसँ मुक्त हयबो संभव नहि।

एखन पानिक हेतु हाहाकार छलैक जे गत दिन रविसँ प्रारंभ भेलैक अछि। जँ पानि हयत त खेती काजमे लोकक ध्यान आकृष्ट हयबे करत आ जखन खेतीक बात हयतैक त वयलक आवश्यकता पड़बे करत। कहबाक जरुरति नहि एहिबेर वयलक महंगी आन सभ बेरसँ बेसी रहल । हाट बाजार पर जेना वयलक दाम अकास छुबैत रहलैक। फेरहासभ खूब सुतारलक। एतेक धरि जे बूढो वयलक हेतु फेरहा सभ अहुरीया कटैत देखल गेल । कहल जाइछ ई बूढ वयल खेतीसँ बेसी वंगला देश पठएबाक काज मे आएल। कहि नहि बात की अछि मुदा बूढो वयलक चलती देखलगेल । ओना घाघ बूढ वयल सम्वन्धमे कहने छल-खेत वे पानी बूढा बैल। सो गृहस्थ साँझ रहि गेल । अर्थात जाहि कृषक सँगमे बूढ वयल आ विना पानीक खेत हो ओ साँझ घरमे घुसिया जएताह अर्थात ओ गेले घर छथि।

तँ आवी गृहस्थीक एहि क्षणमे हमसभ देखी जे घाघ वयल सम्बन्धमे अपन केहन विचार रखने छथि जे खेत पथारक उचित देख रेखमे काज लागि सकय।

नीला कंधा वैगन खुरा कभी न निकले कंता वुरा !- अर्थात गृहस्थक पत्नि अपन घरबलासँ कहैत छैक जे वयलक कनहा जं लील रंगक होअए आ खुर बैगनी रंगक त ओ कहियो बेजाय नहि भऽ सकैछ।

“नटिया बैल छोटिया हारी। दूब कहै मोर काह उपारी ॥” छोट वयल आ छोट हरसँ खेतक दुभि नहि उखड़ै छै। तएँ दुभि कहैछ जे एहिसँ हमरा की हयत ?

“पूछ झपा ओर छोटे कान। ऐसे वरद मेहनती जान ॥’ -जाहि वयलक नांगरि झवरल (गुच्छावला) होइक आ जकर कान मोट होइक एहन वयल मेहनती होइत छैक।

“बड़ि सिंगा जनि लीनोमोल। कुँएमे डारो रुपया खोल ॥” नमहर सिंघबला वयल नहि कीनु, वरु पाईके कुँवामे फेकि दिऔक।

“बैल बेसाहन जाओ कता। भूरेका मत देखी दंता ॥” -गृहस्थ पत्नि कहैत छथि -हे स्वामी ! जँ वयल कीन जाइछी त भूरा रंगक वयलक दाँत नहि देखु। ई वयल नीक होइछ तएँ कीनि लेल जाए।

“वैल चपकना जीतमे, ओ चमकिलो नार। ये बेरी है जनके लाज रखे करतार ॥” -यदी खेत जोत बला वयल अनेरे चमकय आ स्त्री जँ चमकवाली होअए त ई दुनू जानक बैरी थिक-एकरासँ भगवाने रक्षा करताह।

“साते दाँत अदतको, रंग जो काला होय। इनको कवहुन लिजिय, दाम चाहे जो होय।” - जँ कारी रंगक वयल सात दाँतक अदन्ते किएकने होअए, कतबो सस्त भेटलापर नहि लेबाक चाही।

“सींग मुडे माथा उठा, मुहका होवे गोल। रोम नरम चंचल करन, तेज वैल अनमोल ॥” -जाहि वयलक सिंघ आगासँ मोडल होइक, माथ उठल होइक, मुँह गोल होइक, जकर देहक केस मोलायम आ कान चंचल होइक ओ वयल तेज आ बेसी मोलक होइछ।

खेती करवाक हेतु कमसँ कम दू हर रहबाक चाही घाघक मत छन्हि। एक वयल बलाके त ओ सलाह दैत छथि जे कोदारीसँ खेती करथि -दुइहर खेती एक हर वारी।

एक वैल से भली कोदारी ॥ - गामघरमे एक वयल राखि भजैताक आधारपर लोक कोहुना खेती त उठालैत अछि-मुदा दुनूक बीच बाझम बाझ होइत रहैत छैक। जँ कि दुनूके एक्के वयल रहैछ तएँ वाध्यतावश भजैता कायम रखने रहैछ।



सांस्कृतिक धरोहर : लोकनायक सलहेस

सलहेस लोकगाथाक प्रारम्भ कहियासँ भेल , विद्वान एकमत नहि छथि । मुदा नेपालक सिराहा स्थित महिसौथामे जन्मल सलहेस महिसौथाक राजा बनलथि गाथासभमे उल्लेख भेटैत अछि। सलहेस गाथाक प्रभावे मानय पडत, आइ दुसाध जाति सलहेस जेहन युगपुरुष, सौर्य, वीर, प्रतापी आ अंशी व्यक्तित्वक पूजा-अर्चना करैत अछि। जतय दुसाधसभक बसोबास रहैत अछि तत एकटा गहबर बना क सलहेसक मूर्ति राखि क पूजा-अर्चना करैत अछि । बैशाख १-२ गते सलहेसक होबयबला पूजा-उत्सबमे सभ जातिक श्रद्धालु पूजा करैत छथि । ओ विराटता आ व्यापकता सलहेसके समाजमे प्राप्त छैक। ओ सम्पूर्ण मिथिलाक सांस्कृतिक धरोहर छथि ।

नेपालक वीर सपूत सलहेस ओहि समयक अराजक स्थितिमे अपन क्षेत्रकेँ बाह्य आ आन्तरिक आक्रमणसँ एकटा कुशल, दक्ष सीपाहीक रूपमे दुश्मनसँ लड़ि देशक स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा बचेबाक काम करैत अएला सँ सेहो समाज हुनका बहुत सम्मान देलक , देवता बना पूजा-आर्चा कएलक। पिता सोमदेव आ माता मन्दोदरीक कोखिसँ जन्मल सलहेसक दू गोट भाई मोतीराम, बुधेसरा, भागिन करिकन्हा, बहिनी बनसप्ती छलथि त विश्वस्त गुप्तचरमे हिरामन सुगाकेँ रखने छलथि । जादू, टोनाक बोलबाला छलै । राजा विराटक बेटी सत्यवती सेहो जादू, टोनामे माहिर छलीह तँ सलहेसकेँ प्रेम कएनिहार राजा कुलेश्वर भंडारीक बेटीसभक प्रेम, युद्ध आ प्रतिशोधक त्रिकोणमे सलहेसक कथा हजार वर्षसँ बेसी समयसँ लोककंठमे बास कऽ आइ धरि जिवित अछि। लोकगाथाक रूपमे गामक बूढ गायकसभ अखन सेहो कतहु कतहुँ गवैयाक रुपमे बाँचल अछि तँ नाचक रूपमे सेहो थोरबहुत नाच कएनिहारसभ रहल अछि । अखनकेँ मोबाइल, टी.भी. आ टेबलेटसभक जमानाक कारण एहन जिवनीसभ बखान करयबला परम्परागत नाच, गीत ओझराहटमे पड़ैत जा रहल अछि । सलहेसक नाममे नेपाल सरकार पंक्ति लेखकक प्रयासमे डाकटिकट निकालने अछि । नेपालक ई प्रतिभा एतेक विधि-ब्यबहारसं समाज निर्माणक उचाई धरिक काम कऽ प्रतिष्ठित भेलाक बादो नेपाल सरकार वा ओहन कतहुसँ उचित सम्मान सलहेसक नाममे भेल जानकारीमे नहि अछि।

सलहेसक सम्बन्धमे काजक अबस्था

कोनो समय सिनासमे सलहेस सम्वन्धि एकटा 'लघुशोध पत्र' कहि प्राप्त अनुदानमे एकगोटे विद्वान मित्र कएने अध्ययन बाहेक विश्वविद्यालय,

कोनो निजी वा सरकारी निकायसँ काज भेल हमरा जानकारीमे नहि अछि। वास्तवमे सलहेस सम्वन्धमे एतेक चर्चा परिचर्चा चलल होइतो लिखित रूपमे सामग्रीक अभावक कारण विद्वान मित्रसभ ओहि दिस हात देबयमे हिचकिचाइत छथि। गाथाक एकटा संकलन जार्जग्रियर्सन संक्षिप्त रूपमे प्रस्तुत कएने छलथि तँ २००७ ई. मे विहार, खुटौना,मधुबनीक डा. महेन्द्र नारायण राम आ फुलो पासवानद्वारा संकलित दोसर संकलन साहित्य अकादमी, भारत प्रकाशित कएलक। एम्हर डा. विशेश्वर मिश्रद्वारा मैथिली लोकगाथासभक संकलन आयल अछि जाहिमे सलहेस सेहो अछि। तकराबाद डा. मणिपद्‌म आ मतिनाथ मिश्रक काजसभ सलहेसक विविध पक्षपर नीक प्रकाश पाड़ैत अछि। छिटफूट आलेखसभ सेहो छपैत रहल अछि मुदा ओ कोनो खास अवधारणाकेँ स्थापित करय नहि सकल।

ओहन अवस्थामे नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमे हम सदस्य भेलाक बाद सलहेस आ दीनाभद्री लोक गाथाक सम्बन्धमे किछु काज कएल जाए ताहि उद्देश्यसँ गाथा संकलनक काज शुरु कएलहुँ। दीनाभद्रीक सात घण्टाक गाथा संकलन कएल गेल तँ सलहेसक प्राविधिक त्रुटिक कारण अढाई घण्टाक अपूर्ण संकलन भेल। मुदा सलहेस नाचक पाँच रातिक भिडियोग्राफी कऽ सुरक्षित रखैत आएल छी।

सलहेसक सम्बन्धमे आएल व्यापक जनआकांक्षाकेँ ध्यानमे राखि लहानमे “लोकनायक सलहेस चर्चा-परिचर्चा” विषय अन्तरगत दू दिना गोष्ठी सम्पन्न कएल गेल। आठटा कार्यपत्रसभक माध्यमद्वारा अनेको नयाँ-नयाँ तथ्यसभ ओतय प्रस्तुत कएल गेल आ बादमे नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ओहि आलेखसभक संकलन “लोकनायक सलहेस (प्रथम खण्ड)” नाममे प्रकाशित कएलक।

ओहि गोष्ठीसँ सलहेसक जीवन चरित्रकेँ आओर प्रमाणिक रूपमे स्थापित करबाकलेल चारिटा विषयमे विद्वानसभ संग लघु अनुसन्धानमूलक आलेख लिखाबयकेँ म्यान्डेट देलक आ ई करिब छः महिनाक समय दऽ चारिटा विषय जन्म, राजनीतिक अवस्था, राजनीतिक रूपमे सलहेसक व्यक्तित्व आ हुनक अनुहार (स्वरुप) सम्बन्धमे आलेख मंगाओल गेल। तकरा बाद ओहि आलेखसभकेँ सलहेस गाथाक मर्मज्ञ विद्वानसभके लग टिप्पणीक लेल पठाओल गेल। ओतय सँ लिखित टिप्पणी अएलाक बाद दुनूकेँ मिलाकऽ हमरे सम्पादनमे पुस्तककार प्रकाशन कएल गेल - लोकनायक सलहेस (द्वितीय खण्ड)। आ ओहि आलेखसभक आधारमे जेठ ४,५ गते (२०७०) दोसर लोकनायक सलहेस चर्चा-परिचर्चा गोष्ठी सिरहामे सम्पन्न कएल गेल। एहि गोष्ठीसँ सलहेसक सम्बन्धमे नयाँ-नयाँ तथ्य आगु लाओल गेल तँ पहिल बेर

सलहेसक चित्रकेँ औपचारिकता प्रदान करबाक वातावरण बनौलक । गोष्ठीमे संयोजन पक्षक दिससँ तीनटा सलहेसक चित्र प्रस्तुत कएल गेल छल । तीनटा समूहमे तीनु चित्रपर छलफल कऽ सुझाव देबाक लेल कहल गेल छल । अन्तमे सिराहा घोषणापत्र जारी करैत घोडापर चढल सलहेसक योद्धा रूप बहुतकेँ प्रभावित कएलक आ तकरा प्रचार-प्रसारक लेल मान्यता देल गेल । ओ चित्र इन्टरनेटपर राखल जा चुकल अछि । ओहि सम्बन्धमे आवश्यक सल्लाह, सुझावक प्रतिक्षा शुरु भऽ चुकल अछि ।





एहि प्रकारे नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान दू-दू बेर गोष्ठी कऽ नेपाल भारतक विद्वानसभके जमघट करा लहान आ सिराहामे सलहेसक सम्बन्धमे व्यापक विचार-विमर्श चलओलक अछि । संगहि दू-दूटा पुस्तकसभ पंक्तिलेखकक सम्पादनमे प्रकाशित भेल , जे मैथिली क्षेत्रक लेल नयाँ प्रकाशन भेल अछि ।

सरकारके सलहेस गाथा प्रसँग आ सलहेसक जीवनीकेँ पाठ्यक्रममे सामेल करबाक चाही । निजी क्षेत्रक प्रकाशकसभकेँ सेहो ओहि दिस ध्यान देब जरुरी अछि । नेपालक भूमिमे जन्म लऽ, एतुका शोषित, पीडितसभकेँ उद्धार कऽ हुनक सुरक्षाकवच बनि समाजमे नयाँ क्रान्तिक सूत्रपात कएनिहार लोकनायक राजा सलहेसक सम्बन्धमे अध्ययन, अनुसन्धान मात्र नहि , सामान्य रूपमे सेहो जनबाक चाही । एकरा लेल शिक्षा विभाग, पाठ्यक्रम विकास केन्द्रकेँ ध्यान देव आवश्यक अछि ।

राजनीतिक समर्थन

राजनीतिक दलसभ, खास कऽ मधेशकेन्द्रित दलसभ तराइ क्षेत्रक एहन प्रतिभासभक नाममे पुरस्कारक स्थापना करबाक लेल सरकारकेँ दबाब देबाक चाही । सलहेसक मूर्ति सलहेस फूलबारी लग ठाढ कएल जा सकैत अछि । सलहेस फूलबारीकेँ संरक्षित कऽ सलहेसक जीवन गाथा झल्कयबला मूर्तिसभ बना फूलबारीके चारुदिस गोलाकार बाट बना पर्यटकसभक लेल

दर्शनीय बनाओल जएबाक चाही । वैशाख १ गते नयाँ वर्षक छुट्टी होइत अछि । मुदा सलहेसक स्मृतिमे ओहि दिनसं सलहेस फूलबारी सहित विभिन्न गाम-घरमे सेहो मेला, उत्सबक आयोजन कऽ पूजा-अर्चना कएल जाइत अछि । सलहेस महानायकक स्मृतिमे बैशाख २ गते राष्ट्रिय छुट्टीक घोषणा होएबाक चाही । एहन काजसभक लेल राजनीतिक दलसभक इच्छाशक्ति आ सूझबुझक आवश्यकता रहैत अछि । सलहेसक जीवन प्रसंगसँ जुडल स्थानसभकेँ संरक्षित कऽ पर्यटकीय गन्तब्यक रुपमे विकसित कएल जएबाक चाही आ एहिमे एहि समितिकेँ भूमिका महत्वपूर्ण रहत । कमलदह,मानिकदह एहने ऐतिहासिक स्थलसभ अछि ।

अन्तमे

लोकनायक सलहेसक समय सम्बन्धमे रहल भ्रमकेँ निवारण करय सिराहा आ सप्तरीक सम्वन्धित स्थानसभमे रहल गढसभकेँ उत्खनन जरुरी अछि । आस्थाक एहन प्रमाणसभकेँ आओर मजबूत बनाओत , इतिहासकेँ समृद्ध करत । पुरातत्व विभागकेँ एहन काजसभमे पहल करय पड़तै ।

आबयबला दिनसभमे लोकनायक सलहेसक जनमानसमे व्याप्त श्रद्धा आ विश्वासकेँ कदर करैत नेपाल सरकारसं हिनका “राष्ट्रिय विभूति”क स्थानमे प्रतिष्ठित करबाक अपेक्षा कएल जा सकैत अछि ।



लोक नाट्य जट-जटिनके सामाजिक सन्दर्भ

पृष्टभूमि-

ऋग्वेद कालेसँ लोक शब्दके प्रयोग भेल हमसभ पबैत छी । अर्थ आ प्रसंग फरक होबए सकैत अछि मुदा बादमे शिष्ट साहित्यके सामानान्तर जनमानसमे सुरक्षित लोक साहित्य सेहो विकास होईत गेल तथ्य हमसभ अनेको उदाहरणसँ देखए सकैत छी ।

लोक साहित्यके जनताक साहित्य कहलगेल अछि । शिष्ट साहित्य संस्कृत तथा शिक्षित व्यक्तिसभके पृष्टपोषण करएबला साहित्य मानलगेल अछि । शिष्ट साहित्य लिपिबद्ध होइत अछि, जत कि लोक साहित्यके रचयिता अज्ञात होइत अछि ।

वास्तवमे शिक्षित आ बौद्धिक समाज शास्त्रीय बिधि-विधानके आधारमे अपन उल्लास आ चिन्तनके प्रदर्शन करबालेल नाट्य विधाके चयन कएने छल त ओहिठाम जनसामान्य सभ अपन प्रशन्नता, खुशी आ विषय-वस्तुके स्वान्तः सुखाय प्रस्तुतिकलेल लोक अभिनय विधाके उपयोग कएलक । शास्त्रीय विधि द्वारा प्रतिपादित नाट्य विधा “ नाट्य शास्त्र ” के रुपमे विद्वत वर्गमे समादृत भेल त लोक भावनाक प्रतिनिधित्व करएबला लोक प्रदर्शन कला “लोक नाट्य” के रुपमे कलान्तरमे उल्लेख कएलगेल । मुदा नाट्यके शास्त्रीय विधा जकां एकर लेखन होब नहि सकल । ई विधा पठन-पाठनमे नहि अएलाक बादो मौखिक आ परम्परागत रुपमे ग्रामीणसभके कंठमे निरन्तर जिवित रहैत आईधरि बाँचि रहल अछि ।

(शिष्ट) लिखित नाट्यसभके प्रारम्भ १६ अम् शाताब्दीसँ भेल इतिहास कहैत अछि मुदा लोकनाट्य आ नाचके परम्परा चौदहम् शाताब्दीसँ प्रारम्भ भ चुकल छल जे ज्यातिरीश्वर ठाकुर द्वारा अपन “वर्णरत्नाकर” मे “लोरिक नाच” के चर्चासँ ज्ञात होइत अछि ।

एखनो लोकनाट्य आ नाचसभ विभिन्न रुपमे जिवित अछि । मुदा ओकर अवस्था आजुक प्रविधि मैत्री समयमे कमजोर होईत जा रहल अछि जे चिन्ताक कारण अवश्य अछि । आजुक समयमे अपन विशिष्टता सँग जनजीवनमे बाँचि रहल लोकनाट्यसभ मध्य “जट-जटिन” सभसँ अधिक लोकप्रिय रहल अछि । ओ नागरी मंच रहए वा ग्रामीण परिसर-लोकजीवनक अनेको तीत-मीठ प्रसंग सँग लोकानुरंजनक अपन दायित्व निर्वाह करैत आबि रहल अछि ।

शास्त्रीय नाट्य लेखनसँ लोकनाट्यसभ अधिक समयधरि बाँचि सकबाक क्षमता रखैत अछि। आ ई विशेषता एकर पारम्परिक गेय पक्ष अछि। शिष्ट साहित्यमे नाट्य लेखनके इतिहास सोलहम् शाताब्दीक बादसँ देखल जाईत अछि त लोकनाट्य या नाचक तेरहम् शताब्दीसँ पहिनहीसँ समाजमे प्रचलित रहैत आएल ज्योतिरीश्वरीक "वर्णरत्नाकर" मे चर्चा भेल "लोरिक" नाचसँ सिद्ध होईत अछि।

तेरहम शताब्दीसँ सेहे पुरान मानलगेल ई लोकनाट्यसभ एखन सेहो मैथिली समाज भितर अपन उपस्थिति विभिन्न रुपमे देखबैत आएल अछि। मुदा समय आ बदलैत डिजिटल प्रविधिके आगमनसँ कनेक पाछा परल मात्र अछि।

मैथिली लोकनाट्य मध्ये सामाचकेवा, डोमकछ आ जट-जटिन प्रमुख रुपमे आई सेहो देखल जाईत अछि। मात्र महिलाक सहभागितामे सम्पन्न होबएबला ई लोकधर्मी नाट्यसभ गीति विनिमयके आधारमे सम्वाद स्थापित करबाक परम्परागत एहन लोकनाट्यसभ अछि जकरा समाजकलेल निम्न बर्गिय ललनासभ अपन जीव्हा आ कंठमे बैसाकए सयो वर्षसँ मनोरंजन करैत आबि रहल अछि।

लोकनाट्य जट-जटिन

मिथिलाञ्चलमे सभसँ अधिक लोकप्रिय ई लोकनाट्य भोजपुरी, बज्जिका, मगही क्षेत्रमे सेहो प्रचलित रहल अछि, मुदा एकरा मौलिक रुपमे मैथिली भाषी क्षेत्रमे मात्र प्राप्त कएल जा सकैत अछि।

किछु विद्वानसभ एकरा स्त्रीसभके मनोरंजन (डा.जगदीश चन्द्र माथुर) गीतात्मक लघु प्रहसन (डा.श्याम परमार) कहने छथि। मुदा वास्तवमे जट-जटिन गीत भितरके वस्तुस्थिति आ एकर प्रदर्शनके समयके गंभीरतापूर्वक मनन कएलजाए त एहि लोकनाट्य भितर सामाजिक पक्षके अनेको तरंगसभ बड़ सावधानीपूर्वक समाविष्ट कएलगेल हमसभ पबैत छी, जे सामाजिक लोकजीवनमे आबएबला तत्कालीन आ दीर्घकालीन प्रेम, विरह, अवसादके बड सटीक रुपमे प्रस्तुत कएने देखल जाईत अछि। सम्भवतः मिथिलाञ्चलमे प्रचलित अन्य लोक नाट्यसँ जट-जटिनके अधिक ग्राह्यता आ लोकप्रियताक कारण सेहो इएह हएत से लगैत अछि।

एकटा खास समयमे एकर प्रदर्शन आ ओ मौसम आ समाज दूनुके अपन गीति सम्वाद आ अभिनय द्वारा प्रभावित कए सकबाक क्षमताके प्रदर्शन अवस्थाके सृजन-मामूली बात नहि अछि। अखाढ, साओन आ भादव महिनामे खेती करएबला किसान जखन पानिके अभावमे त्राहीमाम् करैत रहैत अछि,

आकाशमे हमरासभके पुर्खासभक अपीलपर चन्द्रमाक चारुकात घेरा बना सभा बैसल देखैत अछि त तकरा बल प्रदान करबाक हेतुए मलिासभ द्वारा इन्द्रके प्रेम आ स्तुतिक दवावसँ प्रभावित करएबला एक प्रकारके लोकअनुष्ठान कएल जाईत अछि-लोकनाट्य जट-जटिनके प्रदर्शन द्वारा । ओहे अनुष्ठान गामक सामान्य वर्गके महिलासभके जट-जटिन गीति नाट्यके प्रारम्भ करएसँ पहिने बैंगके मारि घैलामे गोबर, मलमूत्र संगहि राखिकए कोनो झगरालु महिलाके आंगनमे फेकबाक विधि सम्पन्न करैत अछि । तकरबाद ओ महिला जतेक पैघ आवाजमे गाड़ि दैत अछि, इन्द्रदेव ओतबे प्रशन्न भ वर्षाक आदेश दैत छथि से विश्वास अछि ।

ओम्हर गाड़िके स्वर कमजोर होइत जाइत अछि त एम्हर तैयार भ वैसल महिला मण्डली दू टोली बनाकए जट-जटिनके रुपमे दू युवती नेतृत्व करैत आगा-पाछा झुमैत नृत्यात्मक मुद्रामे गीत गाबि आंगिक आ वाचिक दुनू हिसावसँ एकटा मनोरंजनपूर्ण प्रस्तुति करैत अछि । एहिमे पुरुष पूर्णतः वर्जित रहैत अछि मुदा बच्चासभके प्रदर्शन देखबालेल छुट रहैत अछि ।

सामान्य रुपमे जट-जटिन गीति लोक नाट्यके प्रस्तुति किछु घंटाके होईत अछि मुदा एकरा महिलासभ एक-डेढ घंटामे समाप्त क अपन-अपन घर घुरैत छथि । एहिमे ओसभ जट-जटिनके सिलसिलेवार गीतसभके प्रस्तुतिक बदलामे किछु खास मुखडा आ गीतसभ मात्र गबैत अछि आ ओहे घैलामे मारल बैंग सहित केकरो आंगनमे फेकैत अछि । एतेक कएलाकबादो एकर पूर्णता नहिये भेल महशुस होईत अछि । ताही कारणसं सेहो नाट्य प्रदर्शनके नमराओल जाईत अछि । जट-जटिन लोक नाट्य एकटा पूर्ण कथात्मक प्रदर्शन अछि जाहिमे विवाह, सुख-सुविधाक मांग-चांग,दाम्पत्य विवाद,नोक-झोंक,आपसी असमझदारी, विदेश जाएबला पति प्रतिके मोह, आ अन्तमे मधुर मिलनके संयोग । एकरा भितरमे सामान्य घटनाचक्र देखल जाईत अछि मुदा वास्तवमे जट-जटिनके इयाह सादगीपूर्ण अभिलेख एकर स्तर आ जीवंतताके दोसरसँ बेसी लोकप्रिय बनबैत अछि । आ ई लोकनाट्य समाज संग अधिक जुड़बाक प्रयास करैत अछि ।

आई ग्रामीण सरजमिनमे एहन लोकप्रिय लोकनाट्य देखाबएबलाके अभाव हयत मुदा मंचमे, पर्दामे आबिकए ई डिजिटल प्लेटफार्ममे सेहो सक्रिय रुपमे आबि चुकल अछि । खास क क नागरी रंगमंचमे आई जट-जटिन आ डोमकछ सन-सन लोकनाट्य अधिपत्य बना चुकल अछि । कलाकारसभ अपन अभिनय क्षमताक आधारमे बहुत होसियार रहैत अछि एहन प्रदर्शनसँ । संरक्षणके हिसाबसँ ई बढिया देखल गेलाक बादो मौलिकतामे बहुत फरक भ रहलाक कारण परम्परागत स्वरुप खण्डित भ रहल अछि ।

जट-जटिनमे सामाजिकता

“जट-जटिन” लोक नृत्यके दूटा भाग होईत अछि। एक पानिकेलेल इन्द्रके स्तुति क मनएबाक प्रवृति आ दोसर होईत अछि लोकजीवनके यथार्थ चित्रण करैत जट-जटिनके विवाह, सासुरक प्रसंग, पति-पत्नि वीचक अन्तर सम्वाद, मिलन, वियोग, एक-दोसरकेलेल छटपटएनाई आ अन्ततः अपन व्यक्तिक इच्छाके हटाकए एक दोसर प्रति समर्प्रित भ गृहस्थीमे सहभागी भेनाई। ईहे प्रसंगसभ छैक एहि गीति नाटिकामे।

प्रथम पक्षमे विचार कएलापर हमरासभके परम्परागत आस्थाक केन्द्रमे रहल देवीदेवतासभके पूजा-अर्चना क घर परिवारक सुख सम्पत्तीक कामना करबाक प्रचलन हमरासभक समाजमे परापूर्वकालसँ चलैत आएल अछि। मुदा मुख्यतः एहन पूजा अनुष्ठान परिवारक श्रेष्ठ पुरुषजनसँ सम्पादित होइत छल। एहन अवस्थामे तत्कालीन सामाजिक आवश्यकता आ सौँचक कारण सेहो महिलासभ स्वतन्त्र रुपमे एहन धार्मिक अनुष्ठानमे सहभागी नहि होईत छलीह। शायद परिवारक जेष्ठ जनके स्वीकृति नहि भेलासँ।

एहन अवस्थामे ग्रामीण महिलासभ जे सामान्यतः अशिक्षित होइत छल आ उच्च वर्गक महिलासभक शिक्षित परिवेशक परिष्कृत विधि-व्यवहारसँ दुखी सेहो रहैत छल। ओसभ एकटा सहज बाट अपना भक्ति प्रदर्शनके निकाललक। रात्रीमे सामूहिक रुपमे अध्यात्मिक तुष्टि आ सांस्कृतिक चेतनाक प्रवर्द्धन हएबाक लक्ष्यसं किछु पावनि, उत्सव, अनुष्ठानसभके शुरुआत कएलक। एहन पावनि, सांस्कृतिक उत्सव, अनुष्ठानसभमे छठि, चौठचन्द्र, सामा-चकेवा, डोमकछ आ जट-जटिन रुपमे आगां आएल जाहिमे मात्र महिलासभके एकल आधिपत्य होबए लागल। एहन उत्सव, पावनिसभ पारिवारिक सुख-शान्ति आ आत्मसन्तोषके लेल समाजके महिलासभके दिससँ बडका देन छल। स्त्री आ पुरुष बीचक सहकार्यके पारंपरिक लोक विश्वास ओहि समय बहुत मजबुत छल। आजुक समयके महिला आरक्षणके राजनीतिक व्यवस्थाके ओहि समय जरुरी नहि छल, समाज ओहि समय सेहो महिलाके उपादेयताके शिशु जन्म आ पालन अतिरिक्त सेहो स्वीकार क चुकल छल।

लोक जीवनक एहन अनेकों प्रसंगके जट-जटिन लोकनाट्य अपन कथानक भितर रखने अछि। अकाल हएबाक प्रवल सम्भावना बीच गामक पुरुषसभ पूजा-पाठ, एकाह, नवाह, सत्यनारायण भगवानके पूजा आदि अनुष्ठानसभ पुरोहितसभके सहयोगमे करैत रहैत अछि। एहन विपद्के समय महिलासभ बीच एकटा चिन्तनके विकास होइत अछि। ई चिन्तन समाजमे व्याप्त लोकधारणामे आधारित रहैत अछि। यदि वर्षातक प्रिय जीव बेँगके मारिकए

कोनो झगरालु महिलासभके आंगनमे गोबर, मलमूत्रक सँग फेक देल जाए त ओहि महिला द्वारा देलजाएबला गाड़िके प्रभावमे वर्षा हएत । एकरे आधार बनाकए एहन विधि अपनाओलगेल आ गीत गबैत मनोरंजक माहौलमे गाड़ि सुनबाक परम्परा बैसल । कार्यक्रमबाद कहियोकाल त साँचमे वर्षात होइत छल । पंक्तिलेखकके लेखन-संयोजनमे जनकपुरधाममे भेल एकटा एहने प्रदर्शनकबाद झम झम पानि पड़लाक अनुभव बहुतो गोटे स्वयं महशूस कएने अछि । तखन ई संयोगो भ सकैत अछि ।

अकाल अवस्थाक एक चित्र देखी -

"हरबो ने लगैछै, कोदारियो ने लगैछै
चौकी उछटि आरि लगैछै हो राम ।
हाली-हाली बरसु इन्नर देवता
पानि विनु पडलै अकाले हो राम ॥"

(तराईको फाँट देखी हिमालको काँख सम्म । लेखक : रामभरोस कापड़ि भ्रमर । साझा प्रकाशन । पृ.३४)

लोक आस्थाक ई जीवन्त प्रस्तुतिक बाद रातिमे अपन मनोरंजनार्थ थप किछु करबाक लेल पुनः महिलासभ लोकपरम्परामे चलैत आएल लोक गीतके सम्वाद सम्प्रेषणके अभिनय द्वारा प्रस्तुत क क जट-जटिन लोक नाट्यके स्वरुप निर्माण क महत्वपूर्ण भूमिका खेललक । ई स्वरुप कहिया सँ आ कोना भेल-इतिहास नहि छैक । आ एकर कारण भेल -इतिहास लिखएबला "पढुआ" समाजक ई निम्नवर्गिय सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधि प्रति उपेक्षाभाव रखबाक प्रवृति । मुदा तैयो महिलासभ एकरा समन्वय रुपमे प्रस्तुत क एहि लोकनाट्यक दोसर पक्षके सबल रुपमे समाजमे स्थापित कएलक । एहि खण्डमे महिलासभक दू गुटमे विभक्त भ अपन-अपन गीति सम्वादसभ पयर आ हाथ चलबैत बाजए लागल । ई सम्वादसभमे लोक जीवनक विविध पक्षके सटिक उपस्थापन होइत छल । एखन धरि सेहो जे जतेक रुपमे जट-जटिन लोकनाट्यके स्वरुप पाप्त होईत अछि ओ एहि सत्यके सही प्रमाणित करैत अछि ।

लोक जीवनक विभिन्न पक्षसं सम्बद्ध सन्देशमूलक ढंगसँ "जट-जटिन" के जीवन चरित्रक विविध पक्षसभमे घटित घटना समाजके देखबैत अछि । यथा-

मान-सम्मान

जटिन धनीक घरके रहैत अछि । जखन विवाह क क जटाके घरमे अबैत अछि त ओहि समयसँ ओकरा अपन बाबुके घरमे प्राप्त दुलार-प्रेमक प्रदर्शन एहु ठाम होइ तकर अपेक्षा करैत अछि । नईहरमे वितौने क्षणसभके सासुरमे

जीवन्त करए चाहैत अछि । मुदा जटाके कमजोर आर्थिक स्थितिमे ई सम्भव नहि छल । जकरा कारणें जटा जटिनकें एहि प्रवृतिसं बचबाक लेल आग्रह करैत अछि -

"जट- लिब कऽ चलही गे जटनियां, लिबकऽ चलही गे,

धनमा मे सीस जइसन लिबही पडतउ गे ।

जटिन-नहिए लिबबौ रे जटा, नहिए लिबबौ रे,

हम त बाबू के दुलारि धिआ, ऐंठ कऽ चलबौ रे ॥"

(लोक नाट्य जट-जटिन । प्र.अभिनय पकाशन,पटना,.ले.रामभरोस कापडि भ्रमर । पृ.६४)

एहिठाम सामाजिक लोक व्यवहारक बातसभ, सामाजिक आदर्शक मंत्र वाक्य छल, जे घर-आंगनमे लोक रीति द्वारा सिखाओल जाईत छल । जट-जटिन बीचक सम्वाद कहियो काल विवादक कारण सेहो होईत छल । जे सामान्यतः घर परिवारमे होइत अछि सेहो । खिसिया क जटिन नईहर जाए लगैत अछि त जट मनबैत कहैत अछि -

"जट- चीनमा (एक प्रकारके खाद्यान्न) बुनलियौ गे जटनियां, चिनमा बुनलियौ गे ।

तु जाइछे नैहरबा चीनमा के कमइतै गे ?

जटिन-मइया कमइतौ रे जटवा, वहिनियां कमइतौ रे, एमरी समइया

जटबा नैहरे गमइबै रे ।"

(ओहे पृ.-६५)

एहि प्रसंगमे साउस आ पुतहु बीचक खट-पटके इंगित कएलगेल अछि । ई सामाजिक विडम्वना अछि जे सयों वर्ष पहिनेसँ चलैत आएल ई लोकगीत ओही रुपके देखओने अछि । ई प्रसंग आइयो अही रुपमे हमरासभके आगा अबैत अछि । सम्भवतः एकरे कालजयी आख्यान कहल जाईत अछि । लोकगीतसभके ईहे विशेषता होइत छैक- ओ सदैब सम-सामयिकताक विशिष्ट गुण अपना भितर समेटने रहलाक कारणसँ समाज एकरा अपनत्व ग्रहण करएमे भिराह नहि मानैत अछि ।

एकटा प्रसंग छैक- आपसी खटपटमे परिकए जटिन सासुर त्यागि नईहर गेलीह । तकरा बाद जटके जे असुविधा, खालीपन आ कठिनाइसभके सामना करबाक अवस्था आएल ओ दाम्पत्य जीवनके यथार्थके देखबैत अछि । लोकनाट्यमे ई प्रसंग बहुत मार्मिकरुपमे आएल अछि ।

जट व्यग्र भ अपन पीड़ा ब्यक्त करैत अछि -

"तोरे बिनु अंगनामे दुभिया जनमि गेल, गे जटिन,

सेजिया पर मकड़ा बिआय गेल गे जटिन, तोरे बिनु..।"

कर्मजीवी जट अपन सभ कामधाम छोड़ि विरह बेदनामे छटपटाकए गाम-गाम घुमि अपन श्रीमति (जटिन) के खोजए निकलैत अछि। आ अन्ततः कोहुना चित भरि क अनितो अछि।

अपन सुखमय दाम्पत्य जीवनमे घर खर्च जुटाबक हेतु "विदेश" कमाए जएबाक बाध्यता जखन जटिनके बतबैत छैक, ओ डेरा जाइत अछि आ जटाके "मोरंग" जाएस. रोकैत छैक।

वास्तवमे जटिनके खर्च कनिक बेसी भेलाक कारण सेहो परिवारमे सन्तुलन लाब मे कठिनाइ होइत छैक। "दरोगा बापके बेटी" जटिनके फरमाइशसभ पुरा करैत-करैत जट परेशान रहैत अछि। खास क क "हँसुली", मांगटिका आदिके मांग बढलाकबाद बादमे जट बाध्यतावश ओहि समयक एहि जनपदके कमाई करएबला स्थान "मोरंग" जाएलेल इच्छा व्यक्त करैत अछि-

"मोरंग-मोरंग सुनियै गे जटिन, मोरंग हमरा जाय दही गे जटिन।

मोरंग से हंसुली लऽ अयबौ गे जटिन, तोहरा पहिराए हम देखब गे जटिन।"

मोरंगके नाम सुनिते जटिनक देह सिहरि जाइत छैक। मोरंगमे पानि लगैत छल। ओहिठाम डाइन, योगिनसभ होईत छल। आदमीके सुगा बनाकए घरमे रखैत छलै। वास्तवमे ई जनधारणा तत्कालीन समाजमे बहुत व्याप्त भेल देखल जाईत अछि। लोकगाथा सलहेसक कथामे सेहो मोरंगके मालिनीसभके प्रसंग प्रमुखतामे आएल अछि- जकर जादु-टोनासँ अनेको बेर सलहेस कठिन परिस्थितिसं गुजरल छल। सुगो बनाओल गेल छल।

....

एहिसँ जट-जटिनके प्रारम्भिक सामाजिक अबस्थाके आकलन करबामे सहयोग पहुँचि सकैत अछि- ओएह छठम-सातम शताब्दीसँ बारह्म शताब्दीके बीच धरि।

एहिठाम प्रसंग जटके अछि। पत्नि जटिन सोझे अस्वीकार करैत अछि-

"मोरंगके पनियां कुपनियं छै हो जटा
लागि जयतौ कोढ करेज हो जटा
मोरंगके छौरी सभ जोगनियां हो जटा
उलटियो ने आब देतो हो जटा..
रहि जाहो रे जटा नैना के हजूर।"

(जट-जटिन, डा.मौन। महनार (वैशाली) २००५ ई.)

एकटा बढिया दाम्पत्य जीवनक आपसी प्रेम आ समर्पणके ई अत्यन्त रोचक उदाहरण अछि । जखन अपन भविष्य प्रति वा अपना प्रति, वालबच्चाक जीवन प्रति कतहु संकटके भान भेल त अपन सभ इच्छा, सुख-सौन्दर्य सबके बिसरि कए अपन सुखी परिवारिक जीवनके बँचाबए लेल अग्रसर होइत अछि पति-पत्नि । "जट-जटिन" लोकनाट्यके ई प्रसंग एकर सभसँ सशक्त आ अनुकरणीय प्रसंग अछि ।

अपन पारिवारिक जीवनमे सुख-सुविधा भोगने जटिन सदैव जटके अपन सुख-सुविधाक सामग्रीसभ, गर-गहनासभ आनि देबएलेल कहैत छल । मुदा जखन "मोरंग" जएबाक बात कहैत अछि तकरबाद ओहिठामके पानि आ जादु-टोनाके प्रकोपसँ पतिके बँचाकए रखबाक चिन्ता सभ चिज बिसरा दैत छैक । आ कहैत अछि -भगेल आब हमरा कथु नहि चाही । आँहा मात्र हमर आँखिके सोझाँ रहु, बस ।

सयो वर्ष पुरान लोकजीवनमे व्याप्त एहि चिन्तनके सटिक चित्रणसँ जट-जटिन लोक नाट्यके एखनो जीवन्तता प्रदान करैत अछि । ई अकालके समयमे, वर्षाक अभावमे जाहिठाम लोक रीतिद्धारा इन्द्रके प्रशन्न करबाक प्रयास करैत अछि त ओहेठाम ओहिसमयके पारिवारिक,सामाजिक अवस्थाक उतार-चढावके सेहो अपन गीति शैलीके माध्यम द्वारा सार्वजनीन बनएबाक काम करैत अछि ।

सारमे

लोकनाट्य जट-जटिन लोकजीवनमे सामान्यतः घटित होबएबला परम्परागत सामाजिक आहार-व्यवहारक जीवन्त दस्तावेज अछि, जे तत्कालीन सामाजिक मान्यता, विश्वास आ विधि-विधानके गीति-सम्वादके माध्यमसँ मनोरंजनार्थ प्रस्तुतिकरण क महिला सशक्तिकरण आ हुनकासभके उपादेयताके मान्यताके स्थापित करबाक प्रयास कएने अछि ।

सन्दर्भ सामग्री

१. जट-जटिन/सामा-चकेवा -श्री अनिल पतंग, बेगुसराय, २००१ ई. ।
२. जट-जटिन-पं.राजेश्वर झा, विहार रिसर्च सोसाइटी, पटना १९७४ ई. ।
३. हाली-हाली बरसु इन्नर देवता-(आलेख):भ्रमर । मथिला मिहिर, पटना, १७ जुलाई १९७७ ई. ।
४. लोकनाट्य जट-जटिन, विहार सांस्कृतिक विशेष अंक, जुलाई १९९७ ई.
५. पूर्वाञ्चलीय लोक साहित्य, चेतना समिति, पटना १९७४ ई. ।
६. जट-जटिन -रामभरोस कापडि भ्रमर, अभिनय प्रकाशन, पटना २००७ ई.

७. तराईको फाँट देखि हिमालको काँख सम्म-रामभरोस कापडि भ्रमर, साझा प्रकाशन, २०६७ साल ।
८. मिथिलाक सपूतः राजा सलहेस-भ्रमर, प्रकाशक भोर, जनकपुरधाम २०७५ साल ।
९. मैथिली लोक संस्कृति,-भ्रमर, जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, २०६६ साल ।
१०. मिथिलाके परम्परित लोक नाट्य-डा.मौन, गौहाटीमे पठीत आलेख ।
११. मैथिली संस्कृति : विविध आयाम-भ्रमर, नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठान, २०७५ साल ।



प्रभासोत्सवक बहन्ने अहिल्या स्थानक दर्शन !

मोबाइलक घ्रटी बाजल । ओना हमर दरभंगिया मित्र सब मोबाइलमे मिसकौल करैत रहैत छथि । से बेजाए नहि , एम्हरसँ ओम्हरका मो. चार्ज बेसी छैक तएँ । ई दोसर बात भेलैक जे ओम्हरको कोनो काज रहैत छैक तँ किछु गोटे मिसकौले करब उचित बुझैत छथि । एहु कारणे हम कौल उठबऽ नहि चाहलहुँ आ कौल खतम भऽ गेल । हम अपन मोबाइलसँ कौल करबाक सुरसार करिते छलहुँ तँ ओम्हरसँ फेर कौल आएल । नम्बर पर नीक जकाँ दृष्टिपात कएलहुँ । नयाँ नम्बर छल । के अछि ... । प्रायः जरुरी हयतैक । हम कौल लेलहुँ । ओम्हरसँ महिला स्वर सूनि पडल । प्रणामपातीक बाद नाम कहलनि हम डा. बन्दना चौधरी छी । प्रभास कुमार चौधरीक बेटी । आ तखन ओ अपन उदेश्य बतौलनि आ २२ फरबरीकेँ पीण्डारुचमे अएबाक आश्वासन मंगलनि । हम कनेको नहि सोचि तत्काल स्वीकृति दऽ देलियनि ।

प्रभास कुमार चौधरीक उन्नेसम स्मृति दिवसपर एकटा विशेष कार्यक्रमकेँ आयोजन गामेपर कयने छथि (प्रभासोत्सव) । जाहिमे प्रभासक पाँचो उपन्यासकेँ एक ठाम कऽ प्रकाशित कएल गेल अछि । प्रभास समग्र नामसँ जकर विमोचन सेहो ततहि हएत ।

हम स्वीकृति दऽ देलाक बाद अपनाकेँ प्रभासक संग जोडब शुरु कऽ देलहुँ । पटनामे नव लेखनक बैसारमे डा. धीरेन्द्रक संग हम हुनक निवासपर गेल रही । ओतहि परिचयपात भेल रहए । बादमे हमर एकटा कथा 'पाँक' जे मिहिरमे नहि छपल तँ तकरा प्रभासजी द्वारा सम्पादित पत्रिका कथादिशामे पठौने रही आ ओत ओ छपल । मिहिरमे नहि छपबाक कारण एकर सामिष हएब रहैक । मिहिरकेँ स्वच्छता अभियानक अन्तरगत एकरा पचाएब सम्भव नहि भऽ सकल रहै ।

तकरा बाद नेपालक मैथिली शिक्षणमे हुनक उपन्यास राजा पोखरिमे कतेक मछरी रहलासँ पढबाक अवसर भेटल । खूब नीक लागल रहए । ओ कथाकारक रुपमे आकर्षिक करैत रहलाह ।

आइ जखन हुनक पुत्री डा. बन्दना चौधरीजी हमरा आमंत्रित कयलनि तँ हम भाव विभोर भऽ गेल रही । चलु एहु बहन्ने श्रद्धापुष्प तँ अर्पित कयले जा सकैत छलैक ।

२२ फरबरी २०१७ । देखु कोना आबि गेल । हम ड्राइभर निजामकेँ भोरे ६ बजे अएबाक लेल कहि देने रहिऐक । कारण रहैक आइ जनकपुर बन्द रहैक । मधेश आन्दोलनक बाद तँ बन्द सहज रुपे होइत रहैत अछि । तएँ सकाले

निकलि जाइ से रहए । तहिना ओ आयल , हम तैयारे रही । निकलि गेलहुँ जटही भन्सार दिश । समय दश बजेक देल गेल रहैक । दरभंगामे चन्देशकेँ फोन कऽ कऽ जानकारी लऽ लेने रही (किछु गोटे दरभंगा सँ सोझे अबैत छथि तएँ सभकेँ जम्मा भऽ आबऽमे एक आध घण्टा लेटो भऽ सकैछ । तखन दशकेँ बदला एगारह वा साढे एगारह सेहो भऽ सकैत छैक ।

जे से हमरा तँ नेपालक सीमा जल्दी छोडबाक रहय । से हमसभ आठ बजे कमतौल पहुँचि गेल रही । एखन दू घण्टा सँ उपरक समय निर्धारितो समयपर पहुँचबाक रहय । पीण्डारुचमे डा. रामानन्द झा रमण रहथि । फोन कयलियनि । फोन नहि उठल । भेल रतुका जगरना हयतनि सुतले हयताह वा कोनो आन काजमे बाझल हयताह । की करी ! दरभंगा चलि जाइ । बरु ओम्हर सँ सभक संगे चलि आएब । फेर एक घण्टा जाएमे एक घण्टा आबयमे । दश बाजिए जाएत तँ दरभंगा जएबाक अर्थ की । अनेरे समय आ तेल दुनूक खर्च फूटसँ ।

बहुत दिनसँ नियार रहय जे बाटेमे पडैत अछि अहिल्या आश्रम, देखी । कमतौलसँ तीन किलोमिटर आ कमतौलसँ निकललापर पाँच किलोमिटर । दरभंगा, पटना जाइत बरोबरि आँखिमे नचैत रहय ई बोर्ड जे सडककेँ कातमे लटकाओल छैक । तँ किए ने एहि खाली समयकेँ उपयोग कएल जाए । आ ई निश्चय करैत करैत कमतौल सँ तीन किलोमिटर बाट कटि गेल रहय आ पाँच किलो मिटरबला बाट आगाँ आबि गेल छल । हम निजामकेँ कहलिऐक गाडी दक्षिणबरिया बाटपर लऽ चल । ओ मोडलक आ हमसभ देहाती बाटपर आगाँ बढि गेलहुँ । बढि तँ गेलहुँ मुदा बाट अनभुआर छल । पुछैत पुछैत कोहुना गन्तव्य धरि पहुँचलहुँ । अहिल्या स्थान पहुँचबाक सुख सभ थकानकेँ मेटा देने छल । शुरुएमे राम जानकीक मन्दिर पडैत छैक । प्राचीन प्रायः डेढ दू सय वर्ष सँ पूर्व । एकटा पीपरक गाछ छैक ओत्त जकर बयस पाँच सय वर्ष कहल गेल रहय । ततहि पता लगैत अछि (अहिल्योद्वार) स्थल किछु हटि कऽ पूर्व अछि । छै मुदा ताहि परिसरमे । लगमे जाइ छी । तत्काले एकरा जिर्णोद्धार कएल बुझाइत अछि । आ सेहो कोनो हलसगर नहि । स्थानीय सहयोगसँ एक तल्ला तँ बनले छल । दोसरो तल्लाक तैयारी चलि रहल अछि ।

मन्दिरक उत्तरवारी देबालपर श्रीरामक जनकपुर यात्राक संगहि बन गमन कालक पदचिन्ह अंकित स्थान सेहो देखाओल गेल अछि । ताही क्रममे अहिल्योद्वारक स्थल अर्थात दरभंगा जिल्ला अन्तर्गत अहियारी गाम सेहो पड़ैत अछि । रामायण सभमे एकर वर्णन अबैत अछि । तखन वर्णनक क्रममे कथाबस्तुमे किछु भिन्नता स्वभाविक ।

बाल्मिकी रामायणक बाल काण्डक ४८म् सर्गमे एहि सम्बन्धमे कथा वर्णित अछि। मुनि विश्वामित्र राम आ लक्ष्मणक संग जनकपुर जा रहल छलाह। एहि ठामक लगमे अएलापर एकटा भव्य आश्रम देखाइ पडलैक जे सुनसान रहैक। रामचन्द्रकेँ जिज्ञाशामे मुनि विश्वामित्र गौतम, इन्द्र आ अहिल्याक कथा विस्तारसँ बतौलकनि आ श्रापक निराकरणक हेतु चरण स्पर्शसँ अहिल्याकेँ उद्धार करौलनि।

१६३५ ईमे दरभंगाक तत्कालिन राजा छत्र सिंह द्वारा एकटा भव्य मन्दिरक निर्माण कराओल गेल छल। एहि मन्दिरमे सीता राम लक्ष्मण, हनुमानक संग अहिल्या आ गौतमक संगमरमरक मूर्ति स्थापित कयल गेल छल। एखन जे मन्दिरक स्वरुप अछि ओ तेहन भव्य मन्दिरक अवशेषपर बनल मानल जा सकैछ।

करिब सन्तावन वर्ष पूर्व १९६० ई.मे दक्षिण भारतक रामानुज अनुयायी लोकनि सीता राम सम्बन्धि यात्रा स्थल सभक अनुसन्धानक क्रममे एत्त आएल छलाह। ओ लोकनि एहि ठाम एकटा रामनामी स्तम्भक निर्माण करौलनि आ एकटा पीण्डक स्थापना सेहो कयलनि। एकर संस्थापक गुण्टुरु आन्ध्र प्रदेशक त्रिदण्डी श्री मन्नारायण रामानुज जीयर स्वामी छथि। एहि स्तम्भकेँ राममहाक्रतु: स्तम्भ कहल जाइत अछि। एहि स्तम्भमे एक करोड रामनाम, रामयन्त्र आ मूल रामायण विद्यमान अछि।

मुख्य मन्दिरक जीर्ण अवस्थाकेँ ध्यानमे राखि विहार राज्य धार्मिक न्यास परिषद अपना अधीनमे लऽ लेलक अछि। आब एकर स्वरुप अवश्य परिवर्तित हयत से विश्वास लेल जा रहल अछि। देवालपर अहिल्योद्वारक सुन्दर चित्र बनाओल गेल अछि।

तुलसीदास लिखैत छथि-

आश्रम एक दीख मगमाही। खग मृग जीव जंतु तहं नाही॥

पूछ्रा मुनिहि शिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा विसेषी॥

मंदिरक भीतर लाल कपडासँ झांपल दूटा पीण्ड फर्शपर देखि पडैत अछि। हम ओत्त पुजारीक कोनो सम्बन्धिसँ पुछैत छी - ई की अछि। ओ कहैत अछि- ई गौतम ऋषि आ अहिल्याक मूर्ति अछि। पता नहि झाँपल किए छैक। ओना उपर सिंहासनपर पूर्वमे स्थापित सभ मूर्ति एक पतिआयनसँ प्रतिष्ठापित अछि। एकर पूजारी महिला होइत आएल अछि। मन्दिर आ पूजारी दुनूक अवस्था ओतेक ठीक नहि लगैत अछि। हमरा पुछलापर बगलक एकटा मन्दिरक पुजारी बजैत छथि- ई स्थान ग्रामीण सभक सहयोगसँ चलि रहल अछि। मन्दिर धरि सडक तँ आयल अछि मुदा कठिनाह। सोझ आ

सुविस्ता बाट नहि रहलासँ प्रायः दर्शनार्थीक भीड कमे रहैत हयत से अनुमान लगबैत छी ।

अध्यात्म रामायणक आधारपर लिखल गेल चन्दा झा कृत मिथिला भाषा रामायणमे श्राप प्रसंग आएल अछि-

गौतम कहल रहह गय जाय । पापि पाथ भितर समाय ॥

जल जनु जीबह अन्न न खाह । आश्रम छोडि कतहु जनुजाह ॥

(मि.भा. रा. पृ(२६ , सा. अ. २०१०)

दश बजबामे बेसी देर नहि रहि गेल अछि । अनजान बाट भेने फेर जाहु पड़त पुछिते । हमसभ घुरैत छी । एकटा सन्तोष त अछि - चलु कार्यक्रम स्थलपर पहुँचबासँ पूर्व बाँचल समयकेँ सार्थक उपयोग कएल ।

सडके सँ प्रवेश द्वार देखाइत अछि -पीण्डारुचमे स्वागत अछि । नहि देखल , नहि गेल एहि गामक संग तदात्मत अछिए -चन्दा झाक आ प्रभास कुमार चौधरीक गामक हिसाबे । गाममे पुछैत पोखरिक पछबारी डीह पर पहुँचैत छी । गाड़ीसँ उतरि कार्यक्रम स्थलपर जाइत रमणजीक खोज करैत छी । कहल जाइछ- चन्दा झाक स्मृतिमे बनल भवनमे गेल छथि । हम ओतहि बढैत छी । पहुँचिते फोटो सेशन चलि रहल होइछ । सभक उद्‌गार एक्केवेर अबैत अछि- आउ, अहुँ सामिल भऽ जाउ । सामूहिक तस्वीर लेल जाइछ ।

फेर कार्यक्रम स्थल दिश । विभा रानी बाटमे भेटैत छथि । भेंटघाँट नहि मात्र फोन आ चाटसँ बातचीत । से देखिते प्रशन्नता व्यक्त करैत छथि । आगाँ आर साहित्यकारसभ छथि- भाई बुद्धिनाथ मिश्र, डा. देबेन्द्र मिश्र, रामलोचन ठाकुर, विद्यानन्द झा, कमल मोहन चुन्नु, देवशंकर नवीन, गंगेज गुंजन, डा. भीमनाथ झा, कथाकार अशोक, डा. विशेश्वर मिश्र, सियाराम झा सरस, शिवशंकर श्रीनिवास, नवीन चौधरी, फूलचन्द्र मिश्र, उदयचन्द्र झा विनोद अछि । एखन तँ दरभंगासँ साहित्यकार लोकनिकेँ अएबाकेँ छन्हिए ।

घुरिते जलखईक विजो भऽ जाइछ । सभ केओ आंगनेमे बफे अन्तरगत कचौरी, जिलेवी, मिठाई , तरकारी, आदि लऽ मनपूर्वक जलखई करैत छथि । हम अपन खोराक आ आवश्यकता अनुसार लैत छी । ताबत धमाधम सभ जूमैत जाइत छथि- चन्द्रेश, डा. रामदेव झा, डा. शंकर देव झा, रमेश, विभूति आनन्द, मन्त्रेश्वर झा,पंचानन मिश्र, आर आर एखन मोन नहि पड़ैत छथि ।

कार्यक्रम शुरु होइछ । आभास कुमार चौधरी आगत अतिथिलोकनिकें पाग,डोपटासं स्वागत कएलकनि । प्रभासक ई उन्नैसम् स्मृति दिन छलनि तएँ उन्नैस गोटेकेँ उद्‌घाटनक हेतु चुनल जाइछ । जाहिमे संयोगसँ हमहुँ रहैत

छी। सभक सम्मान पाग दोपट्टासँ होइत अछि। आ सभ गोटे एक एक प्रति प्रभास समग्र हाथमे लऽ एकर विमोचन करैत छी। स्व. चौधरीक सुपुत्री डा. वन्दना चौधरी द्वारा संकलित प्रभासक पाँचगोट उपन्यासके एकजिल्दमे आनल गेल अछि- अभिशप्त, युगपुरुष, हमरा लग रहब, नवारम्भ आ राजा पोखरिमे कतेक मछरी।

तकरा बाद प्रभाससँ सम्बन्धित किछु चित्रक संग हुनक भाषण सभ दृश्य आ श्रव्य माध्यमसँ देखाओल, सुनाओल जाइछ। किछु गोटे ग्रामीण आ अतिथियो महक प्रभासक सम्बन्धमे बजैत छथि। समय दू सँ उपर भऽ गेल रहैछ। भोजनक तैयारीक खबर अविते भोजनमे सभ लागि जाइत छथि। भोजनोपरान्त हमरा जनकपुर घुमबाक रहैत अछि। रमण जी डा. वन्दना चौधरीसँ परिचय करबैत छथि। अहलादपूर्ण भेंट। हम धन्यवाद दैत छीयनि। आयोजनक हेतु। ओ हमरा आभार व्यक्त करैत छथि आबि जएबाक लेल।

डा. राम देव झा संग बहुत पूर्वे भेंट भेल रहैत अछि। से एहि अवसरकेँ सदुपयोग करैत तकरा नवीकरण करैत छी आ तकर स्मृति स्वरुप एकटा चित्र सेहो खिचबैत छी। चन्द्रेश हुनके संगे दरभंगा दिश बढैत छथि, हम अपन गाडीसँ जनकपुर दिश निकलि पड़ैत छी।



लोकनायक सलहेसक सान्दर्भिकता

बचपनमें जखन खेत, खरिहानमे धान कटबाबय जाइत छलहुँ तँ किछु गोटे लोक गायकसभ खेत खेतमें ढोलक प लोकगाथा गीत गबैत छलथि आ बदलामे हुनका धानक 'पसही' भेटल करैत छल । ओहि गायकसभमे शिवलाल गिरी सेहो एक रहल करैत छल , जकर गायन हमरा बहुत पसन्द छल । घण्टो सुनल करैत छलहु । ओ सलहेसक गायन करैत छल ।

फेर तकरा बाद गाममे विवाहक अवसरपर सलहेस नाच भेल करैत छल । चौकी तोड़ अभिनय, बीर बांकुर जेहन चिंघाड़, चन्द्रा आ सलहेसक प्रेम प्रसंग अथवा चूहड़मलके हार चोराएब आ मालिनीके नटी भेसमे तकरा प्राप्त क सलहेसकेँ राजा कुलेसरक बन्दी गृहसँ मुक्त कराएब...। बड रोचक, मनोरम आ उत्तेजक नाच रहल करैत छल सलहेस नाच । भोरक ७ बजेधरि लोकसभ अड्डा जमौने देखैत रहैत छल । नाच पार्टीके हाथ जोड़ि क नाच बन्द करबाक अनुमति लेबय पड़ैत छल ।

आइ यद्यपि ओ दुनू अवस्थामे बहुत अन्तर आबि गेल अछि । नहि ओ देवी रहल आ नहि ओ कराह । गायन लगभग लुप्ते भ गेल अछि । किछु लोक अखनो गांमघरमे एकरा बचा क जीवनक अन्तिम पायदान दिस उन्मूख छथि , ओकरा फेरसँ सम्हारयबला कियो नहि अछि ।

नाचक हालत सेहो ओहने अछि । किछु नाच पार्टी एहि टी.भी. सिनेमा आ प्रत्यक्ष नाच-गान आर्केष्ट्राकेँ युगमे सेहो लोक नायक सलहेसक संग जीवयकेँ संघर्ष क रहल अछि । हुनक आदर्शकेँ पात्रके रूपमें जीबयकेँ प्रयास क रहल अछि ।

जहां धरि सलहेसक सम्बन्धमे विद्वत् लोकक अध्ययन, अनुसन्धानक बात अछि तँ ओ सेहो बड्ड दुखद, लज्जास्पद आ उपेक्षापूर्ण अछि । आइकेँ दिनमे अनेकों विषय पर बहुतो संख्यामे पुस्तकसभ उपलव्ध अछि मुदा सलहेस पर पुस्तकसभक सर्वथा अभाव अछि । जे किछु अछिओ ओहिमे लोकगाथामे आएल किछु प्रसंगकेँ अपना ढंगसँ व्याख्या क सभ प्रस्तुत कएने छथि । कोनो ठोस अध्ययन, विश्लेषण भेल तँ नहि देखाइत अछि ।

एम्हर नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, संस्कृति विभाग सलहेस पर गंभीर चिंतन-मनन कएने अछि । पंक्तिलेखकक संयोजनमे किछु वर्ष पूर्व अखारमे लहानमे वृहत् अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी सम्पन्न क उपलव्ध कार्यपत्रसभकेँ संकलित क 'लोक नायक सलहेस : प्रथम खण्ड' प्रकाशित भ चुकल अछि । तहिना जेठकेँ प्रथम सप्ताहमे सेहो ओहि स्तरक एकटा गोष्ठी सलहेसक ओझराहटमे परल

प्रसंगसभकेँ समेटि क करबाक कार्यक्रम निर्धारित भेल छल । ओहिमे सेहो प्राप्त आलेख पुस्तकाकार प्रकाशन भेल अछि– लोकनायक सलहेसः द्वितीय खण्ड क नामसँ ।

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानकेँ लहान गोष्ठीएसँ सलहेस पर डाक टिकट प्रकाशनक लेल आवाज उठाओल गेल छल, आ आइ हुनक डाक टिकट सेहो तैयार अछि । हम मानैत छी जे लोकनायक सलहेस नेपालक गौरब पुरुष छलथि, जिनका राष्ट्रीय विभूतिक सम्मान भेटबाके चाही ।

नेपालक सपूत !

वास्तवमे सलहेसकेँ नेपालक सपूतके रूपमें हमरासभकेँ लेबाक चाही । नेपाल-भारतक विशाल क्षेत्रमें लोककंठमे गाथाक रूपमे जिवित आ प्रतिष्ठित सलहेस जीवन चरित्रक गायन हुनक लोकप्रियताकेँ प्रमाण मानल जाइत अछि । गांम-गाममे दुसाधसभ लोक देवताक रूपमे सलहेसकेँ पूजैत छथि । सिराहाक लहानसँ सटल सलहेस फूलवाड़ीमे प्रत्येक नववर्षक अवसरपर नेपाल भारतक लाखों लोक पूजा करय अबैत अछि । फूलबाड़ीमे अवस्थित सलहेसक गहबर (मंदिर) में दर्शनार्थिसभक भीड़ रहैत अछि । ओतहि हुनक प्रेमिका मालिन वहिनसभक सेहो सुन्दर मंदिर एव मूर्तिसभ अछि, जकरा सेहो पूजन कएल जाइत अछि ।

सलहेसक जन्म सिराहाक महिसौथामे भेल छल । अपन लगन, श्रम आ सौर्य सँ दरबारमेँ निक पहुंच बना लेने छल आ अन्तमें राजाक पद पर सेहो आसिन भेल । तएँ राजा जी केँ नाम सँ सम्वोधित सेहो भेलथि । कहल जाइत अछि मिथिलाक छोट-छोट प्रांतसभमेसँ कोनो एक (महिसौथा) मे हुनक वर्चश्व छल । अपन सेना छल । तिव्वत-चीनसँ आक्रमण भेलापर किराती सेनाकेँ सहयोगसँ ओकरा डटि क सामना कएने छल । मिथिलाकेँ बचा क रखलथि । आइ सेहो हुनक तस्वीरक संग केवला किरांतकेँ रक्षकक रूपमे स्थापित कएल जाइत अछि । मिथिलाक उत्तरी सीमा चुरेमे ओ रक्षक प्रहरीकेँ रुपमे रहल करैत छल ।

सभसँ जटिल अछि सलहेसक समय निर्धारण । विद्वानसभ अपन-अपन तर्कक आधारपर हिनक समय भिन्न-भिन्न समयमे निर्धारण करैत आएल छथि । किछु लोक मिथिला समेतक राजा सम्राट हर्षवर्द्धनक जखन अन्त भेल (ई. ६४६-४७ में) । तहियाधरि मिथिला लगभग शांते छल । एकरा बाद अराजकताक स्थिति उत्पन्न भेल । वहुतो नातेदारसभ गद्दीपर अधिकार करबाक लेल लड़य लागल । छोट-छोट राज्यसभक विकास भ रहल छल । अराजकताक स्थिति सेहो । एहि समयमे सलहेस (६३०-७१० ई.) के प्रादुर्भाव भेलनि । हिनक माताक नाम शुभगौरी (मन्दोदरी सेहो !) आ पिताक नाम

सोमदेव छल) मिथिलामें कर्णाट शासन (१०८९ ई) कैं उदयसँ पूर्व सलहेसक जन्म आ समयक अनेको विद्वानसभ समर्थन कएने छथि । किछुए दिन पूर्व एक कृषक परिवारकैं सप्तरी जिल्लाक चुरे क्षेत्रमे धरमपुर गाविस स्थित ढुंगा लरे स्थानपर प्राचीन समयक हर, कोदारि, हांसु, तीर, ढाल, टाप, रथक सामग्री, तलवार आदि प्राप्त भेल अछि । इतिहासविद् स्व.डा. हरिकान्त लाल दास (सप्तरी) एहि सामग्रीसभकैं इशाक नवम् शताब्दीक मानैत एकरा राजा सलहेसक सम्पत्ति मानैत छलथि ।

किछु लोक मैथिलीक आदिग्रन्थ जे नेपालक कर्णाट कालमे राजा हरिसिंह देवक दरबारी कवि, विद्वान ज्योतिरीश्वर ठाकुर लिखने छथि 'वर्ण रत्नाकर' मे सलहेसक नाच, गाथा आ नाम धरि उल्लेख नहि रहलासँ हुनका मध्य कालमे अस्तित्वमे रहल हयबाक विश्वास दियबैत छथि ।

ओ जातिक दुसाध वर्गसँ छल जे ओहि समयमे सेहो अछूतक श्रेणीमे राखल जाइत छल ॥ इतिहास आ साहित्य लेखन उच्च वर्गक काज छल । ओ सलहेसक व्यक्तित्वकैं अनदेखा क देने हेता तँ अस्वभाविक नहि । जखन कि ओहि अराजक समयमे उच्च आ निम्न वर्ग विच सेहो द्वंदक सम्भावना प्रवल छल । तखन एहनमे किया कियो अपने विरुद्ध समाजमे जन चेतना लाबयकैं प्रयास करयबला जननायक सलहेसके बढ़ाबा दितैक । भ सकैत अछि ओकर असर हुनक जीवन चरित्रक विशेषतासभकैं नुकाबयकैं प्रयास कएल गेल हो आ आइ एतेक लोकप्रिय लोक गाथाकैं सेहो एक-दूटा आधा अधुरा संकलनकैं अतिरिक्त कोनो ठोस रुप सँ नहि देखाइत अछि ! अपन पराक्रम, वैभव आ वीरतासँ दुसाध लोकक वीच देवताकैं रुपमें पूजित होबयकैं शौभाग्य पाबयबला सलहेस एकटा शौभाग्यशाली मैथिल सेना नायक छलथि जे अपन राज्यक संगहि तत्कालीन मिथिला क्षेत्रकैं सेहो सुरक्षित आ एकत्रित करयकैं काजमे निपुणता देखौने छलथि ।

नेपालकैं हुनका राष्ट्रिय विभूतिकैं रुपमें मान्यता देब सर्वथा उचित अछि । प्रत्येक वर्ष वैशाख १ गते हुनक जन्म दिन अर्थात् सलहेस फूलबाड़ीक मेला आयोजन होइत अछि, । ताहि दिनके नेपाल सरकार सलहेस महोंत्सवकैं रुपमे मान्यता द दोसर दिन छुट्टीक घोषणा क सकैत अछि । अन्य ठामसभमे एहन अवसरसभकैं उपयोग सांस्कृतिक आ पर्यटकीय विकासकैं लेल कएल जा रहल अछि ।

वितलहा लहानक गोष्ठीमे एकटा प्रस्ताव पारित क सलहेसकैं नामसँ लहान-सिराहाकैं राजमार्ग क्षेत्रमें अवस्थित सड़क खण्डकैं सलहेस मार्ग नामाकरण हुए, सलहेसक एक भव्य प्रतिमाक स्थापना सलहेस फुलबाडी निकट राजमार्गकैं कातमे वा चौक पर हुएं, डाक टिकट जारी हुए जेहन मांग

हमसभ नेपाल सरकारसँ कएने छलहु । भाषा, साहित्य, संस्कृतिके ओझराहटमे राखयबला आ पुरातत्वक नाम पर काठमाण्डू उपत्यका आ लुम्बिनीकेँ मात्र नेपाली भूमि जेहन मान्यताके संग काज करयबला सत्ताक पृष्टपोषक लोक,वा सरकारी संयन्त्र तराई क्षेत्रमे रहल अनेकों राजा, राजवाड़ाक अवशेषकेँ खोजि निकालयमे कुंजुस्याई करैत आएल अछि । एहि सभसँ तराइ मधेशक प्राचीन, ऐतिहासिक विशिष्टता वाहर आबय नहि पाबि रहल अछि आ अनेको प्रसंग नुकाएल अछि ।

एहिना उपेक्षित व्यक्तित्वके धनी, लोक मानसमे हजारों वर्षसँ जिवित आ जातीय, वर्गिय अवधारणाकेँ अन्तर्गत देवता जकाँ पूजित लोकनायक सलहेस लोक गाथाक सभसँ सशक्त, प्रमाणिक आ उर्जावान नायक रहल छथि , जिनका राज्यसँ उचित सम्मान भेटब अखन बाँकी अछि ।



सलहेसक गाथाक बदलैत स्वरुप आ सतीमामा

सलहेसक जीवन चरित हमरा अदौसँ अभिप्रेरित, आकर्षित करैत रहल अछि। कोनो परम्परागत गायकक गायकीमे रमि कऽ होइ आकी सलहेस सम्बन्धि आख्यान पढि कऽ। जे जतेक सुनल पढल से ततेक रुपमे सोझामे अवैत गेल। किछु दशक पूर्व धरि सलहेस गाथा जे तहिया गीतसँ आगाँ किछु ने रहय- रोचक, विस्मयकारी आ रहस्यमय। सुगा, हाथी सभक सम्वाद आ आकाश- पतालमे उडैत चलैत एकर पात्र सभक रोमांचक वर्णन। डा. मणिपद्मक राजा सलहेस जखन पढल तँ एकटा अजूबे दुनियाँक व्यक्तित्व बनि कऽ ठाढ भऽ गेल हमरा सोझांमे सलहेस।

तखन लहानक सलहेस फुलवारीमे लगैत विशाल मेलामे जएबाक ललक आ तकरा बाद गामोघरक गहबर सबमे सलहेस पूजाक अवसरपर चढौना, मेला आ छोकडवाजी नाच। मनके तनने रहैत छल। मुदा तैयो सलहेसक चरित्रकेँ भितर जएबाक मन नहि भेल -चलु एकटा बीर पुरुषक गाथा छै, एहिना होइत हयतै।

विगत दश पन्द्रह वर्षसँ सलहेस हमर अध्ययनक विषय बनि गेल। एकर मूल कथा आ तकर प्रसारक स्वरुपपर जखन अध्ययन करबाक अवसर भेटल त एकटा अजूबे दुनियाँक वातावरणसँ साक्षात्कार भेल। जार्ज ग्रियर्सन (१८८१-८५) सँ एखन धरिक जे जतेक गाथाक मूल स्वरुप अथवा विवेचना देखल सभ अपन अपना ढंगक फूट फूट लागल। पात्र उएह मुदा कथानक फरक फरक। तखन ई बुझबामे भांगठ नहि रहल जे विगत एक डेढ सय वर्षमे सलहेसक गाथातत्वमे बहुत रास तत्व जोडाइत गेलै जे कर्ण प्रिय, श्रवणप्रिय आ श्रोताक रुचिक अनुकूल छल। गायक किछु इनामक आशामे एकर गायन करैत छल, तएँ सुनहिारके रोमाँचित करैक तकर ध्यान सदैब राखल गेल आ तखन एकर स्वरुपमे निरन्तर किछु ने किछु जोड़ाइत गेलै, गाथा बिस्तार पबैत गेल। तओं एकर जड़िमे रहल बहुत बात एखनो धरि पकड़ल नहि जा सकल अछि।

तखन सलहेसक जन्म नेपालक सिरहा जिल्ला अन्तर्गत महिसौथामे भेल छलै। ओकर कर्म भूमि इएह क्षेत्र छै, जकर नामसँ अवशेष एखनो छैक से धरि सभ गाथा गायक वा संकलक स्वीकारैत रहलाह। समय छठम- सातमसँ तेरहम- चौदहम शताब्दी धरि घुरिया रहल अछि। विभिन्न तर्क सभ आबि रहल छैक। आगां पाछा जे होइक सलहेस गाथा गायन आब लुप्त प्रायः भ रहल छैक।

एतेक भेलाक बादो दूटा एहन पक्ष अछि, जकरा बचएबाक जरुरति छैक । एक- एकर गाथाक सम्पूर्ण स्वरुपकेँ सुरक्षित राखल जाए, आ तकरा विश्लेषण कऽ तत्थ कथ्यकेँ फरिछ्या कऽ जनसमक्ष राखल जाइक । अनेरे विषय आ पात्रकेँ भयावह आ आडम्बरपूर्ण नहि मनाओल जाए । सलहेस अवतारी पुरुष छलाह ई ध्रुब सत्य जे ओ जिविते लोकपूज्य भऽ गेल छलाह । ई अस्वभाविक नहि । हमर गाम बघचौडामे डेढ दू सय वर्ष पूर्व दोनवार वंशक तिलक सिंह छलाह । हुनक डिह अछिए । हुनक खुनाएल पोखरियो अछि । हुनका बारेमे कथा प्रचलित छैक जे ओ निष्णात धामी छलाह । परोपटामे कतौ ककरो माल जाल हेराइ ओ जँ तिकल सिंहकेँ कबुला करए तँ ओकर सामान भेटि जाइक । अद्‌भूत चमत्कारी लोक । जिवित पूजा लैत छलाह । एखनो हमरा गाममे हुनक गहबर छन्हि आ ब्रह्मबाबाक पूजाक क्रममे हुनको पूजा होइत छन्हि ।
एहनमे जँ सलहेसक पराक्रम आ शोषण मुक्त समाजक अभियानक योद्धा बनि बहुतोकेँ जे कल्याण कयने रहय ताहिसँ हुनका देवता रुपमे स्वीकार कऽ लेल गेल होइ तँ बेजाय कोन । एखनो कतेको मानव योगी बाबा भगवानक रुपमेपूजा तँ करबिते छथि- छलाह ।
तखन सलहेससँ जूडल दोसर तथ्य अछि नाच, जे प्रायः लुप्ते भेल जा रहल अछि । सिरहा जिल्लाकेँ अन्तर्गत किछु नाच पार्टी अछि जे आब नाचो करैय कि नहि हमरा नहि बुझल अछि । हम तँ ओहि नाचक चारि रातिक भिडियोग्राफी करा सुरक्षित रखने छी । जकर उपयोग समयपर करबाक नियार अछि ।
एहि दुनू दिस हमरा सभक प्रयास जारी रहल अछि । गाथा संकलनक क्रममे सभसँ टटका हमर मामा (सतीमामा, ८१ वर्ष) माध्यम बनलाह जे बहुत वर्षक बाद जनकपुर आएल रहथि भेंटघाँट करय । ओना हम अपन आलेख सभमे दूगोट गायकक चर्च करैत छी -एक गामेकेँ शिवलाल गिरी आ दोसर इएह सत्तिमामा । मामा जहिया कहियो दू तीन दशक पूर्व गामपर आवथि नौते पिहानीमे तँ हुनका साँझ होइते टोलबैया घेरि लैन आ सलहेसक गीत सुनाब कहनि । ओ दुनू भाइ रहल करथि । मामा ढोलक पर शुरु भऽ जाइत छलाह आ भाई हुनक पसंगा भेल करनि । अन्तिम भाषकेँ आगा बढबऽ बला । से सत्ती मामा सँ चारि पाँच दशकक बाद हमरा गाथा प्रसंग किछु पुछबाकक मोन भऽ गेल । हुनक स्वास्थ्य आ गएबाक छुटल अभ्यासक कारणे हमर उद्देश्य मात्र मौखिकेँ किछु प्रसंग सुनब छल । मुदा जखन ओ शुरु भेलाह तँ ४५ मिनेटसँ उपर विभिन्न प्रसंग गायनक माध्यमे प्रस्तुत करैत रहलाह । बुझु जे जँ हुनका भोजनक हेतु बजबऽ नहि अइतनि तँ कछिु आर घिचितैथि

से अनुराग एहि गाथासँ एखनो बाँचाल रहनि । सतीमामाक गाथा गायनमे सेहो तथ्यक बहुत हेर फेर भेटल । कतेको प्रसंग कथानकसँ मिलैत, मुदा तकर प्रस्तुती भिन्न रुपमे । हमरा लागल अछि ई सभ हेरफेर उएह समयक अन्तरालमे बदलल रुचि पूर्ण परिस्करण मानल जएबाक चाही ।

एत्त एकटा प्रसंग मात्र हम राखऽ चहब । जखन सलहेसक विवाह भऽ जाइत छैक मुदा ओ ओत्तसँ चल जाइत अछि मोरंग दिश, ताहि समयक एकटा क्षेपक प्रसंग-

एकाएक सलहेस पत्नि सतवतीकेँ छोडि कतहु चल जाइछ । स्मरणीय ई जे आन गाथा गायक लोकनि मालिनी द्वारा ओकर हरणक बात कहल गेल अछि विभिन्न रुपमे । एत्त ओ राजा विराटक बेटीसँ विवाह कयने रहितो ओही राति मोरंगक मालिनीकेँ भेटबाक बचन देने रहबाक कारणे ओ ओत्तसँ ओम्हरे चलि जाइत छथि ।

सतवतीक नैहरमे भेल अनघोलक एकटा चित्र -

'नैहरिया गे नगरिया गे मैया
अमती मनहरकेँ काँट छै
ससुरा नगरिया गे मैया
ठाढे सुरधाम जएबै गै ।
कोन दिनमे की की कैलिऐ
पिअबा भागि गेलौ ....।'

माय कहैछै -

भाग भाग धोछिया
 हमरा सोझहा से भगियौ
हमरा दुहरियापर तोहु नै
रहियौ गै ... ।

अन्तमे गामवासीकेँ कहै छै सतबती-

विनती दुलहीन करैअ-
गोर लगैछी पैरिया हम पड़ैछी न हो
हो जाय दहो
हो जाय दहो जहाँ दिल चाहै छी
बइमानकेँ
हमरे आसरा जुगे जुगे
होतै न हो ... ।

आ तकरा बाद अपन पतिक उद्देश्यमे निकलि पडैछ सतवती ।

तर छोड़े धरती

उपर असमान
बीचमे मारैआ
चिल्हिया उडान - ॥
कथामे आगाँ छै - अपन पतिक पालकी रोकितो अन्ततः ओ घूरि कऽ नहि अबैछ।
गाथामे मालिनक संग सम्बन्ध तँ नहिए बनलै सम्भवतः पत्निओक संग ओ रहि सकल वा नहि गाथामे सखा सन्तानक चर्च नहि आएल अछि। पारिवारिक चर्च लगभग शून्य जकाँ। किछु चरित्र एहन जरुर छै जे गौना विवाह प्रसंगमे देखल जाइत छैक। भाइ मोती राम, भागिन लोरिकन्हा बस। पारिवारिक नाम पर एकर विशेष चर्चा अछि। प्रेम आ विछोहक एहि सम्पूर्ण गाथामे सलहेसक शौर्य विरताक अनुपम छटा एहि गाथामे देखबामे अबैत अछि।
अन्तमे सलहेस मानवीय सम्वेदनाक एक एहन विन्दुपर ठाढ शुर बीर व्यक्तित्व अछि जे जातीय सीमाकेँ तोड़ि सर्व पक्षिय उद्धारकक रुपमे स्थापित भऽ गेल अछि। तखन जरुरी छैक एहि गाथा सभक वृहत अध्ययनक जाहिसँ ताहि समयक सामाजिक राजनीतिक परिवेशक जानकारी निकालल जा सकय।



जानकी मन्दिरके बारेमे हमसभ कतेक जनै छी ?

ई प्रश्न बहुतोके अनसोहांत लागि सकैत अछि । के नहि जनैत अछि विश्वप्रसिद्ध जानकी मन्दिरके बारेमे । के अनभिज्ञ अछि । तखन एहि प्रश्नक औचित्य की ?
हँ सत्य त इएह छैक, जानकी मन्दिरके बारेमे हम सभ जगत जननी जानकीक नामपर मध्य प्रदेशक ओरछा नरेश राजा प्रताप सिंहक बडकी धर्मपत्नि बृजभान कुअंरि द्वारा बनाओल गेल एकटा भव्य, आकर्षक मन्दिर बुझैत आएल छी, जाहिमे प्रतिष्ठित राम-जानकीक मूर्तिक पूजा-अर्चना करबाक हेतु देश-विदेशसं लाखों श्रद्धालु जन वर्षभरि अबैत रहैत अछि । नेपालक शान आ हिन्दुधर्माबलम्बी सभक हेतु मानक स्थल थिक ई-पवित्र आ आशक्तिपूर्ण जानकी मन्दिर ।
एखन ठाढ मन्दिरक स्वरुप अपने आपमे अद्भूत, भव्य आ दर्शक/पर्यटक सभक हेतु आकर्षक रहल अछि । एकर मुसलमानी आ राजपुताना शैलीक निर्माणक संग मिथिलाक अध्यात्मिक मान्यताके सेहो कायम रखैत बनल ई मन्दिर अपने आपमे अद्भूत अछि । प्रायः इहो बहुत गोटे जनैत छी । तएँ हमर प्रश्नक एतहु कोनो अर्थ नहि निकलैत अछि ।
तखन ? तखन एकटा बात सभकेओके बुझल नहि भऽ सकैछ- जानकी मंन्दिरक सम्बन्धमे तथ्य सत्य बात जे एकर निर्माणके पृष्टभूमि रहलैक अछि । जानकी मन्दिर सन् १८९५ ई. मे बनब शुरु भेल आ सन् १९११ ई.मे बनि कऽ तैयार भेल आ एकर प्राण-प्रतिष्ठा भव्यताक संग भेल छलैक । इएह जानकारी आइधरि कहल जा रहलैक अछि आ इएह सत्यो छैक । तखन एकटा प्रश्न उठैत छैक -एहि तरहक जानकारीक स्रोत की ? की जानकी मन्दिरमे एहन कतौ शीलालेख छैक, जे रखबाक परम्परा रहलैक अछि, जँ छैक त कत्त छैक ? ओकर प्रतिलिपि आइधरि प्रकाशित किए ने कएल गेल ? साँच बात कही त पंक्तिलेखकके आइधरि दोसरे श्रोतके आधार पर ई तथ्य बुझल छलै, आनके देखल होइन्ह त हमर अज्ञानता मानल जएबाक चाही । आ जं छैक त आब सार्वजनिक रुपें प्रदर्शित हएब जरुरी छैक । ई जिज्ञासु सभक हेतु जरुरीयो छैक ।
एहि सन्दर्भमे तीन गोट स्रोत मात्र छैक जे जानकारी उपलब्ध करा सकैत अछि । पहिल- ओरछा राजवंशक कोनो उत्तराधिकारी, जानकी मन्दिरक महन्थ आ गुठी संस्थानक पदाधिकारी गण । ओरछा राजवंशक हालक वारिस महाराजा मधुकर शाह (द्वितीय) एखनो छथि आ नयाँ दिल्लीमे रहैत छथि ।

हुनका सं सम्भवतः एहन कोनो जिज्ञासुक सम्पर्क भेल होइन्ह हमरा जानकारी नहि अछि । तखन जानकी मन्दिरक शतवार्षिकी समारोहमे राजा प्रताप सिंहक पाँचम् पुश्ताक उत्तराधिकारी महाराजा मधुकर शाहक संग जानकी मन्दिरक शीश महल (दक्षिण कात) मे एहि पंक्तिलेखकके भेंटबाक अवसर भेटल छल आ प्रायः घंटाभरि टेपांकित अन्तरवार्ता कएने रही जे हमर गामघर साप्ताहिक वर्ष : १५, अंक : १४, २०५३ मे तकर किछु अंश प्रकाशित भेल छल । ताहि समयमे हमरा लग सामान्य जिज्ञासा छल जकर ओ उत्तर देने रहथि । आब जे सभ विभिन्न अध्ययन, चिंतनक बाद आएल अछि, तकर सार्थक उत्तर ओ तहिया दऽ सकैत छलाह, मुदा हम हुसि गेल रही । आब केओ भेटल हयताह हमरा नहि लगैत अछि । मन्दिर व्यवस्थापक तहियो हुनका औढेमे रखने रहनि, हमर कठिन प्रयत्न सफल भेल रहए ।

दोसर स्रोत अछि- मन्दिर अभिलेखके संरक्षक महन्थ लोकनि, जाहिमे एखन श्री रामतपेश्वर दास बैष्णव छथि महन्थ । हम महन्थ दाससं एहि सम्बन्धमे जिज्ञासा रखने छलहुँ, मुदा ओ कोनो एहि तरहक अभिलेख नहि हयबाक बात बतौलनि अछि । मात्र एकटा पुस्तकक चर्च कएलनि जकरा शतबार्षिकीक तिथि मिति मिलएबाक लेल टिकमगढसं मगाओल गेल छल । ओ पुस्तक एखन ककरो संगमे नहि अछि जेना महन्थजी कहै छथि ।

तेसर स्रोत अछि- नेपालक गुठी संस्थान, जत एतुक्का बहुमूल्य गर-गहनाक संगहि बहुत रास दानपत्र, अभिलेख पत्र आदि लऽ गेल हयबाक विश्वास छैक आ जकरा ओ सभ नुका कऽ रखने अछि । पुरातत्व विभाग द्वारा एहि सम्बन्धमे कएल गेल सर्वेक्षण, अध्ययनक बेरमे मन्दिरमे उपलब्ध अभिलेखक उतार प्रकाशित होइत आएल जरुर अछि, जे मकवानी राजा सं लऽ शाहवंशी राजा लोकनि द्वारा प्रदान कएल गेल मन्दिर खर्च हेतु जमीनक वीर्ता आदिक अभिलेख अछि । मुदा एखन धरि जे जतेक प्रकाशित अछि, ताहि मे जानकी मन्दिरक निर्माणक विवरण देल गेल कोनो दस्तावेज कागज अथवा शिलालेखक उल्लेख नहि भेल अछि, जाहिसँ एकटा महत्वपूर्ण साक्ष्यसं जिज्ञासु लोकनि बंचित भऽ जाइत छथि । एकरा लेल कोनो तरहक प्रयासो भेल अछि कि नहि, हमरा जानकारी नहि अछि ।

तीनू स्रोतमे पहिल स्रोतसं हमरा जे जानकारी छल, ताहिमे जरुरी प्रसंग हम गामघर साप्ताहिक विशेषांकमे राखि देने रहियेक, तखन किछु आर एहन तथ्य सभ आएल जकर उल्लेख सार्वजनिक रुपें करब हमरा उचित नहि बुझाएल रहए । से नहि गेल छल । मुदा हुनकोसं हम एकर निर्माणक शिलालेख सम्बन्धमे पुछि नहि सकल रहिऐक । ई बात आबो भऽ सकैत छैक । ओ नयी दिल्लीमे महलमे छथि । अवसर खोजि भेटल जा सकैछ ।

एखन ओरछा राजदरबार पर्यटक सभक आकर्षणक केन्द्र विन्दु बनल अछि। ओरछाक ओ सम्पूर्ण परिसरके विश्वसम्पदा सूचिमे सूचिकृत करबाक काज आगां बढि गेल छैक। जेनाकि पाँचमपुस्ताक महाराज मधुकर शाह हमरा कहलनि-बहुतो दस्तावेज दरबारक संग्रहालयमे भऽ सकैत छैक। प्रश्न उठैछ तकरा कोरत के ?
एहि सम्बन्धमे महन्थ रामतपेश्वर दाससं बातचितक क्रममे ओ एकटा बात कहलनि जे जानकी मन्दिरक शतवार्षिकी मनएबाक क्रममे सय वर्ष पुरल नहि हयबाक जखन चर्च चलल छल, तखन टिकमगढ सं एकटा पुस्तक मंगाओल गेल छल, जकरा आधार पर तिथिक निर्धारण भेल रहए। ओहि पुस्तकमे टिकमगढ, कनक भवन आ जानकी मन्दिरक बारेमे लिखल छलैं- महन्थ जी कहैत छथि। एखन ओ पुस्तक हुनका लग नहि छैक। सम्भव थिक बृहत्तरमे हो। पता नहि राजनितिक आखाढा बनल बृहतर एतेक गम्भिर प्रसंगक साक्ष्य के विगत बाइस-तेइस वर्ष सं संयोगने हयत वा नहि।
एकटा आर आधार भऽ सकैत छलै- २०२० साल श्रावण १२ गते शनिदिन "श्री ५ को सरकार" क निर्णयके आधार पर स्थानीय मालक हाकिम सभक रोहबरमे जानकी मन्दिरक बहुमुल्य अरबौं टका (आइ के भाओ मे) क गर-गहना, अन्य सामग्रीक लागत खडा कऽ सरकारमे बुझएबाक लेल लऽ जाएल गेल रहय। ओहि समयमे मंन्दिरमे निर्माण सम्बन्धी पुरना लागत रहै कि नहि से कोनो जानकारी नहि देलगेल अछि। तत्कालीन महन्थ राम सरण दास एहि तरहक कोनो दस्तावेज देलखिन्ह वा नहि तकरो कोनो सूचना नहि छैक मन्दिर लग। आब त ओ बहुमूल्य गहनाक अत्ता-पत्ता सेहो नहि छैक। राम प्रसाद भण्डारी "संभव" क सम्पादनमे "गुठीका मठ मन्दिरका गर-गहनाहरु सम्बन्धी केहि जानकारी" नामक अन्यन्त मेहनतसं तैयार कएल गेल देशक २१५ प्रमुख मठ-मन्दिर सं उपरोक्त विधि अनुसार लऽ जाएल गेल गर-गहनाक सूचीमे जानकी मन्दिर सं लऽ जाएल गेल गर-गहनाक सूचि नहि अछि। २०६३ सालमे प्रकाशित ११६० पृष्ठक ई दस्तावेजी ग्रन्थमे राम मन्दिरक गर-गहनाक चर्च छैक, मुदा जानकी मंदिरक ताहिसं अनेकों गुणा बेसीक (हीरा, पन्ना, जवाहरात समेत जडित) गर-गहनाक उल्लेख नहि हएब शंका उत्पन्न करैत अछि।
स्वयं वर्तमान महन्थ राम तपेश्वर दास एहि सम्बन्धमे सम्बन्धित पक्षसं मंन्दिरक गर-गहनाक सूची नहि रहबाक जिज्ञासा कऽ चुकल छथि। जत्तसं हिनका कोनो नवीन सूचना नहि भेटलनि। आने गुठीए गरगहनाक औपचारिक पुष्टि क रहल छन्हि।
तखन तथ्यक पुष्टि कोना हो ?

एकरा लेल सम्बन्धित राजघरानाक दस्तावेजके उधेसल जएबाक चाही । एकरा लेल औपचारिक टोली बना दिल्ली, अयोध्या आ ओरछा दरबारक अध्ययन- भ्रमण जरुरी छैक । तखने किछु नवीन तथ्य प्राप्त कएल जा सकैछ ।
तखन एहि सम्बन्धमे पंक्तिलेखकक प्रयाससं किछु महत्वपूर्ण दस्तावेज प्राप्त भेलैक अछि, जे जानकी मन्दिरक निर्माणक सूचना दऽ रहलैक अछि । ओ छैक अयोध्याक कनक भवनमे महराजा प्रताप सिंहक तेसर पत्नि महारानी नरेन्द्र कुंअरि द्वारा स्थापित शिलालेख । गद्य, पद्य आ अंग्रेजीमे लिखल ई अभिलेख (शिलापत्र) जनकपुरमे जानकी मन्दिर निर्माणक बाद जडान कएल गेल छैक । (देखी फुट सं बाँक्स मे) ।
महारानीबृजभानु कुंअरि अत्यन्त धार्मिक स्वभावक महिला छलथि । हुनका तएँ "रामाप्रिया सहचरी" उपाधिसं सम्बोधित कएल जाइत छलनि । पूर्व महाराजा मधुकर शाह पंक्तिलेखक संगक अन्तरवार्तामे स्पष्ट रुपसं कहने छलाह जे तत्कालीन समयमे रानीके सेहो कोनो विशेष काममे लगा मासिक तलब देल जाइत छलनि । ताही महक रुपैयाकें संचित कऽ ओ जानकी मन्दिरक निर्माण करौने छलीह । बीचमे पाई घटि गेलनि, काज रुकि गेल रहैक । तखन महाराजा ओहिमे अपन रुपैया लगा एकरा पूर्ण कएलनि ।
(गामघर साप्ताहिक,पृष्ट : ६ पर)
कनक भवनक निर्माण सम्बत् १९४८ (१८९१ ई.) मे सम्पन्न कऽ मूर्ति स्थापना कएल गेल छल । एकरो निर्माण कहारानी बृजभान कुअरि कएने छलीह । कनक भवनके देख रेख करबाक हेतु एकटा ट्रष्टक स्थापना सेहो महाराजा द्वारा भेल छल- "श्रीबृजभान धर्मसेतु प्राइबेट ट्रष्ट" जकर अध्यक्ष स्वयं महाराजा प्रताप सिंह भेलाह । एखन पाँचम पुस्ताक मधुकर शाह जी अध्यक्ष छथि ।
ताही शिलालेखमे लिखल अछि - "इन्होने ही एक वृहत् श्री जानकी मंन्दिर जनकपुरमे निर्माण करा कर श्री विग्रह स्थापित किया ।" तकरा बाद शिलालेखमे वंश परिचय देल गेल छैक ।
जानकी मन्दिरक निर्माण १८९४-९५ ई. सं शुरु भऽ १९११ ई.मे सम्पन्न भेल छल ई बात सर्वमान्य तथ्य अछि, एकर पुष्टि राजाबहादुर मधुकर शाह सेहो कयलनि । तथ्य इहो छैक जे जानकी मन्दिरके निर्माण सम्पन्न भेला धरि महारानी बृजभानु कुंअरि परलोकवासी भऽ गेल छलीह । दोसर महारानी महेन्द्र कुंअरि आएल रहथि मूर्तिक प्राण प्रतिष्ठाक समय । तकरा बाद कनक भवनमे शीलालेख लगओलनि तेसर महारानी नरेन्द्र कुँअरि, जाहिमे जानकी मंदिरक निर्माणक जानकारी देल गेल अछि ।

ताहुँ सं पहिने पुननिर्माण कराओल गेल (वास्तवमे कनक भवनकें पुननिर्माण महारानी द्वारा भेल छल) सन् १८९१ ई. मे । तकरा बाद जानकी मंन्दिरक निर्माण सम्पन्न भेल १९११ ई.मे ।

यद्यपि एहि शिलालेखमे जानकी मन्दिर निर्माणक तिथि-मिति देल नहि छैक, मुदा वाक्य प्रस्तुतिसं लगैत छैक जे समय प्रचलित अछि तकर सत्यता प्रमाणित कऽ रहल छैक अर्थात १८९५ ई. सं १९११ ई. धरि ।

आब कनेक जानकी मन्दिरक महन्थ परम्परा पर ध्यान दी । कहल जाइछ राम मन्दिरक आदि महन्थ चतुर्भुज गिरी आ जानकी मन्दिरक आदि महन्थ सूर किशोर दास समकालीन छलाह । मुदा एहि बातके उपलब्ध दस्तावेज खण्डित करैत अछि । राम मन्दिरक पहिल महन्थ चतुर्भुज गिरी मकवानपुरक सेन राजा (नाम नहि खुजल अछि) सं वि.स.१७१४ मे रामचन्द्रक पूजाक हेतु यथेष्ट विर्ता पौने छलाह (चितवन देखि जनकपुर सम्मका केहि पुरातात्विक स्थल, प्राचीन नेपाल, संख्या-२, माघ २०२४ । ले. (जनकलाल शर्मा, तत्कालीन पुरातत्व विभागक प्रधान अनुसन्धान अधिकारी) । ताही आलेखमे मकवानपुरक राजा मानिक सेनक पालामे वि.स. १७८४ सालमे जानकी मन्दिरक आदि महन्थ सूर किशोर दासके प्रशस्त विर्ता देल गेल हएबाक लिखतकें उल्लेख कएल गेल अछि । दुनू अभिलेखमे ७० वर्षक अन्तर अछि । तएँ कनेक समकालीनतामे शंकाक गुंजायश छैक । ओना तहियाक सन्त, महन्थ लोकनि दीर्घजिबी होइत छलाह । किछुओ वर्षक हेतु दुनूके भेंटघांट भेल होइक से संभव ।

ओना राम मन्दिर आ जानकी मन्दिरक निर्माण, शुरुक अवस्था वारेमे कोनो विशेष सूचना औपचारिक रुपें भेटैत नहि छैक । तएँ कठिनाई छै सत्य-तथ्य प्राप्त करबाक । ओहुना ई क्षेत्र जंगल रहय । कहांदन थारु सभक बास रहैक । ओहनमे मन्दिरक रुपमे स्थानके स्थापना कऽ पूजा-अर्जना परम्पराक प्रारम्भ करब आ तकर नाम,प्रतिष्ठाक चर्च टिकमगढ राजदरबार धरि पहुँचबामे डेढ सय वर्षसं उपर लागब एहि क्षेत्रक पछुआएल अवस्थाक साक्षी बुझि पड़ैत अछि । एकटा तथ्य आर विचारणीय अछि जे जानकी मंदिरक आदि पुजारी सूरकिशोर दासकें १६५७ ई.मे रामजानकीक प्रतिमा प्राप्त भेल रहनि से कहल जाइछ । तकर ७० बर्षक बाद अर्थात १७२७ ई.मे मकवानपुरक राजा मानिकसेन द्वारा पूजा आजाक हेतु जथा जमिन प्राप्त भेलनि । लगैत अछि उपलब्ध सामग्रीसबके फेरसं अध्ययन करबाक आबश्यकता अछि ।

सारमे :

समस्त हिन्दुधर्माबलम्बी सभक हेतु पवित्र दर्शनीय, पूजनीय स्थलक रुपमे राम मन्दिर आ जानकी मन्दिर एत्त स्थापित आ ख्याति प्राप्त अछि । एहि

मन्दिर सभक प्रतिष्ठा आ एकर अध्यात्मिक महत्व पर विशद् चर्च होइत रहबाक चाही। मधेश प्रदेशक हेतु ई गौरबक विषय थिक जे ई दुनू अति प्राचीन मन्दिर एकर सीमाक्षेत्रमे पडैत छैक। एहि गौरबपूर्ण सम्पतिक सुरक्षा आ व्यवस्थापनक अभिभारा सेहो प्रदेश सरकारक जिम्मामे छैक। ओना प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री स्वच्छता अभियान अन्तरगत जानकीमंदिर सौन्दर्यीकरणक काज आगाँ बढौने अछि।



ने ओ देवी आ ने ओ कराह

माघ १ गते २०४४

बघचौरा गामक एकटा टोल खतवे टोल । बलहाबलाक दलान पर पूजा ढारल । सौसे गौआ, लगभग एकडेढ सयक वस्ती, लोक ठाढ बैसल जूमल । सोनफी खतबे हाक वाक दैत भगता खेलाइत । बिल्टु खतबे सेहो देह हाथ डोलब लागल अछि । धामी सगुनियाक देह सेहो थरथराएव शुरु क देने छैक । ओहिठाम एककातमे बैसल रौदी खतबे सेहो कूदव शुरु क देने छैक । मने ओत देखगर सभक देह थरथराएब शुरु भ गेल छैक । सभ गोँसाई खेलब शुरु क देने अछि ।

सालमे एकबेर माघमे खतबे सभक ई सामूहिक पूजा होइत छैक । भरिगाममे चन्दा असूलल जाइछ, पूजाक ओरिऔन होइछ । निर्धारित तिथिपर पूजा होइत छैक । लोक साल भरिक ठेहियायल खूब भगता गबैए गोँसाई खेलाइए । किछु गोटे गुहारि सेहो करैछ । सभव थिक लोकक मनोकामना पुरा होइतो हयतैक ।

मुदा पूजाक जे रुप एहिसाल हम देखल अछि ओ मोनके छोट क दैत अछि । पहिने कयवर्ष पहिने खतबे सभक पूजाक दूतीन टा आकर्षण होइ छलै । बेस पैघ खनल तीरमे भगतासभ कुदैत छल, फनैत छल । आगि ओकरा किछुने वीगाड़ि सकैत छलै । आगि खौलेत छल । कोनो कारणीके अक्षत दैत छलै जरुर ओकरा लाभ होइ छलै ।

आव पूजा छुछुन लगैत छैक । कनिक दुरमे चौखूट नीपल ठाममे पूजा ढारल । टेकठी पर चिरजी पंजियारक खीर । ओकरे लेल सतञ्भा । जलखई । अगल बगलपे लोकेश्वरी, भगवती लगायत आन आन देवताक पूजा ढारल, केराक पातपर खीर, सोपारी, फुल अक्षत, फुटफुट छुटिआएल । मूल पूजा समिया निकोभियाक । दुनू भाई । हिनका भैँडा चढै छनि । हजार टकासँ कमक की हयत भैँडा । दुनूभाईके बराबरिक भैँडा आ खीर दुनू । महारानीक लेल तपाओन । मातैरके एकगोट पडबाक भोग चढैछनि ।

पूजा ढारलाक बाद भगति महराई आ मृदंगक तालपर देह हाथ उचकबैत भगतासभ अई मांकी जय, अई पापकी छय, अई हम ससिया छियौ हइ, हइ, हइ, हइ ..... ।

मृदंगक ताल, भगतईक लय आ भगतासभक हाक अदभूत साम्य । तंत्र, मंत्र आ संगीत । संगीतक महता कतेक स्पष्ट अछि । छठम सातम् शताब्दीमे

प्रचलित देवी देवताक अराधनाक तांत्रिक पद्धति एखन धरि जड़ि जमौने देखल जा सकैछ।

सगुनी घरसँ डाली उठैछै। मने भरि गामक लोक ओकरा श्रेष्ठ मानि चुकल अछि॥ शुरुएसँ ओकरे आँगनसं डाली उठैत आयल अछि पूजा सेहो ओहे ढारैत अछि। जकरा पर सभक विश्वास भेल सएह भेल पुजेगरी।

ठेक्का पर पूजा लेनिहार चिरजी पजियार वाभन थिकाह। खतबे आ वाभनक पूजा.... ।

जिज्ञाशा बढैत अछि। गामक मान्यजन महाराजा खतबेसँ अपन जिज्ञासा बतबैत छिऐ । तो सभ वाभनक पूजा किए दै छहोक।

ओ बाजल- हमरा सभक पूर्खाद्वारा लाओल ओ परम्परा एखनोधरि हम सभ मानैत छीहे, देखियौ, भेडाक सिंगपर जनौ ध परिछा लिआ रहल छै। ओ जनौ चिरजीएकें हयतनि....... ।

मिथिलाक सांस्कृतिक विरासत कतेक प्राचीन छैक शरणगतके मात्र सुरक्षा नहि। एक परिवारक सदस्य बना अपने सँगे जन्म जन्मान्तर धरि रखबाक व्यवस्था करा देलनि। सँगे पूजा पाठ, खान पीन धरिक व्यवस्था। धन्य थिकाह आदि मैथिल !

ई पूजा पाठ वर्ष दिन धरिक प्रतिक्षाक बाद अबैत छैक। आर त जेहन तेहन भैंडाक दू चारिटा बुट्टी प्रसादक रुपमे चिखबाक मौका तँ सेहो छैक ने !

महाराज कहैत अछि घर पिच्छु बीस रुपैया चन्दा लागल छै। लगभग १५ सय टाकाक खर्च छै एहि पूजामे। आनक खेतमे बोनि मजदुरी क जीवन यापन कैनिहार खतबे सभक हेतु बीस टाकाक चन्दा कोनो कम नहि। मुदा परम्पराक पालन आ एकटा सामूहिक उत्साहक आकर्षण भारकें कम क दैत छैक।

वलि प्रदानक बाद पूजा उसरंगल जाइत छैक। आब प्रसादीक रुपमे लड्डु (चिनी चिकसाक) आ सोपारी वितरित कयल जाइछ। ई गमैया आ बहरिया दुनूक लेल होइछ, जखन भेडाकें सभ बना सोना क मासु बटतै तँ जतेक घरमेसँ चंदा आयल छलै ओकर सभके घरमे बराबरिक तनुका पहुँचाओल जएतैक। जतबे होइक बराबर ...... ।

खतबे सभक ई पूजा समस्त मिथिलाञ्चलमे समानरुपसँ होइत अछि से बात नहि। जथगर जाति बला टोल भेने कतौ कतौ एकर प्रचलन छैक। नेपालक सुनसरी, सप्तरी, सिरहा, धनुषा, महोत्तरी, सर्लाही आदि जिल्लामे बसल खतबे सभ छीट फुट रुपमे एकर निर्वाह करैत अछि। हँ देवताक रुपमे निकोभिया

ससिया एकर समान देवता भेल करैत छैक, जकर ओ सभ पूजा अर्चना करैत अछि। विभिन्न ठाम विभिन्न रुप।

समय बदललै । आब त खतबे समाजमे पढ लिख लागल अछि लोक । ईजिनियर, डाक्टर बन लागल अछि। हमरे नगर पालिकाके खतबे टोल पर कहियो हमरे खेत पथारमे काज कएनिहार रामलखन खतबेक पोता एखन एम बी बी एस कऽ कतौ नोकरी करैत अछि। एहन आनो ठाम भ रहल छैक। समाजक ई बदलैत रुप निश्चय परिवर्तनमुखी अछि । एकर निरन्तरता रहबाक चाही।



आस्था आ भक्तिके कठोर अनुष्ठान : परिक्रमा

अपन आस्थाके परिणाम स्वरुप आदमी अनेकों काम करैत अछि। ई आस्था व्यक्ति-व्यक्तिमे होबए सकैत अछि। कोनो परिवार, समाज, राष्ट्र प्रति होबए सकैत अछि। मुदा जखन भक्तिके बात अबैत छैक-ई सभ प्रकारके आस्थासँ फरक होइत अछि -आराध्यदेव प्रतिके समर्पण भावसँ प्राप्त होबएबला आस्था। आ एकरा लेल सेहो निरंतर भजन-किर्तन आ दर्शन-पूजामे लागल रहब मानवीय प्रवृति हुनका आत्मसुखके अनुभूति करबैत अछि।

गतबर्ष भारतके इलाहावादके संगम तटमे लागल अर्धकुम्भमे घोषित स्थानसभमे करोडों श्रद्धालुसभ एकहिबेर स्नान करैत छल, भक्तिभाव प्रदर्शित करैत छल। एकरा लेल सयों-हजारों माइलके यात्रा कऽ पहुँचैत छल। ओतबे मात्र नहि नेपाल-भारतक विभिन्न भागमे हरेक पर्वमे मन्दिरसभमे दिनहुँ करोड़ों श्रद्धालु ओहिठाम दर्शनार्थ पहुँचैत अछि। एहिमे समय आ धन दुनूके प्रशस्त ब्यय होइत छैक। मुदा जखन श्रद्धालु अपन तीर्थयात्रासँ घर घुरैत अछि तऽ ओ कोनो बड़का सम्पती आर्जन कएने सुखके अनुभूति करैत अछि। मनशांति आ कार्यमे उत्साह थपाइत छैक। अध्यात्मिक आस्थाके ई सभसँ प्रबल पक्ष अछि।

तहिना अध्यात्मिक आस्थाक अत्यन्त कठोर अनुष्ठान अछि जनकपुरधाम अर्थात तत्कालीन मिथिलाके परिक्रमा। जत्त लाखों पदयात्री नंगे पयर रामनाम जपैत अपन आराध्यदेवके भक्तिमे लीन होइत अछि- 'मन मिथिला भूमे रसिक रसिया'

<u>परिक्रमा की अछि ?</u>

परिक्रमा कोनो खास व्यक्ति, समूह वा स्थलके चारु दिस घुमनाई अछि। कैलाशके एक प्रसंगमे गणेश आ कार्तिकेय बीच भेल संसार घुमबाक प्रतियोगितामे गणेशद्धारा अपन माता-पिताके विश्व मानि परिक्रमा कएने बहुत प्राचीन उदाहरण हमरासभके आगामे अछि। परिक्रमा शब्दके उत्पति ओमहरेसँ भेल हएत !

जे रहए एखन जनकपुरधाममे होबएबला परिक्रमाक बात करी त पहिने तीन प्रकारके होइत छल। प्रथम बृहत, दोसर मध्यमा आ तेसर अन्तरगृह। वृहद विष्णुपुराण अन्तर्गत मिथिला महात्ममे परिक्रमा सम्बन्धमे विस्तृत वर्णन कएलगेल अछि। ताहि आधारमे वृहत, कोशीमे स्नान कऽ गंगा कातमे होइत हिमालय (सम्भवत: पहाड़के लेल प्रयोग भेल शब्द होबए सकैत अछि) के निचा दिस होइत यात्रा करए पड़ैत छल। ई बहुत नमहर दुरीके आ ओहि

समयके लेल संकटपूर्ण होइत छल । तकराबाद मध्यम परिक्रमा जकरा विहारके कल्याणेश्वरसँ प्रारम्भ कऽ नेपाल-भारतके विभिन्न स्थानमे घुमैत पुनः कल्याणेश्वरमे आबि यात्राके समाप्ति होइत छल । अन्तिम अन्तरगृह परिक्रमा होइत छल जे जनकपुरधाममे अवस्थित जानकी जन्म स्थानके परिक्रमा होइत छल । ई एक दिनके होइत छल ।

अर्थात वृहत परिक्रमा राज्यके, मध्यम राजधानीके आ अन्तरगृह राजदरबारके होइत छल । पहिने प्रारम्भिक समयमे परिक्रमाके वृहत आ मध्यम पथ अत्यन्त कठिन घनगर जंगल आ खतरनाक पशुसभके बास रहल स्थान भऽ कऽ जाए पड़ैत छल । बादमे समय अनुसार एहिमे सुधार होइत गेल आ एखन दू स्तरके परिक्रमा मात्र होइत अछि-मध्यम आ अन्तरगृह ।

कोना कएल जाइत अछि परिक्रमा

जनकपुरधामके चारु कोनामे पूर्वसँ अवस्थित मंगलकामनाक प्रतीक भगवान शिवके सिद्ध मन्दिरसभ अछि-कल्याणेश्वर, जलेश्वरनाथ, क्षीरेश्वरनाथ आ सप्तरेश्वर महादेव । एहि महादेवसभके दर्शन आ प्रदक्षिणाक सँग परिक्रमा करबाक चलन रहल अछि । एकटा परिक्रमा १५ दिनके होइत अछि तऽ दोसर एक दिनके । १५ दिनक मध्यमा परिक्रमा एखन बहुत महत्व पओने अछि, जाहिमे लाखो श्रद्धालु नंगेपयर जनकपुरधामके केन्द्र मानि वृताकार रुपमे परिक्रमा करैत अछि । परिक्रमा भरि एक छाक असिद्ध आ एक छाक सिद्ध खाना खाएल जाइत अछि । पूर्ण सात्विक भऽ पालमे रहए पड़ैत अछि ।

मध्यम परिक्रमा

फागुन अमावस्यासँ औपचारिक रुपमे शुभारम्भ होबएबला ई परिक्रमा कचुरी मठसँ मूल मिथिला विहारीके डोला उठाकए रत्नसागरमे लाएल जाइत अछि । तकराबाद जानकी मन्दिर आ ओहिठाम विधि व्यवहार सम्पन्न कएलाकबाद जनकपुरधाम नजदिकक कुवामे रहल हनुमानगढी (हनुमान मन्दिर) मे पहुँचाएल जाइत अछि । शुभकाज प्रारम्भ कएला पर हनुमानजीके आशिर्वाद लेबाक चलन अनुसार एहिठाम रुकबाक आ भजन-किर्तन करबाक चलन चलाओलगेल होबए सकैत अछि । ओहिठामसँ प्रतिपदा दिन कल्याणेश्वर डोला जाइत अछि ।

परिक्रमामे मूलडोला कचुरी स्थानके मिथिला विहारीके रहैत अछि तऽ सहायक डोला रसिक निवासके किशोरीजीके रहैत अछि । तकराबाद अनेको मठ-मन्दिरके डोला, संकीर्तन मंडलीसभ पदयात्रामे खुशियाली मनबैत राम-नाम कीर्तनमे मग्न होइत जाइत अछि । दोसर दिन गिरिजा स्थान जकरा

फुलहर सेहो कहैत अछि, पहुँचैत अछि । जन विश्वास अछि एहिठाम प्रत्येक दिन सीताजी फुल तोड़ए अबैत छलीह ।

तेसर दिन राम-सीता विवाहके लेल मैथिल विधि अनुसार होबएबला मटकोरके लेल माटि आनएबला स्थान मटिहानी, चारिम दिन पानिक भितर रहएबला महादेवके मूर्ति रहल स्थान जलेश्वरनाथ, पाँचम दिन शिव मन्दिर भेल स्थान मड़ई, छठम दिन भगवानक भक्त ध्रुबके तपस्या स्थल ध्रुबकुण्ड, सातम दिन भगवान रंग खेलने स्थल कंचनबन, आठम दिन क्षीरेश्वरनाथ महादेवके दर्शन करैत यात्रा टोली पर्वतामे रुकैत अछि । तहिना नवम दिन सीता स्वयंवरमे राम द्वारा तोडलगेल शिवधनुषके एकटा खण्ड रहल जनविश्वाससँ पवित्र स्थल धनुषाधाममे, दशम दिन सप्तऋषि रहल स्थान सतोषर, एघारहम दिन औरही-हौरसाहा, बारहम दिन करुणा, आ तेरहम दिन कल्याणेश्वरमे पहुँचैत अछि । ओहिठाम जाएबेरमे कतहु बनाओल गेल चेन्ह मेटएबाक काज सेहो कएल जाइत अछि ।

ओहिठामसँ जनकपुर अबैतकाल चौधम दिनमे विश्वामित्र मुनीके बास रहल स्थान विसौलमे रात्री बास होइत अछि । पन्द्रहम दिन जनकपुरधाममे आबि गंगासागरके पश्चिमी मोहारमे मूल आ सहायक डोलाके वास होइत अछि आ सहयात्री लाखों श्रद्धालु अपन-अपन सुविधा अनुसार अपन घर वाहेकके स्थानमे रात्री वासमे रहैत अछि । एहि पन्द्रह दिनक परिक्रमाके चक्र दोसर दिन अर्थात पूर्णिमा दिन भिनसरसँ प्रारम्भ होबएबला अन्तरगृह परिक्रमामे सामेल भेलाकबाद मात्र पुरा होइत अछि ।

अन्तरगृह परिक्रमा

गंगासागर लगायतके पवित्र पोखरिमे स्नान कऽ अन्तरगृह परिक्रमामे सामिल होबबला पन्द्रदिनक परिक्रमावासीक अतिरिक्त सामान्य श्रद्धालुसभ अपन-अपन सुविधा अनुसार स्नान कऽ अन्तरगृह परिक्रमा करैत अछि । एहिमे सेहो लाखोके सहभागिता होइत अछि, जे भिनसर २-३ बजेसँ प्रारम्भ भऽ ११-१२ बजेधरि निरन्तर जारी रहैत अछि ।

पूर्णिमामे होबएबला ई अन्तरगृह परिक्रमाके दोसर दिन मिथिलाञ्चलमे होली पावनि मनएबाक चलन अछि ।

परिक्रमाके शुरुवात

परिक्रमाके शुरुवात सम्बन्धमे प्रमाणिक दस्तावेजके अभाव अछि । मुदा एखनधरि श्री बृहद्विष्णु पुराणमे उल्लेखित मिथिला महात्मके आधारमे एकर प्रारम्भ आचारी बाबा कएने कहलगेल अछि । बादमे हुनकर शिष्य कचुरी

मठके महन्थ लाखीशरण परिक्रमाके व्यवस्थित करैत गेलथि । ताही कारणें सेहो आईधरि मुख्य डोला कचुरी मठके रहैत अछि ।

शुरुमे ई पाँच दिनके होइत छल । सोतीमठके सीता प्रसाद आ बराही मठके सुरदास नामक दु गोटे साधु मिथिला महात्मके आधारमे जखन बाट पता लगाकए परिक्रमा शुरु कएलनि तखन ई पाँच दिनक छल-कल्याणेश्वर, गिरिजा स्थान, क्षीरेश्वरनाथ, धनुषाधाम आ पुनः कल्याणेश्वरमे पूर्णाहुति । जखन ई शुरु भेल, मात्र किछु साधुसन्त सहभागी होइत छल । घनगर जंगल, आ जंगली जानवरके डरसँ गृहस्थ जाए नहि चाहैत छल । आ एहि डरसँ परिक्रमा बन्द सेहो भेल । बादमे जनकपुरधाम स्थित सीता कुण्डक रामदास अचारी नामक साधुके सत्प्रयाससँ स्थानीय आ प्रवासी साधुसभ संगठीत भ घुमएके ब्यबस्था कएल गेल । बादमे सुरक्षाक प्रबन्ध सेहो मिलाओल गेल । गाजा-बाजाके प्रबन्ध सेहो कएलगेल ।

पाँच दिनक परिक्रमाके रामानन्दीय बैष्णव सम्प्रदायके साधुसभ सीतामढीसँ आबि स्थानीय ज्ञानकुप निवासी सिद्ध साधु प्रेमलताके नेतृत्वमे एकरा विक्रम सम्वत् १९६४ ई. मे पन्द्रह दिवसिय बनाओल गेल । प्रेमलता ५० गोटे साधुसन्तसँ शुरु कराओलगेल एहि परिक्रमाके अपन संगठन क्षमतासँ गृहस्थसभके सेहो एहिमे सामेल करओलनि । आई एहि परिक्रमामे भक्तिभावसँ सामेल होबएबलासभके संख्या लाखोमे पहुँचल अछि ।

परिक्रमा पथके वर्तमान स्थिति

मध्यम परिक्रमा पथ १३० कि.मि.क अछि । भारतमे ३३ कि.मि. आ नेपालमे ९७ कि.मि.। पन्द्रह दिनमे प्रति दिन तीन-चारि घंटा मात्र चललाकबाद दोसर आवासमे पहुँचल जा सकैत अछि । बाटक व्यवस्थापन नहि भेलासँ खेत, कमजोर आ वालुसँ भरल सडकसँ चलबाक बाध्यता रहल अछि । यात्रीसभके सहज बनाबएलेल बास स्थानसभमे धर्मशाला, शौचालय आ खानेपानीके उचित प्रबन्ध सम्बन्धमे अनेकों योजना प्रस्तावित रहल अछि । एखन एकर सामान्य रुपमे व्यवस्था देखएबला वृहत्तर जनकपुर क्षेत्र विकास परिषद ११ अर्बके ओहि वापतके योजना केन्द्रमे पठओलाकबादो ओ स्वीकृत होबए नहि सकल अछि । विद्युत, खानेपानीके व्यवस्था वृहत्तर करबाक प्रयास कएलाकबादो ओ हजारौंके बास स्थलके लेल प्रयाप्त होबए नहि सकल अछि ।

जनकपुरधाम भितरके अन्तरगृह परिक्रमा पक्की बनाओलगेल अछि । पन्द्रह दिनक परिक्रमाके नेपाल दिसके ९७ कि.मि.के लेल बेर-बेर योजना बनाओल गेलाक बादो कार्यान्वयन होबए नहि सकल अछि । आब प्रदेश सरकार एहि सडकके अपन योजनामे राखि आगा बढाबए त ई अध्यात्मिक आ आस्था

धारकसभके विशाल यात्रापथके संगहि धार्मिक पर्यटनके लेल सेहो आकषर्णपूर्ण बनाओल जा सकैत अछि।

फागुन अबैत होलीके शुभारम्भ मानल जाइत अछि, मुदा एहिबेर ई होली चैतमे हएबाक स्थितिसं एकर शुरुवात परिक्रमाके कंचनवनसँ औपचारिक रुपमे हएबाक विश्वास कएलगेल अछि।

<u>विशेष परिक्रमा</u>

१५ दिनक परिक्रमा चललाक ४० वर्षकबाद किछु सहासी धर्मानुरागीसभ फेर २००४ सालमे मिथिला महात्मके आधारमे पाँच दिनक परिक्रमाके शुरुवात कएलनि, जकरा पञ्चायणी परिक्रमा कहल जाइत अछि। ई पर्सा-पतैलीक कूलानन्द झा द्वारा प्रारम्भ कएलगेल छल। ई परिक्रमा सप्तमीसँ शुरु कऽ द्वाद्वशी दिन समाप्त कएल जाइत अछि। पाँच दिनके वासमे कल्याणेश्वर, गिरिजा स्थान, जलेश्वर, क्षीरेश्वर, धनुषा आ फेर कल्याणेश्वर पहुँचैत अछि। अन्तरगृहमे सेहो मात्र कुण्ड, सरोवरसभके प्रदक्षिणा कऽ परिक्रमा चक्र पुरा कएल जाइत अछि।



मिथिलामे संकीर्त्तन परम्परा

कोनो अराध्य देव वा देवीक स्तुतिमे गाओल जाएबला लोक मनोरंजनार्थ गीति रचनासभ संकीर्त्तन कहबैत अछि । ई मानव सभ्यताक प्रारम्भेसँ निरन्तर प्रवाहमान होइत आएल अछि । अपन भविष्य आ वर्तमानकेँ मात्र नहि , विगतक क्रियाकलापकेँ सेहो शुद्धिकरण, पापमुक्त आ पवित्र करबा लेल भक्तिभावसँ गाओल जाएबला एहन भजनसभ समयक विभिन्न अन्तरालमे समाजक विच प्रतिष्ठित होइत आएल अछि। भक्तिक दूटा अनुष्ठान होइत अछि-पूजा आ गायन। दुनूमे कीर्तनक प्रयोग होइत अछि।

भक्तिभावक प्रभाव संगहि अपन अपन इष्टदेवताकेँ प्रशन्न करबाक हेतु ईसवीक प्रारंभिके समयसँ कीर्त्तनक प्रारंभ भेल से सहजे अनुमान कएल जा सकैत अछि । चैतन्य महाप्रभुद्वारा कीर्त्तन गायनकेँ अकाट्य प्रमाण अछिए । तकरा बाद सिद्ध सन्तसभ भजन गायन करैत अपन भ्रमणकेँ निरन्तरता देने छल । नेपालमे जोसमनि सन्तसभ घर-घरमे भजन कीर्त्तन करैत अपन भक्तिभाव प्रदर्शित करैत छलाह ।

मध्यकालमे काठमाण्डू उपत्यकामे मैथिलीक महाकवि विद्यापतिक गीतिरचनाक प्रभावमे अनेको भक्तिकाव्यक भेल रचना हमरासभकेँ भेटैत अछि । मल्ल राजासभ विभिन्न देवी देवताक स्तुतिमे भक्तिगीतसभ रचने छलाह। सूर्य, गणेश धरिक नचारी लिखि गायन करबाक परम्पराके शुरुवात कएलनि । एहन भजन कीर्त्तनसभ आइ सेहो उपत्यकाक प्राचीन मठ-मंदिरसभमे स्थानीय भाषा मिला गाओल जा रहल देखल जा सकैत अछि। अर्थात भजन, कीर्त्तनक प्रभाव विस्तार निरन्तर जारी अछि आ समाज एकरा जीवनक एकटा अंगक रुपमे स्विकार कऽ चुकल अछि।

संकीर्त्तनक विशिष्ट पक्ष

मिथिलामे संकीर्त्तनक व्यापक प्रसार संभवतः सन् १९३४ ई. के भूकम्पक पैघक्षतिकेँ बाद बेसी संगठित रुपमे भेल मानय पड़त। अपन घर-आंगनमे पूजा-अनुष्ठानक समयमे भक्तिगीत गाबि अथवा रामायणक पाठ कऽ धार्मिक आस्थाके प्रदर्शन करब एकटा बात भऽ सकैत अछि मुदा अराध्यदेवके भजन संकीर्त्तन द्वारा खुशी कऽ विघ्न वाधासँ मुक्ति पएबाक आशा करब दोसर बात । महाभूकम्पक बाद कीर्त्तनक व्यापकता एहि अर्थमे भेल बुझय पड़त । गाम-गाम मण्डली ठाढ कऽ ''रामनाम संकीर्त्तन'' क प्रारम्भ एहि प्रकारे व्यवस्थित रुपमे भेल बुझाइत अछि।

संकीर्त्तन परम्पराकेँ सुक्ष्म रुपसँ देखलापर एहिमे विभिन्न प्रकारक डारिपात सभ देखल जाइत अछि। गाम-गाममे एहन डारिपातसभ सक्रिय भऽ

कीर्त्तन परम्पराकेँ आगु बढौने अछि। जाहिमे राम-सीता विषयक, राधा-कृष्ण विषयक, शिव विषयक आ अन्य अराध्यदेव विषयक गामघरमे बनाओलगेल मठ-मंदिरसभ एहन कीर्त्तनियां मण्डलीसभक लेल गायन क्षेत्र होइछ। गामक श्रद्धालुसभक सहयोग आ सहभागितामे एहन मंडलीसभ क्रमशः विस्तार पौलक आ प्रतिष्ठित सेहो भेल।

एखन एहि क्रममे 'हनुमान अराधना मंडल'क नामसं मंगल आ शनिदिन महावीर हनुमानक स्तुतिमे सुन्दरकाण्ड गाबि अपन संकीर्त्तन परपराके ठोस आधार कायम कएने अछि - श्रद्धालुसभ। नेपाल-भारतमे हजारो समूह एहि दिस सक्रिय रहल अछि।

संकीर्त्तनक प्रकारसभ

समाजमे व्याप्त लोकसंकीर्त्तनक विभिन्न रुपकेँ अध्येतासभ अपना-अपना ढंग सँ परिभाषित कएने छथि। हम अपन अध्ययनसँ एकरा निम्न अनुसार छुटिएबाक प्रयास कएने छी।

क. रामनाम संकीर्त्तन
ख. वैदेही विवाह संकीर्त्तन
ग. अराध्य देव स्तुति संकीर्त्तन
घ. झूला संकीर्त्तन

क) रामनाम संकीर्त्तन-

ई विशुद्ध रुपमे राम-सीताक मात्र आधार ल कएल जाएबला भजन अछि। एहिमे ग्रहशांति, समाजमे सुख-शांति, देश, राष्ट्रक कल्याणक भावना रहैत अछि। महाभूकम्पक बाद एहन संकीर्त्तनक व्यापक विस्तार भेल बुझल जा सकैत अछि। एहन संकीर्त्तनसभ अष्टयाम, नवाहमे चौबिस घंटे वा नवदिन धरि निरन्तर जारी रहैत अछि। आब त कतेको साधु महात्मालोकनि सीताराम नाम जप महायज्ञक नामपर विशाल विशाल आयोजन करैत अछि जाहिमे लाखोंक सहभागिता आ करोड़ो टकाक खर्च होइत छैक। जनकपुरक धनुषाधाममे किछु समय पूव मे एहन यज्ञ सम्पन्न भेल छल।

ख) वैदेही विवाह संकीर्त्तन-

मिथिलामे जन्मल भगवती सीताक जन्मसँ विवाह आ विदाइ धरिक विभिन्न प्रसंगसभ समेटल भजनसभ गएबाक चलन रहल अछि आ ई सभसँ बेसी प्रभावोत्पादक सेहो होइत आएल अछि। विवाह संकीर्त्तन सेहो दू प्रकारसँ गाओल जाइत अछि। एक मात्र गीतसभक द्वारा भाव प्रसंगक व्याख्या क आ दोसर राम-सीता आ सखीसभक सदेह मूर्तिसभक आकारमे

गीत आ भाव भंगिमा द्वारा कथानक स्पष्ट करैत प्रस्तुति । मिथिलाञ्चलमे दोसर प्रस्तुति बहुत उत्तम मानल गेल अछि आ एकरा लेल खास-खास मण्डलीएके पारंगत मानल गेल छल आ अछि सेहो ।

ग) अराध्यदेव स्तुति संकीर्त्तन-

एहिमे शिवविषयक नचारी सहित अन्य देवी, देवतासभक स्तुतिमे भजनसभ गाओल जाइत अछि । एहन टोलीसभ गामक दलानसभपर नियमित वा निर्धारित तिथि-मितिमे कीर्त्तनक आयोजन क भाव तरंगमे मुग्ध भ हारमूनियम, ढोलक, झालिक जोरपर गायन करैत अछि । एहन भजनसभमे जीवनक नश्वरता, पाप-पुण्यक वर्णन सन सन विषयसभ प्रमुख रुपमे रहैत अछि ।

घ) झूला संकीर्त्तन-

झूला मिथिलाञ्चलक प्रमुख पर्व अछि । जगत जननी जानकीक जन्म आ विवाह भेलाक बाद एहि क्षेत्रक लोकसभ हुनकासंग अपनाकेँ भक्तिमय एकाकार भेल मानैत छथि । तएँ विभिन्न पावनि तिहारक माध्यमद्वारा नजदिक होबयकेँ प्रयास करैत अछि । ताहिमे झूला सेहो अछि । रामनवमी, विवाहपञ्चमी, पूर्णिमा सन पावनि तिहारक बाद श्रावण शुक्ल द्वितीयासँ पूर्णिमा धरि चलयबला झूला पर्व राम-सीताकेँ सजाओल डोलीमे राखि रेशमक डोरीसँ घिचैत झूलेबाक परम्परागत अनुष्ठान अछि । ई अवध आ मिथिलामे समान रुपमे प्रचलनमे रहल अछि । मथुरा, बृन्दावनमे राधा-कृष्णाक दर्जन मठ-मंदिरसभमे मात्र नहि, गांम-देहातक मठ-मंदिरसभमे सेहो झूलाक परम्परा अछि । मैथिली लोक संगीतक क्षेत्रमे झूलाक अपन खास महत्व रहल अछि ।

भजनक स्रोत

समाजमे व्याप्त संकीर्त्तन परम्पराकेँ निरन्तरताक हेतु गीति स्रोतक आवश्यकता त अछिए । ओहन गीतसभ कतयसँ आएल त ! प्रारंभिक चरणमे लोककंठमे वास रहल बहुतो रास गीत/भजनसभ प्रचलनमे आएल छल । बादमे वारहम् शताब्दी दिस गीतगोविन्द, सूरदास, विद्यापति, रसखान जेहन कविसभक भक्तिपरक रचनासभ संकीर्त्तन गायकसभक स्रोत रहल भ सकैत अछि । तकरा बाद नयाँ नयाँ भजनकीर्त्तनसभक रचनाक्रम निरन्तरता पबैत रहल । अनेको कविसभकेँ उदय भेल, व्यासजीसभ अएलथि जे रामायण, महाभारतक प्रसंगसभकेँ सहज रुपमे लोकभाषामे कीर्त्तनक रुप द प्रसारित कएलनि । विगत सय वर्षसं समाजमे संकीर्त्तन गायकसभ लोककंठक प्राप्तिक

अधिकारमे जे जतेक गीतसभ भजनक रुपमे गओलक तकर रचयिताक सम्बन्धमे जानकारी नहि रखने अछि। एक दोसरसँ सिखैत भक्तिरसक धारा प्रवाहित क रहल अछि। मुदा एहिबीचमे सेहो जनकपुर आ अवधक सन्तसभ, ग्रामीण क्षेत्रमे रहलाक बादो संकीर्तन क्षेत्रमे समर्पित श्रद्धालु भक्तकविसभ बहुतो भजनकेँ रचना कएलनि। ओ गीतसभ एहि प्रकारे प्रखर रुपमे प्रचलनमे आएल कि के, कतय लिखलथि तकर विचार सेहो नहि रहल। आ आई सेहो एहन प्रसिद्ध भजन रचनासभक रचयिता अज्ञात मानल जाइत छथि।

भजन संकीर्त्तनके स्रोतक रुपमे विचार कएला पर ई तीनतरिका सँ प्राप्त भेल भ सकैतअछि। एक-परम्परागत लोककंठसँ आएल भजनसभ, दोसर-कोनो विशिष्ट गीतकारसभ अपन भक्तिभावमय रचना द आ तेसर व्यासजीसभ द्वारा संकीर्त्तन स्थलेपर जोड़ैत गाओल जाएबला भजनसभ।

लोककंठक भजनसभ

समाजमे प्रचलित एहन भजनसभ एक दोसर संग सिखैत गावि रहल होइत अछि। के लिखलक , कतय सँ आएल -ई गौन विषय होइत अछि। एहन भजनसभमे- "अइ देहियन के कोन ठेकान, बोले, बोले ना बोले...", "एक सभीको जाना है कचहरिया, ओढ़के चदरिया ना, दुगी दुसरो न कोई, जिअरा अपनो ने होइ, तिगी तीन दिनन्के लागलबा बजरिया, ओढ़के चदरिआ ना...।"१

व्यासजीसभक स्वस्फूर्त भजन गायन

संकीर्त्तन गायन स्थलसभमे हारमोनियम बजबयबलासभकेँ 'व्यासजी' कहबाक चलन होइत अछि। मुदा सामान्यतः व्यासजीसभ रामायण, महाभारतक प्रसंगसभ कंठस्थ कएने रहैत छथि आ भजनक विच-विचमे ओकर प्रयोग क गायनकेँ आओर आकर्षक व्यवस्थित आ लोकोपयोगी बनाओल करैत अछि। एकर अतिरिक्त अष्टयाम, नवाह अथवा झांकी संकीर्त्तन स्थलपर ठाढ भऽ हारमोनियम बजबैत विभिन्न प्रसंग मिला श्रोता वर्गकेँ प्रवचनक शैलीमे गाबि सुनाबयकेँ काज सेहो व्यासजीसभ द्वारा होइत अछि। एहन अवस्थामे प्रबुद्ध व्यासजीसभ अनेको कवित्ता, दोहा, चौपाई आ भजनसभ अपने सेहो रचि कऽ प्रस्तुत करैत अछि। एहन भजनसभ सेहो प्रचार-प्रसारमे आबि लोककंठमे वास करय लगैत अछि।

गीतकारसभक रचना

भजन, कीर्त्तनक पदसभक रचना शताब्दीक प्रारंभिके समयसँ होइत आएल तथ्य एहिसँ सेहो प्रमाणित होइत अछि जे अपन अराध्यसभक स्तुतिके

लेल शब्दक आवश्यकता तँ पक्के भेल हएत । मंत्रसभक उच्चारण सेहो ताल, लय आ संगीतबद्ध रुपमे होइत छल। वेदसभ एकर उदाहरण अछि। बादमे वैष्णव सम्प्रदाय हुए अथवा अन्य धार्मिक सम्प्रदायक धर्म प्रचारकसभ, अपन-अपन अनुकूल शब्द रचनासभ कऽ स्तुतिगायन शुरु कएने छलथि । मिथिलाक्षेत्रमे मध्यकालेसँ भजन-कीर्त्तन लेखनक प्रारंभ भेल देखल जाइत अछि। महाकवि विद्यापतिक रचनासभ एहन अनेको राधाकृष्ण, शिवविषयक गीति रचनासँ भरल अछि। ई क्रम निरन्तर जारी अछि। एहन कविसभ द्वारा रचित अनेकों भजन पदसभ एखन लोकगीतक शैलीमे मान्यता प्राप्त कऽ चुकल अछि। आई सयो वर्षसँ भजन मंडलीक गायनमे सामेल भऽ लोकरंजन कऽ रहल अछि।

मिथिला क्षेत्रमे सन्त साहित्यक केन्द्रिय भूमि जनकपुरधाम रहैत आएल अछि। एतय राम मंदिर आ जानकी मंदिरक अस्तित्व आबयसँ पूर्व सन्त, तपस्वीसभ आएल करैत छलथि आर भजन-कीर्त्तन करैत छलथि । बादमे जखन मंदिरसभक निर्माण शुरु भेल, विभिन्न सम्प्रदायक मठ-मंदिरसभ अस्तित्वमे आएल आ मूर्तिपूजा, झूला, भजन-कीर्त्तनसभक लेल पदसभक आवश्यकता पड़ल आ एतुका सेहो सन्तसभ पदरचना करय लगलथि । रसिकअली, प्रियाशरण, मोदलताक पदसभ संकीर्त्तन परम्पराकेँ उंचाईपर पहुँचौलक। जनकपुरधाममे विवाह संकीर्त्तन बहुत लोकप्रिय भेल। संभवतः जानकी जीक विवाह स्थल भेलाक कारण - अनेको भजन रामजानकी विवाह प्रसंगकेँ ध्यानमे राखि रचल गेल।

भजन-संकीर्त्तन रचनाक रचयितासभमे स्नेहलताक नाम सेहो बहुत प्रसिद्ध रहल अछि। मधुबनी (विहार,भारत) क डरोड़ी गामक निवासी छलथि ओ। मुदा संकीर्त्तन परम्पराकेँ अपने मंडली खोलि गाम-गाम पहुचौलनि । हुनक रचल भजनसभ आइ लोकगीतक रुपमे भजन गायकसभ विच स्थापित भऽ चुकल अछि।

ई. १९३०-३४ दिस हुनक भजनसभ लोकप्रिय भऽ चुकल छल। हमरा स्मरण अछि- आई सँ ४०-४५ वर्ष पूर्व जखन हम गाममे दलानपर संकीर्त्तन भऽ रहल सुनैत छलहुँ, दू चारिटा भजन बहुत नीक लगैत छल । गामक सूर्यकान्त झा 'गुजन जी' जखन अपन गीतक वोल शुरु करैत छलथि, 'बाबा बैधनाथ हम आएल छी भिखरिया, अहांके दुअरिया ना.. ।" तखन अपन हाथक ताली बजा हमहु झुमैत छलहुँ। तहिया ई नहि बूझल छल जे ई स्नेहलताक रचना थिक। स्नेहलताक ई भजन आई सेहो ओतबे लोकप्रिय अछि - "अपनेक सेवा टहल बजायब सूतलमे चरण दबायब
भंगिया पीसि पिआएब सांझ अबेर दुपहरिया, अहां....।"२

विगत पांच दशकसँ मिथिलाक गाम-गांममे कीर्त्तन गायनमे प्रयोग होबयबला एकटा अत्यन्त लोकप्रिय आ सर्वस्वीकृत भजन ''हे हम मिथिलामे रहबइ'' सेहो स्नेहलताक रचना अछि । मैथिली भाषा, साहित्यक प्रतिष्ठित पत्रिका 'बैदेही पाक्षिक' के १ जनबरी १९५१ ई, वर्ष १, अंक १७, पृ-५५ मे प्रकाशित ई भजन ओहि समयमे सेहो साहित्यिक मान्यता प्राप्त कऽ चुकल देखल जाइत अछि-

''हे हम मिथिले मे रहबइ ।

अपना किशोरीजी के टहल बजेबइ
घरहीमे हमरा चारु धाम
हे हम मिथिले मे रहबइ
सागपात खोंटि-खोंटि दिवस गमेबइ
हे हम मिथिले मे रहबइ
हमराने चाही सुख विश्राम
हे हम मिथिले मे रहबइ .....।'' ३

हम अपन किशोरी (जानकी) जीके सेवा करैत छी, हमरा घरेमे चारु धाम अछि, हम मिथिलेमे रहब । हम बरु साग-पात खाएब सुख-विश्राम प्राप्त करबाक कोनो इच्छा नहि अछि, हम एतहि किशोरी जीके शरणमे मिथिलामे रहब । गीतक एहि भावसँ एकटा भक्तिभावपूर्ण समर्पणके बोध करबैत अछि ।

तहिना- ''परम प्रिय पावन तिरहुत देस ।

जहां जननि विदेह तनया श्री सीता मंजुलवेष... । ४ जेहन कालजयी रचनाक रचयिता भुवनेश्वर झा 'भुवनेश' छलथि । कीर्त्तन मंडलीक गायकसभ एहन पदसभ किताबसँ कण्ठस्थ कऽ नहि गाबि रहल छलथि । ओसभ एक दोसरसँ सिखैत छलथि आ लोकधुन आ लोकजिह्वापर वास करैत आएल ई कीर्त्तन रचनासभकेँ मनोयोग सँ गाओल करैत रहैत छथि ।

अन्तमे

एहि प्रकारे मिथिलामे लोकधुन आ लोकगीतक तर्जपर पुरुष आ महिला दुनूक कंठमे वास करैत आबि रहल एहन भजन रचनासभ वहुतायतमे गाओल जाइत अछि । लोपरम्परामे कीर्त्तन परम्पराक अपन अलगे स्थान रहल होइतो एहि सम्बन्धमे काज कएने नहि देखल गेल अछि । कीर्त्तन, भजन संग्रहसभ प्रशस्त मात्रामे छोट छोट बुकसेलरसभ छापि कऽ बेचि रहल अछि । हाट-बजार अथवा 'बाबाजी' सभमे मात्र लोकप्रिय एहन रचनासभक साहित्यिक महत्व सेहो भ सकैछ ई बात अनुसन्धातासभ एखनो निजगुत करय नहि सकल छथि । भजन, कीर्त्तनमे प्रयुक्त भेल शब्द, भावसभ सम्बन्धमे अध्ययन, विश्लेषण होएबाक चाही । ओतबे मात्र नहि, समाजमे गाओल

जाएबला कीर्त्तन परम्पराक आधार आ जारी रहल मौलिक चिंतनक सम्बन्धमे सेहो खोजबीन होएबाक चाही । सुख, दुखक समयमे अपन देवी, देवताकेँ अराधना करयबला ई लोक अनुष्ठानक कालजयी स्वरुप भितरकेँ मानवीय मनोविज्ञानक लेखा जोखा आवश्यक अछि । एहन भजन-कीर्त्तनक परम्परा मिथिलामे मात्र नहि, सभ सामाजिक क्षेत्रमे रहलासँ सेहो एकर महत्व बेसी देखल गेलअछि । एकर पूर्व विवरण पएबाक जिज्ञाशुसभक हकके कदर करहि पड़त ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१) गंगा प्र. अकेला - नेपालक मैथिली लोक साहित्यके मौलिक विशेषता (अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल- सं. रामभरोस कापडि 'भ्रमर', २००८ ई., पृ-२३) । मैथिल संस्कृतिको संकीर्त्तन र 'अष्टयाम', शारदा मासिक, माघ २०६३, पृ-९२ ।

२) योगानन्द झा - स्नेहलता, प्र. साहित्य अकादमी, २००९ ई., पृ-५७

३) योगानन्द झा - स्नेहलता, प्र. साहित्य अकादमी, २००९ ई., पृ-३२

४) योगानन्द झा - स्नेहलता, प्र. साहित्य अकादमी, २००९ ई., पृ-३४



मिथिलांचलके छठ : निष्ठाक पावनि

पृष्टभूमि

छठ पावनिके चहलपहल बढ़ल छैक । परम्परागत होबएबला ठामसभमे हप्तापहिनहीसँ छठिके तैयारी शुरु भऽ गेल छल । गहुम, चाउरके ब्यबस्था शुरुमे कएल जाइत छैक । ई सामान्य रुपमे नहि भऽ पूर्ण चाखिके सँग सतर्कतापूर्वक छांटि क, धोकए, सुखाकए, पिसकए राखल जाइत अछि । वास्तवमे ई निष्ठाक विशिष्ट पक्षहि एहि पावनिके अन्य पावनिसँ फरक बनबैत छैक ।

एकरा बादक सभ सामग्री संकलनमे इहे शुद्धता एकर मूलमे बैसल रहैत अछि । ई पावनि सौखसँ या ईच्छासँ करएबला पावनि नहि छैक । एकर प्रत्येक सामग्री बहुत जतनसँ बच्चा बुच्चिके पहुंचसँ बाहर राखबाक अर्थ सेहो इहे छैक । सोह्र प्रकारक अन्न, फलफूल अर्घमे रखबाक चलन अनुसार ओ सभ सामग्री निष्ठापूर्वक रखबाक दायित्व घरक सभ बुजुर्ग सदस्यके होइत छन्हि । खास क क ब्रतीके अभिभारा दोसरसँ बेसी होइत छैक । फलफूलमे केरा सभसँ अधिक महत्व राखएबला फल अछि । केराके घौरमे सुगा नहि बैसए, ओकर फलके ऐंठ नहि करए तकरा लेल परिवारक सदस्यसभ कतेक सतर्क रहैत छथि तकर मार्मिक प्रसंग छठिके एहि लोकप्रिय गीतमे देखल जा सकैत अछि :

केरबा जे फरल घओंदसे, ओइ पर सुगा मरराय ।
मारबौ रे सुगबा घनुख से,सुगा गीरे मुरछाए ।

आदमी की, पशुपंक्षी सेहो बर्जित रहैत छैक । एहन कड़ा नियम आ ब्यबहारसँ मनाओल जाएबला पावनि छठि प्रति बढ़ैत गेल जनविश्वास पावनिके महत्वके देखबैत छैक । मुदा प्रश्न उठैत छैक जे सभ ब्रती नियमबद्ध भ पबैत अछि ? तकरे ठेकान राखब मिथिलाँचलक एहि पर्बक बिशेषता छैक । आई जनकपुरधामके छठि देशमे मात्र नहि विदेशधरिमे चर्चित होबए लागल अछि । इएह निष्ठा एकर विशिष्टता बढ़ौने छैक । विहारक पटनामे मनाओल जाए बला छठि सेहो बहुत नाम कमौने अछि । ओकरो कारण इहे निष्ठा छैक । पटनासबमे तऽ सांझ दिस लगेल अर्घ सामग्री (ठकुवा, भुसबाआदि) घाटेमे परिवर्तन कऽ नयां तैयार कऽ भिनसरके अर्घ देबाक चलन छैक । निष्ठाक एहन सतर्क दृष्टि कमे पाओल जाइत छैक ।

आब त काठमाण्डमे सेहो छठि खूब धूमधामके सँग मनाओल जाइत अछि । काठमाण्डूमे मैथिलसभके बढ़ैत गेल बसोबाससँ मात्र ई भेल हो से नहि,

आब त स्थानिय वासिन्दासभ सेहो आस्था आ निष्ठाक एहि पावनि प्रति रुचि देखबए लगलाक कारणें सेहो ब्रत कएनिहारक संख्या बृद्धि होबए लागल अछि । आ ई बहुत सकारात्मक संकेत छैक । मुदा एहिमे छठि पावनिके निष्ठाक बैशिष्टता प्रति नवआगन्तुक ब्रतीसभके नीकसँ जानकारी देबाक जरुरति छैक । मिथिलांचलके गाम-गांममे होबबला छठि पावनिके पृष्ठभूमिमे परिवारमे कएल गेल कबुला प्रमुख छैक । ई समाजके अदभूत विश्वासक परिणाम अछि । कबुला पुरा होएनाई पावनि प्रतिक अटूट आस्था छैक । आ ओहुमे कठोर साधना कऽ कऽ चारि दिनधरिक समयावधि बिताकए ब्रत पुरा कएनाई अपनेमे अद्‌भूत परम्परा छैक जकर निरन्तरता पृथ्वीमे सूर्यके उदयके बादेसं भेल हएबाक विश्वास कएल जाइत छैक ।

छठि पावनिके बिधि बिधान

छठि पावनि बहुत कठिन पावनि मानल जाइत अछि । चारि दिनक एहि पावनिमे व्रती दू दिन बिना अन्नपानिके भुखे रहैत अछि । शरिर शुद्ध करबा लेल नहाएबला दिनके ‘नहाय-खाए’ कहल जाइत छैक तऽ दोसर दिन दिनभरि उपवास रहि रातिमे ‘खीर’ बनाकए देवताके चढएबाक विधिके ‘खरना’ कहल जाइत छैक । तकरा प्रसादके रुपमे ब्रतीसभ ग्रहण करैत छथि । तहिना मूल दिनमे ठकुवा, भुसवा आदि कृषिजन्य अन्नके आँटासँ बनाओल गेल पकवानसभ सँगहि केराके घौर, माटिक हाथी, सूप, कनसुपती, कलशसहितक घैला आदि सामग्रीके स्वच्छता आ पवित्रतापूर्वक व्यवस्था कएल जाइत छैक आ साँझदिस डुबैत सूर्यके नमन करैत अर्घ देल जाइत छैक । छठि पावनि एहन पावनि छैक जाहिमे डुबैत सूर्यके सेहो पूजा करबाक परम्परा छैक । भिनसर उगैत सूर्यके अर्घ दऽ पावनिके समाप्ति कएल जाइत छैक । करोड़ौ हाथ अर्धके लेल एकहिबेर सूर्य दिस देखाकए नमन करैतकालक अद्‌भूत दृश्य विश्वमे कमे हयत । आस्थाक ई लोक परम्परा आई सर्वजनीन भेल छैक, एकान्त आस्थाक प्रतीक भेल छैक । भिनसरके अर्घ ददेलाक बाद व्रतीसभ प्रसाद ग्रहण कऽ अपन उपवास तोड़ैत अछि जकरा ‘पारन’ कहल जाइत छैक ।

घाट क्षेत्रमे बच्च-बुच्चीसभ फटक्का फोड़ैत रहैत छैक । ओकरसभके आवाज दुर-दुरधरि जाकए वातावरणके उल्लासपूर्ण बनबैत रहैत अछि । ब्रतालु महिलासभ नाकसँ माथक केस धरि सिन्दुर लगौने रहैत अछि । डुबैत सूर्यके अर्घ दैत मनमने प्रार्थना करैत अछि– हे दिनकर भगवान, सन्तानके सुखशान्ति दिय, पतिके दीर्घायु दिय !

प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेदमे कहलगेल छैक– हे, आकाशक पुत्री उषा (सूर्यके किरण) हमरा अन्न, धन, बेटाबेटी दिय ! वरदान दिय कि हम सदैव भिनसर ओछ्यानसँ उठिकए बलिष्ठ बेटासभके मुख देखए सकी । (४–११)
सूर्यके आदि देव सेहो कहल जाइत छैक । मानव मात्रके उदय भेलाकबाद ओकरा सर्वप्रथम इजोत देबएबला, शरिरमे गर्मी उत्पन्न कएनिहार, रोगब्याधिसँ बँचाबएबला सूर्यहि भेटल रहथि । स्वभावत: ओ सूर्यप्रति आकर्षित भेल आ सूर्य अराधनाक क्रम शुरू भेल । छठि पूजामे 'छठिमाई' के पूजा करबाक चलन सेहो वैदिक अनुष्ठानमे तान्त्रिक (आ स्मार्त्त) अनुष्ठानक सम्मिश्रण रूप छैक । एहि पावनिके सम्पादन षष्ठी तिथिमे हएबाक कारणेँ सेहो एकर तद्भव रूप छठि 'परमेश्वरी' के रूपमे लोकमानसमे स्थान पएने भ सकैत छैक ।

छठिकगीतमे सामाजिक सन्दर्भ

छठिगीतमे पावनिके विशिष्टता, पवित्रता आ भक्तिभाव प्रदर्शित कएलगेल रहैत छैक तऽ दोसरदिस पावनि नहि क सकनिहारि बाँझीनसभके पीड़ा सेहो अभिव्यक्त भेल छैक । गीत गाबएबाली महिलासभक टोली पोखरि वा नदीक किन्हेरमे गबैत रहैत अछि–

"उ जे केरबा फरल घओंद से
ओइ पर सुगा मरड़ाए
उजे मारबौ रे सुगबा धनुख से
सुगा गीरे मुरिछाए,
उजे सुगनी जे रोअले वियोग से
आदित होखे न सहाय
उजे नेमुआ जे फरल घओद से
ओइ पर सुगा मरड़ाए
मारबौ रे सुगा धनुख से
सुगा गीरे मुरछाए
सुगनी जे रोअले वियोग से
आदित होख ने सहाय "

केराके घौरउपर उड़ि रहल सुगाके हर्कबैत एहि गीतमे कहलगेल छैक–केरामे नै भिर, जुठि नहि बना । नहि तऽ धनुषबाणसँ मारबौ, तोहर सुगिनी वियोगसँ छटपटाए लगतौ । तखन सूर्येके गोहराब पड़तै– हे सूर्य, एकरा सहायता करियौ !

दोसर टोलीके सेहो रस सिन्चित बोल उधिआ क कानमे सुनाई पड़ैत अछि –

"...उजे कांच जे बांसके वहंगिया
रेशम लागल डोर
भरिया होएताह फलां भैया
भार घाटे पहुंचाए
बाट जे पुछे बटोहिया
ई भार किनकर जाए
आन्हर होइहे रे बटोहिया
ई भार छठी माइके जाए
हे अरघ देबेला
हे बांगी लंचकैत जाए... ।

पोराके मुट्ठा बनाकए तकरा उपर दियौरी राखि पानिमे दहएबाक क्रम शुरू भऽ गेल छैक । नदीमे दहाइत दियौरीके झिलमिल प्रकाश अद्भुत आनन्द दैत छैक ।

दर्शकसभ करुणरसमे डुबल छठि गीतक दोसर भागमे भिजए लगैत छथि –

"छोटी-मोटी तुलसी हो दीनानाथ
भुइयां लोटे डारि
सभक दुअरिया हो दीनानाथ
वजल बधाईं
बांझीके दुअरिया हो दीनानाथ
बजर केबार
सभक अरघबा हो दीनानाथ
लेल समुझाय
बांझके अरघबा हो दीनानाथ
ठाढ़े रहि जाए...।

पीडाबोध आओर बढ़ैत छैक –

"सासु मारे हुथीका हो दीनानाथ
ननद लुलुआए
निरघन पुरुषबा हो दीनानाथ
बहिया धए निकाल... ।"

बाँझीनके घरमे खुसी नहि छैक । सभके अर्घ स्वीकार होइत छैक मुदा बाँझीनके नहि होइत छैक । घरमे साउस पिटैत छैक, ननदि मजाक उड़बैत छैक तऽ मूर्ख पति घरसँ निकलए कहैत छैक ।

छठ पावनि मनाबएके सोँच रखने महिला सन्तानविहीन अछि तऽ ओ सन्तानक कामना करएलेल पावनि करैत अछि । मुदा कतेकोबेर पावनि कएलाकबादो सन्तान नहि पौनिहारि, महिला अन्ततः बाँझीनके रूपमे समाजमे तिरस्कृत होबए लगैत अछि । एहि गीतमे तेहने पीड़ाके देखाओल गेल छैक ।

अत्यन्त श्रद्धापूर्वक पूजा कएली, नित्य निपपोत कऽ गहबरके सफा-स्वच्छ-सुन्दर बनैली, धूप-आरती कएली मुदा तयो बाँझीन पदबी नहि छुटल !

"– गहबर नीपाइते हो दीनानाथ
तरहत्थिया गेल खिआए
तैयो न छोड़ल हो दीनानाथ
बझनियां परधान
धूपबो जे दैत हो दीनानाथ
चुटकिया गेल कटाए
तैयो ने छोड़ल हो दीनानाथ
बझनियां परधान... ।"

(सभ गीतसभ लेखकके निजी सङ्ग्रहसँ ।)

उपसंहार

छठि पावनिमे दूटा सामग्रीके प्रधानता होइत छैक । एक हमरासभके कुषि प्रधान देश रहलाक कारण एकरामे प्रयोग होबएबला सामग्री खेतीबारीमे उत्पादन होबएबला बस्तुजातमे आधारित होइत छैक । एहिसं धनीकसँ लऽ कऽ गरीबधरि सेहो सहजे ई पावनि क सकैत अछि । अन्य धार्मिक अनुष्ठानसभ जकाँ ककरो आर्थिक दम्भके पीड़ा उठैबाक अवस्था नहि अबैत छैक । सभ एक प्रकारसँ ओहे गहुँमक ठकुवा, चाउरक भुसबा, केरा मुख्य प्रसादके रुपमे चढ़बैत अछि । कोनो अतिरिक्त देखाबटी नहि क पबैत अछि । जकरा कारणें एकटा प्रत्यक्ष देवताके सभगोटे समानरुपें अराधना क पएबाक हमरसभके पुर्खा मनिषीसभक दीर्घ सोच प्रति नतमस्तक होबही टा पड़त ।
दोसर छैक पावनि प्रतिक अटुट आस्था जे एकरा जीवनक प्रारम्भ कालसँ जनमानसके विश्वाससंग जोड़िकए राखलगेल छैक । सम्भवतः इहो कारण छैक आई एहि पावनिसंग मिथिलांचल बाहेक आनो ठाममे सेहो प्रशस्त श्रद्धालुसभ जुड़ैत गेल अछि ।

हमरासभक नेपालमे अन्य समुदाय सेहो एहि पावनि प्रति आकर्षित होइत गेल अछि। काठमाण्डू, पोखरा सहितक अन्य अमैथिल बसोवास भेल ठाँमसभमे सेहो सभ धर्म सम्प्रदायके श्रद्धालुसभ ई पावनि मनाबए लागल अछि। ई पावनि एखन पर्यटकीय महत्व सेहो पौने जा रहल अछि। देश विदेशक पर्यटकसभ जनकपुरमे पावनिके रौनकता प्रति आकर्षित होइत प्रशस्तमात्रामे देखल जाइत अछि।
आब त अमेरिका लगायत बिश्वक अनेको भागमे बसोबास करैत मैथिल सभ छ्ठिपर्व मनब लागल अछि। एकर ई अन्तराष्टीय बिस्तार पावनिके महत्ताके बैश्विक बनबैत अछि।



दीना-भद्री : सामन्तवाद आ उत्पीडन विरोधी लोकगाथा नायक

लोकसाहित्यमे लोकगाथाक अपन विशिष्ट छाप होइत अछि । जाहिसं तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक अवस्थाक लेखा जोखा प्रस्तुत कएल गेल होइत अछि । एकर रचियतासभ अज्ञात होइत छथि । ई अलिखित भेलासँ मौखिक रुपमे एक दोसरसँ सयो वर्षसँ प्रसारित होइत आएल रहैत अछि । मूल कथानकमे समसामयिक थपघट सेहो होइत गेलासँ एहि सभमे बहुत नमहर आ विशेष घटनाक्रम समेटाइत जाइत अछि ।

मिथिलाञ्चलमे प्रचलित लोकगाथासभ मुख्यतः जातीय देवतासभक वीरगाथासँ भरल अछि । प्रेम विरह, कपट युद्ध आ विजयक अनेको प्रसंग स्रोताकेँ घन्टो मात्र नहि, दिनो दिन धरि मन्त्रमुग्ध कऽ रहल अछि । एहन जातीय लोक देवतासभक गाथागीतसभमे लोरिकाइन (यादव), सहलेश (दुसाध) कारिख पजियार (दुसाध), ज्योती (दुसाध) नैकाबनिजारा (तेली) फेकुदायाराम (हलुआइ) गनिनाथ गोविन्द (कानू) दुलरा दयाल (मलाह), दीना भदरी (मुसहर), बसान बखतौर(यादव) अमर सिंह जयसिंह (मल्लाह), रइया रणपाल, धनपाल (पालक्षत्रीय) रन्नु सरदार (मुसहर), गरीबन भुइया (धोवी), महकार (कोइरी) श्याम सिंह (डोम) लालवन बाबा चमार बेनीराम (हजाम) चुहरमल (दुसाध) विजयमल (मल्लवंशीय क्षेत्रीय) कुवर वृजमान वंशीधर वामन, हंसराज वक्षराज, लवहरि कुसहरि, सारंगा सदावृक्ष, गोपीचन्द्र आदि गाथासभ प्रमुख अछि। एहि गाथासभसं तत्कालीन मिथिलाञ्चलक भौगोलिक, सामाजिक, ऐतिहासिक सशक्त विवरण प्रस्तुत कएल गेल अछि ।

एहि गाथासभमेसँ नेपालीय परिवेशमे घटित घटना आ तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितिक उपजके रुपमे दीना भद्रीक गाथा सेहो पड़ैत अछि । जकर अपन विशिष्टता छैक ।

दीना भद्रीक समय

अन्य लोकगाथा जकाँ दीना भद्रीक समय सेहो यकिन नहि कएल जा सकल अछि । दीना भद्रीक समय सलहेसक समय रहलास लोकगाथाक ममर्ज्ञ विद्वान मणिपद्म एकर समयके पांचम छठम शताब्दी दिसक उल्लेख कएने छथि । मुदा ई सेहो सर्वमान्य होबय नहि सकल अछि । किछु गोटे एकरा मध्यकाल पूर्वक मानने छथि ।

लोक साहित्यक अनुसन्धाता सर जि.ए. ग्रियर्सन सन १९९१ मे मैथिली क्रिस्टोमेथीमे सर्वप्रथम दीनाभद्रीक किछु गीतसभ संकलन कएने छलथि

ओकरा बाद एहि विषयपर अध्ययन अनुसन्धान प्रारम्भ भेल। आइ धरि दीना भद्रीक पूर्ण पाठ उपलब्ध होवय नहि सकल अछि।

के छल दीना भद्री ?

दीना आ भद्री दू गोटे मुसहर भाइ छल। पीताक नाम कालु सदा आ माताक नाम निरसो छलैक। दुनू अत्यन्त शक्तिशाली छल। सामान्य परिवारक रहलाक बादो ओसभ जंगलमे शिकार खेलय जाइत छल से प्रसंग आएल अछि। गाथामे कहल गेल अनुसार दुनूक कान्हपर अस्सी मनक धनुष आ चौरासी मनक तीर सदिखन टाँगल रहैत छल। ओसभ नेपाल राज्य अन्तर्गत सप्तरी जिल्लाक योगियानगर निवासी रहए। अपन नगर वा क्षेत्रमे होवयवला कोनो प्रकारक अत्याचार आ शोषण विरुद्ध आवाज उठाएब आ ओकरा तह लगेबाक काजमे निरन्तर आगा रहैत छल दुनू भाई।

तत्कालीन समाज सामन्तवादी पद्धतिक रहल विभिन्न कथाक्रमसँ पुष्टि होइत अछि। अपनाके शबरीक वंशज मानयवला मुसहर जाति ओहि समयमे सेहो दोसरक घर खेतमे काज करैत छल। मुदा दीना भद्री मेहनत आ मजदुरीमे विश्वास करयबला रहलास ओसभ बेगारी खटवाक सामन्तीक आग्रहके निरन्तर डटि क मुकाबला करैत छल।

योगिया नगरक राजा कनक धामी छल। क्रूर आतातायी ओ सामन्त बेगारमे प्रजाकेँ जबर्जस्ती काजमे लगबैत छल। प्रजा सेहो भयक कारणें बेगारीमे काज करबा लेल विवश होइत छल। कहियो काल ककरो किछु दैयो दैत छल तँ सभ दिन नहि दैत छल।

एक दिन कनक सिंह दीना भद्रीक आंगनमें भोरे आएल। दुनू भाइ घरमे सुति रहल छल। पत्नि आ अन्य महिला घरक काज करैत छल। भोरेक समय घरमे अस्वाभाबिक अवस्थामे रहल परिवारक महिलासभके देखने दुःख व्यक्त करैत दुनू भाइ कनक सिंहके आवयके कारण पुछलक। राजा कहलक पुरा गाम हमरा खेतमे बेगार खटि रहल अछि। तो दुनू भाई ओना नहि खटबे त आब गाममे सेहो विद्रोहक सम्भावना अछि। बरु हम तोरासभके बेसी बोनिहारी देवौ, चल काज पर। राजाक बात सुनि दुनू भाइ पित्तसं चुर होइत कनक सिंहके कालर पकड़ि लेलल आ नीक जकाँ पिटलक।

'कहियों ने कएल हम खुरपी कोदारी बोनि, कहियो ने जानिओ हो धामी पैंच उधार'

अन्ततः राजा कनक सिंह धामी पिताइत घर घुरैत अछि। ई घटना धामीके बहुत मर्माहित कएल। हुनक बहिन बचिया जादुगर्नी छलीह। दीना भद्रीसँ बदला लेबाक लेल ओ जादू चला कऽ एकटा पोखरिमे पनिया दराद साँप

छोड़ि देलक । ओ जादुई साँप ओतुका पानिमे जायबला मालजाल, नहाय जायबला मनुक्ख सभके डँसिकेँ मारि दैत छल । लासक ढेरि लागि गेल । गाममे हाहाकार मचि गेल तखन दीना भद्री एहि दुर्घटनासँ बचबय लेल आगु बढल । ओसभ अपन बलिष्ठ हाथसँ पोखरिक पानि फेकि पोखरिके सुखा देलक आ सांपके पकड़ि कुशसँ नाथि कऽ वसमे कऽ लेलक । लोकगाथाक ई प्रसंग एहि प्रकारे गीतमे व्यक्त भेल अछि-

गाम पछिम कोरौलनि
एगो नव पोखरिया ।
ओहीमे जनु पैसहि हो दिना राम
धरतऽ तोरा पनिया दराध
ओहीमे जनु पैसिह हो भदरी
धरतऽ तोरा पनिया दराध ।
धुरमी सहैते गे धमियाइन
तोरा हम सघबौ-
कुशक डेफ सँ नथवो गे धमिआइन
तोरो पनिया दराध,
अस्सी मनके पत्थर हो दीनाराम
छाती पर बैसैबो
अस्सी मनके पत्थर छेदिकऽ
होवौ गे बहार ।'

अर्थात जादूक वलपर बनाओल गेल पोखरिमे तो दीना भद्री पसिबे तँ ओहिमे रहल पनिया दराध साँप तोरा पकड़ि कऽ खा जएतौ । तहन दुनू भाइ कहैत अछि देख गे जदूगरनी तोहर जादूकें सहि कऽ हम तोरे सधवौ, तोहर पनिया दराधकेँ कुशसँ नाथि देवौ ।'

जादुगरनी बचिया कहैत अछि- अस्सी मनक पाथर छातीपर राखब ।'

दीना भद्री जवाव दैत अछि- ओ पाथर फोरि कऽ हमसभ बाहर आएव ।'

बादमे कनक सिंह आ ओकर कनियाके सेहो दीना भद्री मारि दैत अछि ।

ई मिठगर मुदा सौर्यपूर्ण सम्वादसँ दीना भद्रीक साहस, शक्ति आ अन्याय विरुद्ध लडयवला संकल्पक उद्घाटन होइत अछि । गाथामे किछु अतिरंजित प्रसंग सभ सेहो नहि आएल अछि से बात नहि । मुदा ओ प्रसंग सभ लोकश्रुतिसँ विकसित भेलासँ गाथागीत आ प्रसँगक रोचकताके बढवयके लेल कएल गेल भऽ सकैत अछि । तत्कालिन राजतन्त्र विरुद्ध दीना भद्रीक विद्रोह आ अन्ततः शोषणक विरुद्ध जनमानस समेतके उद्वेलित कऽ जनजागृत आ जनक्रान्तिक सूत्रपातक नेतृत्व ओकरासभ द्वारा कएल गेल ई कथा अत्यन्त

रोचक अछि। दीना भद्रीक चरित्रमे सामाजिक विषमताके समाप्त करबाक आ असमानता विरुद्ध संघर्ष शुरु करबाक हेतु आगु आएल एकटा क्रान्ति द्रष्टाक चरित्र देखल गेल अछि।

कुनौली बजारपर जोरावर सिंह सामन्त अत्यन्त क्रुर शासक छल। ओहि गाममे नयाँ दुलहीनके शील भंग करबाक ओकर आदत छलैक। ओइ गाममे सामान्यजनके सतेबाक काज करैत छल। दीना भद्रीकें ओतुका पीड़ित नागरिकसभ गोहारल -

ताहि दिन ओकरा नाम सँ आइ
खसी चढ़ा देबे कुनौली बजरियामे
करे अराधना सहोदरा
अपना त जतिया से
करैछे अराधना भैया
अपना त जतिया से ने हय।'

अर्थात एहि दुष्टसँ हमरासभके बचाउ। हे जातीय बीर दीना भद्री। हमसभ तोरा नामपर खसी चढा देवौ।

जीवित देवता सरह सम्मान पबैत छलाह दीना भद्री अपन जातीय समाजमे। ओसभ कुनौली जा जोरावर सिंहके धिक्कारैत रणभूमिमे भिड़ल। घनघोर युद्ध भेल। के हारत के जितत तकर ठेकान नहि छल।

'पड़ि गेल युद्ध हो दादा
उङ्गली पहाड़पर
आ पड़ि गेलै युद्ध हौ दादा
उङ्गली पहाड़ पर ने हय।
प्रेमी हो प्रेमी
ओकरा जे डरेने से ओहो ने डेराइ छै
ककरो ने डरने कोइ ने डेराइ छै हो।'

अन्तमे ओसभ अपन सौर्यकें प्रदर्शन करैत अन्यायी सामन्त जोरावर सिहकें गर्दन काटि ओकरे आंगनमे फेकि दैछ।

मैथिली लोकगाथाक नायकसभमे दीनाभद्री जातीय लोक व्यवहारकें सीमा नाघि सेहो अपन वीरता प्रदर्शन आ सामन्तवाद, शोषण आ उत्पीड़न विरुद्ध लड़ि एकटा आदर्श स्थापित करयमे सफल भेल अछि। वास्तवमे शोषण आ अत्याचार विरुद्ध आजुक समयमे सभ तरहक संघर्ष आ क्रान्तिक आदि प्रणेताक रुपमे योद्धा दीना भद्री देखल गेल अछि।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१ मैथिली लोक साहित्यक अध्ययनः डा. ताराकान्त मिश्र, नेशनक पब्लिसिङ्ग हाउस, नयाँ दिल्ली, प्रथम संस्करण २००८।

२ दीना भद्री : सम्पादक, महेन्द्र नारायण राम, फूलो पासवान, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : २००७।

३ विहारकी नाटकीय लोक विधायें: डा. महेश कुमार सिन्हा, विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, प्रथम संस्करण : २००१।

४ मैथिली लोक साहित्य, सम्पादक : चन्द्रनाथ मिश्र अमर, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली प्रथम संस्करण २००१।

५ मैथिली लोकगाथा स्वरुप विवेचन एवं प्रस्तुती : सम्पादक महेन्द्र नारायण राम, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली २००७।

६ पंचलोक देवता : श्री महेन्द्र नारायण राम, प्र. विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना,



लोकगाथा नायक राजा भरथरीः तराईसँ पहाड़ धरि

लोकक जिहपर परम्परासँ बास करैत आएल कथात्मक गीतकेँ लोकगाथा कहल जाइत अछि। एहिमे कथा संगहि गेयता सेहो होइत अछि। अंग्रेजीमे एकरा लेल 'बैलेड' शब्दक प्रयोग होइत अछि, मुदा ई शब्द गाथाक मौलिकताकेँ प्रतिनिधित्व नहि करैत अछि। एहि सँ 'गाथागीत' वा 'गीतगाथा' शब्दक रुपान्तर देल गेल होइतो लोकजीवनसँ सम्बन्धित भाव देबय नहि सकल अछि। 'लोकगाथा'मे मौलिकता, लोकभावनाक पूर्णता, पूर्वीय समाजक जीवन आ परम्पराके निकटता होइत अ्छि।[१] एहन लोकगाथा हमरा समाजमे विभिन्न प्रकारक अछि। मैथिली, नेपाली, भोजपुरी, अवधी आदि भाषाभाषी समाजमे परम्परासँ मौलिक गाथासभ चलैत आएल अछि। समयक गति संगहि ई लोकगाथासभ ओझराहटमे पड़ैत जा रहल अछि। मुदा तैयो ग्रामीण क्षेत्रमे लोकक कण्ठमे एखनो कतेको लोकगाथा जीवित अछि। लोकगाथासभ सामान्यतः मुख्य पात्रसभक नामसँ प्रचलित होइत अछि। मध्यभारत, उत्तरभारत, मिथिलाञ्चलक विभिन्न क्षेत्र, नेपालक तराई आ पहाड़ आदि क्षेत्रमे आइ अपना ढङ्गक लोकगाथासभ प्रचलित रहलाक बादो किछु लोकगाथासभ सभ ठाम समान रूपमे प्रचलित रहल पाओल जाइत अछि। एहन लोकगाथामे राजा भरथरी आ गोपीचन्दक गाथा प्रमुख अछि।

राजा भरथरी आ गोपीचन्दक गाथासभ भारतक उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, विहार, राजस्थान, नेपालक तराईकेँ मोरंङ, सप्तरी, सिराहा, धनुषा, महोत्तरी, वारा, पर्सा, चितवन, रुपन्देही, कपिलवस्तु होइत पहाडी क्षेत्र पाल्पा, गुल्मी, बागलुङ सहितक स्थान धरि पहुँचल अछि। आ एहि लेखमे राजा भरथरी लोकगाथाक सम्बन्धमे किछु विमर्श कएल गेल अछि।

राजा भरथरी

नाथ सम्प्रदायक 'कनफटा जोगी' सभद्वारा गाओल जाएबला राजा भरथरी गाथागीत भिक्षाटनक क्रममे सुदूर अञ्चलधरि प्रसारित भेल अछि ,ई कथा कथागीत वास्तवमे बहुत दुर धरि पहुँचयमे सफल भेल अछि। राजा भरथरीक गाथागायन नाथ सम्प्रदायक समर्थक, प्रशंसक वा चेला (शिष्य) सभ उत्तरी भारत, नेपाल तराई आ पहाडी अञ्चलमे सेहो गबैत पाओल गेलासँ एकर विस्तार- प्रक्रियाकेँ आकलन कएल जा सकैत अछि। एकर प्रचार-प्रसारकेँ देखलासँ मूल कथानक एकहि स्थानसँ प्रसारित भ ई विभिन्न स्थानीय बोलीमे घुलिमिल गेल बुझाइत अछि। एकरा दू पक्षसँ देखल जा सकैत अछि।

प्रथम पक्ष : गुरु गोरखनाथक वासक्षेत्र गोरखपुर क्षेत्र रहल अछि आ ओतय बाजल छायबला भाषा भोजपुरी रहलासँ एकर मूलकथा भोजपुरीएसँ शुरु भेल विश्वास कएल जा सकैतअछि ।[२] गोरखनाथक नाथ सम्प्रदायकेँ शिष्यसभ जखन एहि कथागीतकेँ ल क भिक्षाटनक लेल अन्य-अन्य प्रदेशमे भ्रमण करब शुरु कएलनि,, तखन एकर प्रसार सुदूर अञ्चल धरि भ गेल । जखन ई योगीसभ अपन मूल भाषा-शैलीमे सारङ्गीपर गबैत भिक्षाटनमे जाइत छल तखन अस्थायी रुपमे महिनो धरि ओहि क्षेत्रक भ्रमण करैत छल । स्वाभाविक रूपमे नमहर प्रवासक कारण स्थानीय बोली ओकरा सभक गायनमे फेटाँ जाइत छल ।

दोसर पक्ष : स्थानीयवासीसभ सेहो दीक्षित भ योगी बनैत छल । नाथ सम्प्रदायमे दीक्षित भ उत्तर भारतक अनेकों प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, छत्तीसगढ़, विहार, नेपाल तराई, पहाडी क्षेत्रक पाल्पा, गुल्मी, वागलुंग धरि भरथरी गाथा गाबयबलासभ स्थानीय व्यक्तिक आगु आएल आ ओसभ भरथरीक मूल गाथाकेँ अपन बोली आ स्थान अनुसार विस्तार करैत गेल । ई गाथा मुख्य रूपमे लोककण्ठमे रहैत अएलासँ स्थिति अनुकूल परिवर्तनक प्रशस्त गुन्जाइश रहैत अछि । तएँ सेहो एकहिटा कथा विभिन्न क्षेत्रमे विभिन्न रूपमे प्रचलित भेल पाओल जाइत अछि । भरथरीक कथामे सेहो सएह देखल गेल अछि ।

आब भरथरीक काल (समय) क सम्बन्धमे किछु विचार करय पड़त । गाथागीतसभमे भरथरी, भर्तृहरि दुनू नामसँ प्रचलित भेल पाओल जाइत अछि । इतिहासमे विक्रमादित्यक भाइ भर्तृहरिक चर्चा अछि जे अपन कनियाँ प्रतिक विरक्तिक कारण सन्यास धारण कएने छल आ शृङ्गार शतक, नीतिशतक तथा वैराग्य शतकक रचना कएने छल । दोसर भरथरी ओ छल जे वैराग्य पन्थक प्रवर्तक मानल जाइत अछि । ई पहिने उज्जैनक शासक छल; बादमे गोरखनाथक शिष्य बनल ।[३] एकटा भरथरीक सम्बन्ध बङगालक पालवंशक राजा गोपीचन्द तथा मैनावतीसँग छल ।[४] एकटा दोसर तर्क सेहो आगु लाओल गेल अछि- भरथरी गोरखपुर (उ.प्र.) क्षेत्रक शासक छल ।[५]

संस्कृत साहित्यमे भर्तृहरिक नाम तीन शतकक रचयिताक रूपमे बहुत प्रख्यात अछि । भर्तृहरि अपन जीवनक कटु-मधु अनुभवक बड सूक्ष्म तरिकासँ अपन शतकसभमे वर्णन कएने अछि । मुदा ओहि शतकसभमे भर्तृहरि कोनो खासमत वा सम्प्रदायक सम्बन्धमे किछु नहि लिखने छैक । ताहि कारणें मात्र आशंकाक जन्म होइत अछि-शतकसभक रचयिता भर्तृहरि आ लोकगाथाक भर्तृहरि एकहि गोटे छथि की ? बहुतो विद्वानसभ सेहो ई दुनू भर्तृहरि भिन्न समयक व्यक्तित्व ठहर कएने अछि । चीनी यात्री इत्सिद

शतकसभक रचयिता भर्तृहरिक समय दसम् शताब्दीक पूर्वे मानने अछि जखनकि गोरखनाथक शिष्य भर्तृहरि वा भरथरीक समय दसम् शताब्दीक अन्तमे मानल गेल अछि । दुनूक भिन्नताक ठोस प्रमाणक रूपमे भर्तृहरि लिखित वैराग्यशतककेँ आगु लेल जाइत अछि , जाहिमे 'गोरखनाथ' अथवा 'नाथपन्थ' सम्बन्धमे एको शब्द नहि लिखल गेल अछि । अपन गुरु आ अपनेद्वारा प्रतिपादित पन्थक चर्चा अवश्य होएबाक चाही छल । तएँ सेहो शतकक रचयिता भर्तृहरि अपन रानीक अनुचित आचरणसँ विरक्त भ सन्न्यासी भेल छल आ हुनक समय विक्रमादित्यक लगपास मानल जाइत अछि जखन कि भरथरीक समय एगारहम शताब्दीक मध्य भाग रहल स्पष्ट होइत अछि ।[६] उत्तर प्रदेशमे एकटा विश्वास कएल जाइत अछि -गोरखपुरमे २७४ अम् पिँढीमे राजा गन्धर्वसेनक जेठ सुपुत्र महाराज विक्रमादित्य आ छोट पुत्र भरथरी छल । विक्रम संवत् चलाबयबला इएह विक्रमादित्य छथि ।[७] तथ्य अन्ततः राजा भर्तृहरि आ भरथरी दू गोट व्यक्ति रहल देखबैत अछि । यद्यपि कथानकमे अनेको स्थानपर दुनूकेँ एकहि व्यक्तित्व देखाओल गेल अछि । ई भ्रम लोककण्ठक प्रचलनक कारण भेल भऽ सकैत अछि । नेपालक पहाडी अञ्चलमे गाओल जाएबला लोकगाथा आ गीतसभमे सेहो भरथरी आ गोपीचनकेँ ओम्हरेक बासी कहि विश्वास कएल गेल अछि । एहन विश्वासक सृजन स्थानीय लोकगायकसभक क्षेत्रीय लगावक कारण भेल भऽ सकैत अछि ।

<u>कथानक</u>

राजा भरथरी सम्बन्धी लोकगाथा विभिन्न अञ्चलमे नाथपन्थी योगीसभद्वारा पहुँचाओल गेलाक बाद ओहिमे किछु फरक तथ्यसभ जोड़ाइत गेल हम स्पष्ट रुपे पबैत छी । मुदा सामान्यतः एकटा मूल तथ्य एकहि नासक रहल देखल जाइत अछि- राजा भरथरी, कुण्डलीमे सन्न्यासीक योग, गोरखनाथक शिष्य बनबाक इच्छा, पत्नीसंग 'माय' कहि भिक्षा मंगबाक सर्तमे शिष्य बनेबाक आ बादमे एना कएलाक बाद शिष्यमई वैराग्य लेबाक कार्य । ओहिमे जङगलमे सिकार करब, रानीकेँ जांचयकेँ लेल अपने मरल खबर पठाएब, रानी सती होएब जेहन प्रसङ्ग सेहो अछि । एतय संक्षेपमे विभिन्न क्षेत्रमे प्रचलित भरथरी गाथाक किछु रूपक सम्बन्धमे चर्चा कएल गेल अछि ।

क) मध्य भारत दिस प्रचलित गाथाक कथानक[८] - भर्तृहरिक जखन जन्म होइत अछि, राजदरवारमे खुसियाली मनाओल जाइत अछि । माता मैनावती पण्डितसँग पुत्रक भविष्य पुछैत छथि । पण्डित कहैत अछि -एकरा 'मुनिक योग' अछि । एहि कथामे भर्तृहरिकेँ दूटा विवाह कहल गेल अछि ।

एकटा सातम वर्षमे पिङ्गलासँग, दोसर बाह्र वर्षमे श्यामासँग । तेरहम वर्षमे भरथरी तीर-कमान लऽ सिकार खेलय लागल प्रसङ्ग अछि । एकदिन श्यामा देई कहैत छथि-

"त कबहूँ न उठते राजा
रंगी महेलिया में,
कबहुँ न खेलत सिकार...।"

ई सुनि राजा सिकारपर जाइत छथि । ओतय तीर कमान चढबैत काल हिरिणीसभ चीत्कार करैत प्रार्थना करैत अछि- हे राजन् ! तों हमर हिरिणीसभमेसँ तीन चारिटाकेँ सिकार कऽ लेल, मुदा सत्तरि हिरिणीक एक मात्र मृगकेँ नहि मारु । मुदा राजा ओहि कारी मृगक सिकार करैत अछि । तखन हिरिणीसभ श्राप दैत अछि- जेना हमसभ पति वियोगमे परल छी, तोहर रानी सेहो पति वियोगमे परतहु ।

राजा मृगकेँ लऽ कऽ सिंहल द्वीप जाइत अछि । गोरखनाथ भेटलाक बाद ओ मृगकेँ जिवित कऽ देबाक लेल प्रार्थना करैत अछि आ शिष्य बनबाक सेहो इच्छा व्यक्त करैत अछि । तहन गोरखनाथ मृगकेँ जीवनदान दैत अछि-

"त चुटकी भुभुतिया जी
मारई गुरु म्हारा
मिरगा उठय हैं बहरोय..।"

गोरखनाथ भरथरीसँग शिष्य बनबाकलेल पत्नी श्यामदेइकेँ 'माता' सम्बोधन कऽ भिक्षा लएबाक सर्त रखैत छथि । अन्ततः राजा ओहि रुपमे भिक्षा प्राप्त कऽ गुरु गोरखनाथ लग अबैत अछि आ शिष्य बनैत अछि । ई कथा मालवा (राजस्थान)मे बहुत लोकप्रिय अछि । बुंदेलखण्ड, छत्तीसगढ़, व्रज क्षेत्रमे सेहो ई कथा प्रचलित अछि । एकरा मालवी बोलीमे लोकनाट्य "माच" मे सेहो अभिनय द्वारा प्रस्तुत कएल जाइत अछि ।[९]

दोसर कथामे राजा भरथरी सुन्दरी पत्नी पिङ्गलामे लिप्त भेलाक बाद पत्नी कहैत छथि :

"काची वौंणी काया कोठड़ी
झुठो बौणें संसार
चौऊ दिने राजा जीउणों
छाड़ी देणों घरवार
समझे शुणे राजा भरथरी ।"[१०]

तकरा बाद राजा शिकारपर जाइत छथि । मुदा हुनका श्रीमती उपर शङ्का होइत छन्हि । राजा रानी सती जाएत की नहि से परीक्षा लेबय लेल अपने

जङ्गलमे मरल कहि गलत खबर पहुँचबैत अछि। रानी सती होइत छथि। राजा पछताइत गोरखनाथसँ रानीकेँ बचा देबाक प्रार्थना करैत छथि। गोरखनाथ कहैत छथि- "रानीक जन्म सिंहलद्वीपक राजाक घरमे विरमाक रूपमे भऽ चुकल अछि। तों ओतहि जो।" राजा ओतय जाइत छथि आ धुनी रमा कऽ बसि जाइत छथि। बहुत बाद विवादक बाद रानी विरमा अबैत छथि आ अपन पूर्वजन्मक पतिकेँ चिन्ह जाइत छथि। राजा विरमाकेँ लऽ कऽ सुखपूर्वक जीवन यापन करय लगैत अछि।

ख) मैथिली क्षेत्रमे प्रचलित गाथाक कथानक

ई पङ्क्ति लेखककेँ मोन छैक- बच्चा रहैत काल गाम गेल समयमे दलानपर गेरुवावस्त्रधारी सारङ्गी ('धुना' स्थानीय भाषामे) रेटैत एकटा विरह गीत गबैत भिक्षा मांगय बला योगी अबैत छल। ओकरा गुदरिया गोसाइँ कहल जाइत छलै। ओका गाबयबला गीतक बोल आ कथा समझसँ बाहरकेँ बात रहैत छल मुदा तीन शब्दक स्मरण आइ धरि अछि। ओ अछि : गोपीचन, भरथरी आ पिङ्गला। अपने वयस्क भेलाक बाद सेहो ओहि नाथ सम्प्रदायक योगीसभकेँ सारङ्गी बजबैत नै देखलहुँ से बात नहि, मुदा ओकरासभद्वारा गाबयबला गीतक तहधरि पहुँचबाक इच्छा नहि भेल। ई बुझल छल -ओ रानीपिङ्गला आ भरथरीक मार्मिक संवाद गबैत रहैत अछि। एहन योगीसभ कतय सँ अबैत छल, कतय जाइत छल , खोज खबर नहि लेल गेल।
मुदा आब गम्भीरतापूर्वक ओहि दिस ध्यान देलाक बाद ओ नाथ सम्प्रदायक योगीसभ भेटब मुश्किल भ गेल अछि। गोरखपुरदिससँ आबयबला ओ योगीसभ कहियो काल देखल गेल होइतो स-विस्तार पूर्वक गाथागीत गाबय नहि चाहैत अछि। शायद गीत सुनि भिक्षाक रूपमे चाउर, दालि, तरकारी आ पैसा देबाक इच्छा नहि होइत व्यक्तिसभक कारण एना भेल हएत। एहि क्रममे नाथ पन्थमे दीक्षित स्थानीय किछु व्यक्ति योगी भेल अछि आ ओसभ मैथिलीमे भरथरी आ गोपीचनक चरित्र गबैत अछि।
मैथिली क्षेत्रमे गाओल जाएबला लोकगाथासभ दू प्रकारक होइत अछि। एक दिस ओहन गाथासभ अछि जे मिथिला क्षेत्रमे मात्र प्रचलित अछि। दोसर एहन अछि जे बङ्गाल, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ आ राजस्थानमे सेहो पाओल जाइत अछि।

प्रथम कित्तामे परयबला लोकगाथासभ अछि : (१) कमला कोइलाक गीत, (२) राजा सलहेस, (३) दीनाभद्री, (४) वंशीधर बाभन, (५) गांगो, (६) लबहरि-कुसहरि, (७) कारिख पंजियार, (८) अमर सिंह, (९) जयसिंह, (१०)

गुगुलिया, (११) दामोदर सिंह, (१२) गोरैया, (१३) सरबनिआं, (१४) बुलाकी गोप, (१५) जिवाई, (१६) मानस गोप, (१७) भ्फगरु, (१८) रघुनाथ सिंह, (१९) मीरा, (२०) भर्छुआ, (२१) राजाढोढन सिंह, (२२) बख्तौर सिंह, (२३) नेवारक कथा, (२४) रन्नु सरदार, (२५) हिरनी-बिरनी आ (२६) राजा अहेरी ।

दोसर श्रेणीमे परयबला अन्य क्षेत्रमे सेहो समान रूपमे प्रचलित गाथासभ अछि : (१) बिहुला, (२) कुँवर वृजमान, (३) नयका बनजारा, (४) गोपीचन, (५) भरथरी, (६) अल्हा, (७) सारंगा सदावृक्ष, (८) विजयमल आ (९) लोरिक मनिआर ।[११]

एहि प्रकारे मैथिली भाषी क्षेत्रमे प्रचलित लोकगाथासभक दोसर श्रेणीमे रहल 'भरथरी' नियमित रूपमे स्थानीय गायकसभद्वारा गाओल जाएबला गाथा नहि भेलाक कारण आई धरि एकर सङ्कलन करबाक अवश्यकता महसुस नहि कएल गेल अछि । लोकगाथाक चर्चा करैत काल सामान्य रूपमे भरथरीक सेहो चर्चा कएल जाइत अछि । ई लोकप्रचलित गाथा नहि अछि । मिथिलाञ्चलक कोनो नाथपन्थी योगीसभ एहि गाथाकेँ मैथिली भाषाक प्रभावमे राखि गाएब से अलगे बात अछि, जे सम्भवतः आजुक मितिमे भेटब बहुत मुश्किल अछि । कहियो काल 'राजा भरथरी' आ 'गोपीचन' नाटक,नटंकीसभक प्रदर्शन अवश्य होइत छल, ओसभ सेहो आब हेराएल जा रहल अछि ।

ग) <u>अवधी क्षेत्रमे प्रचलित गाथाक कथानक</u>

अवधी भाषी क्षेत्रमे सेहो भरथरीक गाथाक गायन होइत छल । ओतय योगीसभ एहने कथानककेँ स्थानीय भाषाक मिश्रणमे गबैत छल । नेपालगन्ज, दाङ क्षेत्रमे भरथरी कथा ओतेक प्रचलित नहि रहल जानकारी अवधी लोकसाहित्यक मर्मज्ञ लोकनाथ वर्मा दैत छथि । मुदा कपिलवस्तु, तौलिहवा, रुपन्देही क्षेत्रमे भरथरीक लोकगायन नाथ सम्प्रदायक योगीसभ द्वारा होइत रहल दावी अन्वेषक विक्रममणि त्रिपाठीक छन्हि । यद्यपि कोनो लिखित दस्तावेज उपलब्ध कराओल नहि जा सकल अछि ।[१२]

घ) <u>पहाडी क्षेत्रमे</u>

राजा भरथरीक लोकगाथा सुरुमे नाथपन्थी योगीसभक माध्यमद्वारा पहाडी क्षेत्रधरि पहुँचल अनुमान कएल जा सकैत अछि । तराईक विस्तृत अञ्चलमे गोरखनाथक शिष्यसभक व्यापक भ्रमणक कारण बहुत प्रसारित त छंबे कएल बादमे भिक्षाटनक क्रममे पहाडक पाल्पा, गुल्मी, बागलुङ्ग, अर्घाखाँची आदि क्षेत्रमे एकर विस्तार भेल भऽ सकैत अछि। ई क्षेत्रसभ

गोरखपुर (भारत) क हाराहारीमे रहलासँ ओतुका योगीसभके भ्रमण सहज भेल भऽ सकैत अछि। राजा भरथरीक कथाक लोकप्रियता सेहो पता लगाओल जा सकैत अछि।

नेपाली साहित्यमे 'भरथरी' शब्दक अर्थ "गेरुवा वस्त्रधारी योगी" रहल अछि। नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ प्रकाशित 'नेपाली बृहत् शव्दकोश (२०६०, पृ-९४१) मे 'भरथरी' क अर्थमे (१) ना.गेरुवा वस्त्र, अलख, (२) ना.भर्तृहरि कहल गेल अछि। भरथरीकेँ भर्तृहरि सेहो कहल गेल अछि, जाहि सम्बन्धमे उपरे विवेचना भऽ चुकल अछि। ओहि शब्दकोश (पृ-९४३) मे "भर्थरी/भरथरी (सं.भर्तृहरि) १.राजा भर्तृहरिक कथा, गुणगान आदि सुनबैत नेपाल आ भारतक गाम-गाम घुमय बला गेरुवाधारी जोगी" अर्थ देल गेल अछि। एहि अर्थसभ सँ सेहो भरथरीक कथाक व्यापकता देखल जाइत अछि।

बरु एहि ठाम एकटा बात विचारणीय की अछि तँ शब्दकोशकारसभ राजा भर्तृहरि आ भरथरीमे विभेद छुट्ट्एबाक काज नहि कएने छथि। ऐतिहासिकताक विवाद ओहि समयमे देखल जाइत अछि जखन ओतय शब्दकोश (पृ-९४३) मे 'भर्तृहरि' क अर्थ दैत "ना. (स.) बादमे प्रसिद्ध कवि आ योगी भेल उज्जैनक एक राजा, नीतिशतक, वैराग्यशतक, शृङ्गारशतक, आदि संस्कृत ग्रन्थक रचयिता, भरथरी" कहि अर्थ स्पष्ट कएल गेल अछि। उज्जैनक राजा भर्तृहरिक समय आ गोरखनाथक शिष्य रहल भर्तृहरि अथवा भरथरीक समयमे बहुत फरक देखल गेल अछि। तएँ एहि सम्बन्धमे सेहो स्पष्ट होएब जरुरी अछि।

राजा भरथरीक गाथागीतकेँ स्थानीय गायकसभ कहियासँ गाएब शुरु कएलनि एहि सम्बन्धमे ठीक-ठीक कहल तँ नहि जा सकैत अछि मुदा एकर सङ्कलनक जे रूप बाहर आएल अछि ओहिसँ एकर नमहर गेय परम्परादिस इङ्गित करैत अछि। सर्वप्रथम थापा आ सुवेदी "तिहारको चाँचरी कथा"क रूपमे एकर सङ्कलन कएलनि।[१३] कहबाक मतलब सावित्री मल्ल "हरीनैको सती जानु पऱ्यो" शीर्षकमे एकर सङ्कलन कएने देखल जाइत अछि।[१४]

पहाड़ी अञ्चलमे प्रचारित कथा नेपालक तराई आ भारतक विभिन्न क्षेत्रमे प्रचलित कथाक मूल भाव सँग मेल खएने होइतो किछु तथ्य सभ फरक देखल गेल अछि।

नेपालक पश्चिमी क्षेत्रमे गाओल जाएबला एहि लोकगाथाक विशेषता की अछि तँ आब ई स्थानीय लोकव्यवहार अनुसार ओतुका गायकसभद्वारा गाओल जाइत अछि, अन्य स्थान जकाँ गेरुवा वस्त्रधारी योगीसभद्वारा नहि। सामान्यतः ई दियावातीकेँ अवसरपर गाओल जाइत अछि।

एहि क्षेत्रमे प्रचलित कथामे कहल गेल अछि- “राजमहलक पटाङ्गिनी उपर बैसि राजारानी त्रिपासा खेलैत छलथि । त्रिपासाक ठोक्करसँ रानीक शङ्खचुरी फुटि गेलनि आ ओ कानय लगलीह । राजा रुपचुरी-सुनचुरी आनि देबाक वचन देलनि, तकरा बादो रानी शङ्खचुरी कतय पाओत कहि कनैत रहलीह । “एकटा शङ्खचुरी फुटलापर तँ एतेक चिन्ता करयबाली हम मरब तँ की करब” कहि राजा पुछलापर रानी सती जएबाक बात कएलनि । “राजा मरलापर हम सती जाएब, मुदा हम मरब तँ की करब ?” कहि रानी पुछलनि । “राजा अपने भरथरी (जोगी) होएबाक बात कएलक ।”[१५] कथामे आगु कहल गेल अनुसार राजा शिकार खेलय जङ्गलमे जाइत अछि आ ओतय हरिन मारलाक बाद तकरैं खुनसँ रुमाल भिजा अपन सेवक भँडारीकेँ ‘राजा मरल’ कहि सन्देश दऽ रानी ओतय पठबैत अछि । सती रानी दुधछाही आ पानि छाँहीमे देखलापर राजा जीवित देखल गेल होइतो भँडारी किरिया खा विश्वास दियौलापर ओ सती गेलीह । राजा घुरलाक बाद रानीक नहि जरल शरीर पकरि विलाप करय लगलापर शिव-पार्वती प्रकट भऽ राजाक आधा उमेर दऽ रानीकेँ जीवित कएलनि । तकरा बाद राजा-रानी तीर्थ घुमय गेलथि । सावित्री मल्ल सङ्कलन कएने कथामे रानी जरि कऽ छाउर भेलाक बाद राजा चितासँ छाउर निकालि माथपर लगौने उल्लेख अछि । (२०५२:७६-७९) ।

एहि गाथामे रानी नहि पतियौलाक बाद भँडारी झुठे विश्वास दियौने प्रसङ्ग अत्यन्त मार्मिक रूपमे आएल अछि । -

“साँचो-सँचो कहिदेऊ भंडारी दाजै !
शिवहत्या ब्रह्महत्या पापै लागने छ
झूटो बात नर्कवास होला ।
हजुरको राजालाई बघिनीले खाई !” [१६]

ङ) भोजपुरी क्षेत्रमे प्रचलित गाथाक कथानक

विद्वानसभ राजा भरथरीक मूल कथाभूमि भोजपुरी क्षेत्रकेँ मानने अछि । एतय प्रचलित लोकगाथाक कथानक लगभग समस्त उत्तर भारतीय जनपद आ नेपालक तराई क्षेत्रमे प्रचलित रहल अछि । पहाड़ी क्षेत्रमे प्रचलित कथामे राजाद्वारा रानीकेँ परीक्षा लेबाक, रानीद्वारा सती जाय धरिक प्रसङ्ग मिलैत जुलैत अछि मुदा तकर बादक कथा स्थानीय गायकसभक स्वविवेकमे परिवर्तन भेल देखल जाइत अछि ।

भोजपुरी क्षेत्रमे सेहो प्रस्तुत गाथाक कथानककेँ विभिन्न रूप प्रचलित अछि । मूल कथामे सामान्य हेरफेर कऽ एहि गाथाके गाओल गेल अछि । मुदा एकटा बातमे समानता अछि । ओ गाथा नाथ सम्प्रदायक

योगीसभद्वारा सारङ्गीक धुनपर गाओल जाइत अछि । एकर अतिरिक्त एकर गायन परम्परा नहि अछि । दोसर बात राजा भरथरीक पत्नीक रूपमे सामदेई आ पिङ्गलाक चर्चा अलगे अलगे कथामे आएल अछि । नेपालक तराई क्षेत्रमे प्रचलित कथामे 'भरथरीक रानी पिङ्गला' सँगक मार्मिक संवादे योगीसभ बेसी सुनबैत रहलासँ ई दोसर प्रकारक आ डा.रामकुमार वर्माद्वारा प्रस्तुत[१७] कथा प्रचलित रहल बुझल जाइत अछि ।

भोजपुरी क्षेत्रमे प्रचलित कथा देखीं : राजा भरथरी जखन योगी बनि वन प्रस्थान करैत छथि तखन रानी सामदेई बाट रोकि विवाह कएने हएबाक औचित्यक सम्बन्धमे प्रश्न कएलनि । राजा अपन जन्मकुण्डलीमे वैराग्य लिखल बात बतौलाक बादो रानी नहि मानलाक बाद राजा रानीसँ प्रश्न कएलनि- कहु , 'गौना' करा घर अनलाक बाद राति सुतयबला पलङ्गपर चढ् चाहपर ओकर पासी कोना टुटि गेल ? रानी कहलनि- ओ तँ हमरा नहि बुझल अछि, हमर छोटकी बहिन पिङ्गलाकेँ बुझल अछि । पिङ्गला बजाओल गेल । पिङ्गला भेद खोललनि- "हे राजन् ! रानी सामदेई पछिला जन्ममे अहाँक माय छलथि । ओहि कारण पलङ्ग टुटल छल । ओकरा संग मौज मस्ती करब वा नरकमे जाएब अहाँक जिम्मा ।" ई सुनि राजा आओर उदास भऽ गेलथि ।

राजा जङ्गलमे शिकार खेलय गेलाक बाद ओतय हिरिणीसभक झुण्ड देखलनि । ओहि मे सँ किछु हिरिणी याचना करैत कारी मृगकेँ नहि मारयके प्रार्थना कएलनि । मुदा राजा नहि मानलथि आ मृगकेँ मारि देलनि । मरैत -मरैत मृग राजाकेँ श्राप देलनि- 'जेना हमर मृत्युक बाद हमर सत्तरी सय मृगिनीसभ कानत तहिना तोहर रानी सेहो तोहर विना विलाप करतहुँ ।' तकरा बाद राजा दुःख व्यक्त करैत कारी मृगकेँ लऽ गोरखनाथ लग पहुँचैत छथि । प्रार्थना सुनलाक बाद गोरखनाथ मृगकेँ जीवनदान देलनि । राजा तकरा बाद अपन सामर्थ्य आ असमर्थताप्रति विरक्त भऽ जाइत छथि । ओ गोरखनाथ समक्ष अपनाकेँ शिष्य बनाबय लेल आग्रह कएलनि । सुरुमे तँ गोरखनाथ नहि मानलनि । बादमे अपन रानीकेँ 'माय' कहि भिक्षा मांगि अनबे तखने शिष्य बनेबौ कहि गोरखनाथ शर्त रखलनि । राजा रानी ओतय योगीक भेषमे पहुँचैत छथि आ 'माता' कहि भिक्षा मंगैत छथि । रानी विह्वल भऽ रोकबाक प्रयास करैत छथि, अनुनय-विनय करैत छथि मुदा भरथरी नहि मानलनि आ अन्तमे बाध्य भऽ रानी भिक्षा देलाक बाद राजा गुरु ओतय पहुँचलाह । ओतय ओ गोरखनाथक शिष्य ग्रहण कएलनि ।

एकटा दोसर कथामे उज्जैनक राजा इन्द्रसेन आ रानी रूपदेईक सन्तानक रूपमे भरथरीक जन्म लेलाक बाद पण्डितकेँ योगी बनबाक

भविष्यवाणी करैत छथि । सिंहलद्वीपक राजा ओतय सामदेईक जन्म होइत अछि आ बादमे ओकरा भरथरीसँग बिवाह सम्पन्न होइत अछि । प्रथम रातिमे सुतय गेलाक बाद रानी भरथरीसंग भोग कएने कहि सती होएबाक भयसँ चिन्तित होबय लागल । जखन भरथरी पलङ्गपर बैसय चाहलनि, पलङ्ग टुटि गेल । कारण पुछलापर रानी अपन बहिन पिङ्गला एकर उत्तर देत बतौलनि । भरथरी पिङ्गलासँग भेटैत अछि आ कारण पुछैत अछि । पिङ्गला ई बात अपन दोसर जन्ममे बतेबाक कहैत छथि । तहिना सुगर, कुत्ता, सर्पिनी, गाइ, कोइरीन आदिक योनिमे जन्म लैत अन्तमे राजा बोढ़नसिंहक पुत्रीक रूपमे जन्म लेलाक बाद ओ कहलनि- बाह्र वर्षक बाद हमर विवाह हएत, तखन बताएब । ओ बिवाहक बाद मात्र कहलनि - हे राजा, जेना दिल्लीक राजा मानसिंहक पुत्र वंशीधर हमर पति भेल छलथि ओ विगत जन्मक हमर पुत्र अछि, तहिना रानी सामदेई सेहो अहाँक पूर्व जन्मक माय अछि । राजा उदास भऽ घुरैत अछि आ शिकार खेलय जङ्गल जाइत अछि । तकरा बाद सभ कथा एकहि रंग अछि ।

डा.रामकुमार वर्माद्वारा सङ्कलित कथामे भरथरीक कनियाँ पिङ्गला होइत छथि । राजा पत्नीकेँ अपने मरलाक बाद अहां की करब कहि पुछलापर पिङ्गला कहैत छथि, “हम त संवाद सुनिते मरि जाएब । राजा एहि तथ्यकेँ सत्यापित करय शिकार खेलय गेल समयमे अपन मृत्युक खबर रानी ओतय पठबैत छथि । रानी सती भेलीह । बादमे राजा घुरलथि आ कानय लगलथि । ओहि समयमे गोरखनाथ अबैत छथि आ रानीकेँ जीवित करैत अछि । राजा बादमे ‘माता’ कहि भिक्षा ग्रहण करैत अछि आ गोरखनाथक शिष्यत्व ग्रहण करैत अछि ।[१८]

भोजपुरी क्षेत्रमे छोट छोट कथासभ प्रशस्त अछि मुदा एतय मूल स्वरूपमे कोनो अन्तर नहि देखल जाइत अछि । भोजपुरी क्षेत्रमे प्रचलित राजा भरथरीक गाथामे राजा-रानी संवाद अत्यन्त मार्मिक रूपमे आएल अछि । वास्तवमे अन्य क्षेत्रमे सेहो योगीसभ एहि प्रसङ्गकेँ बेसी प्राथमिकता दऽ सुनबैत अछि । घरमालिकसँग भिक्षा प्राप्त करय लेल अपन सारङ्गीक धुन आ अपन करुण रससँ परिपूर्ण आवाजमे बिछोड़ आ वेदनाक ओ क्षणसभक अभिव्यक्ति माहौलकेँ पूर्ण रूपमे मार्मिक बना दैत अछि । एथेष्ट भिक्षा प्राप्त कऽ योगीसभ दोसर गेट दिस बढैत अछि ।

एकटा एहने मार्मिक प्रसङ्ग देखी । राजा भरथरी जखन गोरखनाथकेँ चेला बनाबयके आग्रह करैत अछि तखन गोरखनाथक सर्त होइत अछि- “पत्नीकेँ ‘माता’ कहि भिक्षा अनलाक बाद मात्र ई सम्भव अछि ।” एहन कठिन अवस्थामे राजा अपन महल पहुँच पत्नि सामादेईकेँ ‘माता’ भिक्षा दिय

कहलाक बाद करुण आ शोकक अवस्था सृजन होइत अछि आ एहि अवस्थामे दुनू विचक संवाद एहि प्रकारे व्यक्त होइत अछि -[१९]

"तव बोलत राजा भरथरी रानी सून मेरी बात
डोलबा फनाव रानी नैहर जइहें करिहऽ सोरहो सिंगार
सोरहो सिंगार बतीसोरंग करिहौं बारबारी लिह मोती गुहाय
चउमुख देना रानी महली बाटे, रहिहऽ माता के गोद
हमरा पछेड़ रनिया छोड़ तू देती
तो रानी करती है जबाब
कौन बोली सामी आ दिन बोलल
हमसे सही नहि जाय
अगिया लगावें सामी नैहर मैनी जरिजा नैहर मोर
जानै दिनवा सामी नैहर जइबै करबै सोलहों सिंगार
सिमिसि सिंदुर कौर सामी मंगीया देब
उग जाब दुइजै के चांद
देखिदेखि लोग ताना मरिहैं कि इनके इतना गुमान
आधा गुमान सामी नैहर टुटीं तब जोहब मै केकर आस
तब बोलिया बोले राजा भरथरी कि रानी सुन मेरी बात
हमरे करम में रानी जोगी लिखलें......।"

"स्वामी सुनो मेरी वात
जानत रहली समिया जोगी बनते काहे कइली राउर वियाह
नन्हबे निकर सामी जोगी बनती लगती दुसर के डार
हाय हो सकल राजा भरथरी.....।"

एहि प्रकारे राजा भरथरीक लोकगाथासभ विभिन्न प्रान्त आ क्षेत्रमे अपन-अपन किसिमसँ प्रचलनमे रहलाक बादो मूल कथामे बहुतो समानता रहल अछि । भारतीय लोकगाथा आ गीतसभमे हरियाणा, विहार, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़ आ पश्चिम बङ्गाल प्रान्त दिस राजा भरथरी आ ओकर भागिन गोपीचन्दक कथासभ सघन रूपमे प्रचलनमे अछि । एहि क्षेत्रमे प्रचलित भरथरीक कथासभमे भर्तहरि(सं.) क नाम बेसी प्रचलनमे देखल गेल अछि । उज्जैनक राजा विक्रमादित्यक भाइए भर्तृहरि छथि , जे अपन कनियाँक दुश्चरित्रताक कारण बिक्षुब्ध भऽ सन्यास ग्रहण कएने छलथि कहि चर्चा कएल गेल अछि । भर्तहरि अङ्ग्रेजीमे लिखलापर 'Bharthari' होइछ आ तकरा देवनागरीमे 'भरथरी' सेहो भेला सँ ई समस्या भेल भऽ सकैत अछि ।

'बैताल पचिसी' क पच्चीसटा कथासभमे भरथरी आ विक्रमादित्यक सम्बन्धमे नीक जकाँ चर्चा भेल अछि जकर अङ्ग्रेजी अनुवाद "Vikram and the Vampire" के नाममे सर स्चिर्ड फान्सिस १८६० ई. मे कएने छलथि ।

छत्तीसगढ़ क्षेत्रमे एकटा नयाँ प्रकारक कथा प्रचलित रहल अछि । कथामे कहल गेल अछि- राजा भरथरी आ रानी पिङ्गलाकेँ कोनो सन्तान नहि छलनि । जाहिसं रानी बहुत दुःखी आ उदास रहैत छली । एक दिन भिक्षाटन करैत एक गोटे सन्त हुनका दरवारमे आबि भिक्षाक लेल आग्रह कएल । जखन रानी पिङ्गला भिक्षा देबय योगीलग पहुँलीह तखन योगी कहलनि- हमरा बुझल अछि आहाँ किया उदास छी । हमरा लग पवित्र जल अछि ।अहाँ विश्वासपूर्वक पिएब तँ बाह्रम महिनामे अहाँकेँ पुत्ररत्न प्राप्त हएत । रानी पानि पिबैत छथि आ बाह्रम् महिनामे पुत्ररत्नक प्राप्ति होइत अछि ।[२०] तकर बादकेँ अन्य कथा पूर्ववते अछि ।

राजा भरथरी/भर्तृहरिक कथानकपर सिनेमासभ सेहो बहुतो तैयार कएल गेल अछि । एखनधरिक सूचना अनुसार छवटा सिनेमा एहि विषयपर बनाओल गेल अछि - (१) राजाभरथरी (१९७३ ई.) गुजरातीमे, (२) राजयोगी भर्तृहरि (१९५४ ई.)- हिन्दीमे, भर्तृहरि/भरथरी (१९४४ ई.) हिन्दीमे, भरथरी (१९४४) हिन्दीमे, राजा भरथरी (१९३२ ई) हिन्दीमे आ मूलरूपमे १९२२ ई. मे भर्तृहरि ।[२१]

राजा भरथरीक कथा गाथा, गीत नाटक आ फिल्मी रूपमे सेहो प्रचार-प्रसार होइत आएल एहि तथ्यसँ बुझाइत अछि । एहि विषयमे आओर व्यापक रूपमे अध्ययन, अनुसन्धानक अपेक्षा कएलगेल अछि ।

अन्तमे

एहि प्रकारे समग्रमे देखलापर भरथरी लोक गाथाक प्रसार क्षेत्र बहुत विस्तृत देखल गेल होइतो एहि सम्बन्धमे गम्भीरतापूर्वक अध्ययन अनुसन्धान कएल गेल नहि भेटैत अछि । भरथरी गाथाक मूल पाठ भोजपुरीमे कनि बेसीए पाओल जाइत अछि । मुदा ओहिमे बहुतो काज करब बाँकी अछि ।
एहि क्षेत्रमे अपने सांस्कृतिक सम्पदासभक जानकारी प्राप्त करबालेल विदेशी अनुसन्धातासभपर हमरासभक निर्भरता रहल बात एहि लोकगाथाक अध्ययनक क्रममे सेहो भेल अछि । भरथरी लोकगाथाक बृहत् अध्ययन, विश्लेषण विदेशी विद्वान् एन ग्रोडजीन्स गोल्ड (Ann Grodzins Gold) राजस्थानी प्रसिद्ध नाथपन्थी गायक मधुनिस्तार नाथसँग मिल कऽ कएने छथि । [२२] एहिमे भरथरी आ गोपीचन्दक सम्बन्धमे विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत कएने अछि । ओ तीन सय अडसठि पृष्टमे समेटने सामग्री आइ धरि

महत्वपूर्ण सङ्कलन मानल जाइत अछि । मुदा ई पुस्तक कतय उपलब्ध अछि ? कहल नहि जा सकैत अछि । ई युनिभर्सिटी अफ कैलिफोर्निया सँ १९९२ ई. मे प्रकाशित कएलगेल अछि । एहि छोट आलेखमे नाथ सम्प्रदायक 'वैराग्यपन्थक प्रर्वतक योगी भरथरीक सम्बन्धमे संक्षिप्त जानकारी मात्र अनुसन्धातासभकेँ उत्प्रेरित करय लेल देल गेल अछि । सांस्कृतिक सम्पदाक रूपमे हमरा अहाँक सामाजिक लोकजीवनक अङ्ग रहल एहन लोकगाथाक प्रसङ्गसभ लोप होबयसँ बचे ताहि उद्देश्यसँ अगामी दिनमे एहि सम्बन्धमे विस्तृत आ आओर वैज्ञानिक शोध-खोज होइत रहबाक चाही ।

---

१. डा. कृष्णादेव उपाध्याय, भोजपुरी लोकसाहित्यका अध्ययन, पृ-४९२ ।
२. सत्यव्रत सिन्हा, भोजपुरी लोकगाथा, १९५७ । इलाहावाद हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तरप्रदेश, पृ-१८९
३) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, *नाथ सम्प्रदाय,* पृ-१६७ ।
४) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, *नाथ सम्प्रदाय,* पृ-१६७ ।
५) दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह- *भोजपुरी लोक गीतमें करुणरस,* पृ-१३ ।
६) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी- *नाथ सम्प्रदाय,* पृ-१६८ ।
७) दुर्गाप्रसाद सिंह- *भोजपुरी लोकगीतमें करुणरस,* पृ-१६-१४ ।
८) रामप्रकाश सक्सेना- *मध्य भारतके लोकगाथा गीत,* प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, १९९४ ई, पृ-१८९
९) डा. रामप्रकाश सक्सेना- *मध्य भारतके लोकगाथा गीत,* प्र.वि. भारतसरकार, १९९४ ई, पृ-१८९-९०
१०) उर्मिला वाष्णेय- *भारतके लोकगाथा गीत,* प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, १९८६ ई, पृ-५५-६० ।
११) डा. ताराकान्त मिश्र- मैथिली लोक साहित्यका अध्ययन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली । २००८ ई । पृ-२०५ ।
१२) विक्रमपणि त्रिपाठी - बातचीतक आधारमे
१३) धर्मराज थापा र हंसपुरेसुवेदी- नेपाली लोकसाहित्यको विवेचन, पाठ्यक्रम विकासकेन्द्र,काठमाडौ,२०४१साल
१४) सावित्री मल्ल- पाल्पाको लोकगीत : अध्ययन र विश्लेषण, कक्षपति प्रकाशन, पाल्पा, २०५२ साल ।
१५) कपिलदेव लामिछाने - नेपाली लोकगाथाको अध्ययन, साझा प्रकाशन, २०६४ साल, पृ-६२-६३ ।
१६) कपिलदेव लामिछाने - नेपाली लोकगाथाको अध्ययन, साझा प्रकाशन, २०६४ साल, पृ-६८ ।

१७) डा. रामकुमार वर्मा- हिन्दी साहित्यका आलोचनात्मक इतिहास, पृ-१७१ ।

१८) सत्यब्रत सिंहा- भोजपुरी लोकगाथा, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहावाद, १९५७, पृ-१६७-१६८ ।

१९) सत्यब्रत सिन्हा- भोजपुरी लोकगाथा, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहवाद, १९५७, पृ-३२६-३२९ ।

(२०)Chhatisgash Folktales of Bharthari - Indira Gandhi National Centre for the Arts-2004।

(२१) Bharthari : Wikipedia, the free encyclopedia.

(२२) Ann Grodzins Gold, Madhu Nistav Nath- A carnival of parting: The tales of King Bharthari and King Gopichand as sung and told by Madhu Nistav Nath of Ghatiyali, Rajasthan. 1992 .

<u>सहायकग्रन्थ</u>

(1) Bharthari : A chhattisgahi Oral Epic by Nand Kishore Tiwari, Arvind Maewan and H.U Khan-2002, Sahitya Academi.

(2) Bharthari and Buddists by Radhika Herzbeger, 1986. ISBN- 9027/2250 .



जनकपुरधामके धार्मिक उत्कर्षक साक्षी : रामनवमी

पृष्ठभूमि

एखनुका जनकपुरधाम प्राचीन समयमे मिथिला नगरीके रुपमे प्रचलित रहल धार्मिक ग्रन्थसभसँ ज्ञात होइत अछि । प्राचीन मिथिला विदेह, तिरहुत होइत आइ जनकपुरधाम बनल ई शहर चौदहम शताब्दीमे मात्र अधिक चर्चामे आएल देखलगेल अछि । यद्यपि चिनिया यात्रीसभ एहि क्षेत्रसँ अपन यात्रा सञ्चालन कएने छल आ ओसभ किछु खास नामसँ एहि क्षेत्रके चिन्हारी करएबाक प्रयास कएने छल ।

समयके नमहर अन्तरालकबाद जखन वि.सं. १८३९ मे तत्कालीन राजा रणबहादुर शाहके पालामे जेनरल अमर सिंह थापा पैगोडा शैलीमे राम मन्दिरके निर्माण करओलनि, तखन जनकपुर ताही समयमे चर्चामे आएल छल । सम्भवतः तकरे प्रभावसँ टिकमगढके महारानी वृजभान कुअरि एहिठाम भव्य जानकी मन्दिरक निर्माण प्रारंभ कएलनि । जे वि.सं. १९६७ मे सम्पन्न भऽ मूर्ति सेहो प्रतिष्ठापित कएल गेल ।

ऐतिहासिक साक्ष्यके आधारमे राम मन्दिरके आदि संस्थापक चतुर्भुज गिरी आ जानकी मन्दिरक आदि संस्थापक सूरकिशोर दास समकालीन छलथि ।

जनकपुरधाममे ओहि समय भारत, अयोध्याक साधु सन्तसभके बहुत आवागमन होइत छल । जानकी मन्दिरके निर्माणमे श्री साधु सन्तसभके योगदानके सेहो विसरल नहि जा सकैत अछि । यद्यपि एहि सम्बन्धमे कतहु उल्लेख नहि भेल अछि । सामान्य बात अछि, एकटा राजघरानाक महारानीके जनकपुरके सुनसान आ आवागमनसं सेहो कातमे रहल स्थानधरि कोना अएबाक सूर चढलनि । ओ पक्का अयोध्याक सन्तसभके धार्मिक प्रवचन, जनकपुर आ मिथिलाक प्राचीन महिमाके यदा कदा चर्चा परिचर्चाक कारण एकर जानकारी महारानी धरि पहुँचल आ ओ धर्मकीर्तिके लेल एकटा भव्य मन्दिर बनएबाक विचार कएलनि । जखन जनकपुरधाममे मन्दिर तैयार भऽ प्राणप्रतिष्ठा सेहो भगेल तहन ओहे साधु सन्तके सम्भवतः आग्रह प्रयाससँ ओ महारानी वृजभानु कुअरिसँ १८९१ ई.मे. अयोध्यामे कनक भवन (राममन्दिर) के भव्य मन्दिरके निर्माण कराओलगेल ।

जनकपुरधामके पुरना मठ मन्दिरके इतिहास पल्टाएल जाए तऽ एहिठामके अधिकांश सन्त महन्तसभ ओम्हरेसँ आबि एहिठाम भगवत भक्तिमे लीन रहल आ ओहि अनुरुप एहिठामक मठ मन्दिरके संचालन व्यवस्थापन कएने पाओल जाइत अछि । राम मन्दिर आ जानकी मन्दिरके निर्माण आ स्थापनाक पृष्टभूमिमे ओम्हरेके साधुसन्तसभके योगदान रहल से तथ्य त कहिते अछि ।

एहि क्रममे राममन्दिरके स्थापना आ तकर व्यवस्थापन देखला पर राम मन्दिरमे सन्यासी खलकके साधुसभके वर्चश्व रहैत अछि। एकर महन्त आ पुजारी सेहो सन्यासी रहैत अछि। एखन एहि मन्दिरके रेख देख गुठी संस्थान करैत आबि रहल अछि।

जनकपुरधाममे ई दुनू प्रसिद्ध मन्दिरके उपस्थितिके ध्यानमे राखि पावनिसभके प्रारंभ भेल हमसभ देखैत छी। हम सुरुएमे कहलहुँ, जनकपुर क्षेत्रमे अयोध्या अर्थात रामललाक अनुयायी साधुसभके वर्चश्व रहलासँ एहिठामके धार्मिक पावनि तिहार सेहो ताही अनुसार अनुष्ठित होइत गेल अछि। एहि कारणें सेहो जनकपुरधाममे प्रारंभ भेल रामनवमी आ विवाहपञ्चमी महोत्सव ताही परम्परामे सम्पादन होइत आएल अछि। एक श्री रामके जन्म दिवसके रुपमे दोसर श्री रामके विवाह उत्सवके रुपमे। अर्थात रामनवमी आ विवाहपञ्चमी। बहुत समयबाद आबिकए आव जानकी नवमीके सेहो प्रारंभ होबए लागल अछि।

रामनवमीके बदलैत स्वरुप

रामनवमी हिन्दुधर्मशास्त्रके अनुसार चैत शुक्ल नवमी तिथिमे मर्यादा पुरुषोत्तम, साक्षात विष्णुक सातम अवतारके रुपमे श्री रामके जन्म भेल अछि। अयोध्याक राजा दशरथके पुत्रक रुपमे जन्म लेने श्री रामके बादमे जनकपुरधाममे मिथिला नरेश जनकक पुत्री सीतासँग विवाह भेल छल।

“चैते नवम्वर प्राक पक्षे दिवा पुण्ये पुनर्वसौ।
उदये गुरुगौराश्चो : स्वोच्चस्थे ग्रह पञ्चके॥
मेष पूषाणी सम्प्राप्ते लग्ने कर्कटकाहवये।
आवीरसी त्सकलया कौसल्याया पर : पुमान॥”

(निर्णय सिन्धु)

पहिने रामनवमी उत्सव बहुत धुमधामके सँग मनाओल जाइत छल। पन्द्रह दिन तऽ सघन रुपमे मनाओल जाइत छल, बादमे एक महिनाधरि चलैत गेल। बडका-बडका भारतीय दोकानसभ, टुरिंग सिनेमा, थियटरसभ, छोट सर्कससभ लम्बा समयधरि रहैत छल। ओहि समयमे जनकपुर ओतेक विकसित शहर नहि छल। छोट छोट दोकान होइत छल। भारतीय कपड़ा सहित अन्य सामग्री अबैत छल। मशालासभ, भाँडा वर्तनसभ भेटैत छल।

रामनवमीक एकटा थप आकर्षण होइत छल पहाडी गाछीके मेला। एखनुका नगरपालिका रहल स्थानमे गाछसभके छाँहरिमे पहाड़ी मेला लगैत छल। समतोला, भटमास, जडी बूटी, भैंडाके कम्वल आदि अबैत छल। ओकरासभक बीच एकटा हट्ले सांस्कृतिक जमघट। महिला पुरुषके सम्मेलन, कहियोकाल विवाहके तामझाम आकर्षणके केन्द्र होइत छल। आब

ई सब बितल दिनके घटना भगेल अछि । जनकपुरधाममे बारहबीघा आ तिरहुतिया गाछी अछिए । सालाना मेला लगाओल जा सकैत अछि । मुदा प्रयास नहि भेल ।

रामनवमीमे राम मन्दिर आकर्षणके केन्द्र रहैत अछि । सन्यासीमतके साधु सन्तसभके बढिया उपस्थिति एक हप्ता पहिनहीसँ होब लगैत अछि । विभिन्न क्षेत्रसँ आएल ई साधुसभ दर्शनार्थीसभके थप आकर्षण दैत अछि ।

रामनवमी दिनमे भिनसरेसँ पूजा करएबलासभके भीड़ रहैत अछि । गंगासागर, धनुष सागरमे स्नान कऽ फूलमाला, प्रसाद सँग राममन्दिरके प्राचीन मूर्ति रहल मन्दिरमे पूजा करएबलासभ नेपाल वाहर भारतके सेहो प्रशस्त श्रद्धालु रहैत अछि ।

रामनवमीमे आएल साधुसभके खाना आ विदाई करबा काल देल जाएबला नगद गुठी संस्थानसँ देल जाइत अछि । मन्दिरक महन्त रामगिरी गुठीके खोराकसँ पूजा अर्चनाक सम्पूर्ण काज आब संभव होबए नहि कहैत अपने जनसहयोगमे जरुरी खर्चके व्यवस्था करैत आएल कहैत छथि । गुठी संस्थान पुराने दरबन्दीमे सन्त महन्तके विदाई कएला पर अनसोहाँत लगला पर महन्थजी स्थानीय युवासभके सहयोगमे सम्पूर्ण रामनवमी पूजा आराधना कार्यके व्यवस्थित करैत छथि ।

जनकपुरधामके रामनवमी पावनि अपन प्राचिन स्वरुपके घुरा तऽ नहि सकल मुदा अध्यात्मिक प्राक्रियासभ निरन्तर जारी रखने रहला परे जनकपुरधामवासी सन्तोष व्यक्त करैत अछि ।



ज्योतिरीश्वर ठाकुर सलहेसक चर्च किए ने कएलनि !

जखन लोकनायक सलहेसक प्रसंग समयक बात उठैत अछि तं सभ अध्येता कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर रचित आकरग्रन्थ" वर्णरनाकर"क चर्च करैत ई तर्क प्रस्तुत करैत छथि जे आखिर ज्योतिरीश्वर अपन ग्रन्थमे सलहेसक चर्च किएक ने कएलनि ! 'वर्णरत्नाकर' मिथिलाक कर्णाटवंशी राजा हरिसिंहदेवक समय (१३२४ई.) मे लिखल गेल छल । इहो कहल जाइछ जे हिनके समयमे पञ्चीव्यवस्थाक शुरुआत भेल आ जातीय लेखा-जोखा रखबाक प्रथा चलल । 'वर्णरत्नाकर'मे ओहि समय प्रचलित आ देखि पड़ैत वस्तु, व्यवहार, मूर्त-अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा, सामाजिक, राजनीतिक विधि-विधान आदिक वर्णन विस्तारपूर्वक विभिन्न कल्लोलक रूपमे विभाजित कऽ कएल गेल अछि । जं कि एहन महत्वपूर्ण ग्रन्थमे सलहेस सन प्रतापी योद्धा, राजा, नायक, व्यक्तित्वकें चर्चा नहि भेल अछि तएँ सलहेसक समय तकरा वादे मानल जएबाक चाही अर्थात् चौदह-प्रन्द्रहम् शताब्दीक वाद ।

बहुतो विद्वान अपन मतकें कतेको बेर संशोधन, परिमार्जन करैत सलहेसक समयकें आगां-पाछां करैत रहलाह अछि । किछु गोटे वि.सं. १३२४ मे हिनक जन्म भेल हएबाक खाता खोलैत छथि, अर्थात् सन् १२७७ ई. मे । तखन राजा हरिसिंह देवक समयमे ई पचास वर्षक भऽ गेल छल हएताह आ अपन पराक्रमसं चर्चितो भेले छल हएताह, तैयो हुनक नाम 'वर्णरत्नाकर' मे नहि आएल । ई कोना भेल ।

मिथिलामे मुसलमानी आक्रमणक समय अर्थात् कर्णाट शासनक अन्त आ अस्तव्यस्त मिथिलाक्षेत्रमे सलहेस जन्म लेने रहितथि तं ओ लोककंठमे गाथाक रूपमे एतेक जल्दी-स्थान पओतथि से लगैत नहि अछि । गोपीचन, राजा भरथरी आदिक, गाथाक इतिहाससं ई तथ्य स्पष्ट भऽ जाइत अछि । विगत दू-अढ़ाई सय वर्षक भितर समाजमे धार्मिक गाथा गायनक परम्परा बेसी जोड़ पकड़लक अछि आ विभिन्न देवी, देवता, राजपुरूष सभक कथाक वाचन, गायन शुरु भेल । एहिमे सलहेसक गाथाक स्थान कोना विकसित भेल, आर ओझरा दैत अछि ।

तखन 'राजा सलहेस' उपन्यास द्वारा पहिल बेर गंभीरतापूर्वक सलहेसक बारेमे सोचबापर बाध्य कएनिहार डा. मणिपद्म सलहेसक समय छठम्-सातम् शताव्दी मानैत छथि । तकराबाद सातम् आठम् शताव्दी धरि माननिहारक बेस नमहर सूची भऽ गेल अछि । तर्क अपन-अपन छैक । पुरातात्विक अथवा ऐतिहासिक साक्ष्य एखन धरि किछु नहि अछि । कतहु कोनो रूपें सलहेसक चर्च नहि आएल अछि । एकमात्र आधार लोककंठमे

बैसल गाथा अछि, जकरा आधार पर वृद्धि विलासक खेल चलि रहल अछि । तकरो कथा अद्भूत अछि । आइ सं एक सय बतीस वर्ष पूर्व जार्ज ग्रियर्सन सिराहा क्षेत्रक कोनो डोमसं सूनि क सलहेसक कथा संकलन कएलनि । तकरा बाद केओ एहि शताव्दीमे एहन जरुरति महशूस नहि कएलक । सन् २००७ मे डा. महेन्द्रनारायण राम आ फूलो पासवान फेरसं गाथाकें सकलन कएलनि अपना ढंगे । वस तकरावाद इति श्री भऽ गेल । डां विशेश्वर मिश्र सेहो गाथाक संकलन कएने छलाह, मुदा कत्त कएलनि, कोना कएलनि किछु उल्लेख नहि अछि । हं, तकर प्रकाशन पंक्ति लेखकक सम्पादनमे हाले प्रकाशित' लोकनायक सलहेस, द्वितीय खण्ड' नामक पुस्तकक परिशिष्टमे राखि देल गेल छैक । जं कि सलहेसक समस्त कथाक्रमक प्रमाणिकता ने इतिहासक लग अछि ने पुरातत्व लग, तखन इएह गाथा मात्र किछु प्राप्त करबाक एकमात्र बाट छैक तखन तकर संकलनमे एतेक विलम्व, उदासीनता अथवा उपेक्षा व्यवहार कथी लेल । गहीर प्रश्न थिक जकर खोज जरुरी अछि ।

तखन जे जतेक तर्क वितर्क अबौक-सलहेसक समयकें सातम् आठम् शताव्दी दिश ल जाएबला समूहक एकथनकें ओजन भेटलैक अछि । कनेक इतिहास दिश ध्यान दिऐक हम सभ । कनौजक सम्राट हर्षवर्द्धन सम्पूर्ण उत्तर भारत तिरहुत प्रदेश सहित पर अपन अधिकार कएने छल । ओकर मृत्यु (सन् ६४७) क वाद एहिक्षेत्रमे अराजकताक स्थिति उत्पन्न भेलैक । मगध आ तिरहुत सेहो प्रभावित भेलें । तिरहुतक प्रभारी सामन्त छल अर्जुन अथवा अरुनाश्व । ओ गद्दी पर वैसि गेल । चिनीयात्री हर्षबर्द्धनक समयमे मिथिलावाटे यात्रा कएने छलाह-६३५ ई. दिश । अरुणाश्व द्वारा चिनी राजदूतकें अपमान, चिनी राजदूत द्वारा नेपाल आ तिव्वतक राजासं सहयोगलऽ अरुणाश्वकें पराजित कऽ चीन लऽ जाएब आ करा बाद तिरहुत सरिपहुँ तिरोहित भऽ जाएब-खण्ड खण्डमे, ई इतिहास सम्मत अछि । तखन उदय होइत छैक कविलाई शासनकें-कविलाक सरदार, अन्ततः राजा । अपन शासन, अपन सेना, अपन नियम कानून । एहने सन अराजक स्थितिमे सलहेसक जन्म आ कही उदय भेल, जे एकटा तत्कालिक घटनाक प्रभाव मानल जा सकैछ । पहलवान त छले, राजा कुलेश्वर ओत्त चौकिदार रहए । ताहि समयमे सेहो अन्न, धन, लक्ष्मीक भण्डार छल तराइ क्षेत्र । चूरे पर्वत श्रृंखलाक ओहि पारमे बसैत मंगोलियन अनुहारक किराती, द्रविड़ आदि जाति समूह तराइमे आक्रमण कऽ धनमाल लऽ जाइत छल । सम्भवतः तेहने उपक्रमकें निरन्तर प्रतिकार करैत सलहेस एकटा वीर योद्धाक रूपमे जन सामान्य विच देखार भेल । ओ दू तरहें सेवा कएल । एक वाहिरी आक्रमण सं

बचौलक, दोसर आन्तरिक शोषण, उत्पीड़न सं छोटका वर्ग (?) कें सुरक्षा प्रदान कएलक । सम्भव थिक तहिया धरि दुसाध कोनो जातिक रूपमे मान्य नहि छल । ई त सलहेस छल जे अपन दुः साध्य सन-सन काजक द्वारा समाजमे जे इज्जत प्रतिष्ठा आर्जित कएल, ताहिसं प्रभावित भऽ अपन जातिक वीर पुरुषक पुरुषार्थकें सम्मान करैत स्वयंकें दुसाध्य अर्थात् दुसाध कहं लागल हो । आ सलहेसके अभ्युदयक बाद दुसाधि जाति अस्तित्वमे आएल हो । सातम् आठम् शताब्दी बा तकर बादो दुसाध जातिक चर्च नहि भेटैत अछि ।

आब कनेक ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरकें देखी । 'वर्णरत्नाकर'क प्रकाशन दी रायल एशियाटिक सोसाइटी अफ वंगालद्वारा १९४० ई. मे कलकत्तासं भेल छल-सुनितिकुमार चटर्जि आ बबुआजी मिश्रक सम्पादनमे । 'वर्णरत्नाकर'मे वर्णित जातीय समूहमे- तेलि, तुरिया, धानुक, धुनिया, धनिकार, डोंब, चण्डार, चमार, गोआर, बीन्द, प्रभृति मन्दजीय तें वास । एत्त ध्यान देबबला बात छैक जतेक जातिक चर्च अछि ओ सभ समाजमे कोनोने कोनो रूपें अपन पेशा दायित्व प्रति छुटिआओल छल, एखनो धरि ताही रुपें रहल अछि ।

'विरहा, सिरिया देशइ, लोरिक नाचो ।' एत्त लोरिक नाचक चर्च हएब आ सलहेसक चर्च किएक नहि । अथवा जं कि दुसाध आदि जाति एकरा गबैत छल, दरबारमे प्रवेश नहि पौने छल, दरबारी पंडित नहि सूनि सकल हएताह । दोसर ओहुसं चिन्तनीय जे जानि बूझिकऽ सलहेस गाथा , नाचकें छोड़ल गेल हो ।

'वर्णरत्नाकर'मे तत्कालीन राज्यसभक चर्च सेहो अछि, जाहिमे सलहेस गाथासं सम्वन्धित राज्यसभक नाम नहि अछि । एकर कारण स्पष्ट अछि । तकर स्पष्ट कारण अछि-ज्योतिरीश्वर मात्र तेहन राज्यक चर्च कएले छथि जे हुनके शब्दमे" सर्व्वगुण संपुर्णा राजा" छल । 'अर्वस्थान वर्णाना'मे चर्च करैत लिखने छयि-" तं काँ मध्य सिंहासनावस्थित सर्व्वगुणा संपुर्णा राजा देषु अनन्तरलान (ल), चोल, डाहाल, चौहान, नेपाल, भोट, कर्नाट, श्रीहट्ट, वीरकोङ्कणा, कामरूप, उत्कल, सिंहल, मावल, मरार, गुञ्जर, माल्लिवार, महारष्ट्र, जरासन्धि, अयोध्या, मगध, वंशनावर प्रभृति अनेक राजा, भण्डारी ।" स्पष्ट अछि ई सभ ओहि समयक चर्चित पैध पैध राजा छलाह । एत्त गप छोट-छोट कविलाई गांम सभकें मिला कऽ बनल सरदारवला सामन्त, सरदार किंवा राजाक गप अछि । ई चर्च किए रहैत 'वर्णरत्नाकर'मे ।

तएँ जं कि सलहेसक सम्वन्धमे वर्णरत्नाकरक वादोक कोनो ऐतिहासिक साक्ष्य, लेखन प्रमाणित नहि करैत अछि तखन विभिन्न

सम्भावानाकें पुष्टि करैत पूर्वक सातम् आठम् शताव्दी हुनक समयकें निर्धारण करब कौन अनुचित।

अन्ततः हम सभ ई मानैत छी जे 'वर्ण रत्नाकर'मे सलहेसक चर्च नहि हएब सलहेसक काल निर्धारणक कोनो ठोस आधार नहि भऽ सकैछ तएँ जा धरि कोनो उत्खनन् वा ऐतिहासिक साक्ष्य पूर्ण रूपें सोझा नहि अबैत अछि, सलहेसके समयकें सातम् आठम् दिश राखब समीचीन हएत।

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठाक सदस्यक हैसियतसं हमर प्रयास सलहेस गाथा आ तकरामे अन्तरनिहित तथ्यसभक आधार पर समयके यकीन करबाक रहय से किछु हद धवर भेबो कयल। मुदा तकरा बाद एहिपर मनन करबाक केओ जरुरतियो ने महशूस कएलक। परिणामतः एखनो ओहिना ठमकल अछि।



दुर्वासा आश्रम : दुहवी गढी

द्वापर युगमे एकगोटे ऋषि छलाह-दुर्वासा । बड़ खिसिआह । ओहि समयक राजा महाराजा दुर्वासाक नामसं कंपैत छलाह-पता नहि कखन की कहि बैसय ।सकभर अगाडी़मे आब नहि पड़ए तकर फिराकमे रहल करैत छलाह । जँ कतौ धोखासं पड़ियो जाए त सकभरि सत्कार क प्रसन्न कर चाहथि । भक्तिभावसं प्रसन्नो हयबामे हुनका देरी नहि लगनि । कहल जाइछ कुन्तीपुत्र कर्ण दुर्वासिके वरदानके प्रतिफल भेल छलाह ।

उएह दुर्वासाक एकटा आश्रम धनुषा जिल्लाक (तत्कालीन)दुहवी गा.वि.स., वडा नं. २ मे रहल हएबाक बिश्वास एतुक्का बासिन्दासभ करैत आएल अछि । हुनकासभक तर्क छन्हि दुहवी गामक नामाकरण सेहो दुर्वासिके नामपर पड़ल अछि ।

गामक वार्ड नं. २ मे एकटा भग्नावशेष छैक । ओत रहल बटवृक्ष आ पीपरक पुरान गाछ लग जेठक भ्फड़कबैत रौदमे मृदङ्ग आ झालिक आवाज अबैत छलैक । गौंआंसभ आश्चर्य मानैत छलाह । आ ताहिसं भयभीत भेल करथि । । बादमे खादी भण्डारक निलम्बित व्यवस्थापक, वरसाम (दरभङ्गा) निवासी हरिकान्त झा ग्रामीणसभक सहयोगमे २०२८ साल माघ शुक्ल द्वितीया तिथिमे ओकर उत्खनन शुरु कएलक । बादमे जनकपुरसं प्रशासन रोकि देलक आ तखन खनल गेल गढी ओहिना माटिसं भरि गेल ।

गढीके खनलापर ओत मन्दिरके पूर्ण ढाँचा देखल गेलै, केबारमे भारी ताला मारल गेल रहै । आ ओहिमे पुरा मानव कङ्काल रहैक से बात प्रत्यक्षदर्शी हालक पुजारी वडा नं. २ क राधाकान्त बतौने छलाह ।

उत्खननमे भेटल विभिन्न श्रृङ्गार बुट्टा जकौं खोधल पाथर कोनो घरक खम्भा जकाँ लगैत छल ।् फूलबुट्टा जकौं देखि पड़ैत उक्त चिन्हसब तान्त्रिक पद्धतिसं निर्माण कएल गेल बात महिनाथपुर (भारत) क तान्त्रिक ज्योतिषी तुरन्तलाल बतौने हयबाक बात गामक शिक्षक वीरेन्द्रकुमार झा कहने रहथि । ओ ज्योतिषी ओहि चेन्हसबके महाकाली, भुवनेश्वरी, महासरस्वती, गायत्रीदेवीक रुपमे पहिचान कएने छलाह । माटि खनैत काल सर्वप्रथम एकटा खण्ड़ित पाथर निकलल जाहिमे 'मा' अक्षर प्रष्ट रुपमे लिखल छलैक । पाथरक प्रकार आ रङ्ग देखि क ओकर अबधि किटान करब जरुरी अछि से एहि गामक जनसाधारणक धारणा देखल गेल छल ।

अमेरिका आ क्यानाडाक नागरिक सेहो दुर्वासा गढक भ्रमण क चुकल हयबाक जानकारी दैत तत्कालीन गाविस उपाध्यक्ष प्रदीप झा १५-१६ वर्ष पूर्व श्री ५ को सरकारमे आवश्यक उत्खनन करबा लेल कार्यवाही कएल

गेलाक बादो कोनो तरहक रुचि नहि देखौने हयबाक जानकारी करौने छलाह ।

गढीके उत्खनन कयला पर शिव मन्दिर भ सकबाक धारणा सेहो तान्त्रिकसभक रहल छलनि । मुदा एखन ई दुर्वासा ऋषिद्वारा स्थापना कएल गेल कहल जाइत शिवलिङ्ग गढीसं कनेक पश्चिम दिश आ दुर्वासाद्वारा खनाओल गेल पोखरीसं पूर्व कृतासरक पश्चिम-दक्षिण मोहारपर अछि । गढी खनैत काल ग्रामीणसभ पोखरीसं आश्रम अथवा मन्दिर (गढी) धरि सुरङ्ग रहल स्पष्ट देखने छल । दुर्वासा ऋषि पोखरिमे स्नान आ मन्दिरमे पूजापाठ करबा लेल ताही सुरंगसं जाइत छलाह एहन जनविश्वास अछि । '२'२१/२' आकारक इँट आश्रम निर्माणमे प्रयोग भेल देखल जाइत अछि । किछुगोटे ओहि भग्नावशेषक निचाँ बहुमूल्य वस्तुसब सेहो भ सकबाक विश्वास करैत अछि ।

उत्खननमे प्राप्त सामग्रीमध्ये गणेशक सुन्दर कलात्मक आकृति पाथरमे खोधल प्राप्त भेल छल । ओ समस्त पाथर एखनो धरि प्रायः ओतहि सुरक्षित राखल गेल अछि ।

दुर्वासा ऋषिक गढके रुपमे आई धरि मान्यताप्राप्त आहि ठामके विधिवत् उत्खनन भेलासं ओ आश्रम थीक अथवा मन्दिर से स्पष्ट भ जाएत । पोखरी आ मन्दिरक बीचमे रहल सुरङ्ग वास्तवमे जलशयनक लेल शिवलिङ्गक पानि आपूर्तिक माध्यम सेहो भ सकैत अछि । मुदा एहि धारणा सबक तथ्य बात पुरातत्वविद्सभक प्रामाणिक विवरणसं मात्रे संभव भ सकैछ ।

दुर्वासा गढक व्यापक जीर्णोद्धार, घेरबार आ संरक्षणक लेल एखन धरि स्थानीयस्तरमे सेहो पहल भल हो से देखबामे नहि अबैत अछि । भग्नावशेष रहल ठामक चारुदिश घेरबार क दुर्वासा गढीके महत्व आ जनविश्वासबारेमे जानकारी कराएल जएबाक आबश्यकता अछि ।

धार्मिक आ पुरातात्विक महत्वक एहन स्थानसबके आर व्यापक प्रचारप्रसारक अपेक्षा एत्त महसुस महशूस कएल गेल अछि । पर्यटकीय कार्यक्रम अन्तर्गत खजुरीक कामचित्र भेल मन्दिरसँगहि दुर्वासा गढके सेहो उत्खननके लेल सामिल कएल जएबाक चाही ।

(ई आलेख बहुत पूर्वे प्रकाशित भेल छल । तएँ एहिमे चर्च भेल गाम ,स्थान त अछिए मात्र गाँउ पालिका बदलि गेल भ सकैछ । एहि गढीके अबस्था केहन अछि कहब कठिन छैक । मुदा एकर छानबीन क प्रदेश सरकार काजके हाथमे लिअए त एकर प्राचीनता आ महत्व बुझबामे आबि सकैत अछि ।-ले.)



खण्ड: दू
(मिथिलाक गौरब)

जखन महाकवि विद्यापतिक पदावली नेपालीमे आएल !

“कातिक धवल त्रयोदशी जान-
विद्यापतिक आयु अवसान !”

मिथिलाञ्चलमे प्रतलित इहे मान्यताक कारण मैथिलीक विश्वविश्रुत कवि विद्यापतिके मृत्यु कार्तिक शुक्लपक्ष त्रयोदशीके दिन भेल विश्वास कएल जाइत अछि। आ तकरा बादे सम्पूर्ण मिथिलाञ्चल आ ओकर बाहर रहएबला मैथिलसभ हुनकर स्मृति दिवस बहुत धूमधामके सँग मनबैत अछि।

इएह बितल अगहन ५ गते धवल त्रयोदशी पड़ैत छल आ ओहि दिनसँ विद्यापतिक स्मृति दिवस यत्र-तत्र मनएबाक तैयारी भऽ रहल समाचार आबि रहल अछि। विद्यापतिक अनेको रचना संस्कृतमे छैक। मिथिलाक्षरमे श्रीमद् भागवतके उतार देखलगेल छल-हुनकर हस्त लिखित। अनेको शिलालेख, ताम्रपत्रसभमे एहि सम्बन्धि सूचनासभ छैक तऽ विद्यापतिके कृतिसभके महत्वपूर्ण दस्तावेजी संकलन हमरेसभके राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि। किछु दिन पहिने एकटा नयाँ कृति ‘वैद्य रहस्य’ देखलगेल, जे आइ धरि हुनका द्वारा लिखित कृतिसभक अतिरिक्त मानलगेल अछि। सम्भवत: विद्यापति रचित अन्य ग्रन्थ सेहो होबए सकैत छैक-बारह सय पाण्डुलिपि मध्ये। आवश्यकता छैक-मिथिलाक्षर, नेवारी, संस्कृत भाषा-लिपिक ज्ञाता विद्वानके।

काठमाण्डू उपत्यकामे महाकविके पदसभ मल्ल राजासभके दरबारमे नीकसँ प्रवेश पएने तथ्य हुनकर पदसभके लय-तालमे लिखलगेल मल्ल राजासभके पदावलीसभसँ ज्ञात होइत अछि। एखनो भक्तपुर सहितक किछु मन्दिरसभमे विद्यापतिके भनिता सहितक भजनसभ गाओल जाइत अछि।

एहन महाकविके सुललित, रसपूर्ण आ प्राञ्जल पदावलीके गीतसभके अनेको भाषामे अनुवाद भऽ गेल अछि। एहि क्रममे सर्वप्रथम नेपाली भाषामे सेहो हुनकर पदसभ रुपान्तरित भऽ आकार पओलक वि.स. २०२९ सालमे। आ ई विकट काज कएने छलथि-तहिया रा.रा.ब. कैम्पसमे नेपाली पढ़एनिहार गुरु पं. कृष्ण प्रसाद उपाध्याय।

जनकपुरधाममे ओहि समय आयोजन होबएबला विद्यापति समारोह, कविगोष्ठीसभमे पं. उपाध्याय विद्यापतिक पदसभके अनुवाद सुनबैत छलाह । मूल गीत संगहि नेपाली अनुवाद-श्रोताके मंत्र मुग्ध करैत छल ।

बादमे वि.स. २०२९ सालमे "विद्यापति पदाबलीक नेपाली अनुवाद" नामसँ नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानसें प्रकाशित भेल । संकलनमे विद्यापतिके अतिलोकप्रिय ११८ टा पदसभ सामिल कएलगेल छैक । छन्द, तालके दृष्टिसँ जनमानसमे एकटा खास छाप छोड़िचुकल गीतसभके ओहे लय, ताल,मात्रामे अनुवाद कएनाई-ओ पं. उपाध्यायेके सामार्थ्यके बात छलनि -जे ओ सफलतापूर्वक कऽ कऽ सभगोटेके देखा चुकल छथि ।

पुस्तकमे मैथिलीक महान कवि आ नेपाली गीति छन्दसँ अत्यन्त प्रभावित सोमदेव अपन सम्मतिमे लिखने छथि-"जेना उमर खैयामक अंग्रेजीमे उल्था कऽ फिट्जरैल्ड अमरत्व प्रप्त कएलनि, महाकवि विद्यापतिके उल्थासँ उपाध्यायजी नेपालीमे ओहे स्थान पओने छथि, हमर आस्था ई उद्गार व्यक्त करैत अछि .... ।" (पृ-ऊ) ।

नेपाली साहित्यमे अनुवाद साहित्यके चर्चा करैत काल प्रा. कृष्ण प्रसाद उपाध्यायके एहि अनुवादके कतेक चर्चा होइत छैक, हमरा ओतेक अध्ययन नहि अछि मुदा जे जतेक सूचना अछि -पाबएबला सम्मान सम्भवतः नहि पाबि रहल छथि । पुस्तकके प्रारम्भमे तत्कालीन निमित्त का.मु उपकुलपति चूडानाथ भट्टराईक मन्तव्यके क्रममे लिखल ई उद्गार मननीय छैक- 'विद्यापति पदावली' मैथिली भाषाके एक अमूल्य गीतिकाव्य अछि । ओहन पदावली नेपाली राष्ट्रभाषामे, मैथिली मातृभाषी नहि भ क प्रा. कृष्ण प्रसादजी अनुवाद कऽ क राष्ट्रभाषामे सेहो तेहन प्रेम-पीयुष-पान कर चाहबलासभके ईच्छा पुरा क देने छथि । विद्यापतिके पदावलीक सरस सरलता ठीक सँगसं उतरए नहि सकल कहि अनुवादकके कहएसँ पहिने ओकर भाव नहि विगाड़ि सुरक्षित कऽ देनेहएबाक कारणें बरु हमरासभके कृतज्ञ बनए पड़त । (पृ-३)

काठमाण्डू उपत्यकामे विद्यापतिके लोकप्रियता दिस इंगित करैत नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानक तत्कालीन साहित्य विभागके आयोजक रत्नध्वज जोशी लिखैत छथि-कान्तिपुर उपत्यकामे "विद्यापति पदावलीके महत्वपूर्ण स्थान होबएके एकटा नमूना आई धरि सेहो कतौ कतौ चलि रहल भजनसमभे प्राय सुनल जाइत भनये विद्यापति सुनो भाई साधो" गीत खंड प्रस्तुत करैत अछि ।

विद्यापति पदावलीके एहि अनुवादितग्रन्थमे अनेको शब्दसभ यथारुपमे राखलगेल छैक । अनुवादकके मत छैक-ई शब्दसभ नेपालीमे सेहो लगभग समानरुपमे प्रयोग भऽ रहलाक कारण ओना कएल गेल अछि । ताल-मात्राके

रक्षाके लेल सेहो शब्द चयन प्रति ध्यान देबही पडैछ। यद्यपि मैथिली भाषाक अनेको एहन शब्दसभ छैक जे नेपालीमे अविकल प्रयोग भऽ रहल छैक। पदावलीमे प्रयोग भेल शब्दसभके अर्थ-भावार्थ सेहो नेपालीमे प्रयोग हएबाक अर्थ सँगे मिलैछ। विद्यापति पदावलीके नेपालमे संरक्षित हएबाक प्रकरणसँ ई तथ्य स्थापित होइत छैक -एत एकर प्रयोग भेलासं स्थानीय शब्द मिलि सकबाक सभावना भऽ सकैत छैक। विद्यापतिके अधिकांश प्रमाणित पदसभ नेपालसँ प्राप्त भेल अछि। एहन शब्दसभमे माझ, लागि, हेरी, सुन, ओठ, फोका, जतन, ठाम, तल, पीर, आस, सोही, काग, हाट, लाज, जीउ, निहुरी, मीत, बेला, फेरि, सांधी, जहाँ, तहाँ, आई, बडाइ, जति, जागे, भुवनभरि, अरु, लाबा, चमर, जोर जति, मिन-आदि अछि।

पं. कृष्ण प्रसाद उपाध्यायके पूर्खासभ पू. २ नं. रामेछाप बोहरेटारके रहथि। पं. उपाध्यायके शब्दमे- “हमर जन्म कर्म, पठन-पाठन आदि सारा चिज नेपाल-तराई मिथिलामे भेल आ गामघर विद्यालय समेतक वाल सखा एवं गुरुवर्ग मैथिलसभके सम्पर्क आ हिनकर विवाह आदिमे संमिलित भऽ कोकिलकंठी मैथिल रमणीक मनमुग्धकारी विद्यापतिक गीति पदसभ सुनैत रहबाक सुऔसर पाबि मैथिलीके किछु ज्ञान भेल।” (पु-द)।

किछु अनुवाद-

पं. उपाध्याय सभा-समारोहमे सुनओने गीतसभमे एकटा समान गीत रहैत छल-

नन्दक नन्दन कदम्वक तरु पर,
धिरे धिरे मुरलि बजाब,
समय संकेत-निकेतन बइसल
बेरि-बेरि बोलि पठाब ॥ २ ॥
सामरि तोरा लागि
अनुखन बिकल मुरारी ॥ ३ ॥
जमुनाक तीर उपबन उदबेगल,
फिरि फिरि ततहि निहारि
गोरस बेचए अबइत जाइत,
जानि जानि पुछ बनमारि ॥ ५ ॥
तोहे मतिमान, सुमति मधुसुदन
वचन सुनह किछु मोरा,
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति

बन्दह नन्द किसोरा ॥ ७ ॥
नेपाली अनुवाद
नन्दका नन्दन कदम्वको रुख मनि
मन्द मन्द मुरली बजाँउछन्
समय- संकेत- निकेतन बसिकन
घरि-घरि डाकि पठाउँछन् ॥ २ ॥
श्यामा तिम्रा लागि
छिन-छिन विकल मुरारी ॥ ३ ॥
यमुना-तीर-उपवन बिच व्याकुल,
घरि -घरि त्यतै नियाली,
गोरस बेच्न आउने जाने प्रति
स्त्रीसित सोध्छन वनमाली ॥ ५ ॥
तिमि बुद्धिमानि सुमति मधुसूदन
वचन केहि मेरो सुन ।
भन्छ विद्यापति सुन वर-तरुनी
दोग नन्द-नन्दनकन ॥ ७ ॥

महाकवि विद्यापतिके अत्यन्त लोकप्रिय पदसभके अनुवाद कऽ प्रा. कृष्ण प्रसाद उपाध्याय वास्तवमे अत्यन्त महत्वपूर्ण काज कएने छथि । एहिसँ नेपाली आ मैथिली भाषाके बीच सुमधुर सम्बन्ध स्थापित हएबाके सँगहि साहित्यमे सेहो एक-दोसर भाषा-साहित्य प्रतिके अपनत्वभावके विकास हएत एहिमे दू मत नहि भ सकैछ । नेपाल प्रज्ञा- प्रतिष्ठान एहि अनुवाद कृतिके संरक्षण-सम्वर्द्धन करबालेल सेहो नया संस्करण बहुरंगी कलेवरमे प्रकाशित कएलासं निक हएत से हमर विचार अछि । एहिसं एकर पाठक वर्गमे बृद्धि हएत संगहि जिज्ञाशु वर्गके सन्तुष्टि सेहो प्रदान करत ।



कवीश्वरक रचनामे देश दशाक वर्णन

कवीश्वर चन्दा झा मैथिली साहित्यक ओहि फाँटक कवि मानल जाइत छथि जे समस्त मैथिली साहित्यमे नव युगक सूत्रपात कएने छलाह । यद्यपि हुनका युगसन्धि पर ठाढ कवि कहल जाइत छनि, मुदा यथार्थ ई अछि जे हुनक बहुतो रचनाकेँ जँ गम्भीरतापूर्वक देखल जाए तँ तत्कालीन सामाजिक परिवेशके अपन रचनामे कोनो ने कोनो रुपमे प्रगतिशील रुपैँ अवश्य अगाड़ी रखने छथि । नवीनताक प्रति आग्रही ओ बेसी बुझि पड़ैत छथि ।

कवीश्वर चन्दा झाक समयकेँ ध्यानमे राखल जाए तँ ओ अङरेजी शासनक सुदृढीकरणक समय रहैक । भारतहि नहि, भारतक बाहरो ओकर प्रभाव बढल जा रहल छलैक । सामाजिक अवस्थामे सभ तरहक विडम्वनापूर्ण विधि व्यवहार प्रचलित छल । अङरेजी शिक्षाक बोलबाला छलैक । मुदा पण्डित वर्गक बीच संस्कृत तखनो समादृत भाषा छल ।

मिथिला सनातनधर्मी छल । एकर अपन सामाजिक गणित विकसित होइत छल । मुदा ब्रह्म समाज आ आर्य समाजक प्रभावसँ अपनाकेँ अलग नहि राखि सकल छल । समाजमे सुधारक हेतु गतिविधि बढल गेल ॥ १८८० ई.सं. १९३० धरि एही सुधारवादी भावनाक अभिव्यक्ति मैथिली काव्यमे स्फुट ओ अविच्छिन्न रुपैँ भेल । चन्दा झा एहि प्रवृतिके सर्वप्रथम ग्रहण कएल एवं अपन रचनामे समाजक चित्रण कएल (प्रो. आनन्द मिश्र, मैथिली साहित्यक रुपरेखा, पृ. ६८) ।

महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह चन्दा झाक मुख्य संरक्षक भेलाह । राजदरवारमे रहिओ कए तत्कालीन सामाजिक जीवनक जेहन गहन अध्ययन ओ कएने छथि, से यर्थाथ अछि । स्वयं अपन जन्म स्थानके छोड़ि ओ अन्धराठाढीमे रहबालेल विवश भेल छलाह । एहिसँ हुनक संवेदनशीलता आ जीवनक बहुत कटु मधु अनभवक विराटताक परिचय भेटैत अछि । एहि अनुभवक प्रभावक अभिव्यक्ति कवीश्वरक रचनामे सुलभ अछि ।

मिथिलाक महान अकाल आ ओकर प्रभावैँ काहि कटैत लोकक हृदयविदारक चित्र कवीश्वर कएने छथि । ओ दुर्भिक्षक समयक समाजक एहि दारुण दृश्यकेँ कोना सहेजलनि अछि, से देखल जाए-

अस्त्र शस्त्र रोक आब मामिलाक मारि
भाई भाईकेँ पढैछ, नित्य नित्य गारि
आ

भदइ सुखालय धान दहाय गरिब किसान की करत उपाय
कोना दिन काटत जिउत की खाय, बाल बच्चा मिलि करु हाय हाय ।

समसामयिक देश दशाक एहि तरहक वर्णनसँ रचनाकार प्रभावित भेलाह । ओहन रचना आग्रहपूर्वक स्वीकार कएलक आ ओकर प्रभाव मैथिली भाषामे रचना कएनिहार सभ पर पड़ल ओ उत्साहित भेलाह ।

चन्दा झा कतेको प्रकारक रचना कएल जाहिमे धार्मिक भाव प्रकट भेल अछि । धार्मिक रचनामे मिथिला भाषा रामायणक सँग स्फुट पदमे कतेको देवी देवता विषयक पद सभ अछि । दूनु तरहक रचनामे देश दशाक वर्णन स्वाभाविक अछि । तत्कालीन समाजक जे रुप क्रमशः विडम्वनापूर्ण होइत जा रहल छल तकरा प्रति रोष व्यक्त करैत ओ उद्बोधन करैत कहैत छथि जे अपन इतिहास देखू, अपन उत्कर्षसँ प्रेरणा ग्रहण कए पुनः प्राप्तिक हेतु प्रयत्नशील होइत जाउ (की अहाँ छलौं भेलौं से सोचिकै लजाउ) ।

मिथिलाक तत्कालीन समाजमे कोर्ट कचहरी खूब चलैत छल । गाम गामसँ मोकदमा मामिला ओहि ठाम जाइत छलैक आ लोक पेराइत छल । मुदा ओहि कोर्ट कचहरीमे सभकेँ न्याय नहि भेटैत छलैक । अन्यायक प्रबलता सर्वत्र व्याप्त छल । कवीश्वर चन्दा झा सम्भवतः एहि व्यथाकेँ नीक जकाँ अनुभव कएने छथि आ ओहि व्यथाके स्वर देल-

न्याक भवन कचहरी नाम ।
सभ अन्याय भरल तेहिठाम ।

कवीश्वर चन्दा झा अपन रचना सभमे जाहि तरहे तत्कालीन देशक दशा आ समाजक बहुरुपिआ चरित्रकेँ समधानि कए रखलनि अछि जे समाजिक रुढिकेँ तोड़ैत नवीन पथक निर्माणक हेतु वातावरण बनौलक । ओ सामाजिक विषमताक निवारण लेल ईश्वरसँ निहोरा करैत छथि जे निर्धन होएब बड़ पैघ दण्ड थिक । अपराधे धनमदमे मातल लोक गंजन करैत अछि ।

निरधनपन बड़ दोष
शिव विनु अपराध धनिक कर गंजन
दुस्सह हुनक रोष ।

एहिसँ जे साधु अछि, आनक प्रति अनादरक भाव नहि रखैत अछि, तकरो अपराधीक कोटिमे बलात आनि उपहासक पात्र बना कए प्रताड़ित कएल जाइत अछि ।

भारत दशा एहन वितयति अछि साधु कहाबथि चोर
उत्तम अधम अधम गति, उत्तम एहन काल अछि घोर ।

कवीश्वरक प्रसंग डा. दुर्गानाथ झा श्रीशक मन्तव्य सटीक अछि जे चन्दा झा अपन भक्ति भावटाक वर्णन नहि करैत छथि, केवल अपन वैयक्तिक भक्ति निवेदनेटा नहि करैत छथि, प्रत्युत समाजक अधोगतिक वर्णन आत्मानुभूतिक रुपमे करैत छथि ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१ मैथिली साहित्यक इतिहास : डा. दुर्गानाथ झा श्रीश । भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा ।

२ चन्द्र रचनावली : डा. विश्वेश्वर मिश्र, मैथिली अकादमी, पटना ।

३ मैथिली साहित्यक रुप रेखा, चेतना समिति, पटना ।

४ महाकाव्य यात्रामे युगीन सन्दर्भ : सम्पादक : डा. वासुकीनाथ झा, चेतना समिति ॥

५ चन्दा झा : जयदेव मिश्र, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।

६ चन्द्र पदावली : राज पण्डित बलदेव मिश्र, १९३१ ई. । दरभंगा राजप्रेस ।

७ शयामनन्द सहाय व्याख्यानमाला : ज्यौ. पं. बलदेव मिश्र, अ.भा.मै. लेखक सम्मेलन, दरभंगा ।



बघचौरा गामक विभूति : तिलक सिंह

पृष्टभूमि

धनुषा जिल्ला अन्तरगत बघचौरा गा.पं. जनकपुरधामसँ उत्तर-पूर्वक कोणमे अवस्थित अछि । लगभग ४५०० जनसंख्याबाला एहिगाममे सरदर १० प्रतिशत साक्षर हयबाक अनुमान अछि। दू गोट विद्यालय पंचायतमे अवस्थित अछि।

पाँच टोलक एहि पंचायतमे बघचौरा सभस पैघ गाम थिक जत पंचायत भवन अछि। एही बघचौराक नामपर एहि पंचायतक नाम पड़ल अछि।

कहल जाइछ बघचौरा गामसँ सटले एक-दू किलोमीटर उत्तर भयंकर जंगल रहैक, जत्त बाघ चितुआ रहल करैक । बाघक चरण क्षेत्रक रुपमे रहबाक कारणे एहि गामक नाम बधचौरा पड़ल ।

बघचौरा गाम कतेक पुरान अछि- एहिपर कीटानक सँग दाबा नहि कयल जा सकैछ, मुदा एकर आदिवासी 'दोनवार' सभ छलाह जे 'काला बैनजर' के बासी छलाह । ताही पीढीमे एकटा एहन पराक्रमी लोकक उदय भेल जे जीवितमे पूजा लैत छलाह-बाबा तिलक सिंह ।

बाबा तिलक सिंह

गामक बूढपुरान लोकनिकजे कथन छनि ताहिसँ तिलक सिंहक समय राणाकालीन देखि पड़ैछ। अड्डाखाना, वड़ा हाकिम, श्री ३ सरकार आदि चर्च हुनक चरित्रक अध्ययनक क्रममे अवैछ। हुनक पाँचम-छठम पुस्तक वंशधर जिवित छथि-सखुवामे । तखन निश्चय १३०-४० वर्षक भितर हुनक समयके आंकल जा सकैछ।

सखा-सन्तान

तिलक सिंहके दू गोट वालक छलनि-एहन बूढ पुरान कहैत छथि। किछु गोटे चारिगोट सन्तानक चर्च करैत छथि।

दू गोटेमे मोहन सिंह आ पहलमान सिंह आ चारिमे देवनाथ सिंह, दुलह सिंह, पहलमान सिंह आ रुपी सिंहक नाम लेल जाइत अछि। मुदा दुनूमे आयल पहलमान सिंह सभसँ बेसी चर्चित बालक रहथि।

पहलमान सिंह

तिलक सिंहक बालक पहलमान सिंह अदभूत शौर्यक लोक रहथि । नामेसँ जेना बूझना जाइछ ओ नामी पहलमान रहथि । खेतीक क्रममे चरिगोरवा हेंगापर बीछन ढोअथि, चारिसेर भुजा जलपानमे खा जाथि, माथपर बारह

पसेरीक तमधैलमे पानि भरि खेतमे लऽ जाथि-एहन लोक कहैत अछि। गाममे पसरल किवदन्ती छैक जे एकबेर लकड़ी लएबाले ई जगल गेल रहथि त बाघके जिवित पकड़ि कऽ अनने छलाह।

तिलक सिंह

खूब नमहर डीलडौल बला शरीर, भरल-पूरल देहयष्टि, मोछ-दाढी साफ, औठिया केस उन्नत कपार, सफेद धोती आ मारकीनके अचकन पहिरने रोवसँ चलनिहार व्यक्ति छलाह -तिलक सिंह।

ओना दोनवार बहुतो एखन धरि तांत्रिक भेल करैत छथि, तिलकसिंह सिद्धतांत्रिक छलाह। अपन सिद्धिक बलपर जीवितमे हुनका पूजा देल जाइत छलनि ई बात बूढ पुरान विभिन्न कथाक माध्यमसँ कहैत छथि।

एकबेर गाममे पानीक विना हाहाकार मचि गेलै। खेतपथार सुख लागल रहै-खेती कोना होइक। तखन बाबा कोहमे गेलाह ओ ओत्तसँ दुध ढारैत गामक पूर्व दऽकऽ एकटा नदी लेने अएलाह-अहरी। जे एखनो गामसँ पूर्व ताही स्थानपर बहैत अछि।

तंत्रक एतेक सिद्धि जे गाछके उड़ा दैत छलाह। कहल जाइछ तहिना एकटा हुनक उड़ाओल पीपरक गाछ उत्तीमपुर (बघचौरासँ उत्तरकऽ) लग वर्तमान अछि।

सामाजिक व्यवस्था

तिलक सिंह सामाजिक परंपराके अपना ढंगसँ आगा बढौने छलाह। गाममे नहयबाक हेतु पूर्व दिश एकटा पैघ पोखरि खना देने छलखिन्ह जे एखनो अछि। तहिना माछ घर-आंगनमे नहि घोअए तएँ पोखरिस दक्षिण एकटा छोटका डवरा जका वनवौलनि, जाहिमे गामक जनानी सभ माछके धोइत छल। ओ 'मछधोआ' कहौलक आ एखनो धरि ताही नामसँ जानल जाइत अछि।

एहि गामक तहियो मुख्य पेशा खेतिए रहैक तएँ खेत-खरिहानमे काज कैनिहारक हेतु किछु नियम बनाओल गेल रहैक।

कहल जाइछ आरिपर जे गोखुलाक काँट आ चौडगरि खाढि देखिलैथि त दण्ड दैत छलखिन्ह। तर्क रहनि खेतमे काजकएनिहार पुरुषके असुविधा होइत छल। काँटसं आ चौड़गर खाढि भेने जलखई आदि लऽ अबैत जनानीके आरि टपबामे कठिनाई होइ छलै।

कोनो जनानीके दू टा घैलमे पानि भरि लऽ जएबाक लेल भनाही रहैक। देहक कपडा-लता कोना सम्हरितै।

कतेक सम्वेदनशील छलाह ओ गामक प्रतिष्ठा आ अनुशान प्रति एहिसँ ज्ञात होइत अछि।

जीवितमे पूजा

पहिने कहल जा चुकल अछि, ओ जीवितेमे पूजा लैत छलाह अथवा लोकके दिश्वास छलनि बाबा तिलक सिंहके गोहरोने काज सिद्धि भऽ जाइत अछि।

एकबेर सारीभारी(महोत्तरी)क एकटा मुसलमान पानि नहि भेने बड़ दुखी छल। ओकरा पता लगलैक बाबाक पराक्रम। तखन ओ मनौती कएलक पानी भेने हम चढौना चढएबो। कहादन पानि भेलै। तखन ओ गरमखीर चढौलक।

बाबा तिलक सिंह तखन जलेश्वर अड्डामे कोनो काजक सन्दर्भमे गेल छलाह। ओतहि हुनक जीह पाकि गेलनि। ओ एकाएक तड़पि उठलाह। पुछल गेलनि एना किए। तखन कहलखिन्ह हमरा नामसँ चढौना चढल अछि से गरम हयबाक कारणे जीह पाकि गेल। अड्डाक सभ कर्मचारी आश्चर्य चकित भऽ गेलाह।

बाबाक शौर्यक बात खूब पसरि गेल रहनि। एकबेर बड़ा हाकिमक सँगे जलेश्वरसँ अबै छलाह। बड़ाहाकिम हिनका अपन 'गुण' देखएबाक लेल आग्रह कयलखिन्ह। तखन ओ बाटमे खूब वर्षा करौलनि, जे देखि बड़ाहाकिम दंग रहि गेलाह, एहन कथा गाममे प्रचलित अछि।

बघचौरा गाम एहि मानेमे एकटा अपूर्व गौरब गाथा अपनामे नुकौने अछि, जे तिलक सिंह सन अद्वितीय पुरुषके वास स्थानक रुपमे जानल जाइत अछि।

गामक पूर्व दिश एकटा पीपरक गाछ छै खुब भरिगर। कहल जाइछ ई गाछ तिलक सिंहक समाधिपर रोपल गेल छै। प्रत्येक वर्ष ब्रम्ह बाबाक पूजाक सँग हिनकपूजा विधिपूर्वक होइत छैक। ई सम्पूर्ण ग्रामीणक हेतु देवताक रुपमे स्वीकृत भऽ चुकल छथि। आनो काज उत्सवमे निजी वा सार्वजनिक रुपें हिनका सलामी देबाक परंपरा एखनो धरि लोक नीबाहि रहल अछि।

उपसंहार

एहि तरहे बघचौरा गाममे जीवित पूजा लेनिहार महान विभूतिक अनेको रोचक प्रसंग लोक बड़ आवेशसँ सुनाओल करैत अछि। आब गामक लोकके अर्तव्य छैक जे ओ हुनका नामसँ कोनो ठोस काज करथि जे भविष्यमे सेहो चर्चित रहैक।

हालेमे बघचौरा गामक युवक सभ एकटा भौलीवल टीमक गठन कएलक अछि जकर नाम तिलक सिंह 'टीम' रखलक अछि। तहिना तिलक सिंह पुस्तकालय स्थापना कऽ चलएबाक तैयारीमे अछि। निश्चय नयाँ पीढिद्वारा गामक प्रतिष्ठा-गौरवके सुरक्षित रखबाक प्रयास अत्यन्त सराहनीय मानल जा सकैछ। एहिसँ आन पक्षके प्रेरणा लेबाक चाही। (दू दशक पूर्व लिखल आलेख)



नेपालमे विद्यापतिक कतेको रचना उद्धारक प्रीतक्षामे अछि

एखन विद्यापतिक पद जतेक भेटल अछि आ प्रकाशित कराओल गेल अछि, तकर अधिकांश प्रमाणित प्रति नेपालसं भेटलैक अछि। ओना लोचन कवि द्वारा संकलित ५१ गोट पद हो , रामभद्रपुर सं प्राप्त ९६ गोट पद होइक। तहिना तरौणीसं तालपत्रमे प्राप्त ३५० पद होइक। सभ पदमे अपन-अपन विशेषता भऽ सकैछ। मुदा नेपालसं प्राप्त जे २८७ पद छैक तकर विश्वसनीयता आनसं बहुत बेसी मानल गेल अछि। नेपालमे प्राप्त जे किछु गीत ओहि समयमे भेटलन्हि से तत्कालीन राणा शासकसं आज्ञा लए स्व. काशी प्रसाद जयसवाल आ अ. अनन्त प्रसाद बन्धोपाध्याय फोटोकापी तैयार कऽ दरभंगा नरेशक सेवामे प्रस्तुत कएने छलाह जकर प्रति सभ पटना विश्व विद्यालयक पुस्तकालय सभमे सुरक्षित कहल गेल अछि।[1]

की-विद्यापतिक एखन धरि प्रकाशित पदावलीक पद अन्तिम अछि ? तत्कालीन नेपाल लाइब्रेरीसं फोटोकापी करा लऽ जाएल गेल गीत, पद सभ की पूर्ण अछि ? आइ अनेक प्रश्न एखनो घुमि रहलैक अछि। नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित 'विद्यापति गीतम' नामसं जे १०८ पृष्टक गीति रचना अछि तकर उद्धार भेल छैक वा नहि। बूझब जरुरी। संस्कृत भाषा, मिथिलाक्षर लिपिमे ताड़पत्रमे लिखित ओ गीत अपूर्ण अछि , किछु पृष्ट खण्डित छैक। यद्यपि ओहि अन्यकें माइक्रोफिल्म बना सर्व सुलभ कऽ देल गेल छैक, मुदा की पुरने पदपर टिकल मैथिलीक विद्वान लोकनि एकबेर ओ रीलकें धोआ पदकें नीक जकां पढ़बाक आ प्रकाशित करबाक कष्ट करताह।

एखन मिथिलाक्षेत्रमे लिखल संस्कृत भाषाक लगभग २२ सय ग्रन्थक सूची राष्ट्रिय अभिलेखालयमे छैक। एहन त १२ सयसं उपर अछि जत्त पूर्णरुपेंण मैथिली भाषाक ग्रन्थ हयबाक पूर्ण संभावना छैक।[२] विद्यापतिक भनिता वला दर्जनौं गीत एत्त एखनो बेछुअल, बेपढ़ल गेल लगैत अछि। जकर उद्धार होइक त बहुतो नव-नव तथ्य आगां आबि सकैत अछि।

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, संस्कृति विभाग (प्रभारी : रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर') क प्रयाससं राष्ट्रिय अभिलेखालयक पदाधिकारी लोकनिसं तीन-चारि चरणमे वातचति भेल छल। मुदा उक्त ग्रन्थ सभक उद्धारक हेतु तीन भाषाक लिपिक ज्ञान जरुरी छलैक-मिथिलाक्षर, नेवारी, वंगाली आ भाषाक रुपमे संस्कृत। एहन एकमे हो से भेटब दुर्लभ छैक। राष्ट्रिय अभिलेखालयमे लिपि विशेषज्ञक दरबन्दी छैक। ओत्त नेवारीक छैक (जकर ग्रन्थ संख्या थोड़ अछि)

मुदा मिथिलाक्षरक नहि छैक । लिपिक प्रशिक्षण देबाक बजेटो रहै छैक, जकर उपयोग आन पदमे होइत हयत । तएँ एखनो ओहन व्यक्तित्वक खोज भऽ रहलैक अछि जे संस्कृत आ मिथिलाक्षर संग-संग जनैत होथि आ जे काठमाण्डूमे दू सं तीन वर्षधरि बैसि सकथि । तखने सभ ग्रन्थके पढ़ि ओकर मूलकथ्य आ भाव सहित पूर्ण ग्रन्थसूची निकालल जा सकए । एहि महावपूर्ण काजमे सभ दिशसं चांखिलेब जरुरी अछि ।

राष्ट्रीय अभिलेखालयमे विद्यापतिक 'दानवाक्यावली' आ 'गोरक्षविजय' नाटकक प्राचीन पाण्डुलिपि सेहो अछि । दानवाक्यावलीक दूगोट हस्तलिखित प्रति अछि । एकमे १३८ पृष्ट अछि जाहिमे लिखबाक सम्वत् नहि छैक । दोसरमे १४६ पृष्ट छैक, ओकर लिखबाक समय ल.स. ३६८ लिखल अछि । संस्कृत भाषा आ मिथिलाक्षर लिपिमे लिखल ई पुस्तक ताड़पत्रमे अछि । गोरक्षविजय सेहो ताड़पत्रमे मिथिलाक्षर लिपिमे लिखल गेल अछि । ल.स. ४९५ मे लिखल ई नाटक ६५ पृष्टक अछि ।[३]

विद्यापतिक चर्चित अवहट्ठ कृति 'कीर्त्तिलता' आ 'कीर्तिपताका'क मूल प्रति सेहो नेपालेमे उपलब्ध छैक । कीर्त्तिलताक सभसं पहिल संस्करण वंगला भाषामे म.म. पं. हर प्रसाद शास्त्रीक सम्पादनमे सन् १९२४ मे निकलल छल ।[४] ओ नेपाल आबि १९२२ ई. मे नेपाल सरकारसं आदेश लऽ मूल ग्रन्थ वंगाल लऽ गेल छलाह । एहि ठाम तथ्यात्मक भूल दिश ध्यान आकृष्ट करब जरुरी । जहिया सन् १९२२ ई. मे जखन शास्त्री जी नेपाल आएल रहथि आ एत्तसं कीर्तिलताक प्रति लऽ गेल छलाह, ताहि सम्वन्धमे अपन सम्पादित पुस्तकमे ओ लिखने छथि- जय जग ज्ज्योतिर्मल्ल देव महाराजाधिराजक आज्ञा स दैवज्ञनारायण सिंह द्वारा नेपालमे बसल कोनो मैथिल पंडितसं नकल करा उपलव्ध करौलकनि ।[५] सांच बात त ई अछि ओहि समयमे मल्ल वंश नहि, शाहवंश रहैक जकर देखाउटी राजा छलाह पृथ्वी वीर विक्रम शाह आ श्री ३ महाराजक नाम पर राणालोकनि शासन करैत रहथि । प्रधानमंत्रीक रुपमे जे चन्द्रशमसेर छलाह, ओ लिखने छथि जे लिपि से नेवारी रहैक । मुदा एखन जे प्रति सुरक्षित अछि ओ मिथिलाक्षरमे छैक । पता नहि हुनका कोन प्रति भेटलनि आब नेवारी प्रति नहि अछि । प्रायः ओहुना राष्ट्रिय अभिलेखालयमे कोन ग्रन्थक प्रति के, कहिया उपयोग कएलक तकर कोनो विवरण उपलव्ध नहि छैक । जे थप अस्तव्यस्ता लबैत छैक । कीर्त्तिलताक हिन्दी संस्करण बाबूराम सक्सेनाक सम्पादनमे सन् १९२९ ई.मे नागरी प्रचारिणी सभासं प्रकाशित भेलैक । ओ तीनटा प्रतिक सहारा लेलनि जे विभिन्न समयमे नेपालेसं लेल गेल छल । जं कि नेपाले महक प्रति अपूर्ण अछि, सभ संस्करणमे किछुने किछु त्रुटि रहैत गेलै ।

'किर्तिपताका' कनेक बेसी त्रुटिपूर्ण हयबाक कारणें एकरा प्रकाशन करबाक प्रयास शुरुमे केओ नहि कएलनि । यद्यपि शास्त्री जी कीर्तिलता संगे एकरो पाण्डुलिपि रखने छलाह, मुदा पाठकें नीक जकां नहि पढ़ि पौने प्रकाशित नहि करौलनि । एकर एकमात्र मूल कापी राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित (?) अछि । अवहट्ठ भाषा आ मिथिलाक्षरमे ल.स. ४२६ के लिखल एकर पाण्डुलिपि ताड़पत्रक ३७ टा पृष्टमे समाहित अछि जे खण्डित अछि । शास्त्रीए जीसं प्रायः प्राप्त प्रतिकें लऽ पं.खुद्दीझा, नेपालसं प्राप्त कऽ डा.उमेश मिश्र एकरा प्रकाशित करौने छलाह ।[६]

एकरा अतिरिक्त काठमाण्डूक आशाशफु गुठीमे सेहो विद्यापतिक रचना सभ सुरक्षित अछि । मूल बात छैक ओकरा पढ़ि लिप्यांतर कऽ पाठक समक्ष लएबाक । एकरा लेल विधिवत प्रयास हयबाक चाही ।

एहि संगहि विद्यापतिक बारह वर्षक प्रवासक सन्दर्भमे सेहो मत मतान्तर सब आबि रहलैक अछि । अधिकांश लोक जनकपुर लगक बनौलीकें हुनक नेपाल प्रवासक स्थल मानैत अछि । इतिहासकार पं.शिवनन्दन ठाकुर , स्व.धीरेन्द्र, डा.प्रफुल्ल कुमार मौन, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' आदि एहि सम्वन्धमे अपन विचार पुस्तक, पत्र-पत्रिकाक माध्यमसं दऽ चुकल छथि । किछु गोटे सिराहाक बनौलीकें राजापुरादित्यक नगर राज मानैत छथि । स्व. ननोनारायण झा एकर प्रवल समर्थक छलाह । पुरातत्वविद् तारानन्द मिश्र सप्तरीक बनौलीकें उपयुक्त ठाम मानैत छथि । एहु सम्वन्धमे निश्चिय हयब जरुरी, मुदा एकरा लेल तीनू ठामक गढीके उत्खनन आवश्यक अछि । ओतुक्का भवन आदिक बनावटसं कालक समय निर्धारित भऽ सकैछ, जाहि दिश एखन धरि कोनो प्रयास नहि भेल अछि ।

अन्तमे कहल जा सकैछ- महाकवि विद्यापति, जनिक कीर्त्तिपताका नेपल, भारतसं आगां धरि फहरा चुकल अछि, नेपालक भूमिपर अपन बारहवर्षक प्रवासक अनेकों महत्वपूर्ण सन्दर्भ छोड़ि गेल छथि । जकरा बारेमे गंभीरतासं अध्ययन, अनुसन्धान हयबाक चाही । हुनक अपन हाथस लिखल श्रीमद्भागवतक प्रति नेपालेमे प्राप्त भेलैक आ ओ दरभंगाक मि.वि.वि.क पुस्तकालयमे सुरक्षित राखल गेल छल मुदा सुनैछी आब ओत्तहुसं गायब भऽ गेल अछि ।

जे से महाकवि विद्यापतिक हेतु नेपाल सरकार रू.१ करोड़क अक्षयकोष खड़ा कऽ देने छैक, जाहिसं प्रत्येक वर्ष लाखोटकाक पुरस्कार आ मैथिली कृति प्रकाशित भऽ सकैछ । मुदा तकरा विधिवत प्रारंभ नहि कएल जा सकल अछि, जे करब जरुरी अछि । (कोषक संचालन शुरु भ चुकल छैक आ आब प्रत्येक बर्ष नियमानुसार स्रष्टालोकनि पुरस्कृत भ रहल छथि -ले.)

विद्यापतिक रचनासभ

विद्यापति संस्कृत, अवहट्ठ, अप्रभंश, आदि भाषामे अपन रचना कएलनि मुदा ओ विश्वस्त छलाह जे जन साधारण जे बजैए ताहि भाषामे लिखलासं सभकें ग्राही हयतैक। कीर्त्तिलता मे लिखै छथि -

"सक्कय वाणी बुहजन भावइ
पाउंअ रस को मम्म न पावइ
देसिल बयना सब जन मिट्ठा
पें तैसन जम्पओं अवहट्ठा"

- कहब स्पष्ट छनि। संस्कृत बुधजनकें नीक लगै छनि। देसी भाषा मीठ होइछ तएँ ओकरे समान अबहट्ठ भाषामे कीर्त्तिलता लिखल।

समष्टिगत रुपें हुनक रचना अछि-

१. मणिमञ्जरी नाटिका	-	संस्कृतमे श्रृंगार रस प्रधान
२. भूपरिक्रमण	-	इतिहास, भूगोल आ साहित्यक संगम
३. कीर्त्तिलता	-	राजा कीर्त्तिसिंहक विजयगाथा
४. पुरुष परीक्षा	-	शिवसिंहक आदेश पर ४४ गोट कथाक रचना
५. गोरक्षविजय नाटक	-	संस्कृत, प्राकृत ओ मैथिलीमे
६. कीर्त्तिपताका	-	अवहट्ठमे प्रशस्ति काव्य।
७. लिखनावली	-	राजबनौलीमे रचित
८. शैव सर्वस्वसार	-	शिवपूजा विषयक
९. गंगावाक्यावली	-	विश्वासदेवीक आज्ञासं रचित
१०. विभागसागर	-	नरसिंहक आज्ञासं लिखित
११. दानवाक्यावली	-	धीरमतीक संरक्षणमे लिखित
१२. दुर्गाभक्ति तरंगिनी	-	धीरसिंहक आज्ञासं लिखित

दूगोट आर रचना 'गया पत्तलक' आ 'वर्षकृत्य' हुनक नामसं जोड़ल जाइत अछि। आ श्रीमद्भागवत्क उतारक वात त पूर्वमे आबि गेल अछि।

सन्दर्भ सामग्री)

१. डा. शिवप्रसाद सिंह : विद्यापति । लोक भारती प्रकाशन, इलाहावाद-१, २००४ ई., पृ-६६
२. राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित मूल ग्रन्थ आ माइक्रो फिल्मकसूची : २०६६ । नेपाल सरकार, संघीय मामिला, सम्विधान सभा,
३. स्रोत : राष्ट्रिय अभिलेखालयक ग्रन्थसूची २०६६ ।
४. डा.शिवप्रसाद सिंह : विद्यापति । लोकभारती प्रकाशन, इलाहवाद । २००४ । पृ.२२५
५. हर प्रसाद शास्त्री : कीर्त्तिलता, वंगला संस्करण, १९२४ । डा. शिव प्र. सिंह : कीर्त्तिलता और अवहट्ठ भाषा । हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी । १९५५ ई.। पृ-२१
६. विद्यापति : कीर्त्तिपताका । सं.डा.शैलेन्द्र मोहन झा प्र. साहित्य अकादमी, १९९९ ई.। पृ-१२,१३



भानुभक्तिय रामायण एवं महाकवि लालदासक रामायणमे सीताचरित

पृष्टभूमि

रामकथाक आदिश्रोत महर्षि बाल्मीकि रचित रामायणकेँ कहल जाइत अछि। ओ एहु दुआरे जे श्रीरामक समकालीन हुनका कहल जाइत छन्हि । जाहिसँ ओ तत्कालीन सामाजिक गतिविधि, राज परिवारक कार्यविधीसभ पर नजरि राखि पौने रहथि । तएँ किछु देखल, किछु सुनल, प्रसंगक स्वयं साक्षी रहलाक कारणें ओ सम्पूर्ण घटनाचक्रक साक्षी रहलाह । ताहु कारणे बाल्मीकि रामायणकेँ सभसँ बेसी प्रमाणिक मानल जाइत अछि।

यद्यपि बाल्मीकि रामकेँ मर्यादा पुरुषोत्तमकेँ रुपमे चित्रित कएने छथि आ सीताकेँ पतिब्रता आदर्श नारीक रुपमे । तथापि एहि रामायणकेँ कथासं रामकथा प्रवर्द्धकसभकेँ आधार भेटलनि आ ओसभ एकर मूल आधारकेँ राखि अपना अनुसार अध्यात्मिक पुट दैत रहलाह । अध्यात्म रामायण तकराबाद एही अवधारणाक संग लोकजीह्वापर आएल जाहिमे राम आ सीताकेँ भगवान विष्णु एवं देवी लक्ष्मीक रुपमे प्रतिष्ठापित कएल गेल छल । वास्तवमे इएह रामायण अछि जे राम कथाकें व्यापक आधार आ विस्तार प्रस्तुत करैत अछि।

हमरा सभक बीचमे धर्म, संस्कृतिकेँ चिन्हएबाक हेतु परापूर्वसँ वैदिकमे सभसँ पहिल अछि ऋगवेद आ लौकिककमे प्राचीन आ पहिल अछि बाल्मीकिय रामायण । इएह रामायण मर्यादा पुरुषोत्तम महानायक रामक सँग महानायिका जगत जननी सीताकेँ अभूतपूर्व चित्रण कएने छथि । तकर अत्यन्त मार्मिक चित्रण अपन ग्रन्थमे बाल्मीकि कएने छथि।

तथापि बाल्मीकि रामायणक मूल कथा तत्वकेँ सभ रामायणकार अपन रचनामे अवश्य समेटने छथि जे राम वा सीता चरित्रक उत्कर्षकेँ प्रदर्शित करैत अछि। एत्त एकटा प्रसंग राखऽ चाहब - राम वनगमन कालक। जखन राम सभसँ अनुमति लऽ पत्नि सीता लग अबैत छथि आ हुनका घरेमे रहि सभकेँ सेवा करबाक बात कहैत छथिन्ह तँ सीता हुनका ब्यथित भ कहैत छथिन्ह से देखल जाए बाल्मीकि रामायणसँ -

' न पिता नात्मजोवात्मा न माता न सखीजनः।
इह प्रेत्य च नारीणां पतिरेको गतिः सदा॥
यदि त्वं पास्थितो दुर्ग वनमधैव राघव।
अग्रतस्ते गमिष्यामि मृद्वन्ती कुशकपटकान्॥'

(वाल्मिकीय रामायण : अनुवादक -डा. रामचन्द्र वर्मा शास्त्री, पृ. ७७)

कोनो स्त्रीक हेतु लोक आ परलोकमे एक मात्र पतिकेँ अनुसरणकेँ मात्र उत्तम कहल गेल अछि। पतिए पत्निक एक मात्र आश्रय छथि। पतिक आगाँ स्त्री माता-पिता, पुत्र-पुत्री, सखा-मित्र , एतेक धरि जे अपन शरीरकेँ कोनो गिनती नहि। जँ आइ अहाँ वनकेँ प्रस्थान कऽ रहल छी तँ हमरो अपना संग लऽ चलु। हम अहाँक आगाँ चलैत अहाँक बाटक काँटसभकेँ साफ करैत चलब। हमरा एहि विचारपर नहि तँ क्रोध करबाक जरुरति अछि आ ने तँ हमरा स्त्री होएबा पर चिंतित होएबाक जरुरति अछि। हमरा कोन परिस्थितिमे कोन तरहसँ निर्वाह करबाक अछि, परिस्थितिक अनुरुप हमरा स्वयंकेँ ढालवाक हमर माय बाबू नीक प्रशिक्षण देने छथि।

आदर्श पत्नि, आदर्श पुत्री आ आदर्श गृहणीक रुपमे जनक नन्दिनीक एहिसँ नीक अभिव्यक्तिक उपस्थापन दुर्लभ अछि।

एहि प्रसंगकेँ आध्यात्म रामायणमे एहि तरहेँ उल्लेख भेल अछि -

'अतस्त्वाया गमिष्यामि सर्वथा त्वत्सह्यायिनी ॥७८॥

यदि गच्छासि माँ त्यक्त्वा प्राणांस्त्यदयामि ते ऽग्रत।

(अध्यात्म रामायण, ७८१/२ ॥)

हम अहाँक सहायिका भऽ कऽ अवश्य अहाँक संग (वनमे) चलब। जँ अहाँ हमरा छोड़ि कऽ चल गेलहुँ तँ हम एखने अहींक आगाँ अपन प्राण त्याग कऽ लेब।

सतीत्व आ पतिब्रताक ई आदर्श आ अनुकरणीय चरित्र सीताक ककरो द्रवित कऽ सकैछ। रामकें तँ सहजहि। ओ तखन हुनका बन चलबाले कहैत छथिन्ह।

नेपाल भारतमे जन साधारणक बीच अत्यन्त लोकप्रिय तुलसीदास (जन्म १५५४ई) कृत रामचरित मानस (१५७४ई-१५७६ई) राम आ सीताक अलौकिक चरित्र चित्रणसँ भरल अछि। विष्णु आ लक्ष्मीक रुपमे चित्रित करितो कतोक प्रसंगमे हुनका पूर्ण मानवीय चरित्रक संग आदर्श पति -पत्नि ओ समाजिक सम्बन्धकेँ निर्वाह करैत देखौने छथि।

रामबनगमन कालक ताहि प्रसंगकेँ विस्तृत रुपें रामायणमे उल्लेख अछि।

तकरे एकटा क्षणिका एत देखू- 'मै पुनि समुझि दीखि मन माही।

पिय वियोग सम दुखु जग नाही॥

तुम्ह विनु रघुकुल कुमुद किछु सुरसर नर समान॥६४॥

(अध्योध्याकाण्ड, पृ ३७४)

-' जिय बिनु देह नही बिनु बारी।

तैसिअ नाथ पुरष विनु नारी॥४॥

(अयोध्या काण्ड , पृ ३७८)

२ रामचरित मानस। टीकाकार-विद्यारत्न पं. ज्वाला प्रसाद, प्रकाश पब्लिकेशन्स- दिल्ली।

जहाँ धरि भानुभक्तक रामायणक प्रसंग छैक कथानक भले आनो रामायणसँ लेल गेल हो, तकरा बरु नितान्त संक्षेपमे प्रस्तुत कएने छथि भानुभक्त। सीता चरितकेँ विस्तार ओ तएँ नहि कऽ सकलाह। रामायण लिखबाक एकटा कोनो उद्देश्य तँ हएबाके चाही। से ओ महज तत्कालीन नेपाली समाजमे जकर जरुरति रहैक - रामकथाक सहज पाठ बला ग्रन्थकेँ, तकर ओ रामायण लिखि पुरा कयलनि। तएँ एहिमे सीता चरितकेँ दोसरो माध्यमसँ स्पष्ट करबाक कय बेर प्रयास कएल गेल अछि। जेना सीताकेँ बनबासक बाद जखन पुत्र लव कुश दरवारमे आबि रामकथा सुनवैछ तँ ओकर परिचय जानि राम सीतासँ भेटऽ लेल इच्छा व्यक्त करैत छथि मुदा पुनः परीक्षाक बाद। तखन महर्षि बाल्मीकि हुनका चरितक पवित्रताकेँ स्पष्ट करैत कहैत छथिन्ह -

'जनक सुता छथि निष्कलंक बड पतिव्रता आ धर्मपरायण।
अपन सतीत्वक दिव्य परीक्षा देबए अएलीह जनकलली।
ई विशुद्ध निर्मल पावन छथि अति निर्दोष, हे महावली॥

(अनुवाद -बदरीनारायण वर्मा- प्र. नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान,श्लोकः१८६ पृ. २११)

जहाँ धरि मैथिलीमे लिखल गेल रामायण सभक बीच लाल दासक रचल 'रमेश्वर चरित रामायण'क प्रसंग अछि ओत्तहु महाकाव्यकार एहने मार्मिक स्थितिक सृजन करैत सीता चरित्रक उत्कर्षकेँ प्रदर्शित करैत छथि -

' भेलहुँ अहाँ वनवासी नाथ। हम बनवासिनि लय चलु साथ॥
त्रैलोक्यक सुख हमरा छार। सतीधर्म बुझयित छी सार॥
अपनेकाँ संसारक भार। हमर भार अछि सदा सम्भार॥
पति संग सुख वन वर्ष हजार। पति विनु स्वर्गक सुख दुख भार॥
पति सेवा -ब्रत हमरा नाथ। से जनु विफल करु रघुनाथ॥
ई कहि सीता धय भरि अंग। लगली कानय विरह -तरंग॥

(रमेश्वर चरित मिथिला रामायण : अयोध्या काण्ड, पृ ११६)

नेपालमे भानुभक्त आचार्य (वि.सं. १८७१-१९२५) अध्यात्म रामायणक आधारपर 'रामायण'क रचना कएलनि। एकर विस्तृत बादमे , एत्त ओ रामवन गमन कालक सीताक सन्दर्भमे व्यक्त विचार प्रस्तुत करऽ चाहब। वास्तवमे ई अत्यन्त संक्षेपमे अछि। यथा-

'यसता बात प्रभुका सुनी कन तहाँ सीताजी मूर्छा परिन।
पैल्हे ज्योतिषिको कुरो सब कही छोड्दीन सेवा भनीन्॥
सीताका यती बात् सुन्या र खुसि भै साथै सिताजी लिया।

ब्राह्मण खुसी सदा रहुन भनि तहाँ दौलत बहुतै दिया ॥ ४० ॥

(भानुभक्त रामायण, श्री अयोध्या काण्ड, पृ ३१)

एतेक बात प्रभु (राम)क सूनि ततहि सीताजी मुर्छित भऽ गेलीह । पहिने (पूर्वमे) जोतिषीक कहल बातकेँ स्मरण करैत कतहु सेवा करब हम नहि छोड़ब से कहलनि । सीताक एतेक बात सूनि खुशी भऽ सीताजीकेँ लऽ लेलनि आ ब्राह्मण सदैव प्रशन्न रहथु से मानि प्रशस्त धन दानमे देलनि ।

आदिकवि बाल्मीकिद्वारा रचित रामायणक बाद वेदव्यास द्वारा रचित अध्यात्म रामायण दोसर बहुचर्चित रामायण रहल अछि । रामकथाक प्रसिद्ध व्याख्याकार पंडित रामकिंकर उपाध्यायक कथन अनुसार विभिन्न भाषासभमे तीन सयसँ उपर रामायण दुनियाँ भरिमे प्रचलित अछि । फादर कामिल बुल्के अपन शोध ग्रन्थ 'रामकथा उत्पत्ती और विकास'मे रामायण अथवा रामकथाकेँ एक हजारसँ उपर विभिन्न रुपक उल्लेख कएने छथि । नेपाल-भारत आ बाहिरी दुनियाँमे सेहो रामकेँ चरितनायक बना लिखल गेल महाकाव्य, कथा, नाटक चंपू ग्रन्थक प्रशस्त उपलब्धता अछि । एशियाई देशमे लोक आ संस्कृति दुनूपर रामायणक प्रभाव प्रत्यक्ष अछि ।

रामायण लेखन परम्परामे सर्वसुलभ विश्वव्यापी प्रसिद्धी पौने गोस्वामी तुलसीदासकृत रामचरित मानसमे मानसकार भले किछु अतिरेके सही लिखने छथि- सात करोडसँ उपर एकर रुप अछि ।

रामायण परम्पराक बात करी तँ महाभारत (महर्षिवेदव्यास)मे सेहो चारि स्थल रामोपाख्यान, आरण्यक पर्व, द्रोण पर्व एवं शान्ति पर्वमे वर्णित अछि राम प्रसंग । बौद्ध परम्परामे राम सम्बन्धित दशरथ जातक, अनामक जातक तथा दशरथ कथानक नामक तीन जातक कथा उपलब्ध अछि ।

विभिन्न श्रोतक बात मानी तँ हिन्दी, मराठी, तेलगु, बंगला आ उड़िया भाषामे करिब सत्तरि रामायण उपलब्ध अछि । रामक उल्लेख ऋगवेद (१०-३-३) मे सेहो भेल अछि । वैदिक साहित्यमे इक्ष्वाकु (अथर्ववेद १९-३९-९) दशरथ (ऋगवेद १-१२६-४) कैकेय (शतपथ ब्राह्मण १०-६-१-२) तथा जनक (शतपथ ब्राह्मण) आदि रामकथाक अनेकहु पात्रसभक चर्च अछि ।

नेपाली भाषामे भानुभक्तक रामायण सभसँ प्रचलित रामायण अछि जे यद्यपि अध्यात्म रामायणपर मुख्य रुपें आधारित रहितो कतेको प्रसंग बाल्मिकी रामायणसँ मिलैत- जुलैत राखल गेल अछि ।

भानुभक्त सँ पूर्वो किछु कवि भेलाह जे रामायणक कथापर रचना कएलनि मुदा ओसभ भाषाक हिसावें स्वीकार्य नहि भऽ सकल । परवर्तीमे यदुनाथ पोखरेल रामायण लिखलनि मुदा तकर सुन्दरकाण्ड मात्र प्राप्त कएल जा

सकल। एहि तरहे नेपाली समाजमे ई एक मात्र स्वीकृत आ पठित रामायणक रचयिता रहलाह अछि।

मिथिलामे राम कथाक प्रसारक विन्दुकेँ खोजी तँ ज्योतिरीश्वर ठाकुर (१२८०-१३४०) क वर्णरत्नाकरमे आएल रामायणक काण्ड विभाजन सहितक उल्लेख सँ किछु सूत्र भेटैत अछि। पन्द्रहम शताब्दीमे 'कृष्णकाव्यक प्रणेता' विद्यापति एकटा सुन्दर पदमे जानकी जीक वर्णन कएने छथि -

'हे नरनाह सतत भजु ताहि। जाहि नहि जननी जनक नहि जाही॥

नेपालमे गीत नादक संग नाटक सभ प्रचुर मात्रामे पाओल गेल अछि जे मध्यकालमे मल्लराजा लोकनिक संरक्षणमे रामायण नामसँ लिखल ओ मंचन कएल गेल।

उन्नैसम शताब्दीक प्रारम्भमे चन्दा झा (१८३०-१९०७ई) मिथिला भाषा रामायणक रचना कऽ नविन परम्पराक सूत्रपात कएलनि। रामकथाकेँ आमजनधरि सहज रुपें पहुँचाबयमे एहिसँ प्रशस्त सहयोग भेटलैक।तखन आएल लाल दास (१८५६-१९२०ई) क रमेश्वर चरित मिथिला रामायण। मिथिलाक माटि पानिक सुगन्धिसँ भरल ई रामायण सीता चरित्रकेँ उत्कर्ष धरि पहुँचाबयमे नीक सहायक बनल। तकराबाद रामलोचन शरणद्वारा तुलसीदास कृत रामचरित मानसक अविकल अनुवाद आएल-मैथिली रामचरित मानस। ओना महाकाव्य, खण्डकाव्य, लघुकाव्य, नाटक रुपें प्रशस्त रचना मैथिलीमे भेल अछि।

नेपालमे कोनो कविद्वारा पूर्ण रामायणक रचना प्रकाशित नहि भऽ सकल अछि। खण्डकाव्यक रुपमे पं. रमाकान्त झा (सम्बत १९६४-२०२८)क व्यथा अवश्य रामायणक विसरल पात्र उर्मीला, माण्डवीकेँ आधार बना सीता वनगमनपर लिखल गेल महत्वपूर्ण रचना अछि। ओना महेन्द्र नारायण दत्त रामायणक सातो काण्ड लिखने छलाह, मिथिला काण्ड फूटसं लिखलनि, लक्ष्मण शास्त्री सहो पूर्ण रामायण लिखलनि मुदा ओसभ प्रकाशित नहि भऽ सकल अछि।

तखन एहि कमिक पूर्ति करैत अछि श्री बदरीनारायण बर्माद्वारा अनुदित भानुभक्तक रामायणक मैथिली स्वरुप। अक्षरशः कयल ई रामायण एखनो लोक पढैत अछि।

भानुभक्तक रामायण

भानुभक्तक (१८१४-१८६८ई) पारिवारिक पृष्टभूमि एकटा गृहस्थक छलनि। ने ओ समर्पित साधु सन्त रहथि आ ने कोनो प्रवचनकर्ता धर्म गुरु सएह। एकटा धार्मिक वृतिक रससिद्ध व्यक्तित्व छलाह जे सांसारिकताक निर्वाह

करितो मोनमे भाव रसक निरन्तर प्रवाहमान धाराकेँ संजोगने रहैत छलाह । ई धारा फुटल तखन जखन ओ एक दिन एकटा घसवाहकेँ अपन कीर्त्ति अक्षुण्ण रखबाक हेतु एकटा इनार (कुआँ) खनबैत देखलनि । लगलनि -हमरा तँ धनवित्त सेहो अछि । पढल लिखल छी । मात्र सांसारिक उहापोहमे फँसल रहने उपलब्धि की ? ई घसबाह तं किछु नहि रहितो कीर्त्तिक लेल ईनार खना रहल अछि । आ तखन ओ रामायण लिखबाक मन बनौलनि ।

माध्यमिक कालक ओ समय जखन भानुभक्तक जन्म भेल रहैक, नेपाली भाषाक कोनो स्वरुप नहि रहैक । साधुक्करी भाषाक बोलबाला रहैक । सुवानन्द दास, उन्दिरस, विद्यारथ केसरी, वीरशाली, यदुनाथ आदि कवि लोकनि रचना तँ करथि मुदा संस्कृत, उर्दु, फारसी, हिन्दी आदिक प्रवलता रहैक ।

भानुभक्त सर्वप्रथम सन् १८४१ ई मे बाल काण्ड लिखलनि । तकराबाद किछु वर्ष घर व्यवहारमे रमल रहलाह । एहि बीच सरकारी नोकरीयो कयलनि । दुई वर्ष बितल छलन्हि कि कोनो झंझटिक क्रममे हिनका कुमारी चोकद्वारा पकड़ि जेलमे कोंचि देलकन्हि (१८५२ई) । ई दोसर बात भेलै जे हिनक जेल यात्रा नेपाली साहित्यक भाग्य खोलि देलक । घरसँ दूर रहने शांत भऽ जेलमे अयोध्याय काण्डसँ सुन्दरकाण्डधरि रामायणकेँ पुरा कयलनि । रामायणक बाँकी भाग ओ १८५३ ई मे लिखलनि । लगभग १२ वर्षधरि एकरा पुरा होबयमे लागि गेल छलैक । मुदा जखन रामायण तैयार भेलेक नेपाली भाषा-साहित्यमे तहलका मचि गेलै । पहिल बेर नेपाली भाषाक स्वरुप, पाठक बीच आएल । मुदा हुनक आनो कृतिक बेसी प्रचार प्रसार नहि भऽ सकल । हुनक स्वर्गारोहणक २२ वर्ष बाद मोतीराम भट्ट हिनक समस्त रचनाकेँ उद्धार कएलकनि आ तखन ई विशिष्ट कविक रुपमे जानल जाए लगलाह । नेपाली साहित्य जगत हिनका आदिकविक रुपमे सम्मानित करैत आबि रहल अछि ।

भानुभक्त रचनाक सूचि एहि तरहे देल जा सकैछ -

क. १८३६ ई. - पहिल दू कविता

ख. १८४१ ई. - बाल काण्ड (रामायण)

ग. १८४९ ई. - बालाजी तथा कान्तिपुरी कविता

घ. १८५२ ई. - अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड तथा सुन्दर काण्ड

ङ. १८५३ई. - युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड, प्रश्नोत्तर एवं भक्तमाला

च. १८६२ई. - बधू शिक्षा

छ. १८६९ई. - रामगीता

भानुभक्तक रामायण पर बाल्मीकीय रामायणक आंशिक प्रभाव रहितो ई बेद व्यास कृत अध्यात्म रामायणमे आधारित भऽ पूर्विय महाकाव्य चिन्तन अनुरुप रचना भेल अछि । एहि महाकाव्यमे सर्गबन्ध आ मंगलाचरण नहि अछि । सर्गक ठाममे काण्ड राखल गेल अछि आ पुरान कथावाचक जकाँ सोझे रामकथाक आरम्भ कऽ अन्त कऽ देल गेल अछि । एहि रामायणमे भानुभक्त अपन देश काल, समाजक अनुरुप रामकथामे परिवेशक प्रतिविम्बित करबा मे सफल भेलाह अछि । ४३०८ श्लोकक मूल अध्यात्म रामायणकेँ १३१९ श्लोकमे संक्षेपीकृत कऽ नेपाली जनमानसमे सहज होबबला दू गोट छन्दकेँ १५ छन्दक बदला प्रयोग कऽ एकरा सहज बनएबाक प्रयास कएने छथि ।

माध्यमिक कालमे भानुभक्तीय रामायणक लोकप्रियता देखि कऽ बहुतो परबर्ती कविलोकनि रामकथा सृजनदिस अग्रसर भेलाह । एहिमे भोजराज शर्माक आनन्द रामायण, रमाकान्त बराल (१९४९-२००१)क अद्‌भूत रामायण, रेवती रमण न्योपाने (१९३३)क तुलसीकृत रामचरित मानस, प्रेमराज पौडेल (१९६०-२०२८)क रामायण (१९९६ साल दिश, अमौलिक) सन सन रामायण कथा सृजन भेल । मुदा एतेक होइतो भानुभक्तक रामायण नेपालीभाषा आ प्रशस्त मौलिकता संग लिखल गेल हएबाक कारणे विशिष्ट काव्य कृतिकेँ रुपमे समादृत भेल । नेपालक पहाडी अंचलमे सर्वाधिक पढऽजाएबला रामायणक रुपमे भानुभक्तीय रामायणकेँ लेल जाइत छैक ।

भानुभक्तक रामायणमे सीता चरित

पहिने कहल जा चुकल अछि भानुभक्तक रामायण अध्यात्म रामायणक संक्षेपीकरण रुप अछि, जाहिमे अपनो सँ कयठाम आनो रामायणक प्रसंगकेँ राखल गेल अछि । अध्यात्म रामायणमे सीताक चर्च जाहि विशिष्ट शैलीमे भेल अछि, भानभक्तक रामायणमे कम अछि । संभव थिक जाहि समयक ई कृति छलैक तहिआ पहाडी क्षेत्रमे रामतत्वक प्रधानता बेसी छल हयतैक , सीताक कम अथवा रामायणक शाब्दिक अर्थ अनुसार रामेपर जोड़ देल गेल होइक । रामचरित मानसक प्रभाव सेहो भ सकैछ जाहिमे रामतत्वक प्रधानता बेसी अछि । जे से सर्व प्रथम सीताक चर्च बालकाण्डमे अवैत छैक जखन पृथ्विक दुख हरण करबाकलेल ब्रह्माजी- श्री विष्णुसँ आग्रह करैत छथिन्ह । श्री विष्णु आश्वस्त करैत बजै छथि-

माया मेरी सीता भयेर रहीनन् छोरी जनककी भइ ।
छोरो भै कन जन्मुला म दशरथ् जीका घरैमा गई ॥
सीतालाई लियेर पूर्ण गरुला विन्ती म तिम्रो भनी ।
अन्तर्धान भगवान तहीं दुनू भयो त्रैलोक्यका नाथ हरि ॥

(भानुभक्त रामायण, वालकाण्ड श्लोक ४८, साभ्का प्रकाशन, काडठमाडौं)

हमर योग मायाक रुपमे जनक वंशमे सीता अवतार लेतीह आ दशरथक घरमे हमहुँ जनम लेब। महाशक्ति सीताक संग मिलि कऽ हम सभक मनोरथ पूर्ण करब। ई कहैत प्रभु अन्तर्धान भऽ गेलाह।

सीता जन्मक कारण आ तकर वास्तविक स्वरुपक परिचय एहिसँ भऽ जाइत छैक आ सम्पूर्ण रामायणक होब बला घटनाक पूर्ण संकेत सेहो एहिसँ प्राप्त भऽ जाइछ।

अयोध्याकाण्डमे ऋषि अत्रीक आश्रममे पहुँचलाक बाद राम सीतासँ ऋषिवर पत्निसँ भेंटबाक आग्रह करैत छथि, तखन सीता तकरा आदेश मानि कुटियामे हँसैत प्रवेश कऽ अत्रीक धर्मपत्नि लग जा कऽ विशेष प्रार्थना , अभिवादन करैत छथि। पति आज्ञाकारी आदर्श पत्निक रुपमे निरन्तर साथ देनिहारि सीताक चरित्रक ई विलक्षण रुप अछि-

'आफना नाथको हुकुम यो सुनि कन खुसि भै भीत्र सीताजीलाई।

भेटिन् वृद्धा बहुत् भै कन बसि रहन्या अत्रीकी पत्निलाई ॥१२१॥

(उएह पृ. ४५)

अरण्यकाण्डमे एकटा प्रसंग आएल अछि-जखन सीताजीकेँ राम कहैत छथि जे- सीते ! अदृश्य भइ लौ बस अग्नी माहाँ। छायाँ सीता पनि बनायर छोड याहाँ ॥६८॥

अरण्यकाण्ड पृ ५७)

अर्थात हे सीता ! अहाँ अग्निमे वास करु आ छायाँ सीता बना कऽ हमरा लग छोड़ि दीअ। तकरा बाद सीताजी सएह करैत छथि -

'यस्ता हुकुम सुनि अदृश्य सरुपधारी।

छाया सितापनि दुरुस्त गरिन तयारी॥

सिता छपीकन रहिन् जब अग्नि माहाँ।

छाया सिता संग बस्या रघुनाथ ताहाँ॥ ७०॥

(उएह, पृ -५७)

प्रभुक आज्ञा अनुसार अनमन अपने जकाँ सीताक प्रतिमूर्ति बना प्रभुकेँ समर्पित कएलनि आ स्वयं अग्निमे जा बैसि रहलीह। पतिक आदेश शिरोधार्य। अरण्यकाण्डक एकासीअम श्लोकमे रावणकेँ कोनो पहुँचल साधु जानि सीता प्रणाम पाती आ पूजा कऽ बैसबा ले आसन दैत छैक। मुदा जखन साधु बनल रावण अपन मोनक दुष्टतापूर्ण विचार व्यक्त करैत अछि तँ सीता क्रोधित भऽ ललकारि उठैत अछि-

'हे दुष्ट रावण। अवश्य तँ आज मर्लास्।
ऐले जसै प्रभुजीका अघि याहिँ पर्लास ॥८५॥

(उएह , पृष्ट ६०)

हे दुष्ट रावण ! आइ तो अवश्य मारल जएबे। आबऽ दहुन प्रभुकें।

रावण सीताकें हरि लैत अछि। तखन ऋष्टमुक गिरी उपर नभसँ जखन सिया तकलनि निचाँ तँ किछु वानर देखि पड़लनि। ई खोजैत काल प्रभुकें भेटौक से मानि अपन गहनाक पोटरी ओत्तहिसँ निचा फेकि देलनि। संकटकें समयमे धैर्य धारण करैत अपन स्वामीकें अपन स्थितिकें बारेमे अवगत हो ताहि लेल सीताक ई उपक्रम वास्तवमे वादक घटनामे अत्यन्त सहायक भेल छल।

श्री बदरी नारायण वर्माक अनुवाद देखी -

'राम लखन जँ खोजैत अओता, ई सभ देदिअह चेन्ह हमर।
से सोचि सिया खसाओलि पोटरी पड़ल बीर सुग्रीवक कर।'

(उएह, ९१, पृ७०)

सतीसीमन्तिनी सीताक चरित्रक उत्कर्ष रामायणक कतेको प्रसंगमे देखबामे अबैत अछि। यद्यपि रामायण प्रणेता वाल्मिकि राम सीताकें एकटा पुरुषोत्तम व्यक्तित्वक रुपमे स्थापित कएने छथि तथापि दुहूक व्यक्तित्वकें उच्च मूल्यांकन कऽ प्रस्तुत कएलनि। सीता हुनको लेल आदर्श नारी रहलीह सभ तरहे। परवर्ती रामायणकारलोकनि आदि रामायाण (वाल्मीकि) वा अध्यात्म रामायणसँ जे जतेक स्रोत, कथाक तानाबाना लेने होथि विचार धरि कतेको ठाम अपना अपना ढंगसँ आगाँ बढौलनि।

भानुभक्त अपन संक्षिप्त रामायणमे राम सीता कथाक जे रुपकें ग्रहण कयलनि ओ अध्यात्म रामायणसँ लग रहितो आदि वाल्मिकी रामायणक मूल कथा वा प्रसंगसँ फूट नहि अछि। जखन हुनमान लंकाकें डाहि कऽ सीता जीसँ जएबाक आज्ञा लेबाक लेल अशोक बाटिकामे अबैत अछि तँ सीता जी रामकें विना अपन वेहाल हालक चर्च करैत अपन चिन्ता व्यक्त करैत छथि। तखन हनुमान हुनका अपन कान्ह पर चढा एके बेर रामक लग लऽ जएबाक बात कहैत छथिन्ह। तखन सीता जी कहैत छथि -

'रामः सागरमाशोष्य बद्ध्वा वा शरपञ्जरैः।
आगत्य वानरैः सार्धं हत्वा रावणमाहवे ॥७॥
माँ नयैद्यदि रामस्य कीर्तिर्भवति शाश्वती।
अतो गच्छ कथं चापि प्राणान्सन्धारयाम्यहम् ॥८॥

(अध्यात्म रामायण, सुन्दरकाण्ड, पंचम सर्ग)

जँ रामचन्द्रजी समुद्रकेँ सुखा कऽ अथवा ओकरा वाणसँ बान्हि कऽ एत्त वानरसभक संग आवथि आ रावणकेँ युद्धमे मारि कऽ हमरा लऽ जाथि तँ एहि सँ हुनका अमर कीर्ति प्राप्त हएतनि । तएँ अहाँ जाउ, हम कोहुना प्राण बचौने रहब ।

एहि प्रसंगकेँ आदिकवि भानुभक्त कोना उल्लेख कएने छथि से देखी-

'सीता जी पनि भन्दछीन् म त न जाउ जाउ तिमी मात्र गै ।
विस्तार विन्ति गरेर जल्दि रघुनाथ लियेर आऊ संगै ॥
राम आइ कन दुष्टलाई सहजै मारी मलाई संगै ।
लै जानन् रघुनाथ त कीर्त्ति रहला क्या हुन्छ यै म गै ॥१३२॥

(सुन्दरकाण्ड, पृ ११३)

विचारमे फरक देखू । अध्यात्म रामायणमे रावणकेँ मारि अपनाकेँ लऽ जएबामे रामकेँ यश हयतनि से विचार सीताक आएल अछि । भानुभक्त ओकर सहज बनबैत कहलनि- अहाँ जँ एना हमरा लऽ जाएब तँ रावणकेँ मारि जे कीर्त्ति हुनक रहतनि से नहि हएत !

एहि प्रसंगकेँ विस्तारसँ लाल दास अपन रामेश्वर चरित रामायणमे उल्लेख कयनेछथि । पूर्ण भक्तिभावसँ ओत प्रोत- आ अपनाकेँ हनुमानक पीठपर नहि जएबाक कारणकेँ खोलैत । देखु ई प्रसंग-

'अहँ प्रियकर सुतसौं छी सरस । किन्तु परक तन कयल न परस
दोहा- 'सूर्य्य सदृश्य संकाश शर, लंका पर सन्धानि ।
मारि सकुल रावण तखन, ल चलथु मोहि निज आनि ॥
प्रलय अनलसन शर प्रभुक, लागितहि निशिचर लोक ।
मरत शकुल खल तकर संग, नशत हमर सभ शोक ॥

(मिथिला रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ २८८)

एहि ठाम लाल दास परपुरुष स्पर्शक बात कहि सीताकेँ हनुमान संग जएबा सँ बँचि गेल हएबाक बात मात्रे नहि कएल, ओ रावणकेँ मारि सीताकेँ लऽ गेलासँ हुनक होबबला कीर्त्तिक अतिरिक्त आर कोनो बातकेँ उल्लेख नहि कएलनि । एहि ठाम एकटा पतिब्रता नारीक आदर्श उपस्थित करैत सीताकैँ देखाओल गेल अछि । रघुनाथक हाथहि अपनाकेँ उद्धार करएबाक हुनक इच्छा विस्मय विमुग्ध करऽबला महान चरित्रोत्कर्ष , नारी हृदयक दृढता, गंभीरता आ समर्पणकेँ देखबैत अछि । ताहु दुआरे जखन मुद्रिकाक संग सीताक खोजमे हनुमानकेँ पठबैत राम सीताकेँ ई सन्देश पठबैत छथि -

'तत्व प्रेमकर मम अरु तोरा ।

जानत प्रिया एक मन मोरा ॥
सोमन रहत सदा तोहि पाहीं ।
जानु प्रीति रस इतनेहि माहीं ॥

(तुलसीकृत रामचरितमानस)

जँ कि भानुभक्तक रामायण संक्षिप्त रुपें लिखल अछि तएँ कोनो प्रसंगकेँ सूक्ति रुपें उपस्थित करैत मूल कथानकक छोरकेँ आगाँ बढबैत गेल छथि । ताहि समयक परिवेश, पठन पाठनक अवस्था, राजनीतिक उठापटक आ स्वयं भानुभक्तक पारिवारिक अस्त-व्यस्तता (झै झगडा, जेल, विवाद आदि) रामायणकेँ पूर्ण रुपें सहजतापूर्वक सम्पन्न कऽ नहि देल गेल छलैक तएँ एकरा पूर्ण करबामे बारह बर्षसं उपर लागि गेल रहए । तथापि सुन्दरकाण्डमे सीता रावण सम्वादमे सीताक चरित्रक दृढता आ पापी रावणक प्रतिक तिरस्कार भाव हिनक व्यक्तित्वकेँ आर उच्च बनबैत अछि । जखन रावण हिनका रामद्वारा उपेक्षित रखबाक बात कहि अपन पटरानी बनबाक प्रस्ताव करैछ तँ ओ तिलमिला उठैत छथि आ रावणकेँ कठोर बचन संग ललकारैत अछि -

'पाजी रावण ! बोल्दछस कति बहुत दुर्वाच्य बक बक गरी ।
राघव देखि डराइ छल्न भनि एक् सन्यासीको रुप धरी ॥
जस्तै यज्ञ विषे हवी कुकुरले हर्छन उसै चाल ले ।
राम लक्ष्मण न हुँदा हरिस् तँ बुझिले मर्लास्. यसै कालले ॥४०॥

एकरा फरिछएबा लेल एहि संग आगुओक किछु पद हम बदरी नारायण बर्माद्वारा कएल भानुभक्त रामायणक मैथिली अनुवाद सँ राखऽ चाहब । देखी-

'रे पाजी रावण ! की बक बक बाजि रहल दुर्वाच्य बचन ?
रामसँ डरि कए हरि लेलैं तौं छे महावली केहन ??
जहिना ढुक्का लागल कुकुर यज्ञक हवि लुझि लेइत अछि ।
राम लखन नहि देखि कुटीसँ चोर जकाँ हरि लएलें अछि ॥४०॥
जलधि सुखा या बान्ह बान्हि कऽ राम आबि घेरा देताह ।
तोहर कुल निर्विज्ज करैत रे दुष्ट! तोहरो प्राण हरताह ॥'

(अनुवाद, पृ. ११० प्र. नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, सं.२०५४ साल काठमाण्डू)

भानुभक्त रामायणमे एकटा आर बात महत्वपूर्ण अछि । बाल्मिकि रामायण जकाँ कखनो कखनो ओ तटस्थभावसँ राम सीताक चरित्रकेँ उपस्थित करैत छथि जखन कि ओ अध्यात्म रामायणकेँ पूर्ण आधार मानलनि अछि जे रामसीताकेँ अवतारवादक समर्थन करैत भगवान विष्णु आ माता लक्ष्मीक

स्वरुपमे चित्रित कएने अछि। सुन्दरकाण्डक हनुमान सीता सम्वादमे एकटा आदर्श मानवीय स्वपमे पतिव्रता नारी सीताक उक्ति सहजहि हुनक चरित्रकेँ अलौकिक नहि भूतलक एकटा सामान्य गृहणीक रुपमे स्थापित करैत अछि। जखन औठी दऽ दैत छथि हनुमान तखन सीताकेँ ई विश्वास भऽ जाइत छन्हि जे हनुमान रामेक दूत अछि तं ओ आग्रहेक स्वरमे हनुमानसँ कहैत छथि -

अब त तिमि हनुमान् जल्दी गै रामलाई।
भन विपति पऱ्या कि देखि हाल्यो मलाई ॥
जति गरि म उपर श्रीरामको हुन्छ माया।
तति गरि तिमिले खुप युक्तिले बिन्ति लाया ॥६८॥

(भानुभक्त रामायण, पृ १०२, सा.प्र.)

हमरापर विपत्तिक पहाड़ टुटि पड़ल तों देखि चुकल छें तएँ जल्दी जा कऽ रामकेँ कहियौन जे हमरा पर जेना खूबे माया होन्हि से युक्ति ओ करथि। ई काया हुनके लेल एखनधरि टिकल अछि।

लंका विजयक बाद जखन हनुमान सीताकेँ देखबाक लेल अशोक बाटिका जाइत छथि आ लंकाक विजय, रावणक कुल सहित संहारक बात सुनबैत छथि तँ सीता जेना रामसँ भेंटबाक हेतु अकुला उठैत छथि-

'की बक्सिस दिअ हे कपिबर ! कोना चुकाएब ई उपकार।
रत्नादिक सभ तुच्छ बुझाइछ तुलगर नहि देखल उपहार ॥'

(भानुभक्तिय रामायण (अनुवाद), पृ १७९)

अग्निकेँ सौपलि सीताकेँ प्राप्त करबाक हेतु अग्नि परीक्षाक प्रक्रिया अपनाओल गेल, यद्यपि एहि प्रसंगसँ सम्पूर्ण मिथिला मर्माहत रहलए आ सामान्यतः जनकपुर क्षेत्रमे सीतामाताक कथा प्रसंग विवाहक बाद आगाँक नहि कहल जाइत अछि। पतिव्रता, एक आदर्श नारी, कर्तव्य परायण आ पति आदेशकेँ ब्रह्मवाक्य मानवाली सीताकेँ जखन अग्नि प्रवेशक आज्ञा भेल रहैक तँ ओ तुरत अग्निकेँ साक्षी मानि अग्निमे प्रवेश कऽ गेल रहथि। एहुँ प्रसंगकेँ भानुभक्त सपाटे रुपमे सही नीक जकाँ उल्लेख कएलनि अछि -

अग्निदेव ! हमराम प्रिया छी , हुनकहि संतमे मन स्थिर।
ई जँ साँच, आँच शीतल करि , नहि हो अहाँक ताप केर पीर ॥'

(उएह, पृ १८१)

रामायणक ओ प्रसंग सभसँ मार्मिक मानल जाएत अछि जखन सीताक पाताल प्रवेश होइत अछि। अपन जीवन भरि अपन सतीत्व आ पातिव्रतक परीक्षा दैत रहनिहारि जनकनन्दिनीक दुख आ पीड़ाक ओ उत्कर्ष घड़ीक रामायणकार अपन अपन काव्य शौष्ठबक आधारपर चित्रित कएने छथि। आ

तकरा औचित्यपूर्ण सिद्ध करबाक हेतु लीला समाप्त कऽ अपन अपन लोक घूरि जएबाक एकटा माध्यमक रुपमे एकरा मानने छथि ।

महर्षि बाल्मिकीकेँ सत्य तथ्य कहलाक बादो परीक्षा देबाक स्थितिमे जानकीक भावविह्वल स्वर देखू -

जँ हम नाथ रामकेँ बाहेक आनक ध्यान मे होइ कयने ।
सत्यसिद्धी लेल हे माँ धरती । फाटि जाउ पथ दी अपने ॥ १९०॥

(उएह, पृ २३१)

लाल दास ओ हुनक रामायण

रमेश्वर चरित रामायणक रचयिता लालदास मैथिली साहित्यमे अपरिचित नाम नहि अछि । तखन रामायणक सर्वसुलभताक दृष्टिकोणसँ कविवर चन्दाझाक रामायणक अपेक्षा हिनक रामायणक उपलब्धता कम अछि । तथापि हिनक रामायण अपन विशिष्ट पक्षक हेतु बेसी चर्चित रहल अछि ।

लाल दास (१८५६ई-१९२०ई)क जन्म मधुवनी जिल्ला अन्तरगत खडौआ गामक एकटा विद्याप्रेमी कायस्थ परिवारमे भेल छलनि । हिनका शुरुएसँ अपन भाषाक प्रति अतिशय लगाव छलनि । यद्यपि ओ आनो भाषाक ज्ञाता छलाह । डा. रामदेव झा हुनका सम्बन्धमे कहने छथि- ‘कविवर लाल दास बहुभाषा विज्ञ छलाह । विभिन्न भाषाक ज्ञाता रहितो अपन मातृभाषाक प्रति असीम अनुराग, श्रद्धा ओ भक्ति छलनि, तहिना अजस्र भक्ति भावना छलनि मातृभूमि मिथिलाक प्रति ...।

डा. रामदेव झा हिनक बाइस गोट रचनाक उल्लेख कएने छथि । जाहिमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ रमेश्वर चरित मिथिला रामायण रहल अछि । एहि ग्रन्थमे डा. अमरनाथ झा बाल्मिकी रामायणक आधारपर लिखल गेल कहलनि अछि । एहि रामायणमे रामक अपेक्षा सीताक महिमा बेसी गाओल गेल अछि । हिनकापर बंगालक कालीक उपासक वंगला साहित्यकार सभक रचनाक प्रभाव पड़ल हएबाक कहल जाइत अछि । ताहुसँ हिनक रचनामे आदिशक्ति काली अर्थात मातृ शक्तिक स्पष्ट प्रभाव देखल जा सकैत ।

डा. भीमनाथ झा लिखैत छथि-स्थल-स्थलपर ई बोध होइछ जे जनिक चरितगान एत्त भऽ रहल अछि, से साक्षात विष्णु थिकाह आ हुनक पत्नी सीता साक्षात लक्ष्मी थिकीह । अपन जननीकेँ संगहि अपन मातृभाषाकेँ साक्षात् लक्ष्मीक रुपमे देखव कविक व्यापक दृष्टिक परिचायक थिक, जकरा ई रमेश्वर चरित शब्दमे ध्वनित कयने छथि । ’

लाल दासक रामायणमे मूल आधारे सीता चरित्रक महानता छैक। तएँ हुनक सात काण्डक परम्परागत अवधारणासँ चित नहि भरलनि तँ आदि शक्ति माता जानकीक चरित्रकेँ आर गुणगान, हुनक शौर्य आ शक्तिकेँ स्थापित करबाक हेतु आठ्म काण्डक रचना कयलनि-पुष्करकाण्ड । एहिमे पूर्ण रुपें सीता चरित्रक उत्कर्ष देखाओल गेल अछि।

बेलापट्टी, धनुषाक एकटा साधक रहथि- महेन्द्र नारायण दत्त, जे सात काण्ड रामायणक रचना कएने छलाह आ एकटा विशेष काण्ड जोडलनि -'मिथिला काण्ड' । दुर्भाग्य सँ ई रामायण प्रकाशित नहि भऽ सकलनि । ओहो अपन रामायण लाल दासक रामायणसँ प्रेरित भऽ लिखने छलाह जे बात आ एकटा आलेखमे लेखककेँ कहने छलखिन्ह ।

लालदासक रामायणमे सीता चरित

वाल्मिकी रामायणसँ लग रहितो रमेश्वर चरित रामायाणमे शक्ति तत्वक प्रधानता उल्लेख्य मात्रामे अछि। सम्पूर्ण रामायणे एहि गाथासँ भरल अछि। ओ प्रारम्भमे अपन अवधारणाकेँ स्पष्ट रुपें रखने छथि -

'सीता नामक अमित प्रभाव। चतुर्वर्ग फल जापक पाव।
जीवन मुक्त थिकथि जन सैह। सीता राधन तत्पर जैह॥
जिबयित भोगथि सुख संसार। अन्त महानन्दक सुख सार॥
शक्तिमान जग शक्तिक योग। शक्ति-विमुखशव सन सभ लोग॥
दोहा -मूल प्रकृति लक्ष्मी जनिक, सीता रुप प्रधान।
तनिक नाम जपि पाब नर, दुहु लोकक कल्याण॥

(रमेश्वर चरित मिथिला रामायण , सा. अ. पृ२६)

ई यथार्थ अछि कविवर लाल दास अपन रामायणक आधार वाल्मिकी रामायणकेँ बनौलनि मुदा रामायणक प्रारम्भमे मंगल शिर्षकसँ जे स्तुति गान प्रस्तुत कएने छथि ताहिसँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे ओ सीताकेँ लक्ष्मीक अवतारक रुपमे चित्रित करताह आ से सम्पूर्ण रमेश्वर रचित मिथिला रामायण भरल परल अछि । सीताक विविध रुपक, महामाया भगवती काली रुपक वा जीवनक दायिनी जगतमाता रुपक जे कथा ओ वर्णन विस्तारसँ कयलनि अछि से अपूर्व अछि, हृदयग्राही अछि।

सम्भवतः सीता प्रतिक इएह अलौकिक भावसँ ओतप्रोत कविवर लाल दासकें सात काण्डसँ मोन नहि भरलनि तँ पुष्करकाण्डक फूट रचना कयलनि। एहि काण्डमे सीताक महत्ताकेँ स्थापित करैत हुनक विराट स्वरुपक अपूर्व दर्शन करौने छथि । रावणकेँ एकटा नव रुपमे प्रस्तुत करैत रावणकेँ मानमर्दन कएनिहारि सीताकेँ रामोसँ बेसी प्रभावशाली हएबाक तथ्य प्रस्तुत कयलनि।

स्थिति एतेक आगाँ बढि गेल जे ओ स्वयं सीतासं अपन चरित्रक वैशिष्टताकेँ चर्चा करबैत छथि -

‘हमरा जानब परमा शक्ति। हमही करै छी सृष्टि विभक्ति ॥,
नाश रहित नित्या हम एक। हमरहि सौ ई जगत अनेक ॥
हमही छी परमात्मा रुप। विद्या-अविद्या हमर स्वरुप ॥
महिमा हमर परम विस्तार। बन्धनमुक्त करी संसार ॥
विधि शंकर भगवान अनन्त , पावथि हमर कओ नहि अन्त ॥

(ऐजन पृष्ट २८७)

सीता स्वयंकेँ परमाशक्ति , सृष्टिकारिणी कहैत छथि। अपन आपार महिमासँ लोककेँ बन्धनमुक्त करैत छी -हमर पार केओ पाबि नहि सकै छथि।

डा. मुरलीधर झा अपन शोध ग्रन्थ ‘चन्दा झा ओ लाल दासक रामायणक तुलनात्मक अध्ययन’ मे स्पष्ट लिखलनि अछि- ‘दुहू रामायणमे वर्णित समस्त स्त्री चरित्रमे सीताजीक चरित्र सर्वोत्तम, आदर्श तथा युग युग धरि अनुकरणीय अछि। भारतीय समाजक हेतु सभ स्त्रीक लेल सीताजीक जीवन चरित्र पथ प्रदर्शक अछि। सीताजीमे असाधारण पातिब्रत्य, त्याग, शील, निर्भयता, शान्ति, क्षमा, सौहार्द, सहनशिलता , धर्मपरायणता, नम्रता, संयम, सेवा, सदाचार, व्यवहार पटुता, साहस, शौर्य आदि गुण एक संग व्याप्त अछि।

(पृ १८५ , प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कविलपुर)

वन प्रवासक समय चित्रकुटसँ पञ्चबटी जाइत काल बाटमे मुनी अत्रीक पत्नि अनुसूयासँ उपदेश ग्रहण करबाक राम आज्ञा अनुसार जखन सीता उपदेश प्राप्त कएलनि तँ ओ तकरा अपना जीवनमे निरन्तर सम्मान करैत लागु रखबाक विश्वास दिअबैत छथि -

‘बजली सीता हर्ष तरंग। देवि कहल भल कथा प्रसंग ॥
गुरु जनि कहल विवाहक काल। से हम मनमे धएल सकाल ॥
पति सेवा सन आन ने धर्म। स्त्रीकाँ मुख्य करक से कर्म।।
सिरधय अपनेक गुरु उपदेश। करब सदा से धर्म विशेष।

(रमेश्वर चरित मि.रा. , अयोध्या काण्ड, पृ १६६)

पातिब्रत्यक एतेक महान उदाहरण जे अत्यन्त कष्टमे रहितो, रावण द्वारा अशोक बाटिकामे बन्दी जीवनक दर्दकेँ पिवतो, रावणक प्रलोभन, धन-धान्य, सुख बैभवक लोभ देखवितो, राक्षसी सभद्वारा डर-त्रास देखा रावणक प्रस्ताव स्वीकार करबाक कर करितो ओ अत्यन्त सहज रुपें बजैत छथि -

'हमर प्राण पति छथि रघुनाथ। हमर सकल गति तनिकैं हाथ॥
निर्धन रहथु कि राज्य विहीन। सुखी रहथु अथवा अतिदीन॥
हम छी, तनिकैं सतत् अधिन। यथा प्रभा रविमे लीन॥

(रमेश्वर चरित मि.रा., पृ २७२ सुन्दरकाण्ड)

हुनक चेतौनीमे आत्मविश्वास छन्हि , अपन पति रामपर अटुट आस्था छन्हि। राक्षसीकैं चेतबैत छथि -

'रावण जायत झटिति नशाय। कानति लंका विधवा प्राय॥
लंका श्रीहत निशिचर मरत। गृद्ध , काक शकुनी सुख करत॥

(उएह , पृ २७३)

कोनो व्यक्तिक चरित्रक उत्कर्ष संघर्षक क्षणमे देखि पडैत अछि। सीताक जीवन तँ शुरुहेसँ अन्तधरि संघर्षेमे वितलनि। ई संघर्ष बाह्यसँ बेसी आन्तरिक रहल। विवाह योग्य भेलापर धनुष भंगक घोषणा आ शर्त, विवाहित भऽ किछुए दिनमे बनवासक प्रसंग, वनमे रावणद्वारा हरण, अशोक वाटिकामे प्रताड़ना, लंका विजयक बाद अग्नि परीक्षा, पुनः लोकपवादक कारण देखा स्वयं रामद्वारा वनवास आ जखन एतेक भेलोपर चैन नहि भेटलनि आ अपन सन्तान संग घरमे आबए चाहलथि तँ धरती प्रवेशक व्यथा ... । एहिसभ प्रसंगमे सीताक अभिव्यक्ति, व्यवहार सदैब पातिव्रत आ धर्मपरायन आदर्श नारीक रुपमे अबैत रहल अछि।

उपसंहार

एहि तरहे नेपालीय रामायण परम्परामे भानुभक्त आचार्यक रामायण जत्त नेपालक प्रारम्भिक भाषा अवस्थाक एकटा प्रमाणिक दस्तावेजक रुपमे नेपालमे बड़ रुचिपूर्वक संग्रहित कएल जाइछ, ओकर बाचन कएल जाइछ आ तुलसीकृत रामचरित मानस सदृशे सम्मान देल जाइछ, ओत्तहि लाल दासक रामायण मिथिलामे ततेक प्रचलित होइत नहि देखल जाइत अछि। मुदा एहि रामायणमे घटना विशेषक जाहि भव्यताक संग चर्च कएल गेल अछि ओ अनुपम अछि, हृदयग्राही अछि। शव्दक चमत्कार, छन्द-अनुप्रासक अद्भूत प्रयोग एकरा रोचक, पठनीय बनबैत छैक जखन कि भानुभक्तक रामायण सपाट शैलीमे तत्कालीन समाजमे प्रचलित 'गोरखा भाषा'मे लिखल रामायण थिक। अध्यात्म रामायणपर आधारित होइतो कतेको प्रसंग बाल्मिकि आ आनो रामायणसँ लेल बूझि पडैछ।

जहाँ धरि सीताक चरितक बात छैक, जतेक विस्तृत रमेश्वर चरित मिथिला रामायणमे आबि सकल अछि, तकर अपेक्षा भानुभक्तिय रामायणमे अत्यन्त थोड़ अछि।ओना दुनू सीताकैं महालक्ष्मीए रुपमेचित्रित कएने छथि।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भानुभक्तको रामायण-आदिकवि भानुभक्त, प्रकाशक : साझा प्रकाशन, छठ्म संस्करण
2. रमेश्वर चरित मिथिला रामायण -लाल दास, प्र. साहित्य अकादमी २०१० ई।
3. बाल्मिकीय रामायण -अनुवादक/व्याख्याकार : डा. रामचन्द्र वर्मा शास्त्री, प्र. परम्परा बुक्स २००७ ई।
4. मिथिला मिहिर मिथिलांक- सं. सुरेन्द्र झा सुमन पृ २१।
5. चन्दा झा ओ लाल दासक रामायणक तुलनात्मक अध्ययन- डा. मुरलीधर झा , प्र. मि.रि.सो. २००६ई।
6. परिचायिका -डा. भीमनाथ झा, द्वि.सं.१९८५ई।
7. भानुभक्तिय रामायण (मैथिली पद्यानुवाद) -बदरीनारायण बर्मा -प्र. ने.रा.प्र.प्र. २०५४
8. अध्यात्म रामायण -अनुवादक श्री मुन्नीलाल गुप्ता, प्र. गीता प्रेस, सं. २०७१ साल
9. महाकवि लाल दास-प्रो. राधा कृष्ण चौधरी, मैथिली अकादमी।
10. कविचन्द्र विरचित मिथिला भाषा रामायण (सा.अ.)
11. बाल्मिकीय रामायण (हाल भाग १, भाग २) गीता प्रेस, सम्वत २०२४।
12. तुलसीकृत रामचरित मानस -सं. श्री ज्वालाप्रसाद जी, ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, बराणसी
13. श्री बालमीकीय रामायण में श्री सीताजी का जीवन- दर्शनःसाध्वी डा. विशेश्वरी देवी,प्रकाशकःईस्टर्नस् बुक लिन्कर्स,दिल्ली,भारत



समाजक दुख, दैन्य आ विपन्नताक कवि 'मधुप'

पृष्टभूमि

कविचूडामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (२, अक्टुबर १९०६-१९८७ ई.) मैथिली साहित्यमे सर्वहाराक प्रतिनिधि कविक रुपमे जानल जाइत छथि । दरभंगाक कोर्थुगाममे जनमल हिनक काव्य क्षेत्र विशाल अछि । यद्यपि शुरुमे सिनेमाई तर्जपर गीतसभक रचना कयलनि आ ओहो खूब लोकप्रीय भेल । बरु हमरा हिनक रचनासँ परिचयक पहिल अनुभव ओहने गीतसभसँ भेल जखन काड़ा-छाड़ा आ चौकि चुप्पे सन गीत सभ सुनने रही । ओना हमर प्रारम्भिक रचना तेहने गीतसभसँ भेल छल । 'जवानीक दिन' नामसँ तेहने रजनी सजनीबला गीतसभ लिखने रही आ चरिपतियामे छपौने रही । मुदा से स्वतः आ जनकपुर रेल्वे स्टेशनपर गीत गाबि गाबि किताव बेचैत महिनाथपुरक झाजीकेँ देखाउसे । तखन हमरा स्मरण ओते नहि अछि, मुदा ओ झाजी मधुपजीक सेहो गीत गबैत होथि से सम्भव । ई महज संयोग भऽ सकैत छल । ओना हमर भ्रमर उपनाम देखि पहिल बेर हमर रचनापर अपन टिप्पणी करैत प्रो. सोमदेव लिखने रहथि -

से रजनी सजनीक व्यथामोहमे पड़ल कवि कोना प्रगतिशील चिन्तक भऽ जाइत छथि, लोक जीवनक दुख दर्दकेँ आत्मसात कऽ मर्मान्तिक अभिव्यक्तिक संग पाठक विच अवैत छथि एकर खेरहा त सूक्ष्म अध्ययनसँ मात्रे सम्भव अछि मुदा जे अछि ओ मोनकेँ विचलित करैत अछि, बहुत किछु सोचवापर बाध्य करैत अछि ।

हिनक रचना संसारमे अनेको कृतिसभ अछि-

हिनका १९७०ई मे राधा विरह महाकाव्यपर साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल रहनि । तहिना प्रेरणाक पून्जपर १९८३मे मैथिली अकादमी, पटनाद्वारा पुरस्कृत कयल गेल रहनि ।

हिनक काव्य क्षेत्र विशाल अछि । जाहि बस्तुकेँ देखलनि तकर तहधरि जा ओकर साँगोपांग शब्दमे उतारबाक चेष्टा कयलनि । जहिया श्रृंगार रसक रचना करथि तहियो आ जखन करुण रसक रचनामे भिजलाह तहियो । हुनक दृष्टि सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म अवस्थाकेँ पकड़ि बाहर लएबामे सफल भेल अछि । डा. दुर्गानाथ झा श्रीशक शब्दमे- मधुपजी एक दिस उत्कृष्ट श्रृंगारक रचना कएल तँ दोस दिस करुण रसक आत्माभिव्यक्ति मूलक प्रतीकक सेहो प्रणयन कएल ।'

यथार्थबादी आ प्रगतिवादी धरातलपर सर्वश्रेष्ठ कृतिक रुपमे हिनक कथाकाव्य 'द्वादशी'कें मानल जाइत अछि, जकर एकटा कविता घसल अठन्नीक सम्बन्धमे डा. जयकान्त मिश्र लिखैत छथि - Madhup has written long pathetic poems, the best being Ghasal Athanni . It purports to diseribal the end of poor labouror and her child , the encident is small and perhaps a little exaqqerated and in its effect but the poet has made a Capital poem out of it.

सर्वहारा वर्गक चेतनाक प्रतिनिधि नायक होएबाक कारणे हिनक रचनामे दीन हीनक कथा व्यथाक झलक आबि सकल अछि । हिनक दृष्टि समाजमे उपेक्षित, पतित मानल जाइत चरित्रपर पड़ल, जकर पीड़ाकेँ शब्दक माध्यमे मुखरित कयलनि । अछूत आ हेय देख जाएबला सभक जीवनकेँ अति सूक्ष्म दृष्टिए अध्ययन कऽ ओकरा अपना काव्यमे उतारबाक जे हुनर हुनकामे छलनि ओ हुनक काव्यकेँ अद्वितीय आ पठनीय बना देलकनि ।

मधुपजीक अपनो जीवन अत्यन्त सादा आ सहज छलनि- पुरा काव्यमय । ओ पत्रो काव्यमे लिखैत छलाह, भाषणो पद्यमय दैत छलाह । तखन एकटा बात ध्यान देबा योग्य ई अछि- ई जेहन सरल भाषामे रचना कयलनि, तेहने कठोर शब्दक प्रयोग कऽ सेहो लिखलनि । द्वादशीक कतेको प्रसंगमे ओ तत्सम शब्दक अधीकतम प्रयोग कयने छथि, जे पढबामे असुविधा होइत अछि । तखन लोक जीवनसँ लेल सहज आ विलुप्त होइत जा रहल अनेको मौलिक शब्दक दर्शन द्वादशीक रचनामे सेहो देखि पड़ैत अछि , जाहिसँ काव्यमे ग्रामीण सौन्दर्य अनेरे अह्लादित करैत अछि । ओना तत्समो शब्दक प्रयोग काव्य शौष्ठबकेँ कनेको झूर नहि होब दैत अछि । काव्यक गुणग्राहक लोकनिक हेतु जेहन स्वादक इच्छा हयतनि, तेहने रसक स्वाद हुनक रचनामे उपलब्ध हयतनि । ओ सभ कोटिक रसवंत सभक हेतु रचना कयलनि । तएँ हुनक काव्य, रस आ अलंकारक छटासं भरल पुरल अछि । प्रो. सुरेन्द्र झा सुमन हिनक काव्य वैशिष्टकेँ रेखांकित करैत कहैत छथि- अक्षर अक्षरमे अनुप्रास, पद पदमे यमक, वाक्य वाक्यमे रस टपकैत । प्रा. रमानाथ झाक शब्दमे- 'मधुपजी यमक ओ वक्रोक्तिक नियोजनमे मैथिली साहित्य मध्य अद्वितीय अछि ।'

द्वादशीमे मधुपजीक चिन्तन

द्वादशीमे मधुप जीक १२ गोट कथात्मक काव्य सभक संकलन अछि । जे प्राय: १९८० ई दिश प्रकाशित भेल छल आ जकर दोसर संस्करण (१९८४ई) हमरा आगामे अछि । एहि संग्रहमे १९४० ई ५० ई धरिक १२ गोट करुण रससँ भरल कथाकाव्य संकलित अछि जे मुक्त छंदमे रचित अछि । एकर

सम्पादन करैत पं. चन्द्रनाथ मिश्र अमर लिखने छथि 'ई संकलन सामाजिक बैषम्य, शोषण ओ अत्याचारक जीवन्त चित्र समक्षमे उपस्थित करैत अछि।'

द्वादशीक बारहो काव्यक मूल चिन्तन गरिबी , उपेक्षा, शोषण आ सामन्तक अत्याचारसँ लाचार दुखिहारा सभक पीड़ा अछि। ओ चाहे नवान्न , दौनिवाह, पापक परिणाम हो अथवा घसल अठन्नी, लाइपर बज्र, कोजागराक मखान हो - सभतरि उएह दर्द, चोट, दुख आ वेवशीक निरिह उच्छ्वास । कवि मधुप अद्भूत रुपें ओकर पीड़ाकेँ पकड़लखिन्ह अछि बरु कही त ओहि पीड़ित संगे अपनोकेँ फेटि देलनि अछि । एकाकार भऽ गेल छथि । तएँ ने आह निकलैत छनि -

"सहि सकै कते नर दरद तकर हम माप बनैत रहै छी,

अपने दारुण दुख सँ सदिखन चुपचाप कनैत रहै छी।"

भले ओ ताहि दुखसँ द्रवित भऽ चुपचाप कतौ एकांतमे कनैत होथि, व्यथित होइत होथि, मुदा हुनक लेखनी चुप कहाँ बैसैत अछि। ओ मुखर होइत अछि संस्कारक आगाँ मुक्तिदाताक रुपमे ठाढ भऽ तकर कुकृत्यकेँ सार्वजनिक करैत अछि । कहल जाइछ जे हास्यसम्राट प्रो. हरिमोहन झाकें नवान्नकेँ एकटा प्रसंगमे जखन मरल बापसँ नवान्नक मांग करैत नेनाके जीद करैत अछि - आँखिसँ दहोबहो नोर झहरऽ लागल रहन्हि। ई शक्ति रहैक महाकवि मधुपक कलममे। ओ बस्तुमे जिवैत छलाह , ओकर चरित्रकेँ पहिने आत्मसात करैत छलाह तखने ओकरा साकार रुपें शब्दक माध्यमे ठाढ करैत छलाह । एहि महान शब्द शिल्पीक एहने कृतिसँ भरल अछि -द्वादशी कथा काव्य।

नवान्नमे आएल किछु प्रसंगकेँ देखलापर खदुका आ गिरहतक कथा व्यथा कतेको ठाम सटीक रुपें देखबामे अबैत अछि। देखी एकटा प्रसंग -

'रौदी होइतहि परबाहि न अछि कतबो कर्जा,

पुनि औठा दऽ ,

स-व्याज कृपण सँ पूर्ण व्याज पर आनि रीन -।'

आ एहने समयकेँ प्रतिक्षामे रहैत शोषक, कृपण गिरहतक मनोभावकेँ पकड़ैत आगा लिखैत छथि -

तै छली महाजन केर खदुका,

दऽ एक बही पर लिखि एक्कैस

एखनहि सँ जे धोछ मोछ अछि फेरि रहल

बजितौह मनेमन मुद्रा सँ

खरिहानहिमे सब तौलि लेबनि

बजबैत सूप जैहथि आङन ।
हम टाल मारि पक्का रखलाहा अढैया सँ
आवाद रहो से कला करए जे सात पसेरीक
एक मास विततहि एगारह पसेरीक ओरिआन ।'

(पृ.२-३)

खदुका अर्थात जन अर्थात खेत खरिहानमे नियमित काज कएनिहार ओ जनशक्तिजे महाजनेक अन्नपर निर्भर रहैत अछि, ओकरे कर्जाकेँ जिनगी भरि सधबैत पुस्तक पुस्त वितबैत रहैत अछि । ओ कोना अपन महाजन द्वारा शोषित होइत रहल अछि, तकर एकटा दृश्य उपस्थित अछि एहि ठाम ।

शिक्षा विभागमे आठ रुपैये मासिकपर काज करैत शिक्षकक पत्निक व्यथा नवान्नमे देखल जाए -

'की पढि लिखि कऽ ?
एकेटा बच्चा एक मुठीक चूडाक हेतु कानय रनबन
ककरा पठाउ ?
छनि केहन अकिल,
आठे टकापर जीवनकेँ की बेचि लेलनि
छनि कोन काज हमरा लोकनिक
पेट पोसिया बनल मझौरामे
मास्टर साहब कहाबथु ओ ।
शिक्षा विभागपर खसौ बज्र
लागौ अगराही ओ पसाही
दिनराति झुकविताहि छथि कपार,
तैयो भऽ गेल पहाड़ पेट....।'

एकटा दुखिता पत्निक उपराग । मुदा पतिक अपने व्यथा -

'चौबिस टका , अइ तीमाहीक
आधा किरानिजे के देलिऐ,
आधा सँ डिपटी साहेबकेँ केलहूँ पूजा,
नहि तँ ओ कोशीक पानि पिआ मारिए दैत ।'

पतिक हालतिसँ बुझबामे आबि गेल छैक जे ओकरा हाथमे शुन्य छैक । आब ओ घरकेँ, बेटाकेँ की दितैक । एम्हर कयक दिनसँ चूडा, दही आ गुड़

खएबाक मनोभावसँ तिरपित होइत बेटाक उत्साह देखबा योग्य अछि। मायकेँ दुखे कनैत देखि हुलुसि कऽ कहैत अछि -

'तों चुप्प लह माँ ! नहि कान आब ,
हम्मल बाबू, अप्पन बाबू माँ ! आबि गेला,
देखहुन ने मोहन बाबू सँ गप कलै छथुन ,
खेबै चुला दही चिन्नी ,
कलबै कलब काल्हि लबान आब..........।'

(पृ-६)

ओम्हर माधोपुर केर जीर्ण शीर्ण पनही -भूषित पद लेने तिलयुगाक दियरिक दड़ारि सदृशे, बेमाय सँ लङड़ाइत , फाटल मलीन धोती गंजी, जलफाँसी तौनीसँ भूषित शिक्षक निरस झा उद्विग्न भावे आङगनमे आबि अपन असमर्थतापर व्यथित होइत पत्नि आ बेटाक लेल किछु दऽ नहि सकबाक पीड़ाकेँ छातीमे दबने ठामहि धराशायी भऽ जाइत छथि। ओम्हर घौना शुरु भऽ जाइछ। एम्हर अबोध बालक सचनू आर क्रोधित भऽ जे एखनधरि ओ अपन झोड़ासं ओकरा लेल किछु किएनै निकालने अछि- पीताकेँ उपराग दैत डँटैते अछि -

'खिसिआ खिसिआ कऽ बाँहि पकड़ि,
स्वर्गीय पिताकेँ कहै कानि
कल्हुका लबान लै की अनलहुँ ,
खोली झोली माँ कनै छलय ,
लातियो छुति लहलहूँ भूकले
पैचो उधार क्यो नञि देलकै ,
जै देब गाम छँ नहि कहियो।'

(पृ-८)

गरिबीक एहन मर्मान्तिक चित्रण मधुप जीक काव्य वैशिष्टय परिणाम थिक, जे तत्कालिन समाजक शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचारक सजीब कथा कहैत अछि। पुस मासक भिनसरबा। जन सभ दुरा दुरासँ बयलकेँ खोलि धनिक(गिरहत)क खरिहानमे करामने बन्हैत मेहसँ लगा धानक दौनी करैत आब तँ देखब दुर्लभ भऽ गेल अछि। गामे गाम ट्रेक्टर सभ मच्छर जकाँ सह सह करैत छैक। खेतेमे जा थ्रेसरसँ धानकेँ खरड़ि दैत छैक। कत गेलै दौनी, कत गेलै पराती आ कत्त गेलै घूरक तर चिलमसँ मेटाओल जाइत अम्मल !

मुदा द्वादशीमे मधुपजी दौनिवाह शिर्षकमे जाहि कथाक चर्च कएलनि अछि ओ सहजहि एक्कहिबेर अपन बीस वर्ष पूर्वक दरबज्जापर बोदल , रामचलीतर खतबे, किंवा रंजित केओटक टिटकारीक संग बयल सभक चलब, भिल्ला बनोधियाक पराती गायब मोन पाड़ि दैत अछि। सुन्दर ग्राम जीवनक चित्र -

'पूसक प्रचण्ड पालाक पात
कम्पित पदाप केर पात पात ,
आकलु कुल कमलक कुल बिनष्ट
घाघ सँ बस पथ विपथक न ज्ञान
जनु शैत्य दैत्यकेँ लेल भ्रष्ट
एखनहुँ न भुरुकबा ज्योतिम्लान
बूढक तजि ऐल न क्यो दलान,
जे खोरि खोरिकऽ खोरना सँ
खों-खों करैत दुहू बान्हि कान
छथि घुर तपैत जपैत मन्त्र
कखनहुँ केँ प्राती गाबि गान ....।

(दौनिवाह पृष्ट १०)

ई मात्र खदुकाकेँ हालत नहि छैक। ओकर बाल बच्चा सेहो कहाँ संच मंच घरमे रहि पबैत अछि। मालिककेँ डरे थर थर कपैत दुरे दरबज्जे बौअएबापर बाध्य कोनो बहिकिरनीक चित्र देखी -

'अधजरु बान्हि गाँती दौड़लि
खोहक दिशि बिलटी थर थर थर
कपइत युगमुट्ठीमे सस्वर
जनु दवा जाढकेँ विह्वल तर
मायक संगे धीरु बाबूक
डर सँ विछबाक हेतु गोबर ...।

(उएह पृष्ट ११)

एकटा बढका बहसक विषय भऽ रहलैक अछि जे लोककेँ महाजनक खदुका बनबाक बाध्यतामे ओकर गरिबी, दैनन्दिनी जीवनयापनक कठिनाइ, घर गृहस्थीक रीति रीवाजकेँ रक्षा करबाक कारणे ऋण लेबाक खगता किंवा अशिक्षा आ अबूझक कारणे स्वयंकेँ मालिकक दयापर छोड़ि देबाक विवशता। शोषण अत्याचारसँ मुक्त हयबाक अवसरक कमि अथवा जे जहिना चलैत

छैक तकरा तहिना चलैत रहऽ देबाक परम्परागत मानसिकता । ई गम्भीर प्रश्न रहलैक अछि जे सामाजिक परिवर्तनक बेगकेँ पाछा धकेलैत रहलैए । आ तएँ लोक महाजनक ओत्त खदुका बनि काज करैत परिवारकेँ पेट भरैत आएल अछि । बैंकक सुविधा नहि रहैक तहिया । कोनो सरकारी योजना सेहो नहि रहैक जे ओकरा समयपर आर्थिक उपार्जनक माध्यम दऽ सकितैक । रोजी रोटी आ विआह, मरन हरन आ पर्व त्योहार । एक मात्र आशा गिरहत । धान गहुँम, मरुआ खेसारी आ नगद । दिन दिन बढैत ऋणक भार आ तेहने बढैत खदुकाकेँ मालिक प्रतिक स्वामी भक्ति । ई स्वामिभक्तिक पाछाक नम्हर सामाजिक आ राजनीतिक संरचनाकेँ एहिना अबडेरल नहि जा सकैछ ।

हम लगभग तीन दशक पूर्व एकटा कथा लिखने रही- इजोरिया रातुक सपना । खुब चर्चित भेल । मुदा एकटा प्रश्न उठाओल गेल छल । आजुक वर्ग संघर्षक दिनमे कोनो एकटा खेतिहर मजदूर मालिकक प्रति कोना एतेक विश्वस्त भऽ सकैछ, सद्भावपूर्ण भऽ सकैछ जे नमहर सुक्खाक बाद जखन आकाशमे मेघ लागऽ लगैछ आ बुंदा बांदी होबऽ लगैछ तँ ओ ई समाचार अपन गिहरतकेँ देबाक हेतु उताहुल भऽ उठैछ । ओकर लक्ष्य छैक- वर्षा हयतैक, खेत रोपेतैक, जनक काम हयतैक त ओकरो परिवार जे अल्हुआक भरपर ठाढ छैक- भरि छाक अन्न खएतैक । ई मनोभाव समाजिक संरचनाक उपज छैक- दासत्वक प्रतिक नहि ।

हमरा अद्भूत लागल द्वादशीक कोन घर कानन कोन घर गीत शिर्षक कथा काव्यक एकटा प्रसंग पढि कऽ । घोर उपेक्षा, शोषण, दरिद्रीक चपेटमे अस्तव्यस्त जीवन चक्रक बीच एकटा एहन खदुका, मालिक प्रति वफादार जमात सेहो छैक जे मालिकक आदेशपर किछु कऽ सकैत अछि । एतेक धरि जे ककरो हत्याकेँ अपना जिम्मा लऽ रफा दफा करबाक खेल कऽ सकैत अछि । एतेक विराट स्वामी भक्ति आखिर एक दिनक उपज नहि भऽ सकैछ । भले ऋणे होइक समाजक एहन वर्ग मौका कुमौका अपन गिरहतसँ पबैत आबि रहल संरक्षणक प्रति ओ इमान्दार भऽ तकर रक्षा करऽ चाहैत अछि । आ एहने मनोवृति सामन्ती व्यवस्थाक पृष्टपोषण करैत रहल अछि ।

मुसनाकेँ जखन गजाधर सिंहक सिपाही ओकर उंच बाजबपर लतिआबऽ लागल -

सुनतहि सिपाही पकड़ि टीक
घूसा, मुक्का, थापड़ , जूता
लाठी से कऽकऽ ओधबाध
मुसनाकेँ पृथ्वीपर खसौलक ..।’

तखन मालिक पोसल एकटा स्वामीभक्त गुलटेनमाकेँ कहैत छैक-
'गुलटेनमा ले टाका पचास
किछु दऽ मटरीकेँ बुझा सुझा इ बात हटा
ओकर बाँचक नहि कोनो आस
बड़ चोट अढै पँजरामे छै
तो थिकेँ खास
देखिहे-देखिहे खूलै नै गप
डाक्टरो बैद्य केओ नहि बूझ
जे जखन खगौ से और लिहै
ताबत इ ले टका पचास

(पृ ३९)

आब अपन भक्तिभाव देखएबाक बेर गुलटेनमाकेँ छैक-
'मालिक ! नै होउ कनियो उदास
बुढे सरकारक हम खेलैल
कै खून पचौलनि हमरे पर
एखनहु रग रगमे हुनक नोन
निश्चिन्त रहू
कहि देबै लोककेँ पीपर तर
रातिए भूत देलकै बजारि
सभ खेल खतम
अपने खेलाउ सतरंज तास।'

(पृ.४०)

एहन समाजिक परिवेशमे मात्र अन्धभक्ति आ दासत्वक निपट अनुशरण मात्र नहि रहैक, विद्रोहक स्वर तहियो उठैक। मुदा तकर संख्या थोड़ होइक। मालिक सभक जाल बेस झमटगर भेल करैक। तएँ कोनो मुसनाक विद्रोह कोनो सामन्तक सिपाहीक जूताक तरमे दम तोड़ि समाजमे एना कऽ आतंक पसारि दैक जे बचल खूचल विद्रोहक स्वर डरे शान्त भऽ जाइक। मुसना ओहिना मारल नहि गेल रहय। ओ अपन काकी मटरी पर होइत अत्याचार नहि देखि सकल आ विद्रोह कऽ देलक, बस इएह लगतीओ कऽ बैसल रहए-
'बस बहुत भेल
जौ आब एको बेर चलत हाथ

नहि हैत नीक
हमरा आगूमे काकी पर
इ मारि पीट !
राखू घर आंगन गाम अपन
हमरा सबकैं की ?
जतै जैब कऽकाज खैब
भगवान कैम राखथु शरीर...।'

(पृ.३९)

तकरा बाद ओकर जे गति कएल गेलै से उपर आबिए गेल अछि।

काशिकान्त मिश्र मधुप सरिपहुँ एकटा सफल आ अद्वितिय कथाकार छलाह। जँ कि ओ हरेक उद्‌गार, लेखन पद्येमे करैत छलाह तएँ कथो पद्येमे लिखलनि। आ जाहि सूक्ष्म अनुभूतिक संग विषयक उपस्थापन कएने छथि ओ मैथिली साहित्यमे बिरले भेटैत अछि। द्वादशीमे आएल बारहो कथा काव्यमे ओ तेहन कऽ लोक जीवनक विसंगति आ प्रताड़ित मनःस्थितिक चित्र उपस्थित करैत छथि ओ हुनका आन कथाकारसँ फराक कऽ दैत छथि।

द्वादशीक घसल अठ्ठनी तेहने सूक्ष्म दृष्टिक परिणाम थिक जाहिमे जेठ मासक खर जड़ैत दुपहरियामे अपन छौ मासक बच्चाकैं लेने गिरहतक खेतमे भरिदिना एकटा अठ्ठनीक हेतु काज करक लेल जाइत अछि। आ ओकर बोइनमे जखन घसल अठ्ठनी भेटैत छैक तँ तकरा बदलबाक हेतु मालिकक ओत गेलाक बाद ओकरा डाइन, अलच्छी कहि दरबज्जासँ भगएबाक आदेश दैत अछि घरपति। ई छैक तत्कालिन समाजक दैन्य स्थिति , जकर प्रतिकारो करब सहज नहि रहैक आ जे कनेक मुँह खोलबो करैक तँ मुसना जका सदैबकैं लेल चुप कऽ देल जाइक। सिपाही दरोगा मुट्ठीमे , आतंकितगाम आ ताहि समाजक किछु लोक चाटुकारितामे, तखन सामन्त सभक जीवटो कोना ने बढौ। बुचनी जखन अपन बोनिकैं बदला भेटल घसल अट्ठनीक बदलबाक हेतु कहैत छैक -

'हम कर्ज ने छी मडैत
अथवा नहि ऐलहुँ भीख हेतु
उपजले बोनि टा देल जाए
हम थिकहु अहीँकेर प्रजा पूत
कै बेर एलहुँ
टुटि गेल टाङ

अन्नक मारल अछि हमर आङ
जरलाहा दैब मरनो नै दैछ
की समय भेल
ह ! देह तोड़ि कैल काज
सुपथो न बोनि अछि भेटि रहल ...।'

(पृष्ट ५८)

ई सुनिते गिरहत बमकि उठैत छैक -
'गे छौक डर ?
कै खून पचौलन्हि ई बंडा
रोइयो ने भंग
कै देबौ खून
गै भाग भाग
बनिहारक दै के उचित बोनि
कुलमे लगैब की हमहीँ दाग ?

(पृष्ठ ५८)

बोनिहारि कल जोड़ि विनती करैछ- ओसभ दोकान घूमि आएल अछि ई घसल अट्ठनी नहि चलि रहल छैक। एकरा बदलि दिअ। बस एतबे गलती छल- तीन साँझसँ भूखलि बुचनीक जे अपन भूखे प्यासे विलखैत छ मासक बेटाकेँ किछुओकालक हेतु तोष भरोस दिआ सकबा लेल मालिककेँ सोझा ठाढ भऽ गेली। आ तखन जे ओकरा संगे भेलैक से पहिनहुँ होइत आएल रहै -

'रौ की तकैत छें मुँह हमर
छोटका लोकौक एते ठेसी।
चट चट चट चट
कुलिशहुँ सँ कर्कश भीम काय
मखनाक चाट सँ निस्सहाय
भूलण्ठित दुनू माय पूत
भै गेली बहोश
तैयो सरोष
कै बज्रनाद
भुटकुन बाबू उठलाह गरजि

मखना ! मखना!
कलकौक भगल
ला बेंत हमर
नारिक चरित्र तों की बुझबे ?
जीवने बितौलहुँ एहि सबमे ।
दन दन दन दन
मूर्छितो देहपर बेंत वृष्टि
बस एक बेर अस्फूट क्रन्दन
शिशु संगहि बुचनीक मुक्त सृष्टि ...।'

(पृष्ट ६०)

आ एहि तरहे एकटा नरपिशाचक प्रकोपमे पड़ि गरिवीक आ भूखक मारलि कोनो असहाय, टुगर बोनिहारि सदेबकैं लेल शान्त कऽ देल गेलीह । समाजमे विपन्नताक ई सजाय । जिनगी भरि ऋणक बोझ तर दबल कयक पुश्ता बेगारी खटैत रहबाक बाध्यतामे जिवैत जीवनक अन्ततः ई अन्त क्रुरतम् शासन पद्धतिक स्मरण करबैत अछि जे तीन चारि दशक पूर्व धरि हमरा सभक समाजमे गिरहत, मालिक, जमीदार अथवा कोनो पाइबला सेठक हुकुमैतीक नामें जिवित छल आ जकर अति सूक्ष्म, मार्मिक चित्रण द्वादशी कथा काव्य सभक माध्यमे मधुपजी कयलनि अछि ।



विद्यापतिक दर्जनो अप्रकाशित पदसं भरल अछि नेपाल

महाकवि विद्यापतिक पद सभक अथवा कीर्ति सभक खोजबीन शुरु भेल त नेपाल एकटा प्रमाणिक माध्यम बनलैक । नेपाल सरकारक लाईब्रेरी कहि तत्कालीन वीर लाईब्रेरी, केसर लाईब्रेरी आ आजुक राष्ट्रिय अभिलेखालयक संग्रहमे उक्त पदसभ भेटल हयवाक सूचना विद्वत वर्ग दैत आएल अछि । विद्यापतिक २८७ पद भेटल छलैक जकरा सभसं प्रमाणिक मानल जाईत रहलए । एखनो विद्यापतिक गीत राष्ट्रिय पुस्तकालयक ३६.५×५ साइजक १०८ फोलियोमे रील न. A/21/16 मे सुरक्षित अछि।

बस तकरा बाद हुनक गीतक खोज बन्न भऽ गेल। बुझएलै प्रयाप्त पद प्राप्त भऽ गेने सम्भवतः आगा परिश्रम करबाक जरुरति नहि रहलैक। यद्यपि बहुतो आलेख सभक माध्यमे ई कहल जाइत रहलै जे काठमाण्डू उपत्यकाक मंदिर,देवालय,पूजा अर्चना, भक्तिसंगम सभमे विद्यापतिक पद लगभग तेहने सन लय, धुनमे गाओल जाइछ भले ओहिमे स्थानीय नेवारी भाषाक छाप स्पष्ट परिलक्षित होइछ। ई अस्वभाविको नहि । अध्ययन, अनुसन्धान कर्ताकें ई बात बूझल हयतनि जे अभिलेखालय सभमे प्राप्त मैथिली कृति सभ नेवारी, बंगाली, नेपाली, मैथिली भाषामे भेटैत छैक। एहनमे विद्यापतिक गीत सभक भाषा आ लिपि हुनु तरहें नेवारी भऽ गेल होइ से संभव आ तकरे ओ सभ गबैत होए । एहिमे भनिता यथावत राखल जाइत छैक, जाहिसं विद्यापतिक गीत हयवाक आधार तैयार होइत छैक ।

ई अवस्था अध्ययन, अनुसन्धान कएला पर देखि पड़त । नेपालोक मनिषी लोकनि एत्त एखनो सुरक्षित मुदा अनभिज्ञ मैथिली कृति सभके उद्धार करबामे सक्रिय नहि भऽ सकलाह । एक त ई अबूह काज छैक, पाइक नीक व्यय मंगैत छैक । समय प्रशस्त खर्च होइत छैक आ सभसं मजबूत कारण छैक प्राचीन रचना सभक लिपि आ भाषा मिथिलाक्षर/नेवारी आ बंगाली लिपिक प्रयोग । भाषा संस्कृत, नेवारी, वंगाली आ मैथिली । कठिन भेल संस्कृत, मिथिलाक्षर आ नेवारी लिपि आ भाषा जानव। ने एहन केओ आगा अएलाह ने एकर उद्धार भऽ एकल। नेपाल सरकारक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे मात्रे नहि कतेको नीजि पुस्तकालय, संग्रहालय सभमे मैथिलीक पोथी सभ सुरक्षित राखल गेल अछि। एहने एकटा अभिलेखालय छैक नेवार सभक काठमाण्डूमे। ओत्त नेवारी लिपिमे लिखल तालपत्र, भोजपत्र अथवा पुरना पीअरका कागजमे लिखल रचना सभ सुरक्षित अछि। आशा सफु कुथी नामसं नेपाल भाषाक साधक लोकनि एकरा चला रहल छथि । ताहिमे दर्जनौ गीत विद्यापतिक

सुरक्षित छैक जे प्राचीन नेवारी, मिथिलाक्षर लिपि आ वंगाली भाषामे सुरक्षित अछि । मुदा तकराले तेहने दर्जनौ संग्रहक फोलियो सभ छैक । जे १४ म् शताव्दीक वाद गोरखा राजा लोकनिक समय धरि बिभिन्न विद्वान सभ द्वारा प्रचलित लेखन अथवा सुनल आधार पर लिपिवद्ध कएल गेल । एहि काजमे स्थानीय नेवारी भाषी बेसी रहल तएं भाषा मैथिली होइतो लिखबाकाल ॅरँ के स, भ के ॅवँ, ड के ॅदँ, ठँ के थँ सन सन कतेको अक्षर परिवर्तन कएल गेल त उतारनिहार ओकर लय छन्दकें सुरक्षित नहि राखि सकल अछि ।

एहि कुंथीमे दर्जनौं गीतक संग्रह छैक जे भिन्न भिन्न समयक गत्ता लागल अवस्थामे छैक जकरा फिल्म बना राखल गेल छै । एहने गीत संग्रह सभमे आन कविक संग विद्यापतिक नामसं सहो कतेको गीतके देखाओल गेल अछि । एत जयदेवक गीत गोबिन्द, कबीर, सुरदास, तुलसी दास, मीराबाई, तानसेन, जग्गनाथ दास आदिक संग मल्ल राजा लोकनिक गीत सेहो राखल अछि ।

संयोगसं पचास पन्नावाला एकटा फोलियो भेटल जाहिमे देवनागरीमे गीत सभ उतारल गेल अछि । आशा सफू कुथीक अभिलेखालयमे *प्येसफू* नामसं लिपिकार आ दाता अभिहर्ष दान देने हयवाक तथ्यक संग सुरक्षित राखल गेल अछि । एहि ठाम मात्र तकरे चर्चा करब जाहि संग्रहमे विद्यापतिक ११ गोट गीत सुरक्षित अछि । भाषा अशुद्ध छैक । एहि संग्रहमे मल्ल राजा एवं नायिका सभक भनितायुक्त दर्जनौ गीत संकलित अछि ।

विद्यापतिक नामे प्राप्त गीत सभक स्वरुपक बारेमे हमरा कोनो जानकारी नहि अछि । पाठक स्वरुप आ तकर संशोधित रुपक प्रक्रिया सम्बन्धमे सेहो हम अनभिज्ञ रहलहुं अछि । आने इतिहास अथवा पुरातत्वक कोनो तरहे ज्ञान प्राप्त व्यक्ति रहलहुं अछि तएं ओहि संग्रह सभसं प्राप्त विद्यापति गीतक संगे हम कोनो न्याय नहि कऽ पावि सकैत छी । विद्यापति गीतक संकलन करैत काल संकलक व सम्पादक लोकनि बरोबरि लिखैत रहलाह जे विद्यापतिक भाषा प्राचीन भाषा अछि । मिथिलाञ्चलमे उतारैत तकर शुद्धता पर ध्यान दऽ ओहि भाषाक भावके नव शैली आ स्वरुपमे प्रकाशमे अनबाक प्रयास सहज भऽ सकैछ,मुदा काठमाण्डूक अभिलेखालयमे नेवार विज्ञसभक हाथे उतारल प्रतिलिपि सभ एक त ओहिना प्राचीन भाषा, शब्द सभक संग अबूझ रहैत आएल अछि ताहि पर नेवारी लिपि आ लेखनक छाप आर अबूह बनादैत छैक ।

मुद्दा एत्त जाहि फोलियोक चर्च करैत छी ओ आइसं १८८ बर्ष पूर्व अर्थात वि.सं.१८८०(१८२३ ई) मे नेपालक गोरखा राजा रणबहादुर शाहक समयमे अभिहर्ष नामक कोनो व्यक्ति उतारि कऽ रखने छल । केटलग नं.६४२ मे

संग्रहित ई गीत सभक संख्या २२५ अछि। देवनागरीमे लिखल ई गीत सभ संस्कृत,नेवारी आ मैथिलीमे अछि। अद्‌भूत रोमांच होइछ ई सभ पढला पर। एहि संग्रहमे विद्यापतिक ११ गोट गीत संकलित अछि जकर भाषा मैथिली रहितो कतेको शब्द आ अक्षर बुझवामे भांगठ होइछ जे हमरा लगैए किछु कठिनाइसं बुझवामे आओत। एहि दिश काज कएनिहार पं.शशिनाथ झा, पं.गोबिन्द झा, डा.रामदेव झा, डा.लेखनाथ मिश्र आदि विद्धान लोकनिक ध्यानाकर्षण होइक तएं हम एत्त किछु गीत सभ अविकल राख चाहैत छी। इहो कहल जाइछ जे विद्यापति नामक एक्के व्यक्ति नहि भेलाह अछि(पं.गोबिन्द झा,आंगन ३,ने.प्र.प्र.काठमाण्डू) से ई गीत तेहने सन कोनो विद्यापतिक त नहि, अथवा महाकवि विद्यापतिक सुनल, बुझल आधार पर लिपिकारक असावधानीवश उतारल असली गीत अछि।

एखन हमरा संग्रहमे विद्यापतिक प्रशस्त गीत आवि गेल अछि, जे नेवारी आ मिथिलाक्षरमे छैक। हम उपयुक्त समयमे तकर पाठोद्धारक हेतु मैथिली मनिषी लोकनिसं सम्पर्क करब जरुर,एखन ई सूचनाक हेतु मात्र अछि। आ हम एहिगीत सभ पर किछुओ काज प्रारंभ नहि कऽ सकलहुं अछि। संभव थिक निकट भविष्यमे जनकपुरेमे सही एकटा विद्धत कार्यशाला गोष्ठी नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठानक दिशसं आयोजन करी आ एहि महत्ती बिषयपर गंभिरतासं विचार कऽ सत्य तथ्य निरुपण करी।

एत्त प्रस्तुत दू गोट विद्यापति भनिताक गीतक भाषा अक्षरशःयथावत् राखल गेल अछि। जाहिसं जिज्ञाशु,अनुसन्धाता लोकनिकें स्वरुप निर्धारणमे सुविधा होइन्ह। एकटा अदभूत त विद्यापतिक होरी गीत लागल अछि जे दुर्लभ छैक।

गीत–१

रागश्री। । उत्तर वरस जोगी यक अमल वइसरः जोगी
रिषी दरबार वइसर। ।१॥ खने जप षने तप षने रे भसम रबे
षने खने। ओ धरय धयान खने षन्य ॥२॥स्ववर्न किथाली
यहेलय नीक भरीय भीषी लीहु। छार दुवाल भीषि लेहु। ।३॥
हादे भीषि लियो उत जोगी मुष उ न बोला ई भीखि लिहु किछु
कहे न वोला यिमा गियो ॥४॥ झझरा मुष उन हेल भीन दारी
नीज जोगी रुप वहे राजकुमाल ःमागी यो ॥५॥आगत वजावल
सिवके न नचावल घुमि घुमि सिव दमरु बजावल घुमिघुमि॥६॥

भनय विद्यापति सुनह मदायनी जोगी नहि ॥ वहे त्रिभुवन नाथ जोगी नही ॥७॥ (पृ–३१) ।

एहि गीतमे एकटा योगीके वर्णन कएल गेल अछि जे उत्तर भरस आबि दरबज्जापर बैसि गेल छैक । ओ कखनो जप करैए, कखनो भस्म घसैए । गृहिनी कहै छथि जे स्वर्णके थारीमे भीक्षा धएल अछि,लीअ आ दरबज्जा घोडि दिअ । विद्यापति कहैत छथि, ई योगी नहि ,साक्षात त्रिभुवननाथ छथि ।

गीत –२

राग काफि । । गिरि कैलास हि रंग सदा सिव । ।रंग होरि हो हर गिजायक संग सदा सिव होरि हो । ।१॥ भुत वेताल समाजे रंग होरि हो डाकिनि जोगिनि संग सदा सिव होरि हो ॥२॥ गावहि चंचलि झुमक रे रंग होरि हो भांग धतुर चढाय सदासिव होरि हो ॥३॥पारवति विनति करे रंग होरि हो नाचत मगन महेस सदा सिव होरि हो । ।४ । चुवा चन्दन अविय रंगजा । ।रंग होरि हो छिरकत भसम स्मेत सदा सिव होरि हो ॥५॥

सव मिलि छिरकत संभुको रंग होरि हो भनय विद्यापति भाग्वे सदासिव होरि हो ॥६॥३॥(प–४४)

एहि होरी गीतमे भगवान शंकरद्धारा कैलाश पर्वतपर पार्वतीक संग होरी खेलएबाक सुन्दर चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि । ओहि होरीमे भूत वेताल,डाकिनी जोगिनी सेहो सामेल अछि । भांग,धथुर खा क शिव मगन भ नाचि रहलाह अछि । पारवती वीनती करै छन्हि भाभट समटबाक लेल,मुदा ओत्त त अबीर मात्रे नहि, भस्म सेहो छिरियाएल जा रहल अछि ।



यात्रीक कविता

यात्रीजी हमरा लेल सदैव कोतुहलक पात्र रहलाह। हुनक फक्करपन आ अस्त व्यस्त जीवन पद्धतिक प्रसंग सुनैत रहलहुँ आ हुनक जे कविता सभ 'मिथिला मिहिर' क पृष्ठ पर पढैत रहलहुँ ओ हमर धारणाकेँ आर पुष्टे करैत छल।

१४-१५ वर्षक वयसमे हम कविता लिखब प्रारंभ कए चुकल रही। मुदा से पता नहि की बूझि लिखैत रही। प्रेम, अनुराग आ शोषण तहिया हमर कविताक विषय भेल करय।

मुदा जखन यात्रीक कविता पढी तँ हमरा लागय जे प्राय: हम सभ जे कविता लिखैत छी से काजक नहि। एतेक पैघ कवि आ एहन कविताक लेखन निश्चिय हमरा अपना मोनमे अपन कविताक स्टाइल पर चिन्ता होमय लागल। आ साँच बात तँ ई रहै, यात्रीक कविता तहिया हम नहि बुझिऐ। 'बूढ की कह' चाहैत छथि, पता नहि।

जखन बादमे हुनक कविता बुझबाक किछु सामर्थ्य भेल, बुझल, आम जनताक कवि छथि, जे सहजतासँ अपन मोनमे उठैत उद्‌वेग जनतेक भाषामे अभिव्यक्त कए दैत छथि।

शोषण आ पीड़ाक किछु कहबाक हेतु व्यंग्यक माध्यम हिनक कविताक विशेषता रहलनि। कविता पढैत हम यात्रीकेँ कहियो मंच पर नहि देखलिअनि। अन्तिम समयमे भारतीय दूरदर्शन हुनका पर बनाओल वृतचित्र प्रदर्शित कयने रहय जाहिमे सीसाक बल पर ओ अपन कविता पढैत देखाओल गेल रहथि। बस, सएह अनुभव अछि हमर।

कोना कोनो - कोनो कविताक शब्द चयन आ उपस्थापनासँ लगैत छल जे ओ मंच पर हृदयसँ कविता पढैत छल होयताह। संभव थिक कविताक आवेगमे देह-हाथ चमकाबय, लगैत छल होएताह। ओना बादमे कतहु पढलहुँ ठीके ओ सम्पूर्ण शरीरसँ कविता पढैत छलाह।

कविताक प्रस्तुतिमे कलात्मकताक बात उठैत रहैत अछि। मुक्त कविता अपन खास सीमा रेखाकेँ स्पष्ट करैत रहैछ। मुदा यात्रीजीक कविता कहियो कोनो बन्धनकेँ स्वीकार नहि कयलक। ओ अपन अभिव्यक्तिक सहजताक लेल कोन शैली उपर्युक्त होएबाक चाही एहि फेरीमे नहि पड़ि स्वत: स्फूर्त शैलीक निर्माण कयलनि आ अपन बात ठोस रुपें राखि देलनि।

हुनका विशुद्ध आँचलिक कवि कहल जाइत छनि। एकटा सामान्य ग्रामीण जे बात समाजक बारेमे, राजनीतिक बारेमे, देशक बारेमे, विदेशक बारेमे, युद्धक बारेमे, शांतिक बारेमे सहज ज्ञानसँ बुझैत अछि तकरा ताही रुपमे कविताक

माध्यमसँ प्रस्तुत कए देब बाबाक विशेषता रहल अछि। भाषा, हाव- भाव आ कथन सभ किछु जेना तौलल, नापल जोखल। ई सामर्थ्य सामान्य रुपें कवि सभमे प्राप्त नहि होइछ।

बाबाक कविता बरोबरि हमरा कौतूहल जगबैत रहल। आखिर एहि शैलीमे इ मरदे कहय की चाहैत छै। "दुहाइ लिबर्टी मैया" सन कविता राजनीतिक पृष्ठभूमिक होइतो एकटा जिज्ञासा बेर-बेर मोनमे जगबैत रहल अछि। प्रजातंत्र आ स्वतन्त्रताक उड़ाओल जाइत मखौल पर हुनक काव्यमय अभिव्यक्ति प्रखर व्यंग्यक चासनीमे पाठककेँ एनाकए झकझोड़ि दैछ जे ओ स्थिति पर हँसओ अथवा दूनू हाथे माथ पकड़ि झखओ। अपना चारुकात अस्त-व्यस्त जीवन शैली, अराजक स्थिति, भ्रष्टाचार, लूटकेँ देखैत तकरा ठोस रुपेँ जन समक्ष राखि देबाक साहस कयनिहार जनकवि यात्री द्वन्दात्मक भौतिकवादक समर्थक बूझल गेलाह। आ जनताक पीड़ाक अभिव्यक्तिकेँ कोनो वादक चोला पहिरायब जरुरी नहि, मुदा ओ सशरीरो कतौ लागल छलाह। ई हुनक निजी विचार ओ कर्मक बात रहय।

आधुनिकताक बढैत प्रभाव आ ताहिसँ उपजल अस्त-व्यस्तताक स्वरुपमे एकटा कविता द्वारा यात्री जेहन चित्र उपस्थित करैत छथि ओ देखल जाए-

"प्लास्टिकक लत्ती, प्लास्टिकेक फुल
रंग वेस चटकदार, गंध मुदा विभत्स....
रासायनिक मिक्श्चरकेर सड़लाहा काटिसन !
कोना क कोनो देवी होयतीह अनुकूल
सुंघि-सुंघि क ई फूल ?"

(मिथिला मिहिर, २२ मई १९६६ ई.)

हमरा जनैत यात्री अपन काव्य यात्राक क्रममे आगाँ आबि आर बहुत रास नव-नव विचारकेँ प्रस्तुत कयलनि। जंतेक भोगलनि ओतबे प्रखर रुपें ओकरा रखैत रहलाह। 'चित्रा' आ 'पत्रहीन नग्न गाछ'मे संकलित कविताक अतिरिक्तो बहुत रास कविता हुनक अनुभूतिक खुजल प्रदर्शनक रुपमे प्रतिष्ठित अछि।

अपन कर्म आ श्रम पर विश्वास कयनिहार श्रमजीवीकेँ अपना पर पूर्ण विश्वास होइछ जे ओ किछु ने किछु करिते रहत आ तकर साफल्य सेहो पाओत। समाजमे ओकर प्रतिष्ठा होयबे करतै आ अपन जीवनक सांझोमे दीपशिखाक प्रकाश निरन्तर पबैत रहत जे ओ अपन कर्म आ श्रमसँ जोड़ने रहैत अछि। कवि यात्री सेहो अपन कर्मक प्रति आश्वस्त छथि-

"दीयठिक जड़िसँ के करत बेदखल हमरा

ने जानि, कहिया, कोन युगमे,
भेटल छल वरदान
आकल्प हम रहब बैसल दीप-देवताक कोरमे ।”

(मिथिला मिहिर, २२ मइ १९६६ इ.)

कहियो मोजर नहि देबयबला व्यक्ति यात्री एकटा सम्पूर्ण कवि छलाह । गद्य ओ लिखलनि आ चर्चित भेलाह । कविताक जे शैली आ शब्द चयन ओ पाठक-श्रोता मध्य पहुँचौलनि तकर जोड़ा खोजब कठिन ।

यात्रीजीक काव्य स्वयं अपनामे एकटा कोष अछि, जकर गहन अध्ययन कयलासँ बहुत रास नव-नव वस्तुक प्राप्ति भए सकैछ ।



महाकवि विद्यापतिक नवीन रचना : वैद्य रहस्य

महाकवि नेपालमे बारहवर्ष प्रवास कएलनि ई सत्य अछि। ताहि समयक किछु ग्रन्थक नाम अबिते अछि -लिखनावली आ श्रीमद्भागवतक प्रतिलिपी । तकरा बाद हुनक चारि सयसँ उपर प्रमाणिक मैथिली पदसभ। साँच कहल जाए तँ इएह सुरक्षित सामग्री विद्यापतिक इतिहासकेँ पूर्ण रुपेंण स्थापित करैत अछि, हुनक विद्वता आ काव्य शौष्ठवके अग्रसिरत करैत अछि।

एखनधरि विभिन्न स्रोतसँ १५ ग्रन्थ धरिक सूचना देलजाइत अछि जे महाकवि द्वारा प्रणीत अछि। नेपालमे विद्यापतिक भनिता युक्त विभिन्न संग्रहमे एखनो बारह सयसँ उपर पद देखल गेल अछि जे देवनागरी, संस्कृत, मिथिलाक्षर आ नेवारी लिपीमे अछि। पंक्ति लेखकक संगमे आशा सफुकुथीसँ प्राप्त एक दर्जन जतेक विद्यापतिक भनितायुक्त गीतसभ उपलब्ध अछि, जाहि मध्येक दू गोट गीतक प्रस्तुति (समय साल, पटना) कएल गेल छल।

एहि क्रममे एकटा आर ग्रन्थक सूचना प्राप्त भेल अछि - आयुर्वेद ग्रन्थक। ओ चिकित्सा शास्त्रक ज्ञाता सेहो छलाह ई बात एहि ग्रन्थसँ बुझबामे अबैत अछि। एकर नाम थिक-बैद्य रहस्य (वृहत्सूचि, २०२१, पृ ७२) । ई देवनागरी लिपिमे लिखल अछि जे निश्चय नेपाल उपत्यकामे मल्ल शासनक सुदृढिकरणकेँ देखैत जय स्थिति मल्लक समयसँ गेल विद्वान लोकनि अपना संगे अनेको महत्वपूर्ण ग्रन्थसभकेँ सुरक्षार्थ काठमाण्डू उपत्यकामे लऽ गेलाह, ताहिमे विद्यापतियोक ई ग्रन्थ गेल हो से सम्भव। विद्यापतिए किए ? सिम्रौनगढक अन्तिम राजा हरिसिंह देव जखन दिल्लीक शासक गियासुद्दिन तुगलकसँ परास्त भऽ पहाड़ दिश पडएलाह तँ हुनका संगे विद्वान आ विभिन्न जातीय शिल्पकार, व्यवसायिक विज्ञसभ साथ लागि गेल रहनि। ओ किछु दिन एखनका सिन्धुली (नेपाल)क तीन पाटन ठाममे बास बसलथि । अपन बाँकी सेना आ दरबारी सभक सहयोगे छोटछीन राज्यो स्थापित कएलनि। ई स्थान एखनो हरिहरपुर गढी नामसँ जानल जाइत अछि। तखन ओ एत्तहि मृत्युवरण कएलनि अथवा काठमाण्डू उपत्यकामे जा कऽ, ई एखनो सोझराओल नहि जा सकल अछि। देशी विदेशी अनेकों विद्वानक मत बझैत रहल अछि। किछु गोटे काठमाण्डू उपत्यकामे रानी देवल देवीक संग गेल हएबाक बात कहैत छथि तँ किछु जाहिमे नेपालक इतिहासकार बेसी छथि, हुनक मृत्यु सिन्धुलीएमे भऽ गेल से बतबैत छथि। दुनू अवस्थामे सिन्धुलीसँ रानी देवल देवी आ महामंत्री चण्डेश्वरकेँ उपत्यका प्रवास प्रमाणित अछि , जकर प्रभावे क्रमशः मल्लवंसक शक्तिशाली शासन पद्धतिक शुरुआत भेल। एहु तरहे हिनका सभक संगे विद्वान आ जातीय विज्ञ समूह सेहो उपत्यका

आएल आ अनेको ग्रन्थसभकेँ संगे लेने आएल जकरा स्थीरसँ एत्त प्रतिलिपी करैत व्यवस्थित आ प्रचारित कएलनि। एहि तरहेँ १३२६ सँ शाह वंशक मध्यधरि मैथिली विद्वानसभक आगमन उपत्यकामे निरन्तर चलैत रहल , जकर प्रमाण अछि राष्ट्रिय संग्रहालय, आशा सफु कुथी आ निजी संग्रहालयमे एहुकालक प्रशस्त लिप्यान्तर कएल, उतारल गेल देवनागरीक ग्रन्थसभ। हमरा लग जे संग्रह अछि ताहिमे देवनागरी लिपी आ नेवारी लिपीमे अछि , जाहिमे हिन्दीक गीत आ नाटक सेहो छैक। ई शाहकालीन सामग्रीसभ अछि।

विद्यापति अपन पुस्तक वैद्य रहस्यमे लिखने छथि- समस्त दुरितध्वंसावहं पुण्यद ...सुखकरं सर्वार्थासिद्धिप्रदम् ॥ तँ नत्वांर्जुनमीश्वर गुरुकृपावाप्त्यै त्यै सुसिद्धैवरैर्योगैवैद्य रहस्यमद्य तनुते विद्यापतिःकौतुकम ॥ दीर्घदीर्घाःसुवहवो ग्रन्थाःसन्ति तथापिमे, सम्प्रदायिकयोगानां संग्रहार्थामयं श्रमः ॥ (वीर पुस्तकालय, सूचि २०२१ पृ ७२) तीन प्रति ग्रन्थ -रा. अभिलेखालय, आयुः सूचि २०५९ः पृष्ट ५४-५५)

राष्ट्रिय अभिलेखालय, आशा सुफुकुथी आदिमे विद्यापतिक एहि ग्रन्थक अतिरिक्त मैथिली लिपिमे लिखल अथवा मिथिलाक लेखकद्वारा लिखित २८ गोट आयुर्वेद ग्रन्थक सूची प्राप्त भेल अछि (ताराकान्त मिश्र : अभिलेख २०७३ वर्ष ३३, पूर्णाङ्क३३ , रा.अ., काठमाण्डू, पृ ४४-४५) ततवे नहि बाचस्पति मिश्र (सन् १४२५-१४९०)क निजी ग्रन्थ तिर्थचिन्तामणि (आशा सफुकुथी, १९९१,पृष्ट १५४) आचार्य नागार्जुन लिखित 'कक्षपुट' (आयु सूचि २०५९, पृ ९ : वाचस्पतिमिश्रस्यमिदं पुस्तकम्) आ हुनका द्वारा लिखित माधव निदानक टीका ग्रन्थ (आयु सूचि २०५९ पृ ७९) सेहो एत्त अछि।

सिम्रौनगढक राजा लोकनिक समयमे मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रसँ सम्मान पूर्वक दरवारमे राखल गेल विद्वान लोकनिक अनेको ग्रन्थ अभिलेखालय आ अन्य संग्रहालयमे मैथिली लिपी आ अन्य लिपिमे सुरक्षित छैक। एहि ग्रन्थसभकेँ उद्धार कऽ जँ अध्ययन कएल जाए तँ निश्चय सिम्रौनगढक इतिहास आर बेसी स्पष्ट रुपे विद्वत जनक आगाँ आओत। ई नेपाली इतिहासकार लोकनि करब आवश्यक नहि बुझलनि, मिथिलाक विद्वानसभक पहुँच अथवा ओ सब श्रमदेव नहि चाहलनि। एत्त भाषाक ज्ञान बाधक सेहो बनैत रहल।

हम जहिया प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे संस्कृति विभाग देखैत रही तँ एकरा उद्धारक प्रयास कएल आ तकरा लेल भवनाथ झा (पटना) जीक सहयोग लेबाक प्रयास कएलहुँ। मुदा किछु प्राविधिक असमर्थताक कारणे सफल नहि भऽ सकलहुँ।, एत्त मिथिलाक्षर आ संस्कृतक संग नेवारी लिपिक ज्ञाता सेहो चाही। हमरा रहए जँ मिथिलाक्षर आ संस्कृतसँ पहिने काज भऽ जाएत तँ नेवारी लिपिक ज्ञाता तँ काठमाण्डूमे अछिए, हुनको सभक सहयोग लेब। ई काज रुकल अछि। भविष्यमे कोना भऽ सकत कहब कठिन थिक।



महाकवि विद्यापति आ नेपाली परिवेश

मैथिली भाषाक महाकवि विद्यापति (१३६० ई. सँ १४५० ई.) एहन अप्रतिम व्यक्तित्वक कवि भेलाह जनिक काव्य शौष्ठव देश-विदेशमे पसरैत चल गेल । एकसँ एक विद्वान लोकनि हुनक कृत्तित्व-व्यक्तित्वकेँ अपना-अपना ढ़ंगसँ विश्लेषण कएलनि अछि । जेना कि यथार्थ रुपें सभक हेतु मान्य अछि । विद्यापतिक प्रभाव मिथिलाक अतिरिक्त वंगाल, असाम आ नेपाल पर सर्बाधिक पड़ल आ ताही परम्परामे अनेकों कवि अपन गीति रचनाकेँ समृद्ध कएलनि । ई हुनक प्रभावक अद्‌भूत विस्तार थिक ।

एतऽ हम विद्यापतिक नेपालमे भेल प्रभावकेँ आकलन करबाक प्रयास कएलहुँ अछि । विभिन्न विद्वान लेखक लोकनिक आलेखक माध्यमसँ विद्यापतिक नेपालसँ सम्वन्धकेँ स्थापित करबाक प्रयास कएल गेल अछि । कर्णाट वंशक अन्तिम शासक हरिसंह देव (१३२५ ई.)क दरवारमे रहल ज्योतिरीश्वर ठाकुर वर्णरत्नाकर गद्यग्रन्थक रचनाद्वारा मैथिली साहित्यक जाहि सुदृढ आधार एवं परम्पराक शुभारंभ कएलनि ओ विद्यापतिक समयमे आर सम्पूष्ट भेल । विद्यापति यद्यपि मधुवनी जिल्लाक विस्फी गामक निवासी रहथि, राजा शिवसिंहक दरबारी कवि एवं मंत्री रहथि मुदा ओ नेपालक धरतीसँ अपनाकेँ फराक नहि राखि सकल छलाह ।

एखन धरिक प्रमाणसँ ई प्रमाणित कएल जाइछ जे राजा शिवसिंहक पतनक बाद ओ रानी लखिमाकेँ लऽ नेपालक (सप्तरी जनपद) राजा पुरादित्यक अधोहिठाम बारह वर्ष छलाह । ओतय ओ लिखनावली लिखलाह, श्रीमद्‌भागवत्‌क उतार कएलनि आ आनो बहुत किछु कएने हएताह जे इतिहासकार लोकनि खोजि नहि सकल छथि । ताहु समयमे जनकपुर अपन इतिहास आ संस्कृतिके बचौने अस्तित्वमे छल, भले नाम किछु आर छल हएतैक । स्वयं महाकवि विद्यापति अपन ‘भूपरिक्रमण’ मे इति विद्यापति कृते भूपरिक्रमण जनकदेश विवृतोना अलसकथा समणपति (पृ.५०) चर्च कऽ अपन भ्रमणक यथार्थ सत्यापित कएने छथि । जँ कि पुरादित्य शिवसिंहक घनिष्ट मित्र छलखिन्ह तँ आवतजात अवश्ये होइत छल हएत आ मित्रवर विद्यापति संगे अथवा फूटसँ सेहो अबैत छल हएताह । चर्चाक प्रसंग विद्यापतिक नेपाल आ एतुक्का पशुपतिनाथक दर्शनसँ अवश्य जोड़ैत अछि । आब प्रश्न उठैत अछि जनकपुर एतेक लगमे बारह बर्ष धरि स्थायी वासमे रहितो विद्यापति राम-जानकी सम्वन्धी पदक रचना नगण्य मात्रामे कएने छथि से प्राप्त हुनक पद सबसँ ज्ञात होइत अछि । संभव थिक ओहि समयक ओ पद सब प्राप्त

नहि भऽसकल होइ । तखन लिखनावली आ श्रीमद्भागवत (हस्तलिखित) कोना प्राप्त भेल । जे से ई अनुसन्धानक विषय भऽ सकैछ ।

हम अपना सम्पादकत्वमे नेपालक एकमात्र सरकारी प्रकाशन संस्था साझा प्रकाशनसं विद्यापति आ नेपाल नामक एकटा संग्रह प्रकाशित करौल जाहिमे अनेको विद्वान लोकनि अपन आलेखमे विविध पक्षक चर्चा कएने छथि । एहि संग्रहमे डा. शशिनाथ झाक निबन्धसँ बहुत रास बात नव तथ्यकसंग अबैत अछि । ओ कएकटा प्रसंगकेँ उल्लेख कऽ नेपालसँ विद्यापतिक सम्बन्धमे स्पष्ट कएलनि अछि । किछु ठाम प्रमाणिक सन्दर्भक उल्लेख जरुरी बूझि पड़ैत अछि । तहिना डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक निवन्धमे सेहो विद्यापतिक नेपाल सम्वन्धकेँ दृढ़ता प्रदान कएल गेल अछि । पूर्वाञ्चलक नेपालमे विदापत गायन ओ अभिनय द्वारा विद्यापतिक प्रभावकेँ आइ धरि अक्षुण्ण रहबाक अपन खोजकेँ प्रस्तुत कऽ मौनजी एकटा ठोस काज कएलनि अछि ।

सबसँ महत्वपूर्ण अछि एकटा बातकेँ बुझब - विद्यापति साहित्यक प्रमाणिक स्वरुपक दिग्दर्शन नेपालक पुस्तकालय आब अभिलेखालयमे सुरक्षित पाण्डुलिपि सबसँ विद्वान लोकनिकेँ भेलनि । ‘कीर्त्तिलता’, ‘कीर्त्तिपताका’ सन ग्रन्थ हो अथवा पदावलीक अधिसंख्य प्रमाणिक पद सब । एखनो विद्यापतिक दर्जनो पद सब विभिन्न नीजि संग्रहमे सुरक्षित अछि । जे अधिकांश नेवारी लीपिमे अछि । तकर उद्धार हयब जरुरी छैक । पंक्ति लेखककें एम्हर किछु पाण्डुलिपि सब देखबाक अवसर भेटलैए आ ओकर उद्धार दिश प्रयास भऽ रहल छैक । १८२३ ई. मे एत्त एकटा नेवार लिपिकारद्वारा उतारल किछु महत्वपूर्ण गीत सबमे विद्यापतिक नौ गोट गीत देवनागरीमे भेटल अछि । यद्यपि गीतक भनिता विद्यापतिक बोध करबैत अछि । एखन धरि प्राप्त विद्यापति गीतक जे पांति एवं लयक क्रम होइछ, गेयता, भावक विपुलता, कल्पनाक सूक्ष्मता, माधुर्यक रस, भाषा आ अभिव्यंजनाक सौन्दर्य एहि गीत सबमे नहि छैक । लिपिकारक किछु पंक्ति, शब्द छोड़ने सन लगैत अछि । भऽ सकैछ सुनल वा ककरो द्वारा गाओल गेलाक बाद उतारल गेल हो । ई परीक्षण बाँकी अछि ।



मणिपद्मक काव्य चेतना

मैथिली साहित्यक साधक व्यक्तित्व डा. बज्रकिशोर वर्मा “मणिपद्म” बड़ थोड़ कविता लिखलन्हि। सम्भवतः दूदर्जनसँ कम्मे। ई कविता विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि। हमरा जनैत जाहि तरहें ओ गद्य लिखैत चलाह, से कोनो कवितासँ कम नहि छलैक। हुनक उपन्यास किंवा कथा सभमे प्रयोग भेल एक सँ एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति एकर उदाहरण थिक। मुदा जतबा ओ पद्य लिखलनि से हुनक व्यक्तित्वकें कविक रुपमे स्थापित करबामे सफल रहल अछि।

“मणिपद्म”क पहिल कविता “कौसर” छल जे १९६० ई. मे ‘मिथिला मिहिर’ मे छपल आ जकरा सर्वप्रथम ‘कविता-कुसुम’ मे संग्रहित करैत आचार्य रमानाथ झा कविक परिचयमे लिखने छलाह-“श्री ब्रजकिशोर वर्मा, डाक्टर, बहेड़ाक कर्मठ जन-सेवा-संलग्न युवक साहित्य-रसिक भावुक लोक छथि। हिनक बहुमुखी प्रतिभा मैथिलीक भण्डारके पूर्तिमे बराबरि सेवा करैत अछि। ई हृदयसँ प्रगतिवादी छथि ओ वर्णनक वैशद्य हिनक प्रतिभाक सबसँ पैघ गुण अछि। गद्य हो वा पद्य, भावुकता हिनक शब्दमे कूटि-कूटिकें भरल रहैत अछि। हिनक कवितामे प्रवाह अछि, सृष्टिक सौन्दर्यक दिशि दृष्टि अछि, भावक प्रधानता अछि, परन्तु संगहि संग आदर्श ओ वस्तु स्थितिक मध्य जे विषमता ई देखैत छथि तकर करुण-ध्वनि हिनक कवितामे बहैत रहैत अछि।”कवि ‘मणिपद्म’क एहिसँ नीक परिचय की भऽ सकैछ। प्रकृति प्रति निश्छल भाव प्रदर्शन ओ तकरा संगे स्वयंके अभीभूत कऽ देब हिनक काव्य वैशिष्ट्य छन्हि। अपन गामक पैघ गौचर ‘कौसर’के देखि कऽ आएल पहिल कविताक प्रष्फूटनमे तेहने प्रकृति प्रेम आ तकरा चारुकात छिड़िआएल गमैया जीवनशैली, ओकर दर्द, विकृति आ दयनीयता देखि पड़ैत अछि। देखी एकटा प्रसंग-

“दिव्य भावना उड़ि-उड़ि घुरि-घुरि नाचि रहल अछि
हमरे अन्तर पढ़ि-पढ़ि मन्तर चाँछि रहल अछि
हरित नील आच्छाद रम्य मिथिला केर कौसर
लहरि-लहरि ओ सिहरि-सिहरि प्रमुदित ई सखर।

....

किन्तु अरे ! ई कोन महाकृष्णा दल केर दल
शोषित मर्दित अर्धबुभुक्षित आर पहिरने गुदरी फाटल
अधजरुआ जारनि सन झरकल मुखड़ा सूखल चोटकल झांझर
पद्मक दलमे गरसौं जलमे मानव झुकल व्यथासँ जर्जर।”

प्रकृतिक सौन्दर्यमे अपन भुख मेटएबाक साधन खोजैत अर्धनग्न, भूखल दयनीय अनुहारसभ ओहि सौन्दर्य आ उन्मुक्ततासँ फराक समाजक व्यथाकथाक एकटा फूट कथा कहैत अछि । कविक ई अनुभूति समस्त मिथिला किंवा देशक पीड़ाकें सशक्त रुपें उजागर करैत अछि ।
तएँ ने मैथिलीक सुप्रसिद्ध समालोचक, इतिहासकार डा. राधाकृष्णा चौधरी लिखने छथि "He is a great humanist. He values life very much. Manipadma is a poet of the people, a poet down to earth as Tagore had once Visulised of near poet."

(डा. चौधरी : A Survey of Mathili leterature, पृ. २०६)

मणिपद्म तंत्र मंत्रक साधक सेहो छलाह । बौद्ध धर्मसँ कतेक प्रभावित रहथि ई हमर ज्ञानक विषय नहि अछि, मुदा हुनक किछु कवितामे बुद्ध ओ बौद्ध तत्वक चर्च जरुर भेल अछि । हिनक महाकाव्य 'अनंग कुसमा'क कोशी कुसुम पत्रिकाक १९८५-१९८६ क अंकमे ६: सर्ग प्रकाशित अछि । वादमे ई १९९९मे पुरस्तकाकार रुपें प्रकाशित भेल, जकर भूमिकामे डा. प्रफुल्ल कुमार मौन लिखने छथि "अहं पर करुणाक विजय, अष्टांगिक मार्गसँ बुद्ध तत्व (दर्पत्व) ओ पद्म साधनासँ दिव्यत्वक प्राप्ति, महामैत्री ओ महाकरुणाक संदेश आर सद्धर्मक लोकोन्मूखी अवधारणा आदि अनंग कुसमा'क आलोकित पक्ष थिक ।..........
अनंगकुसमा' मे काव्यगुण, छंद, अलंकार आदिक प्रयोगमे डा. मणिपद्मक असाधारण कौशल ओ सामर्थ्यक दर्शन होइत अछि ।"
'अनंग-कुसमा'क पांचम सर्गक किछु छन्द-

"सब लै इ साधना सुलभ अछि,
बुद्धत्वक अधिकार
अधिकारी लै मुक्त रहइ अछि
आर्य अष्टांगिक द्वार"

तंत्र साधनाक ई दुर्लभ क्षण आ प्रवृतिकें अपन काव्यमे उतारैत डा. 'मणिपद्म आगा लिखै छथि -

"अपन चिन्तनक यात्रा क्रममे
महागुफामे पैसलि ।
महामन्त्रसँ स्पन्दित छलि
कुसमा डुबलि बइसलि"

अनंग -कुसमाकेँ अपन दीन दुनियाकेँ चिन्तन करैत सांसारिक जीवन मोह एवं विधि विधानक विस्तारपूर्वक गंथन करैत देखाओल गेल अछि । अपना

भितरक बुद्धिमताकैँ जगएबाक हेतु साधनाक जरुरी छैक,, महामन्त्रकैँ जरुरति छैक-ऊँ मणिपद्मे हुँ ।

कुसमा चिंतन करैछ -

१७

'उँकारे सिरजन करैछ,
सृष्टिक स्पन्दन ।
उँकारे गायत्री करैत अछि,
बुद्धिक मंथन ॥

१८

उँकारे अछि मन्त्र स्रोत
आ तंत्रक आकार
ऊँकारे कर अछि मानसमे
उंत्र उजागर ।'

मालिनी सम्प्रदाय समान्यतः तंत्रमंत्रक विशेष ज्ञाता होइत छलीह । 'राजा सलहेस' उपन्यासमे डा. मणिपद्म एकर नीक चर्च कएने छथि । तकरा पद्यमे उतारैत हिनका अनंग कुसमा एहु दुआरे प्रिय पात्र बुझएलनि जे एकरा माध्यमे ओ अपन तंत्र साधना आ प्राप्त बौधित्यकैँ प्रकट कऽ सकथि । जँ कि कुसमा स्वयं तंत्र मंत्र विद्याक पारंगत महिला छलीह ।

डा. मणिपद्मक जे जतेक कविता सभ छपल छन्हि ओ खास कारणे लिखल बुझाइत अछि । कोनो बात कहबाक छन्हि तऽ कवितामे तकरा नीक जकाँ समेटि कऽ राखि देव । आब सामाजिक विकृतिक दंशकैँ महशुस करैत कवि महाकवि विद्यापतिकैँ सम्बोधित करैत कविता लिखै छथि -'कवि कोकिलसँ भेंट (१९५३ई.) । 'नविन गीतमे संकलित एहि कविताक माध्यमसँ अतीत आ वर्तमानक तुलनात्मक चित्र उपस्थित करैत वर्तमानक विषमता देखएबाक प्रयास करैत छथि । युग परिवर्तनक चित्र, श्रमशील मानव जीवनक सत्यकैँ स्थापित करैत ई कविता समाजक विपन्नताकैँ मार्मिक आ व्यंगक रुपमे प्रस्तुत भेल अछि । विद्यापतिक संग सभ पात्रकैँ श्रमजिवी बना प्रस्तुत करैत काल कवि कतेक मार्मिक उपस्थापन कएने छथि -

'नोर पिबथि प्यासल विद्यापति,
उदना गेलई पूव कमाइ लै ..'

समाजक एहि विषम अवस्थासँ बचबाक लेल कविक प्रगतिशील स्वर सेहो फुटैत अछि -

(८)

'हम बजौल बस अपन मुक्ति लै

तों बजबह जन जनक मुक्ति लै
बहथि क्रान्तिकेर गंगा थर-थर
शुचि समताकेर दिव्य सुक्ति लै ।'

जन-जनक मुक्तिक हेतु विद्यापतिक आह्‍वान ! बलिदान आ क्रान्तिक अपेक्षा , कवि कतेक विचलित भऽ उठल छथि से दखी -

'..बलिदानीक रक्त सँ रंजित
मधुरी शत शत आई फुलइ छल ।'

सामाजिक वीसंगति, विकृति आ विद्रुपता हिनका क्रान्तिकारी, प्रगतिशील किंवा वलिदानीटा बना कऽ राखि देने छनि से नहि ओ राग अनुरागक जीवन सत्यसँ अपनाकेँ फराक नहि राखि सकल छथि । प्रकृति चित्रणक बीच कविक मोनमे उठैत राग-अनुरागक सूक्ष्म अनुभूति एहि बवितामे स्पष्ट रुपें देखल जा सकैछ -

'मेघ करत काचर-कुचर घोघ तानत चान ।
हृदयक व्यथा कोनो मारत मधुवाण ॥
हवा वहत झिहिर झिहिर मन भसिऐत ।
अन्तरक क्रन्दन नेने कोकिल गैत ॥'

हुनक काव्य रचनामे एकटा गीति रचना 'गीतनाद' सेहो देखि पड़ैत अछि । अपन जीवनक सत्यकेँ अरुचिकर कऽ नहि भेटबला तत्वक पाछा भ्रमवश बौआइत मानसिकताक सुन्दर चित्रण एहिमे कएने छथि । सत्यकेँ अनठा मिथ्याक पाछा बेहाल हएनाई दिश संकेत करैत कवि लिखै छथि -

'स्वप्नक पाछु दौड़ल जाइ छी सत्य तकइ ले
सत्य हमर रुसल जाइए स्वप्न बनइ ले ।
धरती छोड़ि मेघ पर एलौं अम्बर छुबईले
बुन्नी बनि -बनि मेघ बरिसल धरती चुमईले ।'
(मणिपद्‌म,ले. हंसराज । प्र. साहित्य अकादमी,पृ.६६)

छन्द रचनाक संगहि मुक्त वृत्त रचना करबाक कौशल डा. मणिपद्‌मकेँ छलनि । ओ एहन रचनामे सांसारिक व्यामोह, उतार-चढाओ, दुःख-सुख, कुण्ठा आ जिजिबिषाक स्पष्ट चित्रण कएने छथि । 'मृग , मयूर आ कोकिल मन हे' शिर्षक कविताक ई अंश एहि सत्यकेँ उद्‌घाटित करैत अछि -

'हरित नीलाम
मानस-क्षितिजपर
लहरा उठैछै जखन
घनश्यामक
पीत विजुरिपर

आ बाजि उठै छै
कोनो महारासक मृदंग
गुडुम-गुडुम-डम
उमड़ि अबैत छै नव कालिन्दी
ताहि क्षणमे
हे हमर मन -मयुर !
हेरि-हेरि आगत प्रियदर्शनकें
कोन अज्ञात उल्लासमे भरि
पसारि अपन छविमय पांखि
नाचय लगैत छी
से हे हमर
मृग, मयूर आ कोकिल मन
ई कोन अज्ञात, अनन्त आ अव्यक्तक
सौरभ, ताल- गति आ तान
अपनामे भरि कऽ
ओहिपर लट्टु भेल
ओकरा व्यक्त करबाक प्रयासमे
जीवन भरि
अपस्यांत
घुरमैत
रहलहुँ अछि । '

(मणिपद्म,ले. हंसराज ।प्र. साहित्य अकादमी,पृ.६८)

कवि मणिपद्मक सम्बन्धमे हंसराज लिखैत छथि- 'हिनक रचना लोकजीवनकेँ देखार करबाक प्रयासमे अछि । तें ओकर सुख-दुख, आश-निराशा आ ओकर सौन्दर्य आ अवसादक चित्रण ओहिमे भेटैत छैक । फलतः ओकर उपेक्षा एकटा अनुराग उत्पन्न करैत अछि । ओ केबल श्रद्धेय योग्यता नहि रखैत अछि, अपितु आकर्षण सेहो जगबैत अछि यथार्थ स्थितिक वर्णन करबामे ई तेहन सफल छथि जे केओ सहृदय द्रवित भए जएबाक स्थितिमे आवि जाएत छथि...। (मणिपद्मः लेखक- हंसराज, पृ-६५, साहित्य अकादमी १९९६ ई.)

डा. ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मकेँ मिहिरक माध्यमे हम बरोबरि पढैत रहल छलहुँ । खास कऽ हुनक लोक साहित्यक प्रति प्रतिवद्ध लेखन हमरा आकर्षित करैत रहैत छल-राजा सलहेस, नयका बनिजरा, अनंग कुशमा, लबहरि-कुसहरि आदि-आदि । हमरा तहियो हुनक गद्यमे काब्यक समस्त गुण भेटैत छल ।

भाषाक प्रवाह चरित्र चित्रणमे काव्यमय उपस्थापन जे बस्तु आ चरित्रकेँ पाठकक सोझां विराट रुपे ठाढ कऽ दैक । ताहि काव्य वैशिष्ट लेखनसँ एतेक हम प्रभावित रही जे जखन हुनक मृत्युक खबर आएल रहए तँ हम हुनका श्रद्धाञ्जलीयो कवितासं देने रहियन्हि जे पटना सँ प्रकाशित होबयबला कोशी कुसुममे तहिया छपल छल । कविताक भाव रहैक -मणिपद्मक परोक्षमे मैथिली लोक साहित्यक अध्ययन, अनुसन्धान कतौ ठमकि नहि जाए !
ई दोसर बात छैक जे ई क्रम निरन्तर चलि रहल अछि । बहुतो अध्येतालोकनि साहित्यक विविध पक्षपर कलम चला रहलाह अछि । हँ जे गहिँराई आ ओजस्वीता मणिपद्मक भाषामे छल, से अखन भेटब दुर्लभ अछि । आ हमरा जनिते ई हुनक ताहि काव्यमय भाषाक चमत्कार मानल जएबाक चाही । की गद्य आ की पद्य, सभ दिश हुनक काव्य प्रतिभा परिलक्षित होइत अछि ।
जाहि तरहे अपन उपन्यास आ आलेख सभमे काव्यमय भाषाक प्रयोग ओ करैत छलाह, ताहिसँ हुनका फुटसँ काव्य रचनाक जरुरते ने बुझाइत छल हएतनि । तएँ सम्भवतः हुनक काव्य कृति बड़ थोड़ अछि । जे थोड़ बहुत कविता लिखलन्हि ओ हुनक कोमल भावनाक दिग्दर्शन करबैत अछि, जीवनक उतार-चढाओकेँ रेखांकित करैत लगैत अछि आ सभसँ बेसी अपन माटि पानि आ संस्कृतिक प्रति साकांक्षा दृष्टिक पूर्ण साक्षात्कार बुझि पड़ैत अछि । देखी एकटा बानगी -

'तोहर शिवसिंह लागनि धैने
आगु बरदक जोड़ी नेने
लखिमा कानथि अन्न विना रे
चोटकल शिशुकेँ कोरा नेने ॥
तोहर राधा जाड़नि तोड़थि
कृष्ण पसर उठि महिष चराबथि
नन्दक घर छनि गाय तीनटा
एक बुन्न घोरो नहि पाबथि ।'

(कवि कोकिल सँ भेंट- संकलकः डा. गोविन्द झा व्यथित)

वर्तमान सामाजिक परिवेश प्रतिक ई आक्रामक रुप मणिपद्मकेँ आनो कवितामे देखबामे अबैत अछि । ओ मिथिलाक जाहि माटि -पानिक प्रतिनिधित्व करैत छलाह ओ हर-कोदारिक गणितमे पालित अछि । ओकरे चारु कात चरभाउर मारैत आएल अछि । तएँ ओ विम्वक प्रयोगकेँ लेल ताहि वस्तुकेँ आधार बनाए सामाजिक विकृति आ कुंठाकेँ स्पष्ट करऽ चाहैत छथि । प्रकृतिक चित्रण करैत काल सेहो एहि विषयपर साकांक्ष रहैत छथि जे मोनक भावतन्तुकेँ शब्दक आकार दैत काल सान्दर्भिकता आ प्रगतिशिलताक बोध धरि अवश्य हुअए -

'हर आगू बढल जैत कोदारि करत निनाद
हुलकि हुलकि आंकुर कहत नवल समाद...।'

('मैथिली कवि दर्शन',सं. व्यथितमे संकलित रचना सँ)

प्रगतिशिलता प्रति कवि सचेष्ट छथि, मुदा हिनक उपस्थापनसँ कोनो बैचारिक विवाद ठाढ होअए, अथवा ककरो अबुह लगनि से हिनक मनशाय कहियो ने रहलनि । तएँ हिनक कतेको कविता वैचारिक द्वन्दकेँ एना कऽ अपना भितर समेटने रहैत अछि जे पाठककेँ सहजहि विभोर कऽ दैछ ,कतौ कोनो दुआभाव उत्पन्न नहि होबऽ दैछ , अपन 'युग देवता' कवितामे ओ 'जन-जनमे समता अधिकार'क उद्घोष कऽ अपन प्रगतिशिलताकेँ रखलनि अछि जरुर, संगहि कहैत छथि-'अहींक प्रगतिमे युगक प्रगति अछि '।

मणिपद्म खुब लिखलनि आ तएँ खुब घुमलाह । ओ तंत्र मंत्र साधना कएलनि, ज्योतिष शास्त्रक अध्ययन -मनन् कएलनि । हुनक साहित्यमे ताहि अध्ययन ओ साधनाक स्पष्ट छाप देखल जा सकैछ । जाहि रुपें ओ शब्दक पहाड़ ठाढ़ कऽ ककरो जीवंत परिचय स्थापित करैत छथि ओतहि शब्द साधनाक बलपर संभव भऽ पबैत अछि । एकटा एहन अवस्थाक चित्रण जाहिमे जवान युद्धभूमिमे लड़ि रहल अछि । मातृ भूमिक खातिर जान निछाबर कऽ रहलअछि । एहि वीरतापूर्ण काजकेँ आर ओजपूर्ण बनएबाक हेतु मणिपद्मक दुंदुभि एनाकऽ बजैत अछि -

'कंचन जंघा डगमग -डगमग
मान सरोवरमे तुफान
जय जय भैरवि असुर भयाउनि
अधर-अधर पर गुंजय गान ।'

(चिनी आक्रमणक समय लिखल कविता तखन कोन सोनाकेर मोलसं)

उपसंहार -

मणिपद्म बड थोड़ कविता लिखलनि । हिनक गद्यमे कविताक अभास होइत अछि । हमर मान्यता अछि, कविता जं गद्यमे लिखैत रहलाह तएँ फुटसँ लिखब ततेक जरुरी नहि बुझलनि । जे लिखलनि ताहिमे जीवन सौन्दर्य, प्रकृति वर्णन आ सामाजिक विकृति, विडंबना आ श्रमशील व्यक्तित्वक बेदनाकेँ नहि बिसरलाह ।

कविता मानवीय सम्वेदनाक सहज उपस्थापन होइछ, जे जीवन शैलीक हरेक विधि-विधानकेँ निर्विकल्प रुपें राखल जाइत अछि । हमरा मणिपद्मक सम्पूर्ण कविता यात्रामे मानवीय सम्वेदनाक सभ पक्ष भेटल अछि । जे हनुक काव्य वैशिष्ट्यक द्योतक अछि । हुनक काव्य चेतनाक दिग्दर्शन करबैत अछि ।



खण्ड : तीन

(भाषा, साहित्य, सरकार)

पूर्व राष्ट्रपति डा. यादव आ मैथिली साहित्य

एक त चिकित्सक । दोसर शुरुहेसँ कांग्रेसी राजनीतिमे लागल किछु अक्खर टाइप मनुख्खक रुपमे जानल जाइत । तखन कपारक जोड़ रहलाह-अनचोके देशक पहिल राष्ट्रपति बनबाक शौभाग्य भेटलनि । संक्रमण कालक समय । अवधिक कोनो ठेकान नहि । एक्को वर्ष आ कतेको वर्ष । शोभाग्यशाली एहु मायनेमे जे ने सम्बिाधन बनल आ ने विगत संम्बिधान सभा कायम रहि सकल । दोसर चुनाव भेलैक आ नयाँ संम्बिधान बनबाक तिथि-मिति घुसकैत गेलै । आ एही अफरा-तफरीमे राष्ट्रपतिक समयावधि सेहो घुसकैत गेलै । से एना क घुसकल जे सात वर्ष पार क गेल ।

सात वर्ष नेपालक एकभंगाह जातिय आधिपत्यवला देशमे राष्ट्रपतिक गौरवशाली पदपर आसीन रह बला शौभाग्यशाली मधेशी छथि–डा. रामवरण यादव । जी, धनुषा जिल्ला, सपही गामक एकटा आम नागरिक जे भैंसक पीठसँ राष्ट्रपतिक सिंहासन धरि यात्राक पथिक तँ बनलाह अनचोके जरुर मुदा यात्रीक रुपमे अपन सफरकें अपना काविलियतसँ छाती तानि क जीलनि । खादा आ गमछाक संग तालमेल मिलबैत ओ अपन कार्यकाल समाप्त कएलनि ।

से आब लगैय–कोनो मधेशीकें एहन सम्मानित पद पर वर्तमान सरकारक बादो कोनो सरकार ल ओतैक तकर सम्भावना क्षीण अछि । तखन एहि ठाम पूर्व राष्ट्रपति डा. रामवरण यादवक ओ काज जे मैथिलीकें मजगूत कएलकैक अछि तकर स्मरण कर चाहब ।

ओ व्यवहारसँ कनेक रुक्ख ढंगक लोक पूर्वमे रहथि । राष्ट्रपति बनलापर ओहिमे सुधार भेलनि आ तखन चूडादहीक जलखईक संग आगन्तुक प्रियजनसँ सहज वातावरणमे बातचीत करैत छलाह । भले ओ नेपाली टोपी पहिरल करथि, अवसर भेटनितँ मैथिली पाग ओहिपर लादब नहि बिसरैत छलाह । टोपीके उपर पाग ! बेसी आलोचना मिथिलांञ्चलेमे होइत छलनि । मुदा ओ जे काज प्रतीकात्मक रुपे करैत छलाह ओ त लाजवाव रहै नै औ !

मोन पड़ैत अछि एकटा घटना । हमर नाटक संग्रह महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (२०५४ साल)के विमोचन तत्कालीन सद्भावना पार्टीक अध्यक्ष

आ मंत्री गजेन्द्र नारायण सिंह कयने रहथि। नाटकक मुखपृष्टपर टोपी पहिर क सुतल एकगोटेकें वरछीसँ दोसर गोटे भोंकैत रहै। वास्तवमे ओ ताही नाटकक मंचनक दृश्य रहैक। से हुनका एतेक प्रभावित कयलकनि जे ओ तत्काल सय काँपीक पाइ दैत गाड़ीमे पुस्तक रखबा देवाक बात कहने छलाह।

जे से डा.यादव जहिआ कहियो मैथिली कार्यक्रममे जाथि ओ अपन मातृ भाषा मैथिलीक प्रति निष्ठा प्रदर्शन करबासँ चुकथि नहि। सम्भवतः इएह भाषा प्रेम हुनका दिल्लीक नाटक मंच धरि ल गेल रहनि, जत्त हुनका जाएब बहुतोकें अखरल रहैक।

हमर अनुरोधसँ ओ दू बेर हमरा द्वारा आयोजित/संयोजित अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक प्रमुख आतिथ्य ग्रहण कयने छलाह। पहिल बेर काठमाण्डूमे २०६७ साल (२०११ ई.) मे त दोसर बेर २०७१ साल (२०१४ ई.) जनकपुरधाममे। दूनू बेर आधा दर्जन पुस्तक, पत्र-पत्रिकाक विमोचन, एक दर्जनसँ उपर विद्वान सभकें मिथिला रत्न आ मिथिलाश्री सम्मान प्रदान कएल गेल रहनि हुनके द्वारा।

जखन तमिलनाडुक चेन्नईमे अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन भेल छलैक तँ आयोजक सभक आग्रहे हम ओत्त प्रमुख आतिथ्य ग्रहण करबा लेल राष्ट्रपतिके कहने रहियनि। प्राविधिक कारणसँ से सम्भव त नहि भेलनि मुदा शुभकामना सन्देश हमरे द्वारा पठौने छलाह, जकरा हम स्वयं मंचसँ पढि सुनौने रहिऐक।

विद्यापति पुरस्कार कोष द्वारा दू सालक पुरस्कार एक्के बेर देल जएबाक तैयारी भेल तँ ओहु अवसरपर ओ पुरस्कार दैत मैथिली भाषा, साहित्यबारेमे गहीर बात सभ कहने छलाह। पुरस्कारक गरिमा ओहिसँ बढल रहैक। आब त अवस्था ई अछि विद्यापति पुरस्कार संस्कृति मंत्री त की सचिवोक हाथसँ बटबाक अवस्था रहत कि नहि कहब हठिन अछि। कातिक मसान्त धरि पुरस्कारक घोषणा हएब जरुरी होइछ, ई लिखाइत काल धरि (२६ गते कातिक २०७२) तकर कोनो अत्ता-पता नहि छैक।

डा.यादव आब राष्ट्रपति नहि छथि। कोनो बात नहि। ओ सात वर्ष खूब शानसँ रहलाह। मिथिला, मैथिल आ मधेशक नाक ठाढ क सर्वोच्च्व पदक गरिमा बढौलनि। भले ओ पदपर नहि छथि-मैथिली भाषा, साहित्यक हेतु अपन उपस्थिति आ उद्‌गारसँ जे जतेक कएलनि से सर्वथा स्मरणीय रहत।



भाषा व्यवस्थापनमे कहाँ चुकि रहल अछि प्रदेश सरकार

<u>पृष्टभूमि</u>

नेपाल संघीयतामे गेलाकबाद सातो प्रदेश अपन-अपन प्रदेशमे बाजल जाएबला भाषासभके स्थिति आ तकर सम्विधान सम्मत उपयोगकेलेल विभिन्न तैयारी शुरु करबाक चाहैत छल । आ ताहि काजमे मदत करबाक लेल नेपालके सम्बिधानके धारा २८७ मे व्यवस्था भेल बमोजिम २०७३ साल भादव २३ गते एकटा भाषा आयोगके गठन सेहो कएल गेल अछि । भाषा आयोग विगत चारि वर्षमे सातो प्रदेशकलेल आवश्यक तथ्यांक आ विवेचना सहितक प्रतिवेदन सरकारके बुझा चुकल अछि । बरु टटका प्रतिबेदनमे प्रदेश नं.-२ (आबक मधेश प्रदेश)मे सरकारी काम काजक भाषाके रुपमे मैथिली, भोजपुरी आ बज्जिकाके राखबाक सुझाओ देने अछि ।
वि.स. २०६८ सालमे भेल राष्ट्रिय जनगणना नेपालमे १२३ टा भाषाके अस्तित्व देखओने अछि । एहि मध्ये १ लाखसँ अधिक बाजल जाएबला भाषा-भाषीके संख्या ९६ प्रतिशत देखलगेल अछि । तकरा अतिरिक्त १ हजारसँ १० हजार धरि बाजल जाएबला भाषा-भाषीके संख्या ३७ देखलगेल अछि त १ हजारसँ कम बाजल जाएबला संख्या सेहो ३७ रहल तथ्यांक देखओने अछि ।
नेपालक सम्बिधानके धारा ६ मे नेपालमे बाजल जाएबला सभमातृभाषा राष्ट्रभाषा अछि त धारा (७१) देवनागरी लिपिमे लिखल जाएबला नेपाली भाषा नेपालके सरकारी कामकाजके भाषा हएत से लिखने अछि ।
एखन धरि भाषासभके वास्तविक अवस्था पत्ता लगाबए लेल औपचारिक भाषा सर्भेक्षण नहि भेल अवस्थामे भाषानीति निर्धारण करबामे कठिन हएब स्वभाबिक अछि । तथ्यांक देखओने संख्या प्रति बीच-बीचमे असन्तुष्टि सेहो आएले अछि । बरु एकरा मिथ्यांक सम्बोधन क अपन उपरागसभ सेहो समय-समयमे होबएबला सेमिनार, गोष्ठी आदिमे प्रकट कएल जाइत अछि । ताही कारणसँ सेहो भाषा वैज्ञानिकसभके देखरेखमे राज्यव्यापी भाषा सर्भेक्षण कएनाई जरुरी देखलगेल अछि । जाहिसं भाषासभके प्रकृति, तकर समाजमे प्रभाव, पठन-पाठनमे प्रयोगके स्थिति एवं आवश्यकता, सरकारी कामकाजमे प्रयोग आ राज्यद्वारा ओइ भाषा प्रति सकरात्मक आ रचनात्मक विकासके मापदण्ड तय करबाक समय ओ भाषिक गणनाके आधार लेल जा सकए ।
भाषा सर्वेक्षण भाषाके वास्तविक अवस्था देखओलाकबाद सम्बिधानमे अनुसूचिके व्यवस्था क मापदण्ड पहुँचएने भाषासभके सूचिबद्ध क तकर विकासकलेल कार्यक्रम आ अवसर उपलब्ध कराओल जा सकैत छल । एहिमे मधेश प्रदेश भितर बाजल जाएबला भाषासभ सेहो तहिना राज्यद्वारा उचित

सम्मान आ अवसर पाओत। कोनो भाषाके विकासकलेल तकर सुदृढ आधार समाजमे स्थापित होएबाक चाही। आ ई तखन मात्र सम्भव हएत जखन तकर लगत वैज्ञानिक आधारमे तैयार कएलगेल होए।

यद्यपि एखन नेपालमे होइत आएल जनगणना एकरालेल मुख्य आधार रहल अछि, जाहिमे भाषा-भाषीके संख्या प्रमुखता पओने अछि। राष्ट्रिय जनगणना २०६८, १ लाख सँ अधिक बाजल जाएबला भाषाके संख्या १९ टा देखओने अछि। नेपाली (४४.६४ प्रतिशत), मैथिली (११.६७), भोजपुरी (५.९८), थारु (५.७७), तमांग (५.११), नेवारी (३.२०), बज्जिका (२.९९), मगर (२.९८), डोटेली (२.९७), उर्दु (२.६१), अबधी (१.८९), लिम्बु (१.३०), गुरुंग (१.२३), बैतडेली (१.०३), राई (०.५४), बान्तबा (०.५०), राजवंशी (०.४६) आ शेर्पा (०.४३) (श्रोत : केन्द्रिय तथ्यांक विभाग, राष्ट्रिय जनगणना २०६८)।

भाषा तथ्यांक अनुसार मधेश प्रदेशमे बाजल जाएबला ८९ भाषासभमेसँ १ लाखसँ अधिक बाजल जाएबला भाषाके संख्या सात अछि। एकटा महत्वपूर्ण तथ्य की देखलगेल अछि जे राष्ट्रिय स्तरमे १ लाखसँ अधिक बाजल जाएबला दश भाषामेसँ ई सातो भाषा मधेश प्रदेशमे सेहो अछि। ओ अछि- मैथिली, भोजपुरी, बज्जिका, नेपाली, उर्दु, थारु, तमांग।

मधेश प्रदेशमे भाषाके अवस्था आ तकरा लेल विकास आ समृद्धिके नीति बनाबएबला प्रयोजनके लेल ई सातटा भाषाके आधार बनाओल जा सकैत अछि। मुदा एहिमे नेपालके सम्बिधान भाग-१ : प्रारम्भिकके दफा: ७ के उपदफा (२) मे लिखल "नेपाली भाषाक अतिरिक्त प्रदेश अपन प्रदेश भितर बहुसंख्यक जनता बाजल जाएबला एक वा एकसँ अधिक अन्य राष्ट्रभाषाके प्रदेश कानून बमोजिम प्रदेशक सरकारी कामकाजके भाषा निर्धारण कर सकत" वाक्यके आधार मानए पड़त।

उपदफा (३)मे भाषा आयोग सिफारिश कएलाकबाद नेपाल सरकार जे निर्णय करैत अछि ओ बात सेहो संगहि लिखल गेल अछि।

एना नेपालक भाषासभमेसँ मधेश प्रदेशमे बहुसंख्यक जनता बाजएबला भाषासभ प्रति आगामी दिनमे की केहन व्यवस्थापन कएल जाएत से आजुक चिन्तनके विषय अछि।

मधेश प्रदेशमे भाषा

एहिसँ पहिनही चर्चा कएलगेल अछि-मधेशप्रदेशमे ८९ भाषासब अछि। (राष्ट्रिय जनगणना २०६८)। एहिमेसँ मैथिली सभसँ अधिक २४ लाख ४७ हजार ९ सय ७८ बाजल जाइत अछि। दोसर स्थान भोजपुरी (१०,०३८७३) लेने अछि त तेसर स्थानमे बज्जिका अछि जेकर जनसंख्या ७९१६४२ अछि। अन्य १ लाखसँ अधिक बाजल जाएबला भाषासभमे नेपाली (३६०२७६

जनसंख्या), उर्दु (३१७०६० संख्या), थारु (२०३५७५ संख्या), तामांग (१०४९८४) अछि।

एखन प्रदेश सरकार अपन सरकारी कामकाजके भाषा निर्धारण करबाक अन्तिम तैयारी क रहल अछि। मुदा एकरा कहिया मूर्तरुपमे लाओत कहब कठिन अछि। एखन धरि भाषा, साहित्य, संस्कृति प्रति पूर्ण उदास रहल मधेश सरकार आगुओ एहि सम्बन्धमे कोनो काज क सकत अथवा बाँकी रहल किछु मासक पदाबधीके एहिना घीचि तीरि क निबाहि लेत भ सकैत अछि। ई आशंका बिगत किछु मासक गतिबिधिसं बुझबामे आबि रहल अछि।

मधेश प्रदेशमे रहल भाषासभके अवस्था सम्बन्धमे अध्ययन कएलापर प्रथम स्थानमे रहल मैथिली लगभग आठो जिल्लामे बाजल जाइत अछि। सप्तरी, सिराहा, धनुषा आ महोत्तरी, सर्लाहीमे मुख्य रुपमे बाजल जाएबला ई भाषा एखन सर्लाहीमे किछु कम देखलगेल अछि। २० टा स्थानीय तह रहल सर्लाहीमे ब्रहम्पुरी गाउँपालिका (१४५५१ ज.सं.), चन्द्रनगर गाउँपालिका (१४७६२), हरिपूर्वा नगरपालिका (२६९२० ज.सं.), कविलासी नगरपालिका (२२०५६ ज.सं.), पर्सा गाउँपालिका (१८१४९ ज.सं.) मे प्रथम भाषाके रुपमे बाजल जाइत अछि। जखन की १२ टा मे बज्जिका प्रथम भाषाके रुपमे देखल गेल अछि।

विगत केछु वर्ष एम्हर भाषा चेतनामे भेल वृद्धिसँ मैथिली भाषी सर्लाहीमे बज्जिकाक वर्चश्व बढल भाषा विज्ञानक अध्येतासभके घारणा अछि।

रौतहट जिल्लामे मैथिलीक संख्या आधा-आधी मानएबलासभके आबके तथ्यांकसँ निश्चय निराशा हयतनि। ओहिठाम दूटा स्थानीय तहमे मैथिली दोसर भाषाक रुपमे मात्र आबि सकल अछि, जखन की अठारह टा स्थानीय तहमेसँ पन्द्रहटामे बज्जिका प्रथम भाषाके रुपमे आगा आएल अछि। एहिठाम सेहो भाषा चेतनाके छाप स्पष्ट रुपमे तथ्यांक वृद्धिमे देखल जा सकैत अछि। एहि जिल्लामे मैथिली आ भोजपुरी दूनु भाषा बाजएबलासभके संख्या घटल देखलगेल अछि।

आब भोजपुरी भाषाके प्रमुख जिल्ला वारा आ पर्सामे अध्ययन कएलापर बाराके १६ स्थानीय तहमे १४ मे भोजपुरी प्रथम भाषाके रुपमे अछि। आ दूमेसँ एकमे (कोल्हवी नगरपालिका) थारु आ दोसर निजगढ नगरपालिकामे नेपाली प्रथम भाषाके रुपमे तथ्यांक देखओने अछि।

तहिना पर्साके १४ टा स्थानीय तहमे भोजपुरी १३ टा तहमे प्रथम भाषाक रुपमे बाजल जाइत अछि त १ तह (ठोरी गाउँपालिका) मे नेपाली प्रथम भाषाके रुपमे देखलगेल अछि।

एहिमे एकटा सुखद तथ्य की अछि जे मैथिली भाषाके विस्तृत बाजल जाएबला क्षेत्रमे विगत किछु वर्ष एम्हर अतिक्रमण करैत अभियान चलएबाक बात चर्चामे अएलाकबादो २०६८ सालके जनगणना तथ्यांक देखओने अछि जे मधेश प्रदेशके सभ आठो जिल्लाक १३५ स्थानीय तहमे लगभग प्रत्येकमे मैथिलीके उपस्थिति अछि । अतेक धरि जे भोजपुरी भाषी क्षेत्र कहल गेल वारा, पर्सामे सेहो नीक मैथिली भाषी अछि । वारामे दोसर स्थानमे आठटा स्थानीय तहमे मैंथिली रहल अछि त पर्सामे सातटा स्थानीय तहमे मैथिलीके उपस्थिति देखलगेल अछि ।

प्रश्न उठैत छैक - भाषा सन संवेदनशील विषयके अन्हारमे राखि केकर हित कएल जारहल छैक । एकदिस लादलगेल भाषा, सामन्तके भाषा, एक भाषा नितिक प्रवर्तक भाषा कहि कोनो खास भाषाके आलोचना सेहो करब आ दोसर दिस नेपालक संविधान २०७२क देल अधिकार सेहो प्रयोग नहि कऽ अनावश्यक रुपमे भाषा समस्याके रोकिकए राखएके की अर्थ ? मधेश आन्दोलनके अभियानमे अपन मातृ भाषा प्रति सम्मान सेहो छल से बात अभियन्तासभ बिसरल जा रहल छथि । प्राथमिक शिक्षामे मातृभाषाके प्रयोग संगहि सरकारी कामकाजके भाषा मातृभाषा होइक से अभियानसभ दशकोसँ चलैत आएल तथ्य हमरासभके आगा अछिए । प्रयोगक रुपमे काठमाण्डू महानगरपालिकामे नेवारी आ धनुषा जिविस तथा राजविराज नगरपालिकामे मैथिली कामकाजक भाषाके रुपमे प्रारम्भ सेहो कएल गेल छल । मुदा बादमे सर्वोच्चके आदेशमे ओ निरस्त भेल । आ अन्ततः मातृभाषा-भाषीसभ निरस्त भेल दिनके कारी दिनके रुपमे मनबैत अपन दुःख आ रोष देखबैत आएल अछि ।

आब ओहन स्थिति नहि छैक । आब त संविधानक ७ (२) मे नेपाली भाषाक अतिरिक्त प्रदेशक सरकारी कामकाजक भाषा प्रदेश कानुन बमोजिम प्रदेशे निर्धारण करए से व्यवस्था कएल गेल छैक । अपन मातृभाषा प्रति प्रेम राखएबला प्रदेशक सभासदसभ एकमतसँ मधेश प्रदेशमे भाषा सम्बन्धि निर्णय क सकैत छथि,जेना प्रदेशके नाममे भेल । स्थिति स्पष्ट छैक । मुदा तकरालेल सरकारके चाँखि नहि भेलासं सभ क्षेत्रमे आश्चर्य व्यक्त कएल जारहल छैक । भऽ सकैत अछि, सरकारक अपन गृहकार्य नहि पहुँचल होइक वा अन्य रणनिति होइक । मुदा आबएबला दिनमे प्रदेश भाषा सम्बन्धि स्पष्ट आँकड़ा भेलाकबादो ओकरा अनावश्यक विवादित बनएबाक चलखेल अन्य क्षेत्रसँ भ सकबाक बहुतो संभावना रहितो निर्धारित कार्यक्रम आगा नहि बढौनाईके अर्थपूर्ण मानले जाएत ।



तराईक सांस्कृतिक सम्पदा सरकारी नजरिसं बारल किए जाइत अछि ?

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, संस्कृति विभागक प्रमुखक हैसियतसं अखाढ १ गतेसं ६ गते धरि एकटा कार्यक्रमक सन्दर्भमे हमसभ सर्लाहीसं सप्तरीधरि अध्ययन, भ्रमणमे गेल छलहु । हमरा सभक विषय छल - "लोक सांस्कृतिक सम्पदाके अवस्था आ संरक्षणक उपाय" । ओहि विषयके केन्द्रविन्दुमे रहि क हमसभ मैथिली भाषी क्षेत्रमे रहल सांस्कृतिक सम्पदा आ पुरातात्विक स्थलसभक वर्तमान अवस्थासम्बन्धमे अध्ययन करवाक प्रयास कएने छलहु ।

हमरासभक टोलीमे पुरातत्वविद् तारानन्द मिश्र, संस्कृतिविद् डा. रामदयाल राकेश, भाषाविज्ञानके अध्येता सहप्राध्यापक देवनारायण यादव, साहित्यकार डा. रेवतीरमण लाल छलाह । सभ ठाम पहुचनाई कठिन रहितहु पुरातत्वविद् मिश्र ६ दिनके अध्ययन भ्रमणमे हमरे सभसंग छलाह । आ ओ विद्वतापूर्वक ओहि क्षेत्रमे रहल अवशेषसभ सम्बन्धमे टिप्पणी करैत हमरासभके थप जानकारी करवैत रहलाह ।

वास्तवमे हमर उद्देश्य सांस्कृतिक सम्पदासभक स्थलगत निरीक्षण, अवस्था आ संरक्षणके लेल नेपाल सरकार वा सम्बन्धित निकायके कोना आकर्षित कएल जा सकैछ, ओहि सम्बन्धमे अन्तर्क्रिया क कऽ विचार संकलन आ प्रतिवेदन तयार करवाक छल ।

हमरासभक अध्ययनमे सर्लाहीके मूर्तिया, धनुषाके धनुषाधाम, मणिमण्डप, महोत्तरीके बनौलीगढी, रानीरतबारा, सिराहाके महिसौथा, सलहेस फूलवारी, पतारि पोखरी, सप्तरीके एकागढ, शंभुनाथ मन्दिर, जोगिया वन आदि छल । हमसभ ४० डिग्रीसं बेसी तापक्रममे घण्टौघण्टा धरि पैदल चलैत एकागढ सन ठाममे पहुचलहु । चुरे पर्वत श्रृंखलाके कोखमे रहल ओ अवशेषसभ कोनो नमहर मन्दिरके रहल पुरातत्वविद् तारानन्द मिश्रक दृढ सोच छनि । यद्यपि एहि सम्बन्धमे राजविराजक इतिहास आ संस्कृतिक मर्मज्ञ डा. हरिकान्त लाल दास सेहो अपन सप्तरीके पुरातात्विक स्थलसम्बन्धी पोथी सभमे नीक विवेचना कऽ चुकल छथि । एकागढ सप्तरी जिल्लाके खोक्सर गा.वि.स के कनकपट्टि टोलसं पश्चिम - उत्तर दिसि रहल खढोरिया नदीके कातमे रहल अछि । इनारसभक भग्नावशेष सेहो अछि । नदीक बालुमे छिरियायल ईंटाके टुकड़ासभ, माटिके भाँडावर्तनक टुकड़ासभ, पाथरमे चित्रांकित आकृतिसभ ओत सेहो देखलगेल छल । डा. दासक कथानुसार ओत 'चन्द्रशोभा' भगवतीके मन्दिर छल । ओहिठाम राजमहलक पुरान अवशेष सेहो अछि । आ

उपर पहाड़पर भगवतीक मन्दिर बनाओल गेल छल, जत पूजा - अर्चना कर जाएवला सभक लेल सिँढीक निर्माण कएल गेल छल । सिँढीके भग्नावशेष आईयो के दिन देखल जा सकैछ ।

हमरा सभक टोली गम्भिरतापूर्वक ओहि जीवित ऐतिहासिक साक्ष्यसभके मनन करैत अपन धारणा नोट कऽ रहल छल । तारानन्द मिश्र अपने पहिल बेर एत आएल छथि, आ ई स्थल देखि क ऐतिहासिक तथ्यसभसं बेसि प्रभावित छलाह ।

तराई क्षेत्रमे लुम्बिनी छोड़ि क अन्य क्षेत्रमे पुरातत्व विभाग उत्खननके ओतेक काज नहिं कएने अछि । एक - दू ठाममे सामान्य रूपमे प्रयास करवाक प्रयास कएने रहितहु ओकरा सभके कोनो ठोस धारणामे परिणत करवाक काज जरुरी नहिं बुझने अछि । सिराहाके खपटे डाँडा, मोरङके भेडियारी, झापाके कीचक बध आ विराट राजाके गढ सन सन ठाममे उत्खनन नै भेल से बात नहिं अछि । मुदा ओत दिन कटने काज मात्र भेल स्थानीय बुद्धिजीविसभ बतबैत छथि ।

एहिमे सप्तरी जिल्लाके 'एकागढ' एहन स्थल भेटल अछि, जत पूर्ण उत्खनन त नै भेल मुदा २०४५ सालमे नेपाल सरकार, पुरातत्व विभागसं सांस्कृतिक सम्पदाके प्रारम्भिक सर्वेक्षण करवाक क्रममे एकटा टोली ओत पठाओल गेल छल, आ एहि गढके अति प्राचीन आ ओत प्राप्त दू टा 'Mound' के उत्खनन करवाक सल्लाह अपन प्रतिवेदनमे देने छल । (सर्वेक्षण प्रतिवेदन, २०४५, पृ-८६) । प्रतिवेदन एकटा नयाँ तथ्य पता लगौने छल । तकर नजदिकमे रहल प्रसिद्ध शंभुनाथ मन्दिरमे स्थापित स्तम्भयुक्त शिवलिङ्ग वास्तवमे 'चन्द्रभोगा' मन्दिरमे लगाओल गेल पिलर छल । ओ स्तम्भ खाँडो नदीमे भेटल छलैक ।

हमसभ शंभुनाथ मन्दिरमे सेहो गेलहु, ओत स्तम्भ सहितके अवशेषसभ देखलहु । एकागढके अवशेषके सेनकालीन रहल प्रमाणित कएल गेल अछि । पुरातत्वविद् मिश्र सेहो ऐकरा सेनकालीन कहलनि ।

एहि क्षेत्रके अध्ययनके लेल पुरातत्वक दोसर टोली २०५४ सालमे पठओल गेल छलैक । ताहि समयमे कलात्मक भीत देखलगेल छल । ओहिमे 'मिथिला कला' क छाप रहल डा. दासक दाबी छनि । सिम्रौनगढक प्राप्त देवालमे ऐहन कलात्मक चित्र देखवाक जानकारी डा. दास देलनि । आ पुरातत्व विभागक टोली अध्ययनके लेल टोली प्रमुख कुमारलाल जोशी ओहि कलात्मक बनौटके प्राचीन समयके टेराकोटा आर्किटेक्चरल आर्ट रहल तर्क रखलनि । हुनकर दाबी छलनि जे - एकागढके उत्खनन कैलासं एकर इतिहास नवौं

शताब्दी धरि जा सकैछ। (डा. दास - आंगन-१, पृ.६२)। डा. जगदिशचन्द्र रेग्मीके नेतृत्वमे त्रि.वि.के प्राध्यापक आ विद्यार्थीसभक टोली सेहो २०६१ सालमे एत आबि क एकर महत्वके स्वीकार केने अछि।

२०६१ सालके पुससं फागुन महिना धरि पुरातत्व विभागके कएल उत्खननमे प्राप्त मूति, शिलाचित्रसभ अखन कत अछि ? आ कोन अवस्थामे अछि, खोज करवाक चाही। ओकर प्रशस्त सम्भावना रहितहु विभागके एकागढके उत्खनन करवाक किएक आवश्यकता नहिं भेलैक ! तराई क्षेत्रमे रहल एहन ऐतिहासिक महत्वके साइटसभक प्रतिके उपेक्षीत व्यवहारके लेल की कहल जाए ?

हमरा सभक टोली एहि सम्बन्धमे गम्भीर भ विचार विमर्श कैलक। सेनकालीन समयमे मैथिली भाषा, साहित्यक प्रशस्त काम काज भेल, मैथिल संस्कृतिक विभिन्न पक्षके संरक्षण, सम्बर्द्धनके प्रमाणसभ खोजलक अछि। एकागढमे २०५४ सालमे बाढिसं कातके माटि दहेला पर देखि पड़ल दरबारक देवालपर लगाओल गेल ईंटाके देखला पर ओहिमे मिथिलाक्षर लिखल देखल गेल छल। डा. दास स्वयं अपने ईंटा देखने बात बतौलनि अछि। राजविराजमे एहि सम्बन्धमे भेल छलफलमे ओ स्वयं सहभागी छलाह। ओ अपन अध्ययनमे एकागढ पन्ध्रौं-सोह्रौं शताब्दीके होएवाक विश्वास प्रकट केलनि।

हमरासभ सँग रहल राजविराजक युवा पत्रकार श्यामसुन्दर यादव एकागढ सम्बन्धमे वृत्तचित्र निर्माण कऽ कऽ नेपाल टेलिभिजनके लेल रिपोटिङ्ग करवाक जानकारी देलैन। गढीक अवशेषसभ देखाबमे ओ पत्रकार नीक सहयोग कएलनि।

कडा रौदमे शरीरभरि आगि बरैत रहितहु प्रकृति द्वारा उपलब्ध कराओल गेल एहन शताब्दियौं पूर्वक इतिहास देखवाक दृढ विश्वास राखि हमसभ शंभुनाथ मन्दिर सेहो गेलहु। नेपालमे मैथिलीक महाकवि विद्यापति बाह्रवर्षधरि प्रवासमे रहलथि - शिवसिंहक रानी लखिमा देवीके संग ! इएह आश्रस्थल सम्बन्धमे आईधरि भ्रम अछि। एकटा महोत्तरीमे, एकटा सिराहामे आ एकटा सप्तरीमे बनौली गढी अछि। जत प्रमाणित रूपमे राजमहलसभक अवशेष खोज करवाक बाँकी अछि। हमसभ राजविराजसं पश्चिम सिराहा रोडके कातमे अवस्थित बनौली गढी जएवाक सोचने छलहु। मुदा वर्षात् के कारणे बाटघाट विगरलासं सवारी जएवाक स्थिति नहिं छल। अपन अध्ययन भ्रमणमे मानराजा गढीके सेहो प्रशस्त जानकारी प्राप्त केलहु। मानराजा गा.वि.स. वडा नं. १ मे अवस्थित ई गढी आठौं - नवौं शताब्दीके सलहेस गाथासँग मिलल जुलल अछि। पराक्रमी लोकनायक सलहेस प्रेमिका कुसमा आ दौना

मालिन सँग भेटवाक लेल 'तरेगना गढ' अवैत छलाह। ओत गढपति महेश्वर भण्डारी छल। ई गढ ओही भण्डारीके राजप्रसाद रहल ठहर भारतीय विद्वान् राजेश्वर झा कएने छथि। (लोकगाथा विवेचन, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, १९७४ ई)। पुरातत्व विभागक सर्वेक्षण टोली एकरा गुप्तकालक ठहर कएने अछि।

बनौलीगढीके सम्बन्धमे रहल भ्रम सेहो निवारण करवाक चाही, आ तकरा लेल उत्खनन आवश्यक अछि। अपन चारिदिनक भ्रमणक क्रममे सांस्कृतिक सम्पदासभक अध्ययन करैत जनकपुरधाम स्थित पुरान मणिमण्डपक चर्चा करवाक अत्यावश्यक अछि। जानकी मन्दिरक उत्तरदिसि रहल विवाहमण्डप एक घेरामे रहल रहितहु राम-सीताक विवाह भेलक स्थल 'मणिमण्डप' अछि। जनकपुरधामसं उत्तर - पश्चिममे ई मण्डप अवस्थित अछि। ओत रहल प्राचीन माटिक उचका भाग समतल बना क देवाल घेरा चुकल अछि। एहि सं माटिक प्राचीनता खण्डित भेल अछि। पुरातत्वविद् तारानन्द मिश्र माटिक उचका (पीड़ी) के विगारलासं एहि काज प्रति रोष प्रकट करैत संरक्षणके नाम पर ऐतिहासिक साक्ष्य मेटएवाक काम भेल कहैत दुःख व्यक्त कएने छलाह।

हमसभ अध्ययन कएने सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक ठामसभक अवस्था सम्बन्धमे आ ओकर संरक्षण विधि सम्बन्धमे एकटा अन्तर्क्रिया कार्यक्रम सर्लाहीके मलंगवामे रखने छलहु। तारानन्द मिश्र सर्लाहीसं सप्तरी धरि छिरियायल रहल गढीसभ, पुरातात्विक महत्वके माटिक वर्तमान अवस्था, ओकर ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व सम्बन्धमे विस्तृत प्रकाश पारैत गेलाह। आ संरक्षणके लेल तत्काल उत्खनन करैत ऐतिहासिक साक्ष्य मजवूत बनएवाक लेल नेपाल सरकारसं माग सेहो कएल गेल।

आपन अध्ययन भ्रमणके क्रममे हमसभ तराईक कोखमे रहल इतिहासके पुनर्जीवन प्रदान करैत पाल, सेन, गुप्त शासन कालक अवशेषसभके आधार पर तत्कालीन राजासभक राजदरबार, ओकर बनौट, संस्कृति सम्बन्धमे आओर ठोस जानकारी प्राप्त करवाक उत्खननेटा एक मात्र उपाय रहल ठहर कएलहु।

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, संस्कृति विभाग आगामी दिनमे संस्कृति मन्त्रालयसँग समन्वय कऽक पुरातत्व विभागके कोना उत्खनन दीसि आगु बढाओल जा सकैछ ताहि सम्बन्धमे ठोस पहल करवाक धारणा सेहो अपन अध्ययन, भ्रमणके क्रममे हम सभ रखने छलहु।

आगाक दिनमे एहि दिसि अवश्य विकास आ परिवर्तनके प्रयास हयत से विश्वास कएल जा सकैछ।



मैथिली पाठ्यक्रम निर्माणक विसंगति आ छात्रक अवस्था

राष्ट्रीय जनगणनाक तैयारी अन्तिम चरणमे रहैक । मातृभाषामे अपन भाषा लिखाओल जाए तकर चर्चो रहैक । हल्ला आयल रहैक- एकटा मधेश केन्द्रित पार्टी अपन मातृभाषा हिन्दी लिखएबाक लेल अधिसूचना जारी कएने अछि कहाँदन । तकर गर्मी पसरले रहैक । बज्जिका आ मगही लिखएबाक जोड़ सेहो तेहने गति पकड़ने रहय ।

भानुचौक पर दू गोलमे घोंघाउज भऽ रहल छलैक । एकटा युवक आक्रोशमे अपन बातपर जोड़ दैत बजैत रहए -प्राथमिक कक्षामे मैथिली कैला पढतै ? औजी हमसभ माइ के माइ कहै छी । कितावमे माय लिखल है ।

दोसर पक्ष समझबैत रहै -शुद्ध मैथिलीमे त एहने लिखल जएतै ने ।

औजी कथीकेँ शुद्ध मैथिली । जे हमसब बजै छी सेहे रखके चाही ने । तै स त हमसब कहै छीऐ मगही लिखाउ । हमरासभकेँ भाषा मगही है, मैथिली नै । ई त ..... ।

कहबाक जरुरति नहि ओ ई त..के बाद की कहने हएत । एहि ठाम सबाल भाषा प्रतिक अपनत्वक छैक । प्राथमिक कक्षामे बच्चाकेँ पढबैत छिऐक त ओकर भाषा त देबही पडत । एकटा सर्वेक्षण देखा रहल छैक से सामुदायिक विद्यालयमे ब्राह्मण, कायस्थक बच्चा नितान्त कम मात्रामे अध्ययन करैत अछि । ओसभ अंग्रेजी माध्यमक विद्यालयमे पढैत छैक जत्त मातृभाषाक अध्ययनक बाते नहि । तखन सामुदायिक विद्यालयक छात्र छात्राक लेल तैयार कएल गेल पाठ्य पुस्तकमे नगण्य प्रतिशत विद्यार्थीक भाषा राखल जाए वा अधिकतम प्रतिशत बाजऽबलाक भाषा राखल जाए, ई आई गम्भीर चिन्तनक विषय छैक । प्रायः इहो कारण अछि विशुद्ध मैथिलीभाषी क्षेत्रमे मगहीक समर्थकसभ जबरदस्त उपस्थिति बना लेलक अछि । तीससँ तीस हजार भऽ गेल अछि । हमरासभक बीच स्वयंम्भू आन्दोलनी सभ मंचसँ अपन पीठ स्वयं थपथपा आत्मरतिमे लीन छथि । भाषा भागि रहल छैक, पढनिहार विलुप्त भेल जा रहल छैक आ एकटा पगड़ी माथपर लदने मंचपर फौद खेलाइत अछि ।

ठीके त कहने रहैक भानुचौक बहस बला युवक-किए पढतै मैथिली ? परिणाम भेलै पाठ्यपुस्तक गोदाममे सड़ि रहल छैक । धनुषामे कतेको विद्यालय पाठ्य प्रभागमे मैथिली रखने रहए, आब पतरा गेल छैक । ओहुना ऐच्छिकमे रखने छैक । सम्भतः सप्तरीमे किछु छैक । धनुषामे एकआधटा रखने हो से भ सकैछ । अत्यन्त अवैज्ञानिक आ भाषाक दृष्टिकोणसँ

तथाकथित मानककेँ आधार बना जे विषय वस्तु प्रस्तुत कएलगेल अछि तकरा पढि कऽ ज्ञानवृद्धि नहि बुद्धि भंगठि जा सकैछ- ओहि युवकक दाबीमे किछुओ सच्चाई जँ छैक तँ एहि सँ मैथिलीकेँ बड़का चोट पहुँचि रहल छैक।

पाठ्यक्रम विकास केन्द्र अपनालग एकटा ढाँचा रखने अछि, ताहिमे फीट करऽ बला सभकेँ ताकि पाठ्यक्रम निर्माण करैत आयल अछि। भाषा, विषय वस्तुसँ कोसो दूरधरिक लेना देना नहि छैक। भाषाक विसंगति तँ कहले गेल अछि विषयवस्तुमे विद्यार्थीक रुचिक विन खिआल कएनहि राखल जाए, तँ निश्चय अरुचिपूर्ण उत्पाद हएतैक आ विद्यार्थीक पहुँचसँ बाहर भऽ जाएत। पाठ्यक्रम विकास केन्द्र जेना तेना मैथिली कक्षा पुस्तकक प्रकाशन विधि पुरौबलि लेल करैत सन लगैत अछि । पाठ्य पुस्तक निर्माणमे संलग्न लेखकलोकनि उपलब्ध ढांचामे अपनाअनुकूल रचनाक मात्र संयोजन करैत छथि तएँ ओ की कएलनि चर्चाक विषय ई नहि अछि । एत्त त पाठ्य पुस्तकके स्तर निर्धारणक बात छैक जे काज विकास केन्द्रके छैक।

मैथिली पाठ्यपुस्तक भारतोमे तैयार होइत छैक । मानकताक रक्षा करैत विषय वस्तुक चुनाव समयकाल क्रमे रचना विशिष्टताकेँ ध्यानमे रखैत होइत छैक । एकटा अवकास प्राप्त वा कार्यरत् प्रोफेसर, विज्ञसभक टोली बनैत छैक, तखन जा कऽ पाठ्य पुस्तक तैयार होइत छैक।

हमरा आगाँ कक्षा ९क दूर्वाक्षत नामसँ लिखल पहिल भागक पुस्तक राखल अछि। १६६ पृष्टक एहि पुस्तकमे वीस गोट रचना अछि जाहिमे गद्य खण्डमे दश आ पद्य खण्डमे दश मिला वीस रचना राखल गेल अछि । कक्षाक विद्यार्थी प्रतिक जवावदेहीकेँ लेल रचना चयनपर सर्वप्रथम ध्यान देल गेल अछि। रचनाकारक नाम देखू

गद्य खण्ड

१. मैथिली लिपिक संरक्षण - म.म. डा. उमेश मिश्र
२. मधुरमनि - डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण'
३. प्रवासी मैथिली समाज - लक्ष्मीपति सिंह
४. महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह -प्रो. जयदेव मिश्र
५. भदरी - लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ
६. लोकतंत्रमे बौद्धिक जनक भूमिका - प्रो. उमानाथ झा
७. साहित्यमे प्रयोगक वास्तविकता - प्रो. आनन्द मिश्र
८. अपराजिता - राजकमल चौधरी
९. इनकिलाब - जीवकान्त

१०.	लोरिक - प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

पद्य खण्ड

१.	नटराज - विद्यापति

२.	कचहरी - चन्दा झा

३.	मिथिला वर्णन - सीताराम झा

४.	पावसी : तामसी - प्रो. सुरेन्द्र झा सुमन

५.	गोठ विछनी - वैद्यनाथ मिश्र यात्री

६.	नारी - हंसराज

७.	जाहि गाममे - कुलानन्द मिश्र

८.	आजुक सन्दर्भमे भानुकेँ श्रद्धाञ्जली - राम भरोस कापडि 'भ्रमर'

९.	महगीक मारि - डा. रमण झा

१०.	विश्व बनल अशांत - डाँ मंजर सुलैमान

आब एहि संग्रहक रचनाकारकेँ जँ देखी तँ ई सभ मैथिली संसारक पुरोधा व्यक्तित्वसभ छथि । मैथिली भाषा, साहित्यक श्रीवृद्धिमे हिनका सभक उच्चतम् स्तरपर नाम छन्हि, जनिक रचना एत्त राखल अछि। हँ, पद्य खण्डक ८, ९ आ १० नं.क रचनाकार निश्चय चर्चा आ उमेरक हकमे उपरका सत्रहोसँ कम भऽ सकैत छथि ।

पाठ्य पुस्तकक संयोजनक हेतु जाहि विद्वानसभकेँ राखल गेल छैक ओ सभ सिद्धहस्त रचनाकार सभ छथि, भाषा विद् एवं मैथिली शिक्षणसं जूड़ल विद्वान सभ छथि मुदा ओसभ अपन एक्को गोट रचना नहि रखने छथि आ ने कुथि कऽ कोनो प्रसंगकेँ उल्लेख कऽ पाठककेँ वितृष्णा उत्पन्न करऽ धरिक काज कएने छथि ।

तखन देखि लेल जाए पाठ्य पुस्तक विकास समितिक मैथिली भाषा समूहक व्यक्तित्व सभकेँ -

अध्यक्षः डा. इन्द्रकान्त झा, पूर्व अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

समन्वयक : डा. अनिल कुमार मिश्र, व्याख्याता, राजकीय वालक उच्च माध्यमिक विद्यालय, लालबहादुर शास्त्री नगर, पटना ।

सदस्य : डा. नरेश कुमार झा, व्याख्याता, आर.के.कलेज , मधुवनी ।

डा. राजकुमार झा, व्याख्याता, राजकीय वालक उच्च माध्यमिक विद्यालय पटना सिटी , पटना ।

डा. अरुण कुमार झा, व्याख्याता, राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय पटना सिटी, पटना ।

डाँ. हिरा मण्डल : व्याख्याता, स्नात्तकोत्तर मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय पटना।

डा. कमलाकान्त चौधरी : व्याख्याता, राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय शास्त्री नगर पटना।

डा. वीणाधर झा : व्याख्याता, पटना कलेजियट स्कूल दरियापुर , पटना।

एहन माँजल विद्वान सभक टोली बनबैत अछि मैथिलीक माध्यमिक स्तरक पाठ्यक्रम। ओ विद्यार्थीकेँ हेतु सहज, सुलभ आ पठनीय किए ने होइक। एकरे परिप्रेक्ष्यमे नेपालक पाठ्यक्रम विकास समितिद्वारा तैयार कएल गेल विद्यालय स्तरीय पाठ्यक्रम देखियौ, अपने लागत एकर फर्मा कतेक झुस अछि। की मैथिली जाननिहार, बुझनिहार विज्ञ मैथिलीमे नहि अछि। एत्त तँ हल्लुक स्तरपर काज होइत छैक, विहारमे विद्वान चयन कएल जाइत अछि। परिणाम दुनू ठामक देखिए सकैत छिऐ।

किए पढत गऽ लोक प्राथमिक वा माध्यमिक कक्षामे मैथिली । ने भाषा प्रति लगाव भऽ पबैत छैक ने ई भाषा ककरो रोजगार दिआ सकैछै। तखन प्रााथमिक शिक्षामे मैथिली किए ने असफल होउक।

मात्र भाषण कैलासँ अथवा गोलैसी कऽ स्वयंभू पागधारी बनलासँ मैथिली आब ससरि नहि सकतीह, गोरखापत्रमे अन्ततः संघर्षक बाद मगही अपन पृष्ट लइए लेलक आ आब जतेक मैथिली पावनि उत्सव , पुरान इतिहास आ साँस्कृतिक सम्पदासभ अछि सभ पर अपन अधिकार देखबऽ लागल अछि। एम्हरसँ मगही आ पश्चिमसँ बज्जिका। नब्बे प्रतिशतकेँ कात रखबै तँ आगा सेहो एहिसँ नीक नहि होब जा रहल अछि मैथिलीक हेतु।

नेपालक पाठ्यक्रम विकास समितिद्वारा तैयार कराओल गेल नव कक्षाक मैथिली पाठ्य पुस्तकक निर्माण व्यवस्थापनक एक झलक देखिली। एहिसँ एहिठामक अधिकारी गण मैथिली सन समृद्ध आ बेसी भाषा भाषीवला भाषाक पाठ्यपुस्तक निर्माणमे कतेक गम्भीर छथि से बुझल जा सकैछ।

एक त कमजोर पाठ्यपुस्तक आ दोसर ओकर उपलब्धताक आभाव। किए कोनो विद्यालय उत्साहसँ स्वागत करत। ओहूमे ऐच्छिक विषयमे राखब आ सेहो महत्वपूर्ण विषयक संग।

सभ तरहे उपेक्षा। मैथिली आन्दोलनकेँ मंचपर आनि कऽ कुचरैत सेनानी सभक नजरि एहिसभ पर नहि पड़ैत छन्हि।

मातृभाषामे शिक्षा त अछि मुदा कतेक सफल। किछुओ विचार करबाक पलखति नहि अछि।



महाभूकम्प २०७२ : त्रासदीक किछु क्षण

२०७२ वैशाख १२ गते शनिदिन (२५ अप्रिल २०१५ ई.) । आई काठमाण्डू जएबाक तैयारीमे छी । कागज पत्र सरिअएबाक क्रम जारी अछि । राति ८ बजेक बससँ जएबाक कारणें किछु आश्वस्तो छी । स्थीरसँ मोन पाडि आवश्यक समान एकटा बेगमे राखि रहल छी । कएक दिनस जएबाक नियार करैत आयल छी । आइ संयोग जूडल अछि । काठमाण्डू फोन कऽ कऽ सभकेँ जानकारी करा देने छिऐक- काल्हि आबि भेंट करब आ आगाँक काज बढायब । एम्हर विद्यालयक काज, घरक काज सभ ओरिया आ जिम्मा लगाओल जा चुकल अछि । तखन आब बस आश्वस्त भऽ साँझक प्रतिक्षा मात्र रहल अछि ।

लगभग एगारह बजे हम अपन बैठक कम अध्ययन कक्षमे अबैत छी । एकटा चिठ्ठी काठमाण्डू हेतु ड्राफ्ट करैत छी आ तखन मोबाइलमे फेसबूक चेक करऽ लगैत छी । पोस्टसभ देखि रहल छी । जरुरीकेँ उत्तरो दऽ रहल छी । एहि काजमे कतेक समय लागल हमरा मोन नहि अछि । तखन एक बेर एना भेलैक जे हमर सोफा जेना हिलल हो । हम उत्तर मुँहे सोफा पर बैसल छलहुँ । हमर देह उत्तर -दक्षिणे डोलल । भेल जे प्रायः सोफा पर बैसय काल अपन जगह बदललापर डोलि गेल हो । मुदा , नहि ई त साँचे डोलि रहल छल । मोनमे एकाएक विचार आएल - ई त भूकम्प थिक । आ तखन सोफा सँ उठैत घरमे भानस घरमे व्यस्त पत्निके सुनबैत कहलिऐक - भगैत जो, भूकम्प आबि गेलै ।

सभ गोटे लते पते अंगनईमे अएलहुँ । पत्नि उपरका मंजिल पर रहल दुनू बेटा पुतहु, पोता पोतीकेँ हल्ला करय लगलीह । सौंसे महल्ला सोर भऽ गेल छलैक । लोक धमाधम खाली ठाममे आबि गेल छल । हमसभ सेहो घरक आगाँक खाली ठाममे जम्मा भऽ गेल छलहुँ । स्थिति ई छल सोझसँ ठाढ हएबाक स्थिति नहि रहय । हम प्रत्यक्ष रुपें धरतीकेँ उत्तर दक्षिण डोलैत देखैत रही ।

ई हमरा लेल अत्यन्त विस्मयकारी अनुभूति छल । हमर स्कारपीओ गाड़ी जे उत्तर मुहेँ पार्क कएल छल आ जे गियरमे राखल गेल छल, उत्तरे -दक्षिणे आगाँ पाछा डोलऽ लागल छल । ओकरा पाछांस ठेलि क रखबाक स्थिति आबि गेल छलैक । तखन तँ घडी देखबाक फुरसत नहि छलैक , बादमे पता चलल ई स्थिति एक मिनेट धरिक रहैक ।

एहि अवधीमे अपन चारि मंजिलक नवनिर्मित मकानकेँ गौर सँ देखैत मोनमे दहशति बैसल छल - पत्ता नहि की हएत । सभ कएल धएल पानिमे त नहि चलि जाएत । एहि विपदा घड़ीमे जाने बचल सएह काफी अछि - सन्तोष

होइत अछि। घर त फेरो छोट छीन बनाओल जा सकैछ मुदा कोनो जानपर जखम अवितैक त........ ।

चारुकात कोलाहल छलैक । अपन अपन भनुभव सुनबैत भयाक्रान्त छल लोक । जखन हिलब रुकलैक आ बुझएलैक जे भूकम्प बन्द भऽ गेल छैक तखन दौगि क कोठरीमे पैसलहुं । विजली त फेल छल मुदा इन्भर्टरक वैकअपसँ टी भी चलि रहल छल । नेपाल खोललहुँ । एक्कोटा चैनलमे कोनो समाचार नहि । ब्रेकिङ्ग न्यूज धरि नहि । उएह पुरान धुरान नेता पुराण । दलक नेतासभक नौटंकीक आँखो देखा हाल । मोन तँ पीड़ा गेल । तखन भारतीय चैनल आजतक पऽ रीमोट लऽ गेलहुँ । एह, ई त समाचार दऽ रहल छैक । मुख्य समाचारक रुपमे । एकर पंकजदास सम्वाददाता काठमाण्डूमे अछि- वावा रामदेबक योग शिविरकेँ प्रायः कभरेजक हेतु । ओत्तहिसँ एहि त्रासदीक प्रत्यक्ष प्रसारण जकाँ अपन रीपोर्ट दऽ रहल छल । ज्ञात भेल भूकम्पक केन्द्र विन्दु काठमाण्डूसँ ६५ कि. मि. उत्तर पश्चिममे छैक । नाम नहि कहि रहल छल । होइत होइत घर सभ गिरबाक खबर सेहो आएल । तकरा बाद डीस टिभीक प्रसारण बन्द भऽ गेल । हम उठि कऽ फेर बाहर अएलहुँ । फोन मिलबऽ लगलहुँ- काठमाण्डूमे छोट बालक, पुतहु आ पोता रहए । नाती सेहो काजसँ गेल छल । सभक कुशलता जानब जरुरी । घरक सभ सदस्य अपना अपना ढंगे जानकारी लेब चाहि रहल छल । भारतीय संचार माध्यम कहने रहैक- भारतोमे धक्का महशुस कएल गेल छल । दरभंगा पटना दिल्ली धरि । पटनामे बेटी, जमाय छथि ।, हुनको फोन लगएबाक प्रयास कएल सम्भव नहि भेल । इन्टरनेट तखनधरि चालु छल । हम तत्काल १२:२० बजे एकटा पोष्ट कएल- भूकम्पक झटका आ त्रासदीक । तत्काले मित्र लोकनिक जिज्ञासा सभ आएल मुदा उहो बेसी काल नहि रहि सकल ।

तखन केओ कहलक रेडियोसँ समाचार आबि रहल छैक । तत्काल रेडियो खोलल गेल । हम मोबाइलमे इयरफोन लगा कऽ समाचार सुनबाक उपक्रम करऽ लगलहुँ । किछु समाचार ज्ञात भेल । जानकी मन्दिर क्षतिग्रस्त भऽ गेल अछि । काठमाण्डूक धरहरा खसि पड़ल छैक । एहने एहने हृदय विदारक सूचना सभ अपुष्ट रुपें प्राप्त भऽ रहल छल ।

मोबाइलमे रेडियो सर्च करैत काल एकटा स्थानीय रेडियो पकड़ाएल । जकर एंकर बजैत रहय - भूकम्पक हाल सम्बन्धमे श्री फल्लां... हमरा सभकेँ सम्पर्कमे छथि, सुनी ओ की कहैत छथि । ओ पत्रकार महोदय अपन छक्का मारब शुरु कएलनि- हम एखन एसपी कार्यालयमे छी । एत्त प्राप्त सूचना अनुसार धनुषामे एखन धरि ६ गोटेकेँ मृत्यु भूकम्पसँ भऽ गेल अछि । जानकी मन्दिरक एक बड़का आ चारि टा छोटका बुर्जा ढहि कऽ खसि पड़लैक अछि ।

धनुषाक ग्रामीण क्षेत्रक नोक्शानीक जे भयावह चित्र देखाओल गेल ताहिसँ लागल जे ठीकेँ भूकम्प धनुषा जिल्लाकेँ तहस नहस कऽ देने छैक । चिन्ता गामपरक भेल । फोन लागि नहि रहल छैक आ जएबाक मोन नहि भऽ रहल अछि । फेर काठमाण्डूक समाचार जे दहशत आ त्रासदी सँ भरल छल । छोटु (हमर छोट बालक)सँ सम्पर्क भेलैक भाइकेँ- ओहो धरहरा खसबाक समाचार कहने रहैक ।

जँ की पुष्ट समाचार आबि नहि रहल छलैक । नेपाल टिभी कोनो तरहक समाचार नहि दऽ पौने रहए, एहनमे भारतीय चैनल सभक अदभूत समाचार सम्प्रेषणक क्षमता आ लगनशिलता मोनकेँ प्रशन्न कऽ देलक । मोदी जीक नेपालक भूकम्प प्रतिक जे सम्वेदना व्यक्त भेल छल से त छलहे, सहयोगमे तत्काल राहत पठएबाक तत्परता नेपाली हृदयकेँ जीति लेने छल । भारतीय सेनाक दूगोट विमान दवाई, औषधि, चिकित्सक आ अन्य सरसमानक संग काठमाण्डू उड़ि चुकल अछि ।

आब काठमाण्डूक क्षति आबऽ लागल छलैक । लमजुंग एकर केन्द्र विन्दुमे छल । काठमाण्डूक संरचना ध्वस्त भऽ रहल छलैक । खास कऽ विश्वसम्पदा सूचिमे सूचिकृतसभ तँ आर । अठारहम शताब्दीक ओ समस्त संरचना या त पूर्ण रुपेण समाप्त भऽ गेलैक, या त क्षतिग्रस्त भऽ गेलैक ।

भूकम्पक धक्का फेर फेर आओत ई कहब शुरु भऽ गेल छलैक । लोक खा पी कऽ घरसँ बाहर आबि गेल अछि । बेसीसँ बेसी जानकारी प्राप्त करऽ चाहैत अछि । गामसँ बड़ मुश्किलसँ एक गोटे शिक्षक फोन कएने अछि । समाचार सुनौलक हमर बारीक देबाल खसि पडल अछि । अझुके भूकम्पमे ओ दक्षिण ढारे खसि पड़ल । सौंसे गाममे हमरे देबाक खसबाक छलैक । नहि किछु तँ पचास साठि हजारक नोक्सानी भइए गेल ।

एखन ओ नोक्सानी किछु नहि छल, जे आन ठामक भऽ रहल अछि ओ त हृदय विदारक छैक । काठमाण्डूमे धरहरा ठीके खसि पड़लैक । ई बात आब पुष्टि भऽ गेल छैक । ओकरा तरमे डेढ सयसँ बेसी व्यक्ति दबा कऽ मरल हएत एहन अनुमान छैक । काठमाण्डूमे आन बहुतो संरचना खसल अछि, जकरा तरमे लोक दबल पड़ल अछि । अस्पतालसभमे घायल आ शब दुनूक पथार लागल जा रहल छैक । बेड नहि भेटने बाहरेमे उपचार भऽ रहलैक अछि । पाटनक कृष्ण मन्दिर परिसर ध्वस्त भऽ गेलैक । वसन्तपुरक काठमण्डप, गोरखा दरबार ध्वस्त भऽ गेलैक । भक्तपुरक पचपन्न खिडकी बला घरक आसपास भयंकर क्षति भेलैक अछि । भूकम्पक केन्द्र विन्दु बला क्षेत्रमे एखनो खोज खबरि लेल नहि जा सकल अछि । मौसम खराब छैक । हेलिकोप्टर जा कऽ घुमि आएल अछि । अनुमान छैक ओत्त त आर क्षत

विक्षत भेल हएतैक । क्षतिक प्रारम्भिक विवरण पचास गोटेकेँ हताहतसँ आएल छल जे निरन्तर बढि रहल अछि ।

फोन दोगदागमे लागि रहल छैक । पटनो बात भेलैए-धीयापुता ठीक अछि । ओत्तहु धक्का जनकपुरे जकाँ आबि रहल छैक । भय पसरल छैक । जनकपुरक समाचार आर फरिछएलैअ । एखन धरि एक गोटे डेवडिहामे मरल अछि । ६ गोटे बला स्कूप समाचार निरर्थक, भ्रामक रहए । जानकी मन्दिरक छोटका बुर्जा झरल छैक, किछु चरक्का लागल छैक । ई त पूर्वोमे दक्षिण भरसँ लगले रहैक । एहि बेर किछु बढि गेल हएतैक । काठमाण्डूमे जकरा बलपर करोड़ो टकाक आमदनी करैत अछि ई सरकार ताहि साँस्कृतिक सम्पदाक संरक्षणमे त कोनो रुचि नहि रखलक नेपालक लोकतंत्री सरकार, जानकी मन्दिर त ओकरा सभक उपेक्षा सूचिमे पड़ैत अछि । एकरा लेल किए सोचत । एखनधरि मन्दिरक व्यवस्थापन, संरक्षण तँ दूर रहओ, ठीकसँ रंगरोगनधरिकेँ लेल एक पाई खर्च नहि कएने अछि । जानकी मन्दिर जिणोद्धार भेल रहैक तँ निजी स्तरपर । विश्व सम्पदा सूचिमे सामिल करबाक अभियान चलाओल त निजी क्षेत्र ।

करोड़ो अरबोक रकम संविधान सभाक नामपर सभासदक हुल खड़ा कऽ सोझे गिड़ि गेल, आ गीड़ि रहल नेपालक नेता, दलसभ कहियो एतुक्का अठारहम् शताब्दी आ ओहिसँ पुरानो सम्पतिसभकेँ सुरक्षापर ध्यान देब आवश्यक नहि बुझलक । भाषा,साहित्य,संस्कृति कहियो सरकारक प्राथमिक सूचिमे नहि पड़ल । आइ ओ सभ सम्पति जाहि पर नेपालकेँ अन्तर्राष्ट्रीय पहिचान बनल छलैक, पर्यटकक ताँती लागल रहैत छैक, ध्वस्त भऽ गेल अछि, जेना एखनधरि अपुष्ट सूचना आबि रहल अछि । धरहरा,दरबार स्क्वायर,भक्तपुर दरबार क्षेत्र सभ ध्वश्त भ रहलैक अछि । आब तकरा की पुनः ओ प्राचीनता आ पुरातात्विक महत्व दऽ सकत ! हँ, ओहने ढाँचा बना कऽ ठाढ कऽ सकैत अछि । दश,बीस वर्षमे बनतैक,अरबो खरबोक खेल हएतैक । मुदा मोनपर बनौआ ढाँचाक पीड़ा सालैत रहतैक ।

धरहराक त बाते कोन । काठमाण्डूकेँ पहिचान छलै, धरहरा जे तत्कालीन प्रधानमन्त्री भीमसेन थापा बनौने रहए । पहिने एगारह तल्लाक रहए, ई वि. सं. १९९० सालमे आएल भूकम्पमे ध्वस्त भऽ गेल छल जकरा तत्कालिन प्रधानमन्त्री जुद्ध शम्शेर नौ तल्ला बना बरण्डा सेहो निकालि देने रहैक । एकर उँचाइ २०३ फिट छल । एहिपर चढलाक बाद सौसे काठमाण्डू देखाइ पड़ैत छलैक । ई अद्‌भूत सम्पदा आब नहि अछि । मात्र ओकर ढहल अवशेष छैक आ तहि तरमे दबल जीवित वा मुर्दा दर्शनार्थी लोकनि ।

ओना नेपाल सरकार सम्पूर्ण विश्वकेँ एहि आपदाक घड़ीमे सहयोगक अपील कएलक अछि, मुदा सभसँ पहिने खराब मौशमक बाबजुदो भारत अपन

वायुसेनाक जहाजसँ उद्धारकर्ता, चिकित्सक, दवाई आ आन बन्दोबस्तक सामानसभ पठायब शुरु कऽ देलक अछि । काठमाण्डू तबाह भऽ गेल छैक । तकरा लगले गोरखा, लमजुंग नुवाकोट, मकवानपुर, सिन्धुपाल्चोक, दिश बेसी खतरा भेल अनुमान छैक । मौसम पूर्वानुमान सेहो खतरनाक छैक-मुसलाधार वर्षा भऽ सकैछ । एहनमे घरसँ वाहर रहनिहार , सडकेपर घायलकेँ होइत उपचार प्रभावित हएत । दुखे पर दुखक पहाड़ टुटब... । हे भगवान !

नेपालमे दलकीक ई पहिल अनुभव त नहिए अछि । सभसँ पहिने हम सभ नब्बे सालक दलकीक बात सुनैत छलहुँ । ओकर तोड़ल अबशेष देखैत छलहुँ । भेल क्षतिक विवरण पढैत छलहुँ । इतिहासक पन्नामे माघ २ गते वि. स. १९९० साल (१५ जनबरी १९३४ ई.सोम दिन)मे ई भूकम्प भेल छल । नेपालक सखुवासभाक चैनपुरकेँ केन्द्रविन्दु बना आएल ई भूकम्प ८.४ रेक्टर स्केलकेँ छल । ओहि भूकम्पमे तीन हजार आठ सय पचास पुरुष आ चारि हजार ६ सय ६९ महिला मिला आठ हजार पाँच सय २९ गोटेक मृत्यु भेल छल । काठमाण्डूमे मात्र चारि हजार पाँच सयक लगभग लोकक मृत्यु भेल छल आ दू लाख सात हजार चालिस गोट संरचना (निर्माण) ध्वस्त भेल छल ।

एखनका भूकम्पक मापन ७.९ रेक्टर स्केल अछि जे ओहि सालक भूकम्पसँ छोट मुदा तकरा बादक सभसँ पैघ अछि । ई ८१ वर्षक बाद आएल अछि, जाहिसँ मानबीय आ भौतिक क्षतिक व्यापकता अबैत समयमे ज्ञात हएत ।

हमरा मोन अछि काठमाण्डूक मैती देवी डेरामे रहैत काल साँझमे २०७० साल आसीन २ गते (१८ सेप्टेम्बर २०१३) मे भूकम्पक झटका लागल रहए आ हम सभ बाले बच्चे मैती देवी मन्दिरक पछिमबरिया खाली ठाममे भागल रही । तहियो फोन किछु समय काज नहि कएने रहए । ६.८ रेक्टरक उक्त भूकम्प पूर्वि नेपालमे क्षति त पहुँचौलक, काठमाण्डू बाँचल रहल ।

मोन त २०४५ साल भादो ५ गते (२१ अगस्त १९८८ ई)क भूकम्पक सेहो आबऽ लागल अछि । जहिया हम सपरिवार जनकपुरेक मकानमे रही आ सौसे घर डोलऽ लागल रहै । पलंग मचकलैक, पंखा डोलैक । तखन हम सभ बाटपर पड़ैलहुँ आ प्रकृतिक लिलाक पहिल दुखद अनुभूति भेल रहए । लगभग पौने पाँच बजे भिनसरमे गेल रहए ई भूकम्प । एकर केन्द्र उदयपुर दिस ६.७ रेक्टर स्केलक रहैक मुदा एहिमे काठमाण्डू लगायत जनकपुरो सुरक्षित रहल । पूर्वि नेपाल खास कऽ धरान लगायतक क्षेत्रमे तवाही भेल रहैक ।

२०४५ आ २०७० सालक भूकम्पक अनुभव रोमाञ्चक हेतु छल । शुरुमे डर, त्रास जे भेल होए, बादमे रोमाञ्च जन अनुभूतिमे बदलि गेल रहए । मुदा अझुका ई भूकम्प एखनो रोइयाँ भुलकौने अछि । एखनधरि संरचना ध्वस्तक खबरि आबि रहल छैक, आदमी हताहतक यकीन संख्या आएब सम्भवो नै

छैक, मात्र बढि रहल छैक । दहशत आ पीडासँ भरल ई दुपहरिया साँझ होइते आर त्रास बढा देने अछि । स्थानीय डिस टिभी चलऽ लागल छैक । समाचार आएब शुरु भऽ गेल छैक । जतेक जतेक सूचना अबैत जाइत अछि- डर बढल जा रहल छैक, पीडा घेरने जा रहल अछि । पता नहि कोन घड़ी की सूचना आओत । नेपालक मंत्रिपरिषद ५० करोड टका राहतक हेतु छुटिऔलक अछि । देश विदेशसँ सहयोगक बचन आबि रहल छैक । पता नहि ई सभ राहत ठीक ठामधरि पहुँचत वा नहि ।

आकाश दिश निहारैत छी । इजोरिया पछिम दिश बढि रहल छैक । आइ सप्तमी छैक । चान अपना ठामपर ठिक ठाक अछि, मुदा फेसबूकपर कोनो मित्र उनटा चानक तस्वीर पोष्ट कऽ देने छथि । ई की भऽ रहल अछि । नहि, एहनमे अफवाह तेजीसँ बढैत छैक , जेना राति ८ बजे धरि कलसँ पानि निकालि कऽ राखि लेल जाए नहि तँ पानि विशाक्त भऽ जएतैक । हमरा महल्लामे धमाधम लोक पानि भरि कऽ घरमे राखि रहल अछि । एहि तरहक अफवाह पसारनिहार असमाजिक तत्व मात्रे भऽ सकैछ । एहिमे कोनो बैज्ञानिक कारण त नहि छैक तथापि लोक आदंकसँ भरल रहने कोनो चूक करऽ नहि चाहैत अछि । जेना खतरा टरल नहि हएबाक जानकारी लगातार आबि रहल छैक । लोक एखनेस चौरमे सुतबाक नियार क चुकल अछि ।

हम सपरिवार मकानक आगाँक खाली ठाममे बैसल एहि विपदाक विभिन्न पक्षपर विचार विमर्श कऽ रहल छी । कखनो टी भी, कखनो फेशबूक आ कखनो मोवाइलपर हाल चाल जानबाक उत्सुकतामे मोन बौरा गेल अछि । अपन परिवारक सदस्य, एम्हर ओम्हर छिड़िआएल मित्र, शुभचिन्तकलोकनिक हालचाल जानबाक चिन्ता बढल जा रहल अछि ।

खुरसी पर खुलामे बैसल राति कोना आ कत्त सुती तकर चिन्तनमे सेहो लागल छी । अपन चारि महला मकानपर हमरा भरोसा नहि अछि जे बात नहि मुदा एक गोटे मित्रक मोबाइल पर आएल सुझाव जे हमसभ एहि भरिगर घरसँ अलगे थलगे रही त नीक हएत, कतौ संशय उत्पन्न कऽ देने अछि । भोजन क फेरसं खालीठाममे आबि जाइत छी । जीउ उड़ल अछि । मोन ब्याकुल भेल अछि । मुदा घरक श्रेष्ठ भेने सभक सान्त्वनाक हेतु चेहरापर आत्मविश्वास देखबैत सभके मनोवल बढबैत जा रहल छी । सभक चिन्ता छैक राति कत्त विताओल जाए ।

राति वितएबाक इएह उधेडबुन लेने प्राकृतिक विपदाक दिन भरिक दुखद अनुभूतिकेँ माथमे नचबैत चिंतनशील भऽ जाइत छी .... ।



मधेश प्रदेशक भाषा : व्यबस्थापन कोना

पृष्टभूमि

नेपाल संघीयतामे गेलाकबाद सातो प्रदेश अपन-अपन प्रदेशमे बाजल जाएबला भाषासभके स्थिति आ तकर सम्विधान सम्मत उपयोगके लेल विभिन्न तैयारी शुरु करबाक चाहैत छल । आ ताहि काजमे मदत करबाक लेल नेपालके सम्बिधानके धारा २८७ मे व्यवस्था भेल बमोजिम २०७३ साल भादव २३ गते एकटा भाषा आयोगके गठन सेहो कएल गेल अछि । भाषा आयोग विगत चारि वर्षमे सातो प्रदेशकलेल आवश्यक तथ्यांक आ विवेचना सहितक प्रतिवेदन सरकारके बुझा चुकल अछि। बरु टटका प्रतिबेदनमे प्रदेश नं-२ (आबक मधेश प्रदेश) मे सरकारी काम काजक भाषाके रुपमे मैथिली,भोजपुरी आ बज्जिकाके राखबाक सुझाओ देने अछि।

वि.स. २०६८ सालमे भेल राष्ट्रिय जनगणना नेपालमे १२३ टा भाषाके अस्तित्व देखओने अछि। एहि मध्ये १ लाखसँ अधिक बाजल जाएबला भाषा-भाषीके संख्या ९६ प्रतिशत देखलगेल अछि। तकरा अतिरिक्त १ हजारसँ १० हजार धरि बाजल जाएबला भाषा-भाषीके संख्या ३७ देखलगेल अछि त १ हजारसँ कम बाजल जाएबलाक संख्या सेहे ३७ रहल तथ्यांक देखओने अछि। नेपालक सम्बिधानके धारा ६ मे नेपालमे बाजल जाएबला सभ मातृभाषासभ राष्ट्रभाषा अछि त धारा (७१) देवनागरी लिपिमे लिखल जाएबला नेपाली भाषा नेपालके सरकारी कामकाजके भाषा हएत से लिखने अछि।

एखन धरि भाषासभके वास्तविक अवस्था पत्ता लगाबए लेल औपचारिक भाषा सर्भेक्षण नहि भेल अवस्थामे भाषानीति निर्धारण करबामे कठिन हएबाक अवस्था अबैत अछि । तथ्यांक देखओने संख्या प्रति बीच-बीचमे असन्तुष्टि सेहो आएले अछि। बरु एकरा मिथ्यांक सम्बोधन क अपन उपरागसभ सेहो समय-समयमे होबएबला सेमिनार, गोष्ठी आदिमे प्रकट कएल जाइत अछि। ताही कारणसँ सेहो भाषा वैज्ञानिकसभके देखरेखमे राज्यव्यापी भाषा सर्भेक्षण कएनाई जरुरी देखलगेल अछि। जाहिसं भाषासभके प्रकृति, तकर समाजमे प्रभाव, पठन-पाठनमे प्रयोगके स्थिति एवं आवश्यकता, सरकारी कामकाजमे प्रयोग आ राज्यद्धारा ओइ भाषा प्रति सकरात्मक आ रचनात्मक विकासके मापदण्ड तय करबाक समय ओ भाषिक गणनाके आधार लेल जा सकए।

भाषा सर्वेक्षण भाषाके वास्तविक अवस्था देखओलाकबाद सम्बिधानमे अनुसूचिके व्यवस्था क मापदण्ड पहुँचएने भाषासभके सूचिबद्ध क ओकर विकासकलेल कार्यक्रम आ अवसर उपलब्ध कराबए सकैत छल । नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान या भाषा-साहित्य सम्बन्धी अन्य सरकारी निकायसभमे

विद्वतवर्गके प्रतिनिधित्व करा क सेहो भाषाके प्राचीनता, समृद्ध इतिहास, लिपि एवं प्रकाशित साहित्यके आधारसँ मदत ल सकैत रहए । एहिसं विवाद सेहो कम हएबाक आ भाषासभके समुचित विकासके अवसर पएबाक संभावना बढैत ।

एहिमे दू नम्बर प्रदेश (आब मधेश प्रदेश) भितर बाजल जाएबला भाषासभ सेहो ताही प्रकारक राज्यद्धारा उचित सम्मान आ अवसर पाओत । कोनो भाषाके विकासकलेल तकर सुदृढ आधार समाजमे स्थापित भेल होबक चाही । आ ई तखन मात्र सम्भव हएत जखन तकर लगत वैज्ञानिक आधारमे तैयार कएलगेल होए ।

यद्यपि एखन नेपालमे होइत आएल जनगणना एकरालेल मुख्य आधार रहल अछि, जाहिमे भाषा-भाषीके संख्या प्रमुखता पओने अछि । राष्ट्रिय जनगणना २०६८, १ लाखसँ अधिक बाजल जाएबला भाषाके संख्या १९ टा देखओने अछि । नेपाली (४४.६४ प्रतिशत), मैथिली (११.६७), भोजपुरी (५.९८), थारु (५.७७), तमांग (५.११), नेवारी (३.२०), बज्जिका (२.९९), मगर (२.९८), डोटेली (२.९७), उर्दु (२.६१), अबधी (१.८९), लिम्बु (१.३०), गुरुंग (१.२३), बैतडेली (१.०३), राई (०.५४), बान्तबा (०.५०), राजवंशी (०.४६) र शेर्पा (०.४३) (श्रोत : केन्द्रिय तथ्यांक विभाग, राष्ट्रिय जनगणना २०६८) ।

भाषा तथ्यांक अनुसार प्रदेश नं. २ मे बाजल जाएबला ८९ भाषासभमेसँ १ लाखसँ अधिक बाजल जाएबला भाषाके संख्या सात अछि । एकटा महत्वपूर्ण तथ्य की देखलगेल अछि जे राष्ट्रिय स्तरमे १ लाखसँ अधिक बाजल जाएबला दश भाषा मेसँ ई सातो भाषा प्रदेश नं. २ मे सेहो पड़ल अछि । ओ अछि- मैथिली, भोजपुरी, बज्जिका, नेपाली, उर्दु, थारु, तमांग ।

प्रदेश नं. २ मे भाषाके अवस्था आ तकरा लेल विकास आ समृद्धिके नीति बनाबएबला प्रयोजनके लेल ई सातटा भाषाके आधार बनाओल जा सकैत अछि । मुदा एहिमे नेपालके सम्बिधान भाग-१ : प्रारम्भिकके दफाः ७ के उपदफा (२) मे लिखल “नेपाली भाषाक अतिरिक्त प्रदेश अपन प्रदेश भितर बहुसंख्यक जनता बाजल जाएबला एक या एकसँ अधिक अन्य राष्ट्र भाषाके प्रदेश कानून बमोजिम प्रदेशक सरकारी कामकाजके भाषा निर्धारण क सकत” कहल वाक्यके आधार मानए पड़त ।

उपदफा (३) मे भाषा आयोग सिफारिश कएलाकबाद नेपाल सरकार जे निर्णय करैत अछि ओ बात सेहो संगहि लिखलगेल अछि ।

एना नेपालक भाषासभमेसँ २ नं. प्रदेशमे बाजल जाएबला बहुसंख्यक जनता बाजएबला भाषासभ प्रति आगामी दिनमे की केहन व्यवस्थापन कएल जाएत से आजुक चिन्तनके विषय अछि ।

प्रदेश नं. २ मे भाषा

एहिसँ पहिनही चर्चा कएलगेल अछि-प्रदेश नं. २ मे ८९ भाषासभ रहल अछि । (राष्ट्रिय जनगणना २०६८) । एहि मेसँ मैथिली सभसँ अधिक २४ लाख ४७ हजार ९ सय ७८ बाजल जाइत अछि । दोसर स्थान भोजपुरी (१०,०३८७३) लेने अछि त तेसर स्थानमे बज्जिका रहल अछि जेकर जनसंख्या ७९१६४२ रहल अछि । अन्य १ लाखसँ अधिक बाजल जाएबला भाषासभमे नेपाली (३६०२७६ जनसंख्या), उर्दु (३१७०६० संख्या), थारु (२०३५७५ संख्या), तामांग (१०४९८४) अछि ।

एखन प्रदेश सरकार अपन सरकारी कामकाजके भाषा निर्धारण करबाक अन्तिम तैयारी क रहल अछि । मुदा एहि बारेमे छलफल सरकारी स्तरमे नहि कएल गेल अछि । भाषा सम्बन्धी एकटा गोष्ठी भाषा आयोगके सहयोगमे जनकपुरधाममे सम्पन्न भ चुकल अछि । ई गोष्ठी नेपालक संघीय स्वरुप भितर एखन संचालित सात प्रदेश मेसँ प्रदेश नं. २ मे भाषाके अवस्था आ तकर समुचित प्रयोग सम्बन्धमे विस्तृत छलफल कएने छल ।

प्रदेश नं. २ मे रहल भाषासभके अवस्था सम्बन्धमे अध्ययन कएलापर प्रथम स्थानमे रहल मैथिली लगभग आठो जिल्लामे बाजल जाइत अछि । सप्तरी, सिराहा, धनुषा आ महोत्तरी, सर्लाहीमे मुख्य रुपमे बाजल जाएबला ई भाषा एखन सर्लाहीमे किछु कम देखलगेल अछि । २० टा स्थानीय तह रहल सर्लाहीमे ब्रहम्पुरी गाउँपालिका (१४५५१ ज.सं.), चन्द्रनगर गाउँपालिका (१४७६२), हरिपूर्वा नगरपालिका (२६९२० ज.सं.), कविलासी नगरपालिका (२२०५६ ज.सं.), पर्सा गाउँपालिका (१८१४९ ज.सं.) मे प्रथम भाषाके रुपमे बाजल जाइत अछि । ओतहि १२ टा मे बज्जिका प्रथम भाषाके रुपमे देखलगेल अछि ।

विगत केछु वर्ष एम्हर भाषा चेतनामे भेल वृद्धिसँ मैथिली भाषी सर्लाहीमे बज्जिकाक वर्चश्व बढल भाषा विज्ञानक अध्येतासभके धारणा रहल अछि ।

रौतहट जिल्लामे मैथिलीक संख्या आधा-आधी मानएबलासभके आबके तथ्यांकसँ निश्चय निराशा हएतनि । ओहिठाम दूटा स्थानीय तहमे मैथिली दोसर भाषाक रुपमे मात्र आबए सकल अछि, जखन कि अठारह टा स्थानीय तहमेसँ पन्द्रहटामे बज्जिका प्रथम भाषाके रुपमे आगा आएल अछि । एहिठाम सेहो भाषा चेतनाके छाप स्पष्ट रुपमे तथ्यांक वृद्धिमे देखल जा सकैत अछि । एहि जिल्लामे मैथिली आ भोजपुरी दूनु भाषा बाजएबलासभके संख्या घटल देखलगेल अछि ।

आब भोजपुरी भाषाके प्रमुख जिल्ला वारा आ पर्सामे अध्ययन कएलापर बाराके १६ स्थानीय तहमे १४ मे भोजपुरी प्रथम भाषाके रुपमे देखलगेल अछि । आ दूमेसँ एकमे (कोल्हवी नगरपालिका) थारु आ दोसर निजगढ नगरपालिकामे नेपाली प्रथम भाषाके रुपमे तथ्यांक देखओने अछि ।

तहिना पर्साके १४ टा स्थानीय तहमे भोजपुरी १३ टा तहमे प्रथम भाषाक रुपमे बाजल जाइत अछि त १ तह (ठोरी गाउँपालिका) मे नेपाली प्रथम भाषाके रुपमे देखलगेल अछि ।

एहिमे एकटा तथ्य बहुत डेराओन की अछि जे मैथिली भाषाके विस्तृत बाजल जाएबला क्षेत्रमे विगत किछु वर्ष एम्हर अतिक्रमण करैत अभियान चलएबाक बात चर्चामे अएलाकबादो २०६८ सालके जनगणना तथ्यांक देखओने अछि जे प्रदेश नं. २ के सभ आठो जिल्लाक १३५ स्थानीय तहमे लगभग प्रत्येकमे मैथिलीके उपस्थिति अछि । अतेकधरि जे भोजपुरी भाषी क्षेत्र कहलगेल वारा, पर्सामे सेहो काफी मैथिली भाषी अछि । वारामे दोसर स्थानमे आठटा स्थानीय तहमे मैंथिली अछि त पर्सामे सातटा स्थानीय तहमे मैथिलीके उपस्थिति देखलगेल अछि ।

तथ्यांकमे मधेश प्रदेशमे मैथिली भाषीके संख्या २४ लाख सैतालिस हजार नौ सय अठत्तरि, भोजपुरीके संख्या १० लाख ३ हजार आठ सय तीरहत्तरि रहल देखल गेल अछि । ७ लाख ९१ हजार ६४२ के संख्या बज्जिकाके सेहो देखलगेल अछि ।

प्रदेश नं. २ मे एहि तरहक भाषासभके अवस्थासँ भविष्यमे एकर उपयोग करबाक नीति बनएलापर एहि प्रकार बहुसंख्यक आ समृद्ध भाषाके ध्यानमे राखि आगा बढलापर बढिया हएत से तथ्यांक देखबैत अछि । यद्यपि एहि सम्बन्धमे भाषा आयोगके भूमिका सेहो महत्वपूर्ण हएबाक बात सम्बिधान गठन कएने भाषा आयोगके कार्यक्षेत्रके सूची देखलापर प्रष्ट होइत अछि ।

भाषा आयोग (धारा २८७ बमोजिम गठित) के उपधारा (६) बमोजिम प्राप्त अधिकारमे (क) सरकारी कामकाजके भाषाके रुपमे मान्यता पएबा लेल पूरा कडबाक आधारसभके निर्धारण क नेपाल सरकार समक्ष भाषाके सिफारिश करबाक, (ग) मातृभाषासभके विकासक स्तर मापन क शिक्षामे प्रयोगके सम्भाव्यताक सम्बन्धमे नेपाल सरकार समक्ष सुझाव पेश करत ।

एकरा कारणसँ प्रदेश भितरके भाषासभसँ 'बहुसंख्यक बाजल जाएबला' एक वा एकसँ अधिक भाषाके छनौट कएलापरआ भाषा आयोगक तय कएल मापदण्ड भितर रहि निर्धारण कएलापर अधिक वैज्ञानिक हएत से भाषाविज्ञसभके धारणा अछि ।

विगतके अध्ययन-भ्रमण आ विचार-विमर्शकबाद भाषा आयोग निर्धारित कएने निम्न अनुसारक छ टा मापदण्डके सर्वस्वीकृति रुपमे आगा बढएनाई उचित देखलगेल अछि। ओ अछि-

(क) प्रदेशमे भाषा बाजएबला वक्ताके संख्या
(ख) भाषिक पहिचान
(ग) लेखन प्रणाली
(घ) भाषाक स्तरीकरण
(ङ) भाषाक स्वीकार्यता
(छ) भाषाक ऐतिहासिकता

एकरा आओर परिष्कृत करबाक समय अछिए। आयोग अनुकूलता देख करबो करत।

तहिना शिक्षाके क्षेत्रमे भाषाके प्रयोग सम्बन्धी धारणा रखैत भाषा आयोग सम्बिधान द्वारा प्रदत्त धारा ३१ (५) के अवधारणा अनुसार मातृ भाषामे शिक्षा पएबाक मौलिक हकके कार्यान्वयनमे जोड़ देने अछि।

<u>प्रदेशमे भाषा प्रयोगके अवस्था</u>

प्रदेश नं. २ मे बाजल जाएबला भाषासभमेसँ आवश्यक क्षमता भेल भाषासभके प्रयोग सम्बन्धमे विभिन्न दृष्टिकोण रहलाकबादो एकरा वैज्ञानिक तथ्यके आधारमे प्रयोग करबा लेल नीति बनएनाइ उचित हएत। कोनो आग्रह-दुराग्रह या पूर्वाग्रहके आधारमे मातृभाषासभके अन्धकारमे राखल नहि जा सकैत अछि। एहि हिसावसँ सेहो मातृभाषासभके सम्मानजनक आ औचित्यपूर्ण प्रयोगकेलेल तीनटा क्षेत्र निर्धारण क सकैत अछि।

एक - सरकारी कामकाजक भाषाके लेल !

दू - मातृभाषा शिक्षामे उपयोगके लेल !

तीन - भाषा, साहित्य प्रतिष्ठान द्वारा विकासक लेल !

एहि तीनू क्षेत्रमे औचित्यपूर्ण रुपमे नीति निर्माण क भाषासभके उपयोग कएलापर भाषा-भाषीसभके उपरागसभ किछु हदधरि शान्त भ सकबामे हम विश्वस्त छी।

एक - सरकारी कामकाजके भाषा

सरकारी कामकाजके भाषाक लेल सम्पूर्ण राज्यमे एकटा नेपाली भाषाके सम्बिधामे निर्धारण क देने अछि - भाग १ : प्रारम्भिक -(७) सरकारी कामकाजक भाषा : (१) देवनागरी लिपिमे लिखल जाएबला नेपाली भाषा नेपालक सरकारी कामकाजके भाषा हएत।

मुदा ई संघीय स्वरुपमे चलि गेल देशके विविधताक आधारमे प्रदेश सरकारके लेल सेहो भाषाके नीति अवलम्बन करबाक समयके मांग भेलासँ नेपालके सम्बिधानक ओहे ७ नं दफाके (२) उपदफामे -नेपाली भाषाक अतिरिक्त प्रदेश अपन प्रदेश भितर बहुसंख्यक जनता बाजएबला एक या एकसँ अधिक अन्य राष्ट्रभाषाके प्रदेश कानून बमोजिम प्रदेशक सरकारी कामकाजके भाषा निर्धारण क सकत ।

सम्बिधान एना स्पष्ट व्याख्या क चुकलाकबाद प्रदेशमे सरकारी कामकाजके भाषा निर्धारण करबाक बाट खुजल अछि । मुदा आईधरि ओ होबए नहि सकल अछि । समस्या की अछि त ! सभसँ अधिक बाजल जाएबला मैथिली त रहबा त उचिते । दोसर भोजपुरी भाषीसभ सेहो दोसर स्थानमे अछि । आब एकसँ अधिकके लेल जाए त भोजपुरीके छोड़ल नहि जा सकैत अछि । हमर विचारमे एना दू नं. प्रदेशमे भाषाके कोनो समस्या नजरि पर नहि चढैत अछि । मुदा जखन तेसर भाषा सेहो रखबाक सोच आएल त विवाद आबि सकैछ । आहो तेसर भाषा सेहो जनसंख्याक आधारमे राखलगेल त विवाद अएबाक बाते नहि । विवाद तखन भ सकैछ जँ जनसंख्याके तथ्यांक बाहरसँ राखल जाए त मात्र विवाद सृजन भ सकैछ । यद्यपि ई विवाद मातृभाषा-भाषीके हककेलेल हएत, मुदा राजनीति आ व्यवहारिकता देखलापर अन्य भाषाके औचित्य सरकार स्थापित कर सकल त ओ भाषा सेहो कामकाजके भाषाक रुपमे स्वीकृत भ सकैत अछि । मुदा एकरालेल सरकार संग उचित कारण आ तथ्य आवश्यक हएत ।

दू -मातृभाषा शिक्षामे उपयोग

शैक्षिक क्षेत्रमे मातृभाषा शिक्षा प्रति निरन्तर बहस चलैत रहैत अछि । सरकार सेहो प्राथमिक तहसँ उच्च अध्ययन धरि मातृभाषा शिक्षा नीति ल क काज कागा बढेनही अछि । आब ओहि शिक्षाके प्रदेश सरकार अनिवार्य करबाक समय आबि गेल अछि । पाठ्य पुस्तक निर्माणमे प्रदेश सरकार स्थानीय प्रभावके सेहो समेटकए नयाँ सिलेवसके निर्माण क लेखन कराबए त उत्तम हएत । वास्तवमे नेपालके सम्बिधानके धारा ३१ (५) प्रत्याभूत कएने मातृभाषामे शिक्षा पएबाक मौलिक हकके पूर्ण पालनाकलेल शिक्षा ऐनमे रहल परम्परागत अवधारणाके परिवर्तन कए नयाँ संशोधन क तकरा संघीयताक गति संग जोड़ि आगा बढाबए पड़तै ।

मातृभाषाके अनिवार्य शिक्षासं मातृभाषा पढिकए की हएत ? रोजगारी नहि मिलबाक डर किछु हद धरि कम भ सकैछ । सरकारी कामकाजक लेल स्वीकृत भाषा कार्यालयसभमे प्रयोग होब लगलाक बाद ओकर विशेषज्ञ,

ज्ञातासभके प्राथमिकता सँग दू भाषिया, अनुवादक, शिक्षक आ बादमे लोकसेवा द्वारा सेहो उत्तीर्ण होबए लेल सहायक सभक जरुरति हएत।

तीन - भाषा साहित्य प्रतिष्ठानक गठन

उपर विभिन्न कारणवश किछु खास भाषासभके मात्र कामकाजक आ शिक्षाक लेल छनौट करबाक अवस्था आएल त बाँकी रहल भाषासभके विकासक लेल की कएल जाएत ? निश्चित रुपमे मातृभाषीसभ बीच एहन आशंका जन्म ल चुकल अछि आ एकर समाधान खोजल जा रहल अछि। हमर विचारमे एकर सभसँ सशक्त उपाय प्रदेश स्तरमे "भाषा, साहित्य, संस्कृति प्रतिष्ठान" के गठने हएत । प्रतिष्ठान प्रदेशक भाषासभके तथ्यात्मक लगत राखत, ओकर साहित्य, भाषा, संस्कृति, इतिहास, लोक साहित्यके अध्ययन-अनुसंधान कराओत । विद्वतवृति द क अनुसन्धानकलेल कोनो खास विषयमे लगाओल जा सकत । पुस्तक प्रकाशित हएत । शब्दकोष, व्याकरण, लोक साहित्यके संकलन, लेखन कराओल जाइत । समय-समयमे विभिन्न भाषा-भाषीसभके ओकरे सभके क्षेत्रमे जाकए भाषा, साहित्य, संस्कृति आदि विषयमे गोष्ठी द्वारा जनचेतना जगएबाक काज कएल जाएत। एहिसँ सेहो एहन प्रतिष्ठानके गठन अत्यन्त जरुरी देखल गेल अछि।

प्रदेश नं. २ के सरकार आ.ब.२०७५/७६ के नीति तथा कार्यक्रम प्रदेश सभाक बैंठकमे प्रस्तुत क क पास करा चुकलमे ओकर बुन्दा नं. ९६ मे स्पष्ट रुपमे भाषा संस्कृति प्रतिष्ठानके गठन करबाक वाचा कएने अछि - "भाषा साहित्य आ संस्कृतिके प्रवर्द्धन करबा लेल प्रदेश संस्कृति तथा भाषा प्रतिष्ठान स्थापना कएल जाएत।"

प्रदेश सरकार वार्षिक बजेटमे ई प्रतिष्ठान गठनकेलेल बजेट सेहो छुट्यओने अछि। मुदा एकर गठन दश महिना वितलाक बादो नहि भ सकल अछि। सामाजिक विकास मन्त्रालय अन्तरगत रहल एहि विषयमे मंत्रालय कियाक रुचि नहि देखओने हएत बुझब कठिन अछि । जँ मुख्यमंत्रीके बात पर बिश्वास करी त ओ अनेक बेर एकर गठनके मंचपर घोषणा क चुकल छथि। नहि भेल त आब अबिश्वास बढल जा रहल छैक। मुदा प्रयास जारी राखए पड़त।

निष्कर्ष

प्रदेश नं-२ मे बाजल जाएबला भाषासभके बारेमे आओर व्यापकरुपमे बिमर्शके आबश्यकता देखल गेलाक बाद भाषा आयोगसं निर्बाह कएल जा सकबला भूमिका महत्वपूर्ण हएबाक बातमे दू मत नहि भ सकैए।

भाषा आयोग अपन पहिल सालके प्रतिवेदनके परिछेद: ६ मे (२०७३ भादव २३ गतेसँ २०७४ अषाढ महिना) सरकारी कामकाजक भाषा सम्बन्धी अपन एहन

धारणा रखैत *सरकारी कार्यालयमे अभिलेख रखलापर, कार्यालयसभके नामाकरण कएलापर, औपचारिक कार्यक्रममे सम्बोधन कएलापर, सार्वजनिक सरोकारक विषयमे सम्बोधन कएलापर,* नेपाली भाषा अनिवार्य करबाक कहलगेल छल ।

मुदा आयोग दोसर प्रतिवेदन (२०७४-०७५) धरि पहुँचला पर प्रदेशसभके मिजाजके अध्ययन क चुकलाकबाद अपन सिफारिसमे व्यापक सुधार कएने देखल गेल अछि।

प्रतिवेदनके परिच्छेद सातमे नेपाल सरकारके सिफारिस तथा सुझाव अन्तर्गत ७ (२) के सम्बिधान बमोजिम सरकारी कामकाजमे भाषा प्रयोग उपशिर्षकमे सिफारिस कएलापर (क) मे आएल वाक्यांश *तीनू तहके सरकारी अभिलेख नेपाली भाषामे रहनाइ अनिवार्य होइत अछि । संघ, प्रदेश आ स्थानीय तहमे सरकारी अभिलेख रखलापर अन्तर भाषिक अनुवाद पद्धति विकास कएनाई जरुरी अछि।* राखलगेल अछि।

तहिना (ख) मे आएल वाक्यांश *वहुभाषिक कार्यप्रणाली अनुसार नेपाल भितर संचालन होबएबला औपचारिक सभा, समारोह आ सार्वजनिक संचारक माध्यमसभमे नेपाली भाषा आ अन्य राष्ट्रभाषासभके प्रयोग विस्तारमे नेपाल सरकारके जोड़ देबए पड़त ।*

(घ) मे आयोग जनभावनाके कदर करैत संघीयताक मर्म प्रति सम्बेदनशील होइत सिफारिसमे लिखने अछि - *नेपालक सम्बिधानके धारा ७ (२) अनुसार नेपाली भाषाक अतिरिक्त अन्य राष्ट्रभाषाके प्रदेश अपन प्रदेश भितर प्रदेश कानून बमोजिम प्रदेशक सरकारी कामकाजक भाषा निर्धारिण कएलापर प्रदेश तहके सरकारी कामकाजक अभिलेख ओहि भाषामे सेहो रखनाई अनिवार्य होइत अछि।*

कामकाजक भाषा निर्धारण भेलाकबाद अन्य भाषाके सेहो उचित सम्मानकलेल आवश्यक नीति तथा कार्यक्रम तर्जुमा करबाक लेल ओहन कोनो आधिकारीक निकायके गठन जरुरी अछि, जकर प्रतिबद्धता सरकार अपने व्यक्त क चुकल अछि। एकरा लेलल सामाजिक विकास मन्त्रालयके पहल करए पड़त । तहिना मन्त्रालय अन्तर्गत भाषा, साहित्य, संस्कृति रशबाक कारणेँ एखनुका समस्याके सहजीकरण करबाक जिम्मेवारी सेहो अही मन्त्रालयके हएत ।

आयोग स्वीकृत भाषाके अभिलेखकेलेल दोभाषिया अथवा अनुवादकके व्यवस्था करए सेहो सुझओने अछि । एहिमे एकटा विभिन्न भाषा समूहसँ नीजी स्तरमे अनुवादकके औपचारिक आहवान क तकरा प्रमाणित करबाक आ समयमे सहयोग लेबाक । एकरा लेल भाषाके बाजल जाएबला संख्या आ शिक्षाके पठन-पाठन स्तरके सेहो आधार बनाओल जा सकैत अछि । सँगहि कामकाजक भाषाक अतिरिक्त सेहो भाषा-भाषीसभके प्रदेशमे रहल वसोवास आ आवश्यकताके ध्यानमे राखि दोभाषिया वा अनुवादके माध्यमसँ सरकारी कामकाजमे हुनके भाषामे बयान, निवेदन आदि प्राप्त क सकैत अछि । मुदा एकरा लेल सरकार पूर्णरुपेंण सक्षम होबए पड़त ।

दोसर तरिका अछि तत्काल भाषा, साहित्य प्रतिष्ठानके गठन क कामकाजक स्वीकृत भाषासभ वाहेक सेहो वाँकी रहल भाषासभके विकासक लेल नीति आ कार्यक्रम बना कार्यान्वयन करबाक । भाषा आयोग सेहो अपन प्रतिवेदन (२०७४-२०७५) के धारा ३.४.१ मे भाषासभके अध्ययन अनुसन्धान उपशिर्षकमे लिखने अछि- (क) प्रदेशक लेख्य तथा समृद्ध भाषा एवम् मौलिक परम्पराक भाषाके अध्ययन अनुसन्धान क एक भाषाके सामग्री दोसर भाषामे अनुवाद करबाक, अनुवादकसभ तैयार करबाक, मौलिक लेखन आ अनुवादकके पुरस्कृत करबाक, विभिन्न भाषाक पुस्तक प्रकाशन करबाक, संचार माध्यममे प्रयोग करबाक आ देशक मुख्य भाषिक सम्पदा विभिन्न भाषामे प्रकाशन करबाक ब्यबस्था मिलाओल जएबाक चाही ।

प्रदेश नं. २ के सरकार भाषा सम्बन्धी व्यवस्थापनकेलेल दीर्घकालीन रणनिति बनाबए आ ओकर कार्यान्वायन करए लेल २०७५।०७६ के नीति तथा कार्यक्रम संसदमे प्रस्तुत करैत समय ९६ नं. बुन्दामे प्रदेश संस्कृति तथा भाषा प्रतिष्ठान गठन करबाक प्रतिबद्धता जना चुकल अछि । आ तकरा लेल २०७५।०७६ के बजेटमे सेहो रकम छुट्याओलगेल देखल जा सकैत अछि । एखनधरि एकर गठन कीयाक होबए नहि भ सकल ई सरोकारवालासभके बुझएके बात अछि ।

एखनुक अवस्थामे ई विकल्प सभसँ उचित देखल जा सकैत अछि आ एकरा लेल भाषा, साहित्य क्षेत्रक संघ-संस्था आ विज्ञसभ प्रदेश सरकारके प्रतिष्ठान गठनके लेल निरन्तर आग्रह करैत आएल अनेकों पसंग छापासभमे अबैत रहैत अछि । सरकारी कामकाजक भाषाके रुपमे प्रयोग क सरकारी मान्यता प्राप्त भाषासभक अतिरिक्त अन्या सभ भाषाके एहिसं तत्काल फाइदा पहँचए सकैत अछि जेना हमरा लगैत अछि । सरकारी मान्यताक लेल भाषा आयोग निर्धारित कएने ६ टा

मापदण्ड पुरा कएने मात्र सहज होबए सकैत अछि । तकरा लेल सेहो सरकारी कामकाजमे अभिलेखीकरणके लेल आवश्यक शब्द सम्पदा आवश्यक हएत । लीपि, प्राचीनता आ समृद्ध साहित्य संगहि भाषा-भाषीसभके बेसी संख्या होइतो भाषा लिखए आ पढ़ए सकबाक सहजता सेहो एकटा मुख्य आधार मानल जा सकैत अछि । ओहन अवस्थामे एखनेसँ एम्हर गंभीरतापूर्वक नीतिगत कार्यसभ भाषा-भाषीसभसँ शुरु करए पड़त । भावना आ आवेगमे कोनो निर्णय कएलापर ओ वास्तविक उपलब्धी नहि द सकैत अछि, वरु आओर कठिनाई सृजना कर सकैत अछि ।

सरकारी काम काजक भाषाके रुपमे स्वीकृत भ चुकलाक बादके अन्य भाषाके विकासकलेल सेहो एहन प्रतिष्ठान सहायक होब सकैत अछि । भाषा आयोगके सिफारिसमे आएल नीतिगत आधारसभ एम्हरे दिस संकेत करैत अछि ।

(ई आलेख तैयार करैत समय धरि प्रदेशक नाम मधेश प्रदेश प्रदेशसभासं पास नहि भेल छल-ले.)

सन्दर्भ सूचि

१. नेपालके सम्बिधान २०७२
२. प्रदेश तथा स्थानीय तहके भाषिक तथ्याँक, २०७५, भाषा आयोग, नेपाल
३. भाषा आयोगक वार्षिक प्रतिवेदन (प्रथम, २०७३।५।२३-२०७४ अषाढ)
४. भाषा आयोगक वार्षिक प्रतिवेदन (दोसर, २०७४ साओनसँ-२०७५ अषाढ धरि)
५. नीति तथा कार्यक्रम प्रदेश नं -२ सरकार, (२०७५।०७६)
६. प्रदेशनं-२ सरकारके आर्थिक वर्ष २०७५।७६ के वार्षिक कार्यक्रम
७. एघारहम राष्ट्रिय जनगणना २०६८
८. शिक्षणके माध्यम आ शिक्षाक भाषासभ, लेखकःअमान्डा सील, योगेन्द्र प्र.यादव, सदानन्द कँडेल । प्र. यूएसआइडि, नेपाल, २०७३ चैत



नेपालमे रचित मैथिली साहित्यमे कोरोना

सर्व प्रथम हमसभ देखी जे नेपालमे कोरोनाक अवस्था की छैक । जखन चीनमे कोरोना महामारी तहलका मचौने छल, नेपाल तमाशा देखबामे मस्त रहैक । एतेक धरि जखन २४ जनवरी २०२० कऽ पहिल केस एत्त देखार भेल आ ओहो चीनेसँ आएल छल, तखनो ओकरा एतेक गंभीरतासँ नहि लेल गेल । तकर करिब दू मासक बाद अर्थात २०७७ चैत्र १० गते तदनुसार २३ मार्च २०२० कऽ दोसर केस एत्त भेटल । तखन माथा ठनकल पदाधिकारी लोकनिके आ तकराबादे तत्काल ११ गते चैत २०७६ (२४ मार्च २०२०) कऽ सम्पूर्ण नेपालमे लकडाउन लगाओल गेलै । जे कमबेस रुप बदलि-बदलि कऽ आइयो धरि जारी अछि ।

एखन आइके तारिखमे (सितम्बर १८, २०२० ई.) नेपालक कोरोना आतंकक अवस्था देखी त ५९ हजार ५७३ गोटे संक्रमित भेल छथि, जाहि मध्ये ३८३ गोटे मृत्युके प्राप्त भेल त ४२ हजार १४९ गोटे स्वस्थ्य भऽ कऽ घर घूरि गेल छथि । एखन देश भरिमे १६ हजार २ सय ४१ गोटे विभिन्न आइसोलेसन/अस्पतालमे उपचाररत अछि । एहि मध्य १८२ गोटे आइसीयुमे त ३९ गोटे भेन्टीलेटर पर उपचाररत्त हयबाक जानकारी स्वास्थ्य मंत्रालय देलक अछि ।

स्थिति नेपालोमे भयावह छैक । जाँचक दायरा एखनो कम छैक, तएँ समुदायमे पसरल संक्रमण ठीकसँ पकड़ा नहि रहल हयबाक आशंका विज्ञ लोकनि करैत आबि रहलाह अछि ।

प्रायः एहु कारणसँ नेपाल-भारत सीमा एखनो बन्द अछि । भारतोके हालत ठीक नहि छैक । खास कऽ सीमा क्षेत्रक शहरसभ आर संक्रमित भऽ रहल सन समाचार अबैत रहैत अछि । ई सीमा नेपाल सरकार आसीन ३० गते धरि बन्द कऽ देने छैक । यद्यपि आन्तरिक हवाई सेवा, सार्वजनिक यातायात सेवा आइएसँ खोललकैए । से विशेष सावधानीके साथ । हमरा सभके माने जनकपुरधाम क्षेत्रमे निषेधाज्ञा जारी छैक । नेपाल रेलवेक नवका डिव्वा हाजीपुरसँ जयनगर होइत जनकपुरधाम-कुर्था घूमि गेल अछि । फेर ई जयनगरमे जा बैसत । प्रायः अक्टुबरमे नियमित संचालन हयत ।

तत्काल प्राप्त जानकारी अनुसार ई डिव्वासभ जयनरमे राखब खतरापूर्ण बूझल गेल, तएँ ई नेपाली सीमापर बनाओल गेल ईनरबा रेल्वे स्टेशन पर राखल गेल अछि, सशस्त्र प्रहरीके संरक्षणमे ।

जेसे कोरोनाक अवस्था एखनहुँ ठीक नहि छैक । लोक भयभीत होइतो अपन काज आगा बढा रहल अछि ।

कोरोनामे साहित्य

वा साहित्यमे कोरोना

एहन माहौलमे लोक मोटामोटी घरेमे रहब पसीन्न करैत अछि । मुदा से कतेक दिन धरि ! कठिन अवस्था छैक । ई सातम् मास चलि रहल छै लकडाउन आ निषेधाज्ञाके । वातावरण बहुत खुजल नहि छैक तथापि साहित्यकर्मी लोकनि एहि अवसरक साहित्य चिंतन आ लेखनमे उपयोग कएलनि अछि ।

सामान्यतः पत्र-पत्रिका वा पुस्तकाकार प्रकाशन भेने ताहि रचनाक सम्बन्ध आम पाठकसँ होइत छैक । तएँ लोक एहि सम्बन्धमे किछु लिख चाहए त तकरे आधार लेल जा सकैत अछि । अपन-अपन डायरीमे, काँपीक पन्नामे अथवा फुलस्केप कागजमे की लिखलनि ई चर्चाक विषय नहि भऽ सकैत अछि । तएँ एत्तहु तकर ध्यान राखल गेल अछि । हँ, तखन आइ काल्हि सामाजिक संजालमे सेहो काफी लिखल जा रहलैक अछि । मुदा तकरा साहित्यिक चर्चामे सामिल करबाक सामान्य परम्परा नहि छैक ।

आब साहित्य लेखन दू तरहे भेलैक । एक कोरोना कालमे साहित्य लेखन, दोसर साहित्यमे कोरोनाक उपस्थिति । दुनू तरहक साहित्य लिखल गेलैए नेपालमे । लकडाउनके अवस्थामे किछु गोटे कथा, कविता, निबन्ध, समालोचना लिखलनि अछि, जे किछु पत्र-पत्रिकामे छपल अछि । ओ 'आँजुर', घर-बाहर, मिथिला दर्शन, गामघर साप्ताहिक, मिथिला साप्ताहिक आदिमे प्रकाशित भेल अछि । किछु 'गोरखापत्र'क मैथिली पृष्ट पर सेहो देखल गेल अछि ।

दोसर तरहक प्रकाशन अछि एहि अबधिमे कोरोनाके आधारबना साहित्य लिखब से एहो लिखल गेल छै । हम उपर गनाओल पत्र-पत्रिका सभमे एहु तरहक रचना देखल गेल अछि ।

हमरा लग दोसर तरहक विषय बस्तु पर ध्यान केन्द्रित करबाक आग्रह अछि तएँ हम संक्षिप्तमे जे हमरा नजरिमे आबि सकल अछि, तकर चर्च करब उचित बुझैत छी ।

साहित्यमे कोरोनाक चर्च

आबी सर्व प्रथम हम भारत (विहार) सँ प्रकाशित मिथिला दर्शनक टटका अंक सितम्बर-अक्टुबर २०२० मे प्रकाशित नेपालक साहित्यकारक रचना दिश लऽ चली । वीरगंजसँ वरिष्ठ पत्रकार आ साहित्यकार चन्द्रकिशोर अपन कविता

'लकडाउनमे बोर्डर' मे दुनू देशक नागरिकके लेल कोरोनाक कारणें सीमावन्दक घटना एकटा अत्यन्त दुखद आ पीडादायक प्रसंग उल्लेख कएने छथि । कविक भावना तकरे प्रतिनिधित्व करैत अछि-

सीमांचलके सिनेह

की जाने गेल दिल्ली आ काठमाण्डू

परस्परके चुहचुही कहाँ समभ्क पाएत ?

बोर्डर पर अटकल लोगके

लुटा गेल खुशी सभ, टुटगेल सपना सभ,

की दिल्ली-काठमाण्डू एकरा लौटा सकत

कोरोना कालमे कोरोनाक भयावहताक चित्रक सँग परम्परागत राग-अनुरागक अन्तर सम्बन्धक सहज चित्रण कएलनि अछि वरिष्ठ साहित्यकार डा. रामदयाल राकेश अपन उपन्यास 'कोरोना'मे । ई उपन्यासक पहिल किश्त जनकपुरधामसँ प्रकाशित हमरे सम्पादनक साप्ताहिक पत्रिका 'गामघर साप्ताहिक' मे प्रकाशित भेल अछि । भऽ सकैए एकर प्रकाशन क्रमशः होए । ओना एकर लेखक महोदय एकरा जल्दीए पुस्तकाररुपें पाठक समक्ष लएबाक प्रयासमे छथि । (ई उपन्यास किछुमास पूर्वे छपि चूकल अछि-ले.)

एहि उपन्यासमे सामाजिक जीवनमे कोरोना प्रभावसँ आएल विचलन, पीड़ा आ अस्तव्यस्तताक सुन्दर चित्रण भेल अछि । नेपालक सर्लाही जिल्लामे बाजल जाइत मैथिली 'टोन'मे लिखल ई उपन्यास जँ छपि गेल त निश्चय ई मैथिली साहित्यक उपलब्धि हयत ।

नेपालमे बढि रहल कोरोना प्रभावक चर्च करैत एकटापात्र रामेश्वर, कहैत अछि -"आब त हमसब ४-५ गोटे एकसाथ बैसकऽ ई चौपालपर गप्प-सप्प सेहो नै कऽ सकैछी । कैला त ई एक गोटेसँ दोसर गोटेमे श्वास-प्रश्वाससँ पटैत छैक । ई बड़का महामारी छैक ..... । "

स्कूलसँ दोसर शिक्षक रामगोपाल हल्ला करिते ओही ठामपर पहुँचल आ कह' लागल-आब त स्कूल सेहो अनिश्चित कालके लेल बन्न करके सूचना अखने सरकारसँ ऐलैअ । आब कोना विद्यार्थी सबके भविष्य बनतै !"

".... टेलिभिजन रातदिन कतेक बेरतक देखैत रहु । भारत-नेपाल सहित दुनियाँभरके च्यानलमे कोरोना भाइरसके समाचार सुनैत-सुनैत अकच्छ भऽ गेल छी । समाचार सुनि सुनि कऽ मानसिक तनाव बढल जा रहल है ।- सुकेश्वर आबि कऽ सुना रहल छै -हे भगवान ! केना ई कोरोनासँ छुटकारा मिलतै ?"

(कोरोना, प्रथम अध्यया 'भाग प्रथम,*कोई नहि बाटपर'* गामघर साप्ताहिक, जनकपुरधाम ।सं. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर')

राजविराजसँ प्रखर लेखक देबेन्द्र मिश्रजी गद्य-पद्यमे माहिर लोक छथि । कोरोना काल शुरुए भेल रहए । ताही समयमे एकटा विलक्षण स्वानुभूति *देह सिहरि गेल* नामसँ लिखलनि जे गामघर साप्ताहिकमे छपल । देखी हुनक कोरोना कालक कोरोना जन्य अनुभव -

"...एकटा कपड़ाके दोकानमे मुड़ी झुका क पैसलहुँ । मुलकेरास लोक भितरमे । एक दू गोटे मास्को लगौने । हम अलगेसँ छाता मंगलौं । छत्ताक गुणस्तरक जाँच करब आ मर मोलाइ करबामे बेसी समय नइ वितेलौं । आइ पहिल बेर लोकसबके देखि डर भेल छल .... ।

'...दबाई दोकानमे हाथके सेनेटाइज केने रही । जल्दी जल्दी विदाह भेलौं, ओहि बाटे दोगा दोगी । तेतरी गाछ्री लग रहल घर पहुँचि बाहरेमे धारापर पएर हाथ धोलौं । लागए छल जेना कोरोनाक खानिसँ निकलल होए । लकडाउनमे बाहर निकलनाई किएक घातक अछि, से बुझा रहल छल ।"

(गामघर साप्ताहिक, २८ मई २०२०)

एहि सन्दर्भमे कथाकार डा. सुरेन्द्र लाभक एकटा मार्मिक कथा पटनासं प्रकाशित'घरवाहर' पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि । कोरोनाक महामारीमे अपन-अपन गन्तव्य धरि पैदल चलनिहारक व्यथा, परेशानी आ ताहिसँ भेल घोर मानवीय क्षति धरिकें समेटैत ई कथा *'दसगज्जा'*के ओ प्रस्तुत कएलनि अछि । एकटा सम्वादक माध्यममे प्रस्तुत एहि कथामे मनुक्खक माने मानवताके विम्वके रुपमे प्रस्तुत करैत एकटा प्रसंगमे अपन परिचय एहि तरहे ओ पात्र दैत अछि-

"हँ, बन्धु ! नेपाल आ भारत दुनू देशमे हजारक हजारलोक, हजारक हजार किलोमीटर एहि महामारीमे जे पैदल चलि रहल छल ओ हमरे पएर छल । दुनू देशक राजपथमे जे लहु-लोहान भेल ओ हमरे तरबाक खून छल । चालिस किलोमीटर पैदल चललाक बाद सुनसान पड़ल रेलवेक पटरीपर थकित भS जखन सोलह गोटेक आँखि लागि गेलैक आ रेल सभक गर्दनिके रेतैत आगु बढि गेलैक त ओ गर्दनि सभ हमरे छल.... ।" (घर-बाहर, जुलाई-सितम्बर, २०२०, पृ-२१)

नेपालमे कोरोना महामारीके साहित्यकार लोकनि गंभीरतासँ लेने छथि आ अपन-अपन अभिव्यक्तिमे तकर चर्च सेहो कैने छथि । अपन एकटा लेखमे सुधा मिश्र कोरोना संत्राससँ सामाजिक जीवनक व्यथाकथा एहि तरहे उतारलनि अछि -

“लोकसभके घरक रोटी खेतमे पड़ल छै । अगर ओकरा कोनो विधिसँ घर नहि नहि लायल गेलै त आइ कोरोना महामारी छै त काल्हि भुखमरीसँ देशके स्थिति सम्वेदनशील रहतै ।”

(आँजुर, चैत-बैशाख २०७७)

तहिना कवि विनोद चन्द्र झा कोरोना कालक विचार एना प्रस्तुत करैत छथि

“रे कोरोना
कथीला तो छे अतेक डरौना ।
चिनियाँ नर केओ माउस कि खैलक
दू सय देश किया सजायके पौलक... ।”

(आँजुर, चैत-वैशाख २०७७)

गीतकार, हाइकु कवि विनीत ठाकुर सेहो अपन उद्‌गार हाइकु माध्यमसँ एना व्यक्त कैने छथि-

१. रोग कोरोना
भेल जगजियार
रही सतर्क
२. साबुन पानि
कोरोनाक दुश्मन
रगड़ी हाथ ।
३. कोरोना रोग
पसरए भीड़मे
रही सतर्क !

(आँजुर, चैत-बैशाख २०७७)

एहि कोरोना प्रकोपमे पंक्ति लेखक सेहो किछु लेखन कएलनि अछि । हमर शुरुएसँ ‘डायरी लेखन’क रुचि रहल अछि। से कोरोना कालमे भेल लकडाउन अबधिमे १६ अध्यायमे डायरीक लेखन सम्पन्न कएल, जकर प्रकाशन गामघर साप्ताहिकमे २५ बैशाख २०७७के अंकसं ई प्रकाशित होइत अएलैए । आब एकर पुस्तककार प्रकाशन भऽ रहल छैक । प्रेसमे अन्य व्यवस्थाक हेतु जा चुकल अछि । जल्दीए प्रकाशन हएत । (ई डायरी “कोरोनाक संत्रासमे ओभरायल जिनगी” नामसं प्रकाशित भ चुकल अछि)

"कोरोनाक संत्रासमे ओभरायल जिनगी" नामक हमर ई लकडाउन डायरी १५ खण्डमे अछि त किछु अनुसूची दऽ एहि अवधिक हमर भाषा, साहित्यसँ सम्बन्धित काजके सेहो समेटल गेल छैक।

हमर डायरीक एकटा छोटछीन अंश एत्त राख चाहब जे कोरोना कालमे हमर लेखनके स्पष्ट करैत अछि -

"......जेना एहिबीच काठमाण्डूक नागरिक दैनिकक साहीत्यिक परिवारिक पत्रिका परिवारक सम्पादक महोदयक आग्रहपर रामनवमीपर आलेख पठाओल आ ओ चैत अंकमे छपल। पटनाक प्रसिद्ध महाबीर मंदिरसँ प्रकाशित होब बला पत्रिका धर्मायिणक बैशाख अंकक हेतु जानकी नवमीपर रचना मांगल गेल छल। तकरा पठाओल। अनलाइन पर आइए प्राप्त भेल अछि। दरिभंगासँ भाई चन्द्रेश सेहो एहि बैसारीमे संचमंच नहि छथि। आग्रह क देलनि एकटा आलेखक से हम दू चारि दिन पूर्वे पठा देने छियनि, जकर पावक स्वीकृति आई फोनपर देलनि अछि।

एकर अतिरिक्त चैत ११गतेसँ आइ धरिक लगभग एक मासक अबधिमे प्रकाशित भेल स्थानीय डेली एक्सप्रेसक सोमबारक अंकमे हमर साप्ताहिक स्तम्भ 'सत्य-सम्वाद'क पाँचटा अंक प्रकाशित भ चुकल छैक जे निश्चित रुपें कोरोना गतिविधिपर आधारित छैक। साहित्यिक लेखनक नामपर कोरोना प्रभाव पर केन्द्रित हमर एक मात्र कविताके लेल जा सकैछ। जे एना अछि -

मुक्तिक बाट जोहैत

एब बेर फेर सुनल अछि
एम्बुलेंसक पिपअएनाई!
पक्के ई कोनो दुखिताके लदने
बदहवास भागल जाइत
एम्बुलेंसे हयतैक!
लकडाउनक अवस्थामे
स्वयंके घरेमे बन्न कएने
दिनहुँ सुनैत ई डेराओन आवाजकें
निजगुतीक हेतु-
खिड़कियो खोलि क देखबाक साहस
आब हेरायल जा रहल अछि!
जनकपुरधाम प्रवेशक
एहि मुख्य सड़क दने

नित्यहु हनहनाइत हाक्रोश करैत
प्रत्येक एम्बूलेंसक सायरन
कोनो दुखित/पीड़ितक
अकाल मृत्युक कालध्वनि
बुझबामे आब लागल अछि !
ई कहियो ने भेल -
अपन दुखके मेटएबाले
कुहरैत, कनैत, चिचिआइत कोनो रोगी
होस्पिटलके बरण्डापर
उपचारक प्रतिक्षामे एकटक्की लगा
चिकित्सक के तकैत हो
आ चिकित्सक कोरोनाक बहन्ने
कतौ कात लागल दबकल हो !
समयक एहि निर्मम अध्यायक परिणति
भगवान बनल चिकित्सकसँ
दूर भेल जा रहल रोगीक मनःदशा
एकटा दीर्घकालीन त्रास उत्पन्न कर लागल छै।
परम्परागत विश्वासक बीच
उत्पन्न भेल जा रहल ई संकट
कोना घुमाओत चिकित्सक आ
रोगीक बीचक आत्मियता, विश्वास !
जँ सएह तँ की हयतै समाजके ?
एहिना एम्बुलेंसक सीटी बजैत रहतै
लोक ओहिना अस्पतालक बरण्डापर
छटपटाइत
चिकित्सकक बाट जोहैत-जोहैत
मुक्तिक बाट दिश शनैः शनैः बढैत रहत !!.....”

(कोरोनाके संत्रासमे ओझरायल जिनगी, (लकडाउन डायरी),पृष्टः८,९)

एहि तरहें नेपालमे कोरोनासँ समस्त सामाजिक अवस्थाक बिच साहित्यकार लोकनि अपन भाव आ चिंतनके अपन-अपन रुचिक विधामे व्यक्त कएने

छथि । जँ ओ सभ समयपर प्रकाशित भऽ सकल त निश्चय एकटा कालखण्डके प्रतिनिधित्व करैत ओ सामग्री सभ साहित्यिक इतिहासके मजबूत सामग्री उपलब्ध कराओत ताहिमे कोनो सन्देह नहि ।



मिथिलाक पहिल उपन्यास दीना, भद्री आ सलहेश

उपन्यासक प्रसंग

साझा प्रकाशनक सूचीपत्रमे दीना, भद्री आ सलहेश नामक एकगोट पुस्तकके़र नाम पढि उत्सुकता जागव अस्वभाविक नहि छल । जनकपुर शाखामे खोजविन भेलैक, नहि भेटल । ताधरि इहो नहि बुझल छल जे ओ पुस्तक कोन विधामे लिखल गेल छैक ।

पाछा मैथिली साहित्यक अन्य लोकगाथा, साहित्यसम्बन्धि अनुसंधानमूलक ग्रन्थ, आलेखसभ उन्टवैतपल्टवैत ऋषभदेव शर्मा लिखित उक्त पुस्तकके़र चर्चा कएल भेटल मुदा श्रोत आ पुस्तकके़र विषयवस्तुक बारेमे कतहु उल्लेख भेल नहि देखना गेल । संभवतः सूचीपत्रहि केर आधारमे लोकगाथाक अमर पात्रसभ दीना, भद्री आ सलहेशक नाममे पुस्तक देखलोपरान्त तकरा लोकगाथाक अनुसंधानमुलक ग्रन्ध बूझि उल्लेख कएल गेल हुए से अनुमानसँ उत्सुकता आर बढिगेल ।

विहार, दरभंगक एकगोट मित्र चन्द्रेश सेहो उक्त पुस्तकक विषयमे हमरासँ जिज्ञाशा कएने छलाह मुदा हम से कतहु प्राप्त नहि क पावि रहल छलहुँ । संजोगसं हम जहन साझा प्रकाशनकेर अध्यक्ष भ ललितपुर केन्द्रिय कार्यालय पहुचलहुं त हमर पहिल काजे ओ पुस्तकके़र खोज भेल । बजार प्रबन्धक रुद्र न्यौपानेके खोजवाक आग्रह कैलिऐक ओ साझाक पूरा स्टक खोजलक, पता नहि लागल । अन्ततः ओ कोनो पुस्तकालयसँ मात्र एक प्रति हमरा आनि क देल तहन देखल जे ओ पुस्तक ऋषभदेव शर्मा रेग्मी द्वारा लिखल लघु उपन्यास थिक । दीना,भद्री आ सलहेश पुस्तक उपन्यास थिक अनुसंधान कृति नहि तथापि एकगोट नेपालक हस्ताक्षर मिथिलाञ्चलक लोकगाथामे वर्णित वेस प्रसिद्ध चरित्रसभ दीना, भद्री आ सलहेशके उपयोग अपन उपन्यासमे कोना क कएने छथि से जिज्ञासा मनमे घर कएलक आ हम तत्काल ओकर फोटोकपिँ कए डेरामे आवि अद्योपन्त पढलहुं । उपन्यास मिथिलाञ्चलक सिरहा, सप्तरी, कोसी, क्षेत्रकेर परिवेशमे लिखल पौलहुं आ ओतए प्रचलित दीना, भद्री आ सलहेशक लोकगाथा, गीतसभसँ प्रेराणालए उपन्यासकार उक्त कृति लिखल बुझल ।

के छथि कृतिकार ?

विक्रम संवत २०३५ सालमे ११०० प्रति छापल गेल उक्त लघुउपन्यासक लेखक ऋषभदेव शर्मा रेग्मीक विषयमे परिचय प्राप्त हुए तेहन किछु लिखल नहि गेल छैक । साझा प्रकाशनक प्रकाशकीयमे मात्र दर्शन,

व्याकरण, अलंकारशास्त्र, काव्य आदिक पुस्तक नेपालीभाषामे रचना कएनिहार ऋषभदेव शर्मा रेग्मी शिक्षित जगतमे अपरिचित नहि छथि, लिखल छैक । ३।४० पैसा मोलक एहि पुस्तकक लेखक रेग्मी अपन दुशब्दमे लिखने छथि- कथा कल्पना छैक, मुदा ओ निराधार नहि होइत छैक, कल्पनाक हेतु सेहो आधार चाहि । घुर्मी खोला (नदी) सिरहाक सदरमुकाम दिस सलहेशके पुरान बसोवासक स्थल, सलहेशक नामसँ प्रसिद्ध रहल फूलवारी एहि कल्पनाक आधार रहल छैक । स्थानीय लोकसभ दीना भद्री आ सलहेशक गीत गवैछ, हमहु हुनकासभक गीत सुनने छी । श्रुतिपरम्परामे चलल हुनक कथा सेहो सुननेछी । यैह आधारसभ हमरा प्रेरणा देलक आ हम ई कथा लिखलहुँ आ एना क तैयार भेल ई उपन्यास ।

निश्चिते जाहि समयमे एहि उपन्यासक पृष्ठमूमि तैयार भ रहल छल ताहि समयमे उक्त क्षेत्रमे विभिन्न गायकसभ महराइ, सलहेशगाथा, नाचद्धारा ई पात्रसभक सौर्यगाथा गाओल करैत छल । उपन्यासमे प्रयुक्त दीना भद्री आ सलहेक गाथागीतसभक उर्वर भूमि मिथिलाञ्चले रहल अछि । उपन्यासकार स्वयम स्वीकार कएने अनुसार गीत सुनि क पात्र आ स्थानक नाम स्मरण कएलनि, कथानक अपने रुचि अनुसार रचलनि ।

कथानककेर सान्दर्भिकता

दीना, भद्री मुसहरसभक देवता थिकाह । मैथिली लोकगाथामे दीना,भद्रीक विशिष्ट स्थान छैक । ई सभ सामन्तवाद आ शोषककेर विरुद्ध लड़निहार योद्धासभ छलाह । जनिका ताहि समयक प्रतापी राजकुमार सलहेशक सहयोगमे मारलगेल वर्णन भेटैछ । उक्त गाथा नेपालक विहारके सीमाक्षेत्रमे बेसी प्रचलित छैक । ताहुमे खासमे नेपालक सीरहा सप्तरी क्षेत्रमे एकर अवशेषसभ एखनि धरि छैक । दीना, भद्री जीवितसँ मरलोपरान्त वेसी प्रभावकारी भूमिका खेललनि से गाथागीत देखवैत अछि । ओ बेगारी खटवैवला शोषक कनकसींह धामीके मारलनि, कुनौलीक दुष्ट जोरावर सींहके सेहो मारल, जे ताहि क्षेत्रक नवविवाहिताक स्त्रीत्व हरण करैत छल । कथानकमे दीना, भद्रीक मित्र सलहेशक सेहो चर्चा छैक जेकरा सतमे परिकए कटैया खाप जंगलमे अपनहि मित्र दीना, भद्रीक विरुद्ध उतारि क हत्यामे सहयोग करबा हेतु बाध्य बनाओल गेलैक ।

दीना, भद्री लोकगाथामे कथानायकसभक अतिरिक्त कनकसिंह, बुधनी बतरनी जादुगरनी, मोतिपुरक बहुरन, कुनौलीवासी जोरावरसींह, रुपचन्द, पाँचोनाथ अघोरी, बधेसरी, बहिन महेसरी, गुलाम जट, तुमरी मुखिया, कोमला दुसाध, बाबा सिंधेश्वर, लुल्ही बाधिन, पोटरा गिदर, हंस, संभा, नीरसो, सलहेशसन पात्रसभ सेहो महत्वपूर्ण चरित्रकसंग आएल अछि ।

दुसाधसभक जातिय देवताक रुपमे पुजति सलहेश सेहो अन्याय अत्याचारक विरुद्धमे लड़लएवला योद्धाक रुपमे चर्चित अछि । उक्त लोकगाथा सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलकलेल अमूल्य सम्पत्तिक रुपमे रहल अछि । एहिमे वर्णित पात्र आ स्थानसभ नेपालक मिथिलाञ्चल क्षेत्र सिरहा, सप्तरी, मोरंगकेर मूख्य रुपमे केन्द्रित रहल अछि । सलहेश सिरहा महिसौथाक छलाह, महिसौथा अतिरिक्त श्यामलगढ, मोरंग, विराटपुर, मैनीगढ, सतखोलिया, बेलकागढ, बरहरधार, मनिकदह, कोशिका, परबापोखरी, नेपालक भूमिमे अवस्थित अछि ।

मध्यकालसँ पूर्वकेर उक्त गाथा नाचकेर रुपमे सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलमे देखाओल जाइत छैक । एकर पात्रसभमे सलहेश, चुहड़मल, मोतिराम, करिकन्हा, बुधेसर,राजाकुलेसर, केवलकिरात, दीना, भद्री, मन्दोदरी, रेश्मा, कुसुमा, दौना, रानी फुलवंति, रानीतरेगना, वनसप्ती, चन्द्रा आदि मुख्य अछि । ई देवत्व प्राप्त नायक छलाह । सलहेशक फुलवारी प्रसंग अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना मानल जाइत छैक । राजपकडिया कंचनगढमे कुलेसर राजाक पुत्री चन्द्रसँ फूलवारीमे सलहेशक भेंट हएव, चन्द्रद्धारा प्रेमक अनुनय, सलहेशद्धारा अस्विकार करब, राजा कुलेसरद्धारा सलहेशके पकड़ब , जेल भेजब, चन्द्रक कोठरीक पहरेदारी, चुहड़मलके मोकामासं गंगाक सहयोगमे सुरंग खनी चन्द्रक कोठरीमे पैसी सब गरगहनाक चोरीकरब, सलहेशक उपर संका आ सलहेसक पत्निद्धारा चोर पत्तालगाए पतिके हिरासतसँ मुक्त करेनाइ सन रोचक प्रसंग रहल छैक । एहि प्रेम आ सर्मपणक प्रतीकस्थल सहलहेश फूलवारी एखनहु सिरहा जिल्ला लहान नगिच विद्यमान अछि । ओतए प्रत्येक वर्ष वैशाख १ गते भव्य मेला लगैत छैक । एहि प्रकारे गाथागीतमे दीना, भद्री आ सलहेशक मूल कथा समेटल छैक । दुनु समकालीन छल आ मित्र सेहो मुदा छलसँ मारलगेल दीना, भद्री कारकरुपमे सलहेशके मानि दुनु मित्रक बिच कलह नहि हुए से सोचि सलहेशक पूजा संग अपनहु पूजा होए से सर्त राखी पुनः मित्रता कायम रखलनि से प्रसंग दीना, भद्री गाथामे उल्लेख छैक ।

आब रेग्मीद्धारा लिखित दीना, भद्री आ सलहेश उपन्यासमे वर्णित कथानक आ पात्रक गप करी त एहिमे स्थान, पात्रसभ त वेस मिलैत छैक मुदा कथानक फरक छैक । से कल्पना छैक लेखक स्वयम कहि चुकल छथि तथापि तात्कालीन सामाजिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक अवस्थाके ध्यानमे राखि रचलगेल कथानक अपन विशिष्ट पहिचान राखबामे सफल भेल अछि ।

एहि लघुउपन्यासमे दीना, भद्री, सलहेश आ चुहडमाल (मल) मुख्य रुपमे प्रस्तुत भेल पात्र अछि । कोसी नदीके मध्य मानि पूर्व आ पश्चिम क्षेत्रक छोटछीन राजासभक राजनीतिक संगठन, सैन्यक्षमता, विजय आकाक्षा, युद्धकौशलकेर चर्चा नयाँ कथानकद्धारा कएलगेल छैक । ओतहि सलहेशक

चर्चा करैत फूलवारी प्रसंग सेहो आएल छैक मुदा फरक अर्थमे । मोरंगकेर महाचौधरी रणपाल चम्पा, कनकसींह राज्यविस्तारकहेतु कोसीक एहिपारक सरदार कालुदादाक राज्यमे आर्कमणके तैयारी करैछ मुदा ओतए दीना, भद्री, सलहेश आ चुहडमालके संयुक्त शक्ति रहैछ । सलहेश मणिकचन्द्र चौधरीक पुत्र अछि, राजकुमार सलहेश । दीना, भद्री आ शवरकुमार स्वाभिमानी, चारुगोटे अखाड़ामे कुस्ती खेलएवला मल्लयुद्धमे पारंगत । चारुगोटेक शक्ति नहि फुटलासँ कोसी पश्चिम जीतव असंभव देखि सलहेशके प्रेमपाशमे फसेवाक रणनीति अनुरुप वेदनाक प्रयोग भेल आ पाछा साँच्चो प्रेम भ गेल छैक । दीना, भद्री, रणपाल, कनकसींहसँ युद्धमे विजयी भए दुनुके बन्दी बना क अनैतकाल कोसीमे नाओ उनटि सभ नदीमे बहि क मारलगेल । कथानककेर सार यैह थिक ।

एतय दीना, भद्री, सलहेश संगहि चुहड़मलके चुहड़माल कहि प्रयोग भेल आ चुहड़माल कोसीसँ सुरगं खनि चम्पाक महलमे जाए रणपालके हनुमन्ते बनाओल प्रसंगमे सलहेशगाथाक चुहड़मलके मुकामसँ खनल गेल सुरंग आ चन्द्राक चोरी भेल गरगहनाक प्रसंगके झलक देवके प्रयास भेल स्पष्ट अछि ।

दीना, भद्री आ सलहेश लघुउपन्यासमे लोकगाथाक अमरपात्र आ पात्रसभसँ जुड़ल चर्चित स्थल समेतकेर प्रयोग कल्पित कथाक प्रसंगमे उपयोग भेल छैक । उक्त प्रयोग एतेक सटीक आ सान्दर्भिक रुपमे भेल छैक जे एहिसँ तात्कालिन सामाजिक अवस्थाक परिचय मात्र नहि मिथिलांचलक किछु खास वैशिष्ठयके इंगित कएने अछि ।

सिरहा, सप्तरीक ओ क्षेत्रसभ मध्यकालपूर्व निश्चय जंगल आ पहाडसँ भरल छलह एत । सलहेश, दीना, भद्रीक उपस्थिति ओहि परिवेशमे शिकारीक रुपमे भेल छैक आ ताहिसमयक भोजन सेहो पशु, प्राणीक माउसमे आधारित रहल प्रसंग अखाड़ामे लाओलगेल जलपानसँ ज्ञात होइत छैक । बँदेल अर्थात जंगली सुगरक माउस, माछ, मख्खन, मल्लाहसभकलेल उपयोग खाद्य पदार्थ छलैक । मालिनी सम्प्रदायक चर्चा, फूलबारी, युद्ध, रणनीति, गुप्तचरी, रागअनुरागक प्रसंगसभ तात्कालिन जिवनशैलीके सेहो प्रतिनिधित्व करैछ । एहिप्रकारे ऋषभदेव शर्मा रेग्मी, जे स्वयम सिरहाक पानबारी गामक निवासी छलाह आ मैथिली नीकसँ बजैत छलाह, हुनकाद्धारा दीना, भद्री आ सलहेशक नाम राखि लिखल उक्त लघुउपन्यास मौलिक चिन्तन भेल एकटा सफल आञ्चलिक उपन्यास छैक, जे लोकधर्मिताक निर्वाह सुरुसँ अन्त्यधरि कएने अछि ।

उक्त उपन्यास आजुक पाठक समक्ष सेहो परसल जएवाक जनचाहके ध्यानमे राखि साझा प्रकाशन एहि विषयमे आवश्य डेग उठाओत से आशा कएल जा सकैछ ।



नेपालमे मैथिली कविताकेँ वर्तमान स्थिति

नेपालक मैथिली कवितापर विचार करैत काल कनेक फरिछा कऽ बुझबा लेल पृष्ठभूमि पर विचार करब उचित। हमर केतको पूर्वक आलेख सभमे नेपालक मैथिली साहित्यकेँ बुझवा हेतु काज विभाजन कऽ आकलन करैत आएल छी। एखन धरि ओ त्रुटिपूर्ण अछि अथवा समिचिने अछि ताहुपर कोनो स्पष्ट टिप्पणी उपलब्ध नहि भऽ सकल अछि। जएँ कि तकर आलोचनो नहि भेल अछि हम तकरा एतहु संक्षेपमे प्रस्तुत करऽ चाहब।

हम प्रारम्भसँ एखनधरिक साहित्यकेँ देखबा लेल चारि भागमे एकरा बाँटल अछि। पहिल आदि काल (७५० ई सँ १३५० ई धरि) दोसर मध्यकाल (१३५० ई सँ १६६८ ई धरि) तेसर अन्धकार काल (१६६८ ई सँ १९५० ई धरि) आ चारिम आधुनिक काल (१९५० ई सँ अद्यपर्यन्त)।

आब एहि चारु कालखण्डकेँ मैथिली काव्य लेखन आ दशा दिशाक सन्दर्भमे अत्यन्त संक्षेपमे देखी।

आदिकाल

विक्रम विश्वविद्यालयमे आश्रय लेनिहार ८४ गोटे बौद्ध भिक्षु मध्य २३ गोटे चर्यापदक रचना कयने रहथि। तकर खोज नेपालमे भेल। एगारहम शताब्दीमे नान्यदेवक शासन प्रारम्भ भेल आ कर्णाटक अन्तिम राजा हरिसिंह देव (१२९६-१३२४ ई) धरि मिथिला, मैथिली भाषा , संस्कृतिक उद्‌गम स्थल भऽ चुकल छल। ज्योतिरिश्वर ठाकुर (१२८०-१३४०ई)द्वारा रचित काव्यमय गद्यग्रन्थ वर्णरत्नाकर हिनके राजकालक उपलब्धि थिक। ठाकुर रचित कीर्त्तनीयाँ नाटक धुर्तसमागममे प्रयुक्त मैथिली पदसभ नेपालमे रचित प्रारम्भिक काव्य दिस संकेत करैत अछि।

मध्यकाल

एहि कालक सभ सँ पैघ उपलब्धि अछि जे विद्यापति (१३६०-१४४८ई)क पदसँ प्रभावित भऽ अनेक गीत रचनाक स्वर्णकाल रहल। एहि समयमे मोरंगक कंसनारायण, मकवानपुरक सेन राजालोकनि मैथिल विद्वानकेँ ससम्मान आश्रय देने रहथि , जतऽ मैथिली काव्य धाराक निर्वाध प्रवाह होइत रहल।

राजा जगज्योतिर्मल्ल (१६१३ई-१६३६ई)द्वारा रचित गीतपञ्चाशिका एकटा ऐतिहासिक उपलब्धि थिक, जकरा टक्करमे ताहि सँ ७४ वर्ष पूर्व म.म. लोचनक रागतरंगिणी मलिन पड़ि जाइत अछि।

जगत प्रकाश मल्ल (१६३६ई-१६७२ई) प्रताप मल्ल (१६४९-७४) सन मल्ल राजा लोकनि काव्य रचनाक क्षेत्रमे ऐतिहासिक आ रोमाञ्चक काव्य रचने छथि , जकर बड़ छोट भाग डा. जयमन्त मिश्रद्वारा अभिलेखगीत माला नाम सँ प्रकाशित पुस्तकमे संगृहित अछि ।

अन्धकारकाल

ई नेपालक राजनीतिक लेल अत्यन्त महत्वपूर्ण समय छल । नेपालमे छिड़िआएल छोट छोट रजबाडा सभ रहैक तकरा जीति कऽ एकटा सम्पूर्ण नेपालक निर्माणमे पृथ्वीनारायण साह लागल छलाह । युद्ध आ काटमार, बस ! भाषा-साहित्य पाछ्रा पड़ि गेल । गद्यक रुपमे दैनिक कार्य संचालनक हेतु बहिखत, एकरारनामा, अजातपत्र, निस्तारपत्र, दानपत्र आदि भले भेटल अछि, काव्य रचनाक एकोटा पाँति एखनधरि सार्वजनिक नहि अछि । तएँ एहि कालकेँ अन्धकारकाल कहल गेल अछि ।

आधुनिक काल

नेपालमे शासन करैत प्रजाक दुश्मन राणासभक १९५० ई.मे अन्तक संग समान्य जनकेँ शिक्षा दिश बढबाक अवसर प्राप्त भेलैक । आ तखन मोनमे लागल भावकेँ शब्दक माध्यमसँ प्रस्तुत करबाक अभिलाषा सेहो जगलैक । आ तकरा बाद देरीसँ सही नेपालमे सेहो काब्य रचनाक पुनः प्रारम्भ भेल । प्रारम्भमे परम्परावादी धारा पर या पछ्राति आधुनिक शिल्प बोधक धारा पर ।

नेपालमे १९५० ई मे पं. जीवनाथ झा संस्कृत शिक्षकक रुपमे पदासीन भेलाह । ओ परम्परावादी काव्य सृजनक शुरुआत कएलनि । मथुरानन्द चौधरी माथुर, रमाकान्त झा, पं. सुन्दर झा शास्त्री, पं. श्रीकृष्ण मिश्र, पं. योगेश्वर झा, पं. कृष्ण प्रसाद उपाध्याय, एही पीढिक प्रतिनिधित्व करैत छलाह ।

१९६० ई मे डा. धीरेन्द्रक नेपाल प्रवेश होइत अछि । विशुद्ध आधुनिक धरातलपर काव्य सृजनक हेतु पूर्वेसँ ख्यात डा. धीरेन्द्र जनकपुरधाममे साहित्यकारक मण्डली तैयार कयलनि जे सौभाग्यवस नेपालक मैथिली काव्य साहित्यक प्रतिनिधि हस्ताक्षरसभ छथि ।

एखन तँ मैथिली भाषा साहित्यमे काज कएनिहार चारिम खाढी तैयार भऽ गेल छैक । कहबाक हेतु मात्र नहि वास्तविकता इएह छैक जे काव्य रचनामे जाहि तेजीसँ नेपालक युवा कवि लोकनि सोच, दृष्टि आ शैली लऽ कऽ आगाँ आबि रहल छथि से एक बेर चौकाबऽबला लगैत अछि । प्रजातन्त्रक पुनःस्थापनाक बाद जे स्वर फुटलैक से ततेक ने सशक्त अछि जकर टक्करमे कोनो समसामयिक भाषाक काव्य रचनाकेँ परखल जा सकैछ ।

काव्य रचनाक स्थिति

जानकारीक हेतु अद्यतन प्रकाशनकेँ निरपेक्ष रुपें राखि देबए चाहैत छी । जिज्ञासु पाठककेँ एहि सँ कछु जरुरी सूचना भेटि सकैत छनि ।

नेपालमे आधुनिक कविताक पहिल संकलन राम भरोस कापडि भ्रमरक बन्न कोठरी : औनाइत धुँवा (१९६२ ई) अछि । भ्रमरक आन काव्य कृतिमे नहि आब नहि (दीर्घ कविता : २०३६ साल) मोमक पघिलैत अधर, (गीत गजल संग्रह १९८३ ई), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह १९९० ई.) अछि । एकर अतिरिक्त नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान भ्रमर एवं धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सम्पादनमे मैथिली कविता संग्रह २०५३ साल)क प्रकाशन कयने अछि । भ्रमरेक सम्पादनमे लावाक धान (२०५१ साल) कविता संग्रह प्रकाशन भेल अछि ।

पं. मथुरानन्द चौधरीक काव्य कृति खण्डकाव्य त्रिशुली (२०४६ साल) यदुवंश लाल चन्द्रक कविता संग्रह 'गुड खिचडी, पं. रमाकान्त झाक खण्डकाव्य व्यथा, पं. सुरेश झाक कविता संग्रह मैथिली रसकलश काब्य, एहि समयक प्रकाशित कृति अछि ।

एहि क्रममे भुवनेश्वर पाथेयक 'पघिलैत वर्फ (१९९० ई) कविता संग्रह, विनोदचन्द्र झाक खण्डकाव्य कृषक बाला (१९६५ ई), पं. शुभनारायण झा कविता संग्रह यंत्रणा (२०४३ साल), चन्द्रशेखर लाल शेखरक कविता संग्रह हमर नेपाल हम नेपाली (२०४६ साल) आ गिरिजा बाबु जय नेपाल (२०४८ साल), रामेश्वर आचार्यक काव्य 'शिव मधुक भाग्य रेखा, डा. लक्ष्मण शास्त्रीक महाकाव्य 'धर्मराज युदिष्ठिर प्रकाशित भेल अछि ।

एक दशक भीतरमे एम्हर प्रकाशित आन काव्य कृतिसभमे उपाध्याय भुषणक भूषण भारती, रुद्रनारायण झा मडईक कविता संग्रह दुर्दशा (२०५२ साल), पं. प्रताप नारायण झाक लांगल यज्ञ आ सीता स्वयंवर (२०५२ साल) आ सुकन्याच्ववन (२०५३ साल) लाला माघवेन्द्रक कविता संग्रह माधवकेँ मधु (२०५१ साल) धर्मेन्द्र झा विह्वलक कविता संग्रह रस्ता तकैत जिनगी (२०५० साल) डा. रेवती रमण लालक काल प्रवाह (२०५४ साल) अयोध्यानाथ चौधरीक क्षितिजक ओहिपार, राजेन्द्र विमलक गजल संग्रह सूर्यास्तसं पहिने (२०७०) प्रमुख अछि ।

अनुवाद दिस प्रा. कृष्ण प्र.उपाध्यायक सत्यकलि सम्वाद, विद्यापति पदावली (२०२९ साल) पं. सुन्दरझा शास्त्रीक मुना मदन, हर्षचरिक, धीरेन्द्र प्रेमर्षिक स्वप्न कथा चलि रहल अछि (२०५४ साल) राजेन्द्र झाक गीता परिक्रमा, पं. सूर्यकान्त झाक मेघदूत, लोकेश्वर व्यथितक चांदनी शाहक गीतसभक अनुवाद इन्दुक उसैको लागिक अनुवाद देखबामे अबैत अछि ।

ओना नेपालमे एखन धरि छपल काव्य रचनाके एक नजरिमे एहि तरहें देखल जा सकैछ -

(क) महाकाव्य : नेपालीय मैथिली साहित्यमे एखन धरि पाँचटा महाकाव्यसभ प्रकाशित भेल अछि,ओ थीक- धर्मराज युधिष्ठिर (१९७२ ई.), लक्ष्मण शास्त्री, प्रज्ञान रामायण (१९९३ ई.), सीताराम मिश्र, भानुभक्तीय रामायण (अनु. १९८७ ई.), बद्री नारायण वर्मा, भगवान चित्रगुप्त (१९८७ ई.), बद्री नारायण वर्मा आ शकुन्तला (१९७८ ई.), यदुवंशलाल चन्द्र ।

(ख) खण्डकाव्य : नेपालक मैथिली साहित्यमे एखन धरि प्रकाशित खण्डकाव्यसभ व्यथा (१९७०ई.) सुकन्या–च्यवन (१९८६ ई.) प्रताप नारायण झा, कृषकवाला (१९८९ ई.) विनोद चन्द्र झा, त्रिशुली (१९८९ ई.) मथुरानंद चौधरी माथुर, मैथिली मिथिला माहात्म्य (१९९० ई), पं.सुरेश झा, अछि ।

(ग) कविता–गीत–गजल–हाइकु : एना देखलापर नेपालमे काव्य बिधा कनेक बेसीए समृद्ध बझाइत अछि । कविता–गीत–गजल–हाइकुक ५० गोटसं बेसी कृति प्रकाशित देखल जा रशल अटि । आ` अछि – शिव मधुकें भाग्यक रेखा (१९८९ ई.) रामेश्वर अर्याल, नहि, आव नहि (दीर्घ कविता, १९७९ ई.) रामभरोस कापड़ि भ्रमर, हमरा नहि टोकू (दीर्घ कविता, २००४ ई.), भुवनेश्वर पाथेय, एक सुष्टि एक कविता (दीर्घ कविता, २००० ई), धर्मेन्द्र विह्वल, बन्न कोठरी :औनाइत धुआँ (कविता संग्रह, १९७२ ई.),रामभरोस कापड़ि भ्रमर, मोमक पघलैत अधर (गीत–गजल,१९८२ ई), अन्हरियाक चान(गजल संग्रह,२०७१) रामभरोस कापड़ि भ्रमर, यंत्रणा (कविता संग्रह, १९८६), शुभनारायण झा, हम नेपाली हम नेपाल (कविता संग्रह, १९८९) चन्द्रशेखरलाल शेखर, अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह,१९९० ई.) रामभरोस कापड़ि भ्रमर, पघलैत बर्फ (कविता संग्रह,१९९० ई.) भुवनेश्वर पाथेय, तोरे छवि (कविता संग्रह, १९९१ ई.) सुश्री यमुना राय, ओझा चालीसा (हास्य कविता, १९९१ ई.) नरेश ठाकुर, भूषण भारती (कविता संग्रह, १९९२ ई.) उपाध्याय भूषण, क्षितिजक ओहि पार (कविता संग्रह, १९९३ ई.) अयोध्यानाथ चौधरी, रस्ता तकैत जिनगी (कविता संग्रह, १९९३ ई), धमेन्द्र विह्वल, कुसुम रचनावली (कविता संग्रह, १९९३ ई.) महाकान्त झा, विदेहक नगरीसँ (सं.काव्य संकलन, १९९३ ई.), सं. महेन्द्र मलंगिया, लावाक धान (काव्य संकलन, १९९४ ई.), सं.भ्रमर, चक्रायण (कविता संग्रह, १९९५ ई.) आर.एस.भारद्वाज, दुर्दशा (कविता संग्रह, १९९५ ई.), रुद्रनारायण झा, 'मड़ई', मैथिली पद्य संग्रह (काव्य संकलन, १९९६ ई) सं. भ्रमर , प्रेमर्षि , शूली पर संत (कविता संग्रह,२००१ ई.), चन्द्रशेखरलाल शेखर, काल प्रवाह (कविता

संग्रह, २००२ ई.), डा. रेवतीरमण लाल, फूलक सुगंध (कविता संग्रह,२००२ ई.) जयनारायण झा जिज्ञासु, कोन सुर सजावी (गीत संग्रह,२००७ ई.) धीरेन्द्र प्रेमर्षि, एक समयक बात (हाइकु संग्रह, २००४ ई.), धमेन्द्र विह्वल, मिथिला मैथिली (कविता संग्रह, २००२ ई.), राजेश्वर नेपाली, विचार क्रान्ति (कविता संग्रह, (२०६८साल)) राजेश्वर नेपाली, आलोक (कविता संग्रह, २००४ ई.) सुन्दर झा शास्त्री, फुटल ढोल (कविता संग्रह, २००१ ई.), विनोद चन्द्र, छिलमिल्ली (कविता संग्रह, २००५ ई.) कुवेर घिमिरे, धुँआएल आकृति सभ (कविता संग्रह, २००६ ई.), धमेन्द्र विह्वल, कन्दर्प कामिनी (कविता संग्रह, २००६ ई.) कन्दर्पलाल कर्ण, सभटा दाग देखार (कविता संग्रह, २००७ ई.), चन्द्रशेखर लाल शेखर, धधरा (कविता संग्रह, २००७ ई.) प्रेमविदेह ललन, सप्तरंगी (कविता संग्रह, २००८ ई.), जग प्रसाद यादव, अखनो अन्हार लगैए (कविता संग्रह, २००८ ई.) अर्जुन प्र. गुप्ता, संघर्षक पथ पर (गीत–कविता संग्रह, २००५ ई.) अशोक दत्त, पोथरी (कविता संग्रह, २००९ ई.), भूपेश भूषण, सुनगैत जिनगी (कविता संग्रह) नित्यानंद मिश्र, आन्दोलन (कविता संग्रह) बृषेश चन्द्रलाल, सुन्दर सतसई (कविता संग्रह) सुन्दर झा शास्त्री , स्वार्थ सतसई (कविता संग्रह,१९६५ ई) राम स्वार्थ ठाकुर, मुनामदन (नेपालीसं मैथिली अनुवाद) सुन्दर झा शास्त्री, मेघदूत (संस्कृतसं मैथिली अनुवाद) पं. सूर्यकान्त झा, मैथिली गीता (संस्कृतसं मैथिली अनुवाद) पं.सुरेश झा, समयके सीला पर (कविता, हाइकु संग्रह, २०१० ई.) डा. रामदयाल राकेश, बांकी अछि हमर दूधक कर्ज (गीत संग्रह, २०६२ वि.सं.) बिनीत ठाकुर, रक्तवर्षा (कविता संग्रह, २०६७ वि.सं.) संक्रमण (कविता संग्रह २०७३ साल) रमेश रञ्जन र मेघ शतक (काव्य संग्रह, २०१२ ई.), श्याम शेखर झा 'कमल', करिछौंह आकाश (कविता संग्रह,२०६५) की भार सांठू (कविता संग्रह, २०६२) हिमांशु चौधरी, गीतांजली (भावानुवाद २०६८) चन्द्रकान्त झा चन्द्र, सतंजा (कविता संग्रह, २०७३) आदि ।

किछु विशिष्ट काव्यकृति

आाधुनिक समयक जे किछु प्रकाशित काव्य पुस्तकक सूचना उपलब्ध अछि से देवाक प्रयास कयल अछि, मुदा आब एत्त्ऽ तीन गोट विशिष्ट काव्य ग्रन्थक फूट सँ चर्चा करब आवश्यक अछि, जाहि मध्य दू तँ एखनधरि मैथिली संसारक हेतु अनजाने छल ।

प्रज्ञान रामायण

नेपालक महोत्तरी जिल्लाक सीताराम मिश्रद्वारा रचित एकटा सम्पूर्ण रामायण थिक, प्रज्ञान रामायण । ई अध्यात्म रामायणक अनुवाद अछि । सातो काण्ड सँ युक्त ३३१ पृष्ठक एहि रामायणक किछु महत्वपूर्ण विशेषतामे इक्ष्वाकु

वंशक परिचय, निमिवंशक परिचय (वंशवृक्ष) राम, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न चारु भाइक पारिवारिक परिचय जे निश्चय अनुसन्धानक उपलब्धि मानल जा सकैछ । सहज मोनक उद्‌गारसँ प्रेरित भऽ रचित एहि रामायणकेँ ओतेक प्रसिद्धि नहि भेटलैक, मुदा २०५० सालमे रचित ई ग्रन्थ पठनीय अवश्य अछि । छन्द मात्रा आ शब्दचयन यद्यपि कतेको ठाममे टुटैत बुझि पड़ैत अछि मुदा एकटा ग्रामीण कविक ई साहस निश्चय प्रशंसनीय कहल जा सकैछ । एकटा प्रसंग देखु -

अचानक बचन सुनि माय कौशल्या भेली अचेत ।
रामसँ कहय लगली दुख सागरमे डुवि भेलापर चेत ॥
हे राम ! हमरो साथ लऽ चलु जौं निश्चय जाइत छी बन ।
तोहर विनु कोना जीव सकैछी हम आधा छन ॥

अयोध्याकाण्ड ,चारिम सर्ग

भानुभक्तीय रामायण

नेपालक आदिकवि भानुभक्त आचार्यक रामायणकेँ मैथिलीमे अनुवाद कऽ प्रस्तुत करब बदरीनारायण वर्माक महत्वपूर्ण काज आ मैथिली संसारक पैघ उपलब्धि भेल अछि । नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानद्वारा २०५४ सालमे प्रकाशित २४३ पृष्ठक भानुभक्तीय रामायण अपनामे कतेको विशेषता रखने अछि । मंगलाचरणक रचना हिनक अनुवादक विशेषता भऽ गेल अछि जे मुल रामायणमे नहि छैक । कथा संकेतमे एकर प्रणयन पठनीय बना दैत छैक । मात्रा, छन्दक यथावत राखव आ रामायणकेँ आर सहज श्रेष्ठता प्रदान करब अनुवादक कठोर परिश्रम दिस संकेत करैत अछि । रामायणक एकटा सुन्दर परिहास आ भक्ति भावपूर्ण प्रसंग एवं एत्तऽ देखब ठीक हएत -

नाथ राम, अपनेक चरणरज अछि परतापी , हम सुनल ।
ओ रज छुबि शिला भेल मानव, मुनि-पत्नि केर रुप बनल ॥
तहिना यदि पद रजके पड़िते नावो नारी जँ भऽ जाएत ।
हम गरीब मरि जाएब प्रभुवर ! धियापुता कहु की खाएत ॥९७॥
तैँ पहिने ई चरण पखारब, पोछि -पोछि कऽ साफ करब ।
जँ मंजूर शर्त हो हम्मर, तखन नाव ओहि पार धरब ॥
भक्ति भरल विनती सुनि रघुवर विहुँसैत देलैन्हि चरण बढाए ।
नाविक चरण कमलकेँ धोकए चरणामृत लेल माथ चढाए ॥९८॥

वालकाण्ड पृष्ट २९

वीरगंज सँ प्रकाशित पुष्प

मैथिलीक कर्मभूमि जनकपुरधाममे मैथिलीक गतिविधी निरन्तर होइत रहल अछि । छिटफुट रुपे रा.रा.ब. क्याम्पसमे मैथिली पढाई शुरु भेलाक बाद त होइते छल , २०३० सालक बाद संस्थागत रुपैँ काज सभ होबऽ लागल । मुदा , प्रकाशनक स्तरपर तैयो जनकपुर पछुआएल रहल ।

मुदा ताहु समयमे भोजपुरी भाषी क्षेत्र वीरगंजमे एकटा महत्वपूर्ण काज भेल अछि-मैथिली भोजपुरी आ थारु लोकगीतक संकलन । एखनधरि अप्राप्त एहि पुस्तकक नाम पुष्प अछि जे तत्कालीनल नेपाल राष्ट्रिय विद्यापिठद्वारा २०३६ सालमे प्रकाशित कराओल गेल रहय । एकर संकलन जीवनेश्वर मिश्र कयने रहथि । वीरगंजक युवा पत्रकार साहित्यकार चन्द्रकिशोर झाक सौजन्यसँ प्राप्त 'पुष्प'क अध्ययन कएला प तत्कालीन सरकारी प्रतिष्ठानकेँ स्थानीय भाषाक गीत सभक संकलनक आवश्यकताक बोध स्वयंमे रोचक लगैत अछि । २०३६ सालक बादमे नेपालक शासन व्यवस्थामे किछु शिथिलता देखि पड़लैक , प्रायः तकरे उदारीकरणक ई परिणाम भऽ सकैछ ।

एहि पुस्तकमे मूल गीतक संग नेपालीमे भावार्थ देलगेल अछि । थारु गीत तँ प्रायः मैथिलीए गीत लगैत अछि । तैयौ एहि संग्रहमे २४६ मैथिली, ६२ भोजपुरी,आ ३८ थारु लोक गीत संग्रहित अछि । ततबे नहि स्थानीय प्रसिद्ध गीतसभ , भजनसभ सेहो लेल गेल अछि । अधिकांश लोकगीत डा. अणिमा सिंहक संग्रहसँ संकलित अछि , मुदा किछु तँ महत्वपूर्ण गीत सभ अछि जे लुप्त भऽ चुकल अछि । जे से संग्रह महत्वपूर्ण अछि ।

एहि तरहेँ संक्षेपमे नेपालक मैथिली काव्य स्थितिक दशा देखल जा सकैछ ।



नेपालमे मैथिली पत्रकारिताक स्थिति

कोनो भाषाक साहित्य समृद्धिक मुख्य आधारा पत्र पत्रिकाक निरन्तर प्रकाशन रहलैक अछि । पत्रिकाक प्रकाशनसँ जत्त नव नव साहित्यकारक अभ्युदय होइछ । ओतहि समाचारमुलक पत्रिकाक प्रकाशनसँ अपन भाषामे अपन गामघर, देश विदेशक खबरिकेँ पढबाक फूटे आनन्द प्राप्त होइछ ।

मैथिली एहि दुनू तरहक सुखानुभूति प्राप्त करबामे पाछा रहल । जखन आम समकालिन भाषामे एहि तरहक प्रकाशन प्रारम्भ भऽ चुकल छल, मैथिली फेंटुवा पत्रकारितामे अटकल छल , माने आन भाषाक बलपर बाहर अएबाक साहस करैत छल ।

नेपालक सन्दर्भमे विचार करी त हम देखैत छी राणाकालक सय वर्षसँ उपरका दमनकारी शासन व्यवस्थामे पढ़ऽ,लिखयकेँ काज जखन आनो भाषामे कम्मे छल तखन मैथिलीक गप्पे कोन । ओहि अवधिक कोनो रचना एखन धरि उपलब्ध नहि भेल अछि ।

२००७ साल फागुन ७ गते (फरबरी १८, १९५१ ई.) जखन नेपाल राणा सभक कठोर आ दमनकारी शासनसँ मुक्ति पौलक तखन भेलैक जे किछु पढऽ लिखऽकेँ काज कएलजाए । राजनेता लोकनि अपन अपन राजनीतिमे लगलाह, किछु बुद्धिजिवी लोकनि पत्रिका प्रकाशनक योजनामे लागि गेलाह ।

जनकपुरधाममे एकटा सार्वजनिक पुस्तकालय रहैक, जकर पदाधिकारी लोकनि एहि काजकेँ आगा बढएबाक हेतु गृहकार्यमे लागि गेल छलाह, जनिका सात वर्षक बाद सफलता भेटलनि- एकटा त्रैमासिक पत्रिकाक प्रकाशनक तैयारी पुरा कऽ । अर्थात २०१४ सालमे सम्पादक मण्डल बनल आ मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषामे नवजागरण नामसँ अनियतकालिन पत्रिकाक सम्पूर्ण प्रकाशन सामग्री जनकपुरक एक मात्र प्रेस अम्बिका प्रेसमे देल गेल । ताधरि पं. सूर्यकान्त झा सम्पादक रहथि । मुदा सम्पूर्ण काज कएलनि सम्पादक मण्डलक सदस्य नवोनाथ झा । किछु विशेष कारणे पत्रिका दू वर्ष प्रेसेमे रहि गेलै । आ अन्ततः २०१६ साल चैत १ गते (१९५९ई.) मे एकर प्रथम अंक प्रकाशित भेल । बस ! दोसर अंक प्रकाशित नहि भऽ सकल । तैयो पहिल अंकमे छपल पं. जीवनाथ झाक कविता आ एकटा विवेचनात्मकनिबन्ध मैथिली साहित्यक महत्वपूर्ण उपलब्धि अछि । किछु मास पूर्व पं. शशिनाथ झाक सम्पादनमे प्रकाशित पं. जीवनाथ झा रचनावलीमे ई दूनू रचना सामेल नहि कएल जा सकल अछि । डा. हरिदेव मिश्रक शिक्षा

सम्बन्धि आलेख सेहो छैक । तखन शुरुसँ अन्तधरि नवोनाथ झाक सम्पादकीय उपस्थिति छोट छोट कविता आ आनो रुपमे स्पष्ट देखि पड़ैछ ।

एहि तरहे २०१७ साल (१९५९ ई.) सँ २०७२साल (२०१५ ई.) धरिक ५६वर्षक नेपालीय मैथिली पत्रकारिताक इतिहास अनेको उतार चढाबक संग जारी अछि । एहि वीचमे बहुतो पत्र- पत्रिकाक प्रकाशन भेल, बन्न भेल । जे किछु प्रकाशन भेल ताहिमे बहुतो रचना एहन आयल जे एखनो नेपालक मैथिली साहित्यक भण्डारक मणि काञ्चन बनि जगमगा रहल अछि ।

एहने अनियतकालीन पत्रिकाक प्रकाशनक क्रममे १९६८ ई. मे पं. सुन्दर झा शास्त्रीक सम्पादनमे फूलपात आयल । किछु वर्ष चलल जे शास्त्री जीक अपन विचार आ ओजकेँ निरन्तर प्रवाहित करैत हरल । खाँटी नेपाली रचनाकार हुनक प्राथमिकता छलन्हि, मथुरानन्द चौधरी माथुर, आ डा. हरिश्चन्द्रकेँ छोड़ि कऽ । जे से एहिमे डा. राजेन्द्र विमल , उपाध्याय भूषण, अयोध्याय नाथ चौधरी, लक्ष्मण शास्त्री, इन्दु आदिक रचनाके प्रकाशनक श्रेय शास्त्रीजीकेँ जाइत छन्हि ।

तकरा बाद डा. हरदेव मिश्र एवं ओमकुमारझाक सम्पादनमे इजोत काठमाण्डूसँ भाद्र २०२७ सालमे प्रकाशित भेल । तखन २०२७ वि. स.मे विराटनगरसँ प्रो. लक्ष्मण शास्त्री, प्रो.प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, आ प्रो गणेश लाल कर्णक सम्पादनमे मैथिलीक प्रकाशन भेल । मैथिली पत्रिकाक विभिन्न अंकमे नेपालक प्राचीन साहित्य, मोरंग सुनसरी जनपदक लोक साहित्य प्रचुरमात्रामे छपैत छल । एही क्रममे विदापद, मोरंग पदावली, सेनकालिन अभिलेख, नेपालक शिलोत्कीर्णमैथिली गीत, नव लेखन, नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास अंक ६ सन-सन रचना प्रकाशित भेल अछि । एहि पत्रिकाक माध्यमसँ नवलेखक तत्कालिन हस्ताक्षर रामभरोस कापड़ि भ्रमर, भुवनेश्वर पाथेय, रामनारायण सुधाकरकेँ विशेष रुपैँ प्रस्तुत कएल गेल छल । ई सम्भवतः आठ अंकक बाद विराम लऽ लेलक ।

पत्रपत्रिकाक शुन्य परिवेशमे २०३० (१९७३ ई) दिस रामभरोस कापड़ि भ्रमरक सम्पादनमे अर्चनाक प्रकाशन भेल । अर्चनाक सम्बन्धमे नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहासकार डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन लिखैत छथि- अर्चनाक जीवनयात्रा एवं रचनात्मक उपलव्धि सभकेँ निम्न लिखित रुपें रेखांकित कएल जा सकैछ-१ स्थापित रचनाकार सभक प्रतिष्ठापन एवं नवागत किन्तु सशक्त रचनाकारक प्रस्तुति, २. समकालिन नेपाली ओ हिन्दीक श्रेष्ठ रचनाक भाषान्तर, ३. साक्षात्कार माध्यमे स्थापित महानुभाव लोकनिक अनुभवकेँ बाँटब, ४. विधागत विशेषांक प्रस्तुति एवं ५. संतुलित ओ सामयिक सम्पादकीय । १

पं. चन्द्रनाथ मिश्र अमर सेहो अर्चनाक सम्बन्धमे लिखने छथि-'अर्चना नेपालमे एकमात्र एहन पत्रिका अछि जे मातृभाषाक अर्चनामे अपन सम्पूर्ण शक्ति समर्पित कएने अछि। २

राजविराजसं वाणी पत्रिकाक जन्म होइत अछि जे एखनो साल दू सालपर बहराइत आबि रहल अछि। एहिमे राजविराज क्षेत्रक पुरातात्विक, ऐतिहासिक स्थलसभक संगे साँस्कृतिक, सामाजिक सरोकारक कतेको महत्वपूर्ण आलेख प्रकाशित भेल अछि । तहिना राजविराज क्षेत्रक नव पुरान प्रतिभा सभकेँ आगाँ लएबाक काज सेहो ईकएलक अछि।

२०३९ साल (१९८२ ई.) दिश भद्रपुरसँ प्रदीप विहारी हिलकोरक प्रकाशन कएलनि। किछु अंक आएल, जाहिमे किछु महत्वपूर्ण रचना डा. मौनक, डा. विश्वेश्वर मिश्रक प्रकाशित भेल छल।

नेपालमे मैथिली समाचार पत्र नहि छलैक। नेपालक सरकारी नीति नेपाली वाहेक आन भाषामे समाचारपत्र प्रकाशन कऽ देबाक पक्षमे नहि रहैक। मुदा पंक्ति लेखकक एक्केटा सेहेन्ता रहनि मैथिलीमे पत्रकारिताक हेतु समाचारपत्रक दर्ता कराबी। नेपालमे गणतन्त्र अएलाक बादो एखनो विना दर्ता पत्रिका प्रकाशित नहि कऽ सकैछी। से काफी प्रयास कएलोपर नहि भेटलै तखन एक दशकक निरन्तर संघर्षक बाद २०३९ साल कार्तिक ४ गते (२७अक्टुबर १९८२ ई). नेपालक पहिल मैथिली साप्ताहिक समाचारपत्र 'गामघर'क प्रकाशन राम भरोस कापड़ि भ्रमरक सम्पादन प्रकाशनमे भेल जे आइधरि चलि रहल अछि। गत बतीस वर्षमे १५३६ अंक न्युन्तम प्रकाशित भेल अछि । जे सम्भवतः समग्र मैथिली संसारमे कोनो साप्ताहिक समाचारपत्रक नियमित प्रकाशनकेँ अग्र स्थान हएत।

गामघरक एहि नियमित प्रकाशनसँ एतुक्का बहुतो नवपीढिक रचनाकार प्रथम प्रकाश पओलनि अछि। ई दोसर बात छैक ओ सभ कतहुँ लिखै पढै छथि तँ ई बात कहबामे संकोच होइत छन्हि। डा. मौन लिखैत छथि -'आई 'गामघर' अपन भाषायी भंगिमा, समयानुकुल, सम्पादकीय,खोजी पत्रकारिता आदिक संग साहित्यिक विधाक आस्वादन करबैछ। फलतः गामघर अपना समयक दर्पण, ऐतिहासिक कालपात्र ओ काल खण्ड विशेषक दस्तावेज बनि गेल अछि।३

तकराबाद अनियतकालिन पत्रपत्रिकाक प्रकाशनक क्रम शुरु भेल जे निरन्तर जारी रहल । एहिमे उदयकान्त ठाकुरक सम्पादकत्वमे 'जनक' (२०४०विस/१९८३ ई) दूविधान राजविराजसँ (२०४३/१९८६ ई) दुर्गा प्रसाद देव आ त्रिलोकनाथ मल्लिकक सम्पादनमे भेल। एकर एक्केटा अंक आएल जाहिमे डा. धीरेन्द्रकेँ धनुषा लोकचित्रक प्रसंग आलेख महत्वपूर्ण अछि।

रामभरोस कापडि भ्रमरक सम्पादनमे २०४५ (१९८८ ई)मे मैथिली द्वैमासिकक प्रकाशन भेल आँजुर नामे । नेपालक मात्रे नहि भारतीय क्षेत्रक मैथिली पत्रिकाक खाली ठामकेँ आँजुरक अंकसभ किछुओ मात्रामे क्षतिपूर्ति करैत रहल । एहि विच एहिमे प्रशस्त महत्वपूर्ण रचनासभ अएलैक जे मैथिलीक स्थापित रचनाकार लोकनिक रहनि । डा. धीरेन्द्र, सोमदेव, रमानन्द रेणु, मोहन भारद्वाज, डा. भीमनाथ झा, शेखर, इन्दु, पं. गोविन्द झा, आदि रचनाकार लोकनि अपन श्रेष्ठ रचनासँ एकरा सम्पुष्ट कएलनि । शुरुक दशवर्षमे पचास अंकसँ बेसीक प्रकाशन स्वयं अपनामे महत्वपूर्ण रहल ।

आँजुरकगत वर्षसँ पुनः नव साजसज्जाक संग प्रकाशनशुरु भेल अछि जकर सात गोट अंक एखनधरि बहार भऽ चुकल छैक । आ आठम अंकक तैयारी चलि रहल छैक । एहिमे साक्षात्कार आ नव प्रकाशनक समीक्षा विशिष्ट उपलब्धिक रुपमे मानल गेल अछि ।

काठमाण्डूसँ धीरेन्द्र प्रेमर्षीक सम्पादनमे पल्लवक प्रकाशन २०५१ (१९९३ ई)मे भेल । छोट आकारमे बहुत किछु समेटबाक प्रयास कएल गेल छल । अंक बेसी नहि निकलि सकल । २०५९ (२००२ई) सालमे डा. रेवतीरमण लालक सम्पादनमे जनकपुरसँ प्रकाशित नैमिकानन त्रैमासिक रुपमे प्रकाशित भेल । यद्यपि शुरुमे नियमति रहितो वादमे अनियमित रुपें प्रकाशित होइत रहल अछि । साहित्यक भिन्न विधाकेँ निरन्तर समेटने ई पत्रिका संस्थागत प्रकाशनक कारणे विचविचमे लचरैत रहैत अछि ।

समाचारपत्रक रुपमे २०५५ सालमे 'मिथिला' मैथिली साहित्य परिषद राजविराजसँ प्रकाशित साप्ताहिक पत्र अछि जे निरन्तर प्रकाशित भऽ रहल अछि । जँ की ई पत्र संस्थासँ प्रकाशित होइत अछि, सम्पादको निरन्तर बदलैत रहैत छथि । समाचार विचारक संगहि साहित्य, संस्कृतिक सम्वर्द्धनमे एहि पत्रिकाक योगदान उल्लेखनीय अछि ।

जनकपुरधामसँ रामानन्द युवा क्लब २०६० सालसँ विद्यापति टाइम्स निकाललक, जकर सम्पादक बदलैत रहलैक आ अखन किछु अंकक बाद बन्न अछि । परमेश्वर कापडि धुआधजा (२०६७)क किछु अंक बहार कएलनि, तँ रामनारायण देवक प्रकाशनमे मैथिली दैनिकक किछु अंक मिथिलांञ्चल नामे प्रकाशित भेल ।

आकृतिक किछु अंक उपेन्द्र नागवंशीक सम्पादनमे छपल । तकरा बाद स्वयं नागवंशी अपन सम्पादनमे सीमांचल दैनिकक प्रकाशन २०६३ सालसँ शुरु कएलनि जे एखनधरि चलि रहल अछि । एकर अतिरिक्त जनकपुरसं मिथिलावाणी, मिथिलाँचल, सिरहासँ सलहेसवाणी सेहो प्रकाशित भेल ।

जनकपुरधामसँ मिथिला डटकम दैनिकक प्रकाशन शुरु भेल जे एखनधरि चलि रहल अछि। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान २०६३ सालमे रामभरोस कापड़ि भ्रमरक सम्पादनमे नीक गतगर पत्रिका आंगनक प्रकाशन शुरु कयलक। जकर छव गोट अंक प्रकाशित अछि। जाहिमे सलहेस, दीनाभद्री, लोक गायन, विद्यापति आदिपर आधारित खोजमूलक आ संग्रहणीय अंकसभ प्रमुख अछि। धर्मेन्द्र विह्वल लिखने छथि -आंगनक रचना वैविध्य ओ मानकीकरणक दृष्टिसँ मीलक पाथर अछि।४

एहि सभसँ अतिरिक्त किछु एहनो पत्रिका सभ अछि जे आयल पानि गेल पानि, बाटे विलायल पानि भऽ गेल अछि। तेहनमे विराटनगर सँ रामरिझन यादवक सम्पादनमे मिथिला टाइम्स ०४९/५०मे बहरायल। किछु समय चलल फेर उएह रामा, उएह खटोलन। आयल गेल पत्रिकासभमे मिथिला भूमि (जनकपुर) कमला फोल्डर पत्रिका (विराटनगर), नेपाल मैथिली समाज पत्रिका (काठमाण्डू), सनेस (जनकपुरधाम), अभिनव (राजविराज), सुरभि (राजविराज) मिथिलाञ्चल (जनकपुर), जनकपुर (जनकपुर) अछि।

विगत किछु समयसँ काठमाण्डूसँ हृदयकान्तझाक सम्पादनमे अप्पन मिथिलाक प्रकाशन भऽ रहल अछि।

राजनीतिक, समाजिक आ साँस्कृतिक आलेख एकर मुख्य विषय रहल अछि। नेपालसँ प्रकाशित होबऽबला पत्र- पत्रिकाकेँ तीन भागमे बाँटि देखब उचित हएत। एक साहित्यक, दोसर समाचार पत्रिका आ तेसर समाचार प्रधान पत्रिका। एखन जे पत्र पत्रिका प्रकाशनमे अछि तकरा जँ एहि तीनू श्रेणीमे उतारि कऽ देखी तँ साहित्यिकमे- आँजुर (जनकपुर), अप्पन मिथिला (काठमाण्डू), नेमिकानन (जनकपुर), वाणी (राजविराज) मात्र अछि। समाचार पत्रिकाक रुपमे अप्पन मिथिला (काठमाण्डू)के लेल जा सकैत अछि तँ समाचारपत्रक रुपमे 'गामघर साप्ताहिक' (जनकपुर), सीमांचल दैनिक (जनकपुर) मिथिला डटकम दैनिक (जनकपुर), मिथिला साप्ताहिक (राजविराज) प्रमुख रुपें देखि पड़ैछ।

अन्तमे

मैथिली पत्रिका ओ नेपाल हो अथवा भारत हो, पेटे काटि कऽ बहार करबाक, स्थिति छैक एखनो, नीकसँ ले आउट, कभर, गेटअप आदिक संगहि स्तरीय रचनाक संग प्रकाशित कएलोपर मैथिलीक पाठक ओकरा दिश तकबो अभिष्ट नहि बुझैत छथि। १५-२० टकामे मैथिली पत्रिका उपलब्ध छैक, मुदा दू मास तीन मास पर एक खिल्ली स्पेशल पानक दाम बराबरक पत्रिका किनब उचित नहि बूझल जाइत अछि। दरभंगाक रंगीन दैनिक मिथिलाआवाजक अकाल मृत्यु समस्त मैथिली अभियानी ठिकदारसभपर कड़गर थापर थिक।

जे तीन टकामे समकक्षी पत्रिकासभक अनूभूति दैत छल, मुदा तकरा मैथिल जन सम्हारि नहि सकल।

नेपालमे लघु आकारोमे मैथिली पत्रपत्रिकाक निरन्तर प्रकाशन सुखद त मानही पड़त। चलु एहु बहन्ने मैथिलीमे किछु त पढबा लेल भेटि जाइत अछि।

सन्दर्भ सामग्री

१ *नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास - डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, प्रकाशक :साझा प्रकाशन नेपाल २०६८ साल पृ. १०८।*

२ *मैथिली पत्रकारिताक इतिहास- पं. चन्द्रनाथ मिश्र अमर। प्रकाशक : मैथिली अकादमी। १९८१ ई। पृ ४०६। द्वितिय संस्करण : २०११।*

३ *नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास -डा.प्रफुल्ल कुमार सिह मौन २०६८ साल। प्रकाशक : साझा प्रकाशन। पृ १११*

४ वाणी १, राजविराज, २०६५ वि.स.।



नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्यमे नारी विमर्श

पृष्ठभूमि

सभसँ पहिने हमसभ विचार करी जे नेपालक आधुनिक काल कहियासँ प्रारम्भ होइत अछि।

नेपालक मैथिली साहित्यक अध्ययन करी तँ मध्यकालक मल्लवंशक मैथिली सेवाकेँ आई धरि स्वर्णयुगक नामसँ अभिहित कएल जाइत रहल अछि। ओ कर्णाट शासक नान्यदेवक (१०८९ ई.) समयसँ प्रारम्भ भए मल्ल शासक श्रीनिवास मल्ल (१६५७(८६ ई.) धरि निरन्तर चलैत रहल अछि। एहि विच नेपालमे मैथिली सिमौनगढ, सप्तरीक द्रोणवार राजवंश, सप्तरीक सेन राजवंश, महोत्तरीक ओइनवार राजवंश, मेरंगक राजवंश, मोरंगक सेन राजवंश, मकवानपरक सेन राजवंशक छत्र-छायामे मैथिली भाषा, साहित्य सहज रुपैँ विकसित होइत रहल। एखन धरि उपेक्षित, अपठित आ प्रायः इतिहासकार लोकनि द्वारा निरसल नेपालक गोरखा राजवंशक अभ्यन्तर सेहो मैथिली रचना भेल अछि, ओकर संरक्षण सम्वर्द्धनक उपाय कएल गेल अछि। महाकवि विद्यापति लगायत बहुतो राजा, राजपरिवार एवं कवि लोकनिक रचना मात्र सुरक्षित नहि राखल गेल, स्वयं राजपरिवारक लोक मैथिली गीत, पद सभक रचना कएलनि जे पंक्तिलेखक निजी खोजक क्रममे आशा सफु कुठी, काठमाण्डूमे नेवारी लिपिमे सुरक्षित अछि, जकर एकटा संक्षिप्त रुप हमर आलेख (सपय-साल, सितम्बर (अक्टूबर, २०९९)मे पढल जा सकैछ।

एहिसँ ई लगैत अछि एखन बहुत काज बाँकी अछि। से प्राचिन साहित्यमे मात्रे नहि आधुनिक साहित्यमे सेहो अध्ययन अनुशीलन करब जरुरी अछि।

नेपालमे राणाशाहीमे लिखब पढब दुरुह भए गेल रहैक। एक सए वर्षक ई अवधि सरिपहुँ कारी दिनक रुपमे देखल जा सकैछ। तकरा बाद २००६ सालक लोकतंत्रवादी सभक आन्दोलन राणाशाहीक विरुद्ध भेलैक आ तखन प्रजातन्त्रक स्थापना भेल। लोक बाजए भूकए लागल। मदा पढब लिखब एखनो दूर छल। तकर परिणाम ई भेल जे मैथिलीक शब्दकेँ पढबाक अवसर २०१४ सालक बादे अर्थात् सात आठ वर्षक बादे भेटि सकलैक जखन त्रैमाषिक पत्रिका नवजागरणक शुरुआत भेल। तैयो अवस्था ई भेलैक जे इहो पत्रिका एक अँकसँ आगाँ चलि नहि सकल आ तखन आर किछु वर्षक पतिक्षा मैथिली पाठककेँ करए पड़लैक।

नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास लिखनिहार प्रो. प्रफुल्ल कमार सिंह मौन २००६ सातकेँ नेपालक नव युगक प्रारम्भ संगहि आधुनिक मैथिली साहित्य

लेखनक बात मानैत छथि (नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, साझा प्रकाशन, पल चौक, काठमाण्डू, २०११ ई.) । पंक्ति लेखक किछु आलेखमे १९५० ई. (२००६ साल)के नयारम्भ मानने छथि । ई क्रम पं. जीवनाथ झाक नेपाल प्रवेश (साँच बात तँ ई छल, ओ पूर्बहुँमे सपरिवार नेपाल प्रवासमे रहि चुकल रहथि- ले.) कैं ध्यानमे राखि लिखल जाइत रहल अछि । आब गहन अध्ययन करी तँ १९६० ई.क वादे नेपालक रचनाकार लोकनि सक्रिय भेलाह आ ई श्रेय डा. धीरेन्द्रकैं जाइत छनि । मिथिला मिहिर, वैदेही सन पत्र- पत्रिकामे सठिक दशकमे नेपालीय साहित्यक विभिन्न विधा छप लागल छलै ।

एहि तरहें १९६० ई. क वादे नेपालक मैथिली साहित्य आधुनिताक आवरणमे देखि पड़ैत अछि । जतए ब्रजकिशोर ठाकुर, रेवती रमणलाल, राजेन्द्र विमल, राजेन्द्र शिकोर, डा. हरिचन्द्र, सन्दर झा शास्त्री आ तकरा सँग राम भरोस कापड़ि भ्रमर, अयोध्यानाथ चौधरी, रा.ना. सुधाकर, रामभद्र, उपाध्याय भूषण, भुवनेश्वर पाथेय अबैत छथि । विविध आयाम लएकैं ।

आधुनिक साहित्यमे नारी विमर्श

आब जखन नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्यमे नारी विमर्शक चर्च करबाक जिम्मेवारीक बात अछि तँ ई कएले जाइत, मदा एतेक विस्तृत आयाम बला विषय निर्धारित करैत काल प्रकाशन पर उचित ध्यान देल जएबाक चाहैत छलैक । एखन एकसँ एक विभिन्न विधाक पुस्तक नेपालमे छपि चकल अछि ई कथा, कविता, निबन्ध, उपन्यास, नाटक वेसी अछि । एहि सभमे कोनो ने कोनो रुपमे नारी पात्रक उपस्थिति भेल अछि आ विभिन्न रुप रंगमे ।

एहि लघु आलेखमे उभरि कए आएल किछ चरित्र आ नेपालक आधुनिक साहित्यमे नारी प्रतिक दृष्टिकोण आ अवस्था सेहो आकलन करब जरुरी अछि ।

आन मैथिली परिवार जकाँ नेपालोक मैथिली परिवारमे नारी पुरुष द्वारा नियंत्रित रहलीह अछि । शिक्षाक बढैत डेगसँ एहिमे किंचित फरक होएब शुरु भए गेलैक अछि, तखन एहन नारीक विमर्श अगिला दिनमे होएत से विवास कएल जा सकैछ । एखन धरिक साहित्यमे नारीक ओ कोनो रुप जे मोनकैं राजकमलक ललका पागक वीरु जकाँ झकझोडि दैत हो, नहि देखि पडैछ । ई परुषवादी मानसिकता कारणें भेल अछि । पुरुषवादी अहं त दासी, भोग्या रुपमे नारीक आकलन कएल जाइत रहल अछि । एहन परिस्थितिमे घोघटोक तरसँ अपन काजक हेतु बाहर अएबाक साहस किछ नारी चरित्र करैत अछि, मदा ओकर विद्रोहक स्वर एतेक मन्यर छैक जे कथाकार, कवि किवा उपन्यासकारक कान धरि आकि कलमधरि नहि पहुँचि पबैत अछि ।

नेपालक मैथिली कथा सभमे जँ कोनो विद्रोही नारीक चरित्र आएल अछि तँ ओ बेसी विजातीय अछि अर्थात मैथिलानी नहि । डा. धीरेन्द्रक हिचुकैत बहैत सेतीक नायिका पोखरा विमान स्थल पर लाहुरे (बाहर पलटनमे कमाए गेल पतिक लेल प्रयोग होइत शब्द) पतिक प्रतिक्षा करैत करैत जखन टुटैत अछि तँ गरामे पतिक देल सौभाग्यक चिन्ह पोतेकेँ हाथसँ मचोड़ि तोड़ि क फेकि दैछ आ एकटा शेरचन होटलक मालिकक सँगे नवजीवन शुरु करबाले चलि पड़ैछ । ई संकल्प शक्ति मैथिली महिलाक नहि भए सकैछ । ओ पोखराक थकाली परिवारक रहैछ एखन छिटफुट रुपमे एकटा एहन महिलाक चित्र आबए जरुर लागल अछि, जकर पति कमाए लेल विदेश (अरब देश दोहा, कतार, मलेशिया आदि) चलि जाइछ आ ओ तीन चारि वर्ष धरि नहि आबि पबैछ तँ पत्नी आनक सँगे लसकि मात्रे नहि जाइछ, घर परिवार छोड़ि ओकरा सँगे भागियो जाइछ । श्याम सुन्दर शशिक कथामे एहन प्रसंग आएल अछि ।

भुवनेश्वर पाथेयक कथा फुटल चूडी कनैत सिथक नायिका उजेली अपन पतिक प्रताड़नाकेँ सहैत ओकरा सुधारवाक हेतु, अपन बाल बच्चाके उचित संरक्षण करबाक हेतु सशक्त भूमिकामे देखि पड़ैछ, मुदा ओ मैथिलानी नहि, पहाड़नी चरित्र अछि । पाथेय अपन कथा जीवित छायामे एकटा वेश्याक दारुण कथा कहने छथि । एहिना राम भरोस कापडि भ्रमरक कथा हुगली उपर बहैत गंगामे एकटा वेश्याक चित्र ठाढ कएने छथि जे एकटा ग्राहकक उत्तम विचारसँ एतेक प्रभावित होइछ जाहिसँ अपन जीवनकेँ नव ढंगसँ आगा लए जएबाक सपना देखए लगैछ । इहो चरित्र नेपालक ओही पहड़नीयाक अछि जे कलकत्ताक सोनागाछीमे अपन भविष्य तकैत मरैत जीवैत रहैछ । भ्रमरक प्रेम आ नारी परक अधिकांश कथामे नारीक चित्र विभिन्न रुपमे आएल अछि जाहिमे रेखाक चित्र बेसी चर्चित भेलै आ ओ ने मैथिलानी आ ने पहाड़ी अछि पूर्ण रुपसँ । माने माए बापक फेरी छैक । पांक, भगजोगनी, छाउर एहने सन कथा अछि । डा. रानन्द झा रमण भ्रमरक कथा साहित्यमे नारीक तीन रुप देखलनि अछि (भजारल प्र.: अखियासल प्रकाशन, २००५, ई)

एक रुप : अपन सुख सुविधा आ त्वचा संवेदना लेल आरि धूर, बान्हक छेक नहि मानैत अछि । एहनमे रेखा (अमरलती), रेखा (भगजोगनी), रेखा (पांक), युवती (एकटा कारी साँझ), चलितराक जीवलाहि पत्नि (तोरा सँगे जएबौ रे कुजबा) आदि आदि । गीता (टीस), माटिक दरद, इजोरिया रातुक सपनाक नारी चरित्र । ओना समष्टिमे रमणजी भ्रमरक कथाकेँ निर्दयतापूर्वक विश्लेषण करैत अपन ताही निबन्धमे नारी जीवन पर केन्द्रीत आ नारीक देहक चारुकात चकभाउर दैत कहि अपन विचार व्यक्त कएने छथि ।

नारीक प्रताड़ित स्वरुपक एकटा मार्मिक चित्र ठाढ कएने छथि राजेन्द्र प्र. विमल अपन कथा शुन्य आकाशे, जखन अपन पत्नीक बारेमे पतिक ई पंक्ति, खबरदार, कोइ इधर बढा तो, हमारा जोरु है, हम फांसी चढा देगा, किसी को मतलब ? बालुक भीत कथामे नेनपनक प्रेम सम्बन्धक कथा कहने छथि तँ 'कोकशास्त्र'मे नारीक दूटा रुप देखार होइछ । एकमे सन्देहक गहिंर खाधि एतेक बढ़ैत अछि जे पत्नीक मृत्युक भए जाइछ तँ दोसरमे अपन पतिक प्रताड़नासँ तंग भेलि पत्नी पति पर हाथ उठा लैछ। ओना हिनक कएक गोट कथामे नायिकाकेँ मृत्यु वरण करा अस्वभाविक संवेदना जगएबाक प्रयास करैत बूझि पड़ैछ। दादा, जीहादि, एहने सन कथा अछि।

अयोध्यानाथ चौधरीक कथा संग्रह 'एकटा हेराएल सम्बोधन' मे लगभग सभ कथा नारी केन्द्रित अछि । मुदा एहन चरित्रक अभाव अछि जे समाजमे स्मरणीय रहि सकए । चलताउ पारिवारिक जीवन-शैलीमे उपर नीचाँ होइत रहैछ, जकर स्वाभाविक चित्र कथा सभमे आएल अछि । हिनक 'राति आ अजन्ताक ओ मूर्ति', 'थरथराइत किरण लहरि पर', 'अशेष प्रश्न', 'सिहकी आ वर्फ' आदि कथा एहने चरित्रसँ भरल अछि । अयोध्याजीक कथा' एकटा हेरायल सम्बोधन' मे विधबाक व्यथा-कथा अछि । मुदा ओ ओकरा आगाँ बढ़बाक कोनो बाट देखा नहि सकलाह अछि। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क चर्चित नाटक 'एकटा आओर बसन्त'मे सेहो विधवाक चरित्र आएल अछि आ से समधानल अछि । मुदा एत्तए मात्र चरित्रक व्यथा मात्र नहि ओहिसँ उबरबाक हेतु पुनर्विवाहक संयोग सेहो जोड़ल गेल अछि जे चरित्रक दृढ़ इच्छा शक्ति आ सामाजिक विद्रुपताक विरुद्ध सन्देश सेहो दैछ।

रमेश रंजनक 'फुलबा हरण' नारी मनोदशाक सुन्दर चित्र उपस्थापित करैत अछि। दमित यौन पिपासाक आन्तरिक उहापोह हुनक कथाक नारी चरित्रक विशेषता देखि पड़ैछ।

राजेन्द्र विमलक 'सीता' गीति नाटिकामे सीताक चरित्रक माध्यमे नारीक वर्तमान स्वरुपक दिग्दर्शन अछि तँ महिला लेखिका लोकनि सरस्वती चौधरी रचना, वितेजा चौधरी, मीना ठाकुर, पुनम झा, साधना झा, आभा सेतु सिंह आदि अपन-अपन रचनामे नारी अस्मिता, सशक्तिकरणक हेतु साहसिक डेग उठएबाक संकल्प लैत चित्र स्थापित कएने छथि । 'लक्ष्मण रेखाक ओहि पार' रचनामे 'रचना' जी नारीके घर-आँगन सँ बाहर नीकालि समाजमे माथ ठाढ़ कए अपन अधिकारक हेतु आगाँ बढ़बाक प्रबल ओकालत करैत छथि।

'बिनु माइक बेटी' श्यामा झाक पहिल उपन्यास अछि, जाहिमे शशिकलाक माध्यमेँ मैथिलानीक जीवन संघर्ष आ नोरमे डुबल जीवनक चित्र देखौने छथि । डा. धीरेन्द्रक 'ठुमुकि बहु कमला'क बेटी-कटीर मिसर सन अजोध

राक्षसक अत्याचारक विरुद्ध ठाढ भए जाइछ । एतबे नहि निसबद्ध रातिमे ओकर घरमे पैसल कोनो चोरकेँ अपन बापक देल दविया (खुकुरी) सँ छकरि दैत छैक ।

रा.ना. सुधाकर नारी विमर्शक अप्रतिम कथाकार छथि । नारीक अन्तरद्वन्दकेँ सूक्ष्मतापूर्वक अंकित करबामे बेजोड़ छथि । प्रेम आ देह कथाक चारु भर हिनको चरित्र घुमैत रहैत छन्हि । 'रामपरी', 'नुक्काचोरी' बहिनोइक सँग सम्बन्धक चित्रण, 'चोलिया मे चोर बसे गोरी' निम्न परिवारक अगाध प्रेमकथा, 'चान अशोथकित अछि' दैहिक भूखक आगां घरक ओगरबाहक सँग रमि जाइछ सन-सन कथा प्रसंग सभ अछि ।

अन्तमे

आधुनिक नेपालक मैथिली साहित्यक विस्तृत फलकमे नारी चरित्रक विमर्श करैत काल कएक गोट अवस्था पर ध्यान देबय पड़त । जाहिमे सामाजिक संरचनाक सभसँ बेसी महत्वपूर्ण हाथ होइछ । हमर नारी समाज कतय अछि, केहन अछि आ कतेक रचनाशील व्यक्तित्वकेँ प्रभावित करैत आएल अछि । आत्मसुखक हेतु पात्रक रुपमे ठाढ़ कए देब एक बात, जीवनक यथार्थकेँ हृदयंगम करैत एकटा महत्वपूर्ण परिवर्तनकामी चरित्रक रुपमे पाबि ओकर स्वरुप चिन्तन करब दोसर बात । एकरा लेल किछु आर प्रतीक्षा करए पड़त । नारी हृदयक सभ पीड़ा जखन बहरयबाक साहस करत, ओकर व्यथा-कथा खूजि क यथार्थक सहरजमिन पर उतरत, अपन मोनक गुप्त भाव रहस्यकेँ देखार करबाक साहस जुटाओल तँ तखने ओकर मुक्तिक इतिहास रचल जाएत आ एकसँ एक चरित्र उभरि ठाढ़ होएत । लक्ष्मण रेखा टपबाक क्रममे किछु डेग आगाँ बढ़ल अछि, भविष्य आशामय अछि । अबैबला समयमे साहित्यमे नारी विमर्शक एकसँ एक छटा देखबामे आओत । आ तखन हमरा नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्यमे नारी विमर्शक चिंतन एतेक अबूह किन्नहु नहि बुझाएत ।



जनकपुर तैयो जीवंत अछि ...!

(आईसं लगभग चारि दशक बर्ष पूर्व माटिपानि मासिकक प्रवेशांकक हेतु सम्पादक भाइ उदयचन्द्र झा विनोदक आग्रहे लिखल गेल ई रचना आजुक दिनमे एकटा जीवंत दस्तावेज बनि गेल अछि जनकपुर मादे । चारि दशकमे कतेक बदलल अछि जनकपुर ! एत्त रहनिहारक संख्या झले आश्चर्यजनकरुपसं बडल हो विकासक गति कोन रुप लेने अछि । आत्मविश्लेषणक एकटा अवसर प्रदान करैत अछि ई आलेख । मुदा से हो तखन ने-ले)

जनकपुरमे किछु नव नहि-सभ पुरने । जँ किछुओ विशेष बात होइतैक तखन ने ककरो कहल जइतैक ।
वएह पुरनके नौलखा मन्दिरकेँ नीप पोति कऽ चमका देल गेलैक अछि । मड़वाकेँ एकटा मन्दिरक आकार दऽ देल गेल छैक । गंगासागरक कातपर शिवमन्दिरक निर्माण भेलैक अछि । मूल सड़कपर फेर सँ पीच चढाओल गेलैक अछि आ ओकर दूनु कातमे फुटपाथक निर्माण कएल जा रहलैक अछि । बदनाम खुकुरी चौककेँ आब भानु चौक कहल जा रहलैक अछि आ ओहि चौकपर भानु स्मारकक स्तुप सन निर्माण कएल गेलै अछि । जतऽ हालेमे नेपालक आदिकवि भानुभक्त आचार्यक मुर्त्तिक स्थापना कएल गेल अछि । जँ पचास हजार जनसंख्याक एहि शहरमे ऐ निर्माणकेँ नव कहि सकी तँ हमरा किछु ने कहबाक अछि ।
नहि तँ विजुली वत्ती एखनो झुकझुकाइते रहैत अछि । साइकिलल सँ कमजोर चलनिहार रेलमे कोनो परिवर्तन नहि भऽ सकलैक अछि । दारु आ मासुक दोकानमे लगतार वृद्धि भेलैक अछि । भेकेन्सी सभक लिष्टमे अपन नाम दर्ज करएबा लेल एकपर एकसम एखनो धरना देने रहैत अछि । लेबरमे काज दीअबाक घूस बढिये रहल छैक - तीन चारि हजार धरि भऽ गेलैक अछि । शहर भरिमे एकमात्र कओलेजक शिक्षक लोकनि पढौनी सँ बेसी गोलैसी करबामे पाछाँ नहि हटलाह अछि । एत्तऽ मैथिलीमे एम ए धरिक पढाई होइत छैक तँ लगभग आधा दर्जन मैथिलीक प्राध्यापकसभ सहो निवास करैत छथि ।
मुदा धन्य कही डाक्टर साहेबकेँ । जे मैथिली प्राध्यापककेँ फाँसीपर लटका देबाक बात कहि चुकल छथि । एक सँ एक कथाबाचककेँ उठा अनने छथि जे क्लासमे पढबैत कम अछि, पढैत बेसी अछि । कतेक जानकार छात्र तँ इहो कहैत सुनल गेलाह जे जँ एम.ए.क पढौनी तैँ ई लोकनि किछु पढि पाबि रहल छथि, नहि तँ.... ।

दोकानकारक कैंची भोथ नहि भेलैक अछि। चोन्हरा गेलैक अछि तँ लोकक आँखि, जे मिलाबटिक अछैतो महग दाममे खाद्यान्न किनल करैत अछि।
जनकपुर क्षेत्रमे एहि बेर रौदी छैक। राहतिक लेल चाउर, गहूम आ आँटा विदेश स आयल रहैक। से बँटयलैक कम, बिकयलैक बेसी। पेटमे दौगैत बिलाइ एखनो डंड कइय रहल छैक। कृषि सहुलियतक नामपर जबरदस्ती धानक बीया आ मल किसानकेँ कर्जामे लीही पड़ैत छैक। राजनीतिक नामपर गाम गाम मारि झगड़ामे कोनो कमी नहि।
पविर्तन ? एक्कोरती नहि। यथावत। क्रिया प्रतिक्रिया बदलैत रहैत अछि। जोगार आ खयबाक प्रक्रियामे सुधार किवां परिष्कार होइत गेलैक अछि। जकरा लोक कहियो काल रुचि बदलबा लय परिवर्तन कहि देल करैत अछि।
ई तँ भेल एक पक्ष। एकरा अतिरिक्त एहि नगरीक परिसरमे किछु साहित्यकार नामक जीव सभ सेहो बास करैत छथि- खाँटी मैथिलीक सेहो। जैँ ई जीव सभ छथि तैँ किछु रमन चमनक कल्पना तँ कैये सकैत छी , मुदा एतेक जल्दी नहि करु- निराशा हाथ लागत। कहियो रहथि ...।
सन १९६० ई। एकटा उत्साही युवकक नेपाल प्रवेश। साहित्यकेँ धर्म मानि प्रचार प्रसार कएल। किछु उत्साही आ प्रतिभावान युवा आगाँ आयल - रामभद्र, राजेन्द्र विमल, उपाध्याय भूषण, राजेन्द्र किशोर, ब्रजकिशोर ठाकुर, शिवेन्द्रलाल, रेवती रमणलाल, भुवनेश्वर पाथेय, आ एहनेसभ किछु आर। जहिआ प्रकाशनक ठोस आधार नहि रहै, तहिया रहथि ई सभ। एक सँ एक माँजल लोक। आधार भेटलनि तँ भोतिया गेलाह सभ केओ, केओ नोटस लिखबामे, केओ कम्प्यूटरपर हिसाब जोड़बामे, केओ विद्यार्थीसभकेँ पढौनी करबामे। केओ तेल नून बेचबामे। मैथिलीक एकटा जेनुइन पीढी गड़बड़ा गेलैक।
फेर एम्हर लोक जगलैक अछि- मैथिली साहित्य परिषदक संग, अर्चनाक संग आ प्रायः सभ सँ बेसी गामघरक संग।
नेपालक मैथिली पत्र इतिहासक बस्तु भऽ गेल। साहित्यकार सेहो ताहीमे अपन स्थान सुरक्षित करा लेलनि, तखन कहु, एकाध गोटे कतेक धरि ससारि सकैत अछि ई बोझ।
कचोट तँ हमरो सभकेँ होइत अछि। जे एक सँ एक कथा लिखनिहार ई सभ लोकनि सोझे चुप्पी धऽ लेलनि, जे मैथिली संसारक प्रति पैघ अन्याय भेलैक अछि।
तकर ई माने नहि जे ठीके एहि ठामक धरती साहित्य संस्कृति सँ मोह छोड़ा लेने अछि। अर्चना आ गामघर पक्ति लेखकक एकटा बुड़िपना, (नहि लोक तँ साहस कहैत अछि औ!) बला प्रयास रहलैक अछि जे मैथिल चरित्रक बटखरा

पर बरोबरि तौलाइत डंड-बैसकी करैत कहुना नियमित निकलि रहलैक अछि । आ एहु दुआरे रेवती रमण लाल, राजेन्द्र विमल, पाथेय, अयोध्याय नाथ चौधरी, राजेन्द्र किशोर, उगि जाइत छथि । रेवती जी बरोबरि सहयोग बनौने रहैत छथि - कथा निवंधक संग । धन्य कही गामघरकेँ जे एहनो जुआएल साहित्यकार अपन बीयरि छोड़ि गर्दनि बहार कएलनि अछि- मथुरानन्द चौधरी माथुर, आ डा. हरिश्चन्द्र । आबि रहल अछि हिनका सभक रचनासभ । एकर अतिरिक्त झापा, राजविराज (सप्तरी), सिरहा, धनुषा, महोत्तरी आदिक दर्जनो साहित्य प्रेमी एकबेर फेर देहमे झुरझुरी महशुस कएलनि अछि आ आब जल्दीए हुनका सभक रचना गामघर प्रकाशित करैत रहत । भाई प्रदीप विहारी हिलकोरक संग दहाइत दहाइत संप्रति झापामे किनार लागल छथि । अपन छापब जतेक सहज थिक- आनक छापब ततेक कठिन होइछ । एहि बेरक भेंटमे निसास छोड़ैत रहथि । तथापि दोसर अंकक तैयारीमे छथि । तैँ काज तँ होइत छैक- ई कहबामे संकोच नहि ।
संकोच तँ इहो कहबामे नहि अछि जे समग्र मैथिली संसारके जोड़एबा काल नेपाल लगा तीन कोटि मैथिली भाषीकेँ जोड़ा संख्या पुरयबामे आगाँ रहनिहार महन्थसभ एतुक्का साहित्यकारसभकेँ बरोबरि होत्साहित करैत रहलाह अछि । कोनो तरहक उपलब्ध सुविधा सँ बंचित करैत रहला अछि - तथापि एतऽ निःस्वार्थ भावे खुब रचना भेल अछि- साहित्य सेवा भेल अछि । औ, दूआखर शुभकामनो सँ गेलहुँ, हमसभ... ।
एहि साहित्य सेवामे महेन्द्र मलंगियाजी जनकपुरक लोकक हेतु संतोषक व्यक्ति किंवा साहित्यकार भेल करैत छथि । अपना बीचक नाटककार जखन साहित्य अकादमीक लिस्टपर चढैत अछि तखन, आकि विद्यापति स्मारक समिति राँचीक पुरस्कारक सूचिमे अभरैत छथि तखन, एतुक्का साहित्य प्रेमी आनन्दीत होइत अछि, नै हम सभ -भाई मलंगीये सही । जनकपुरक साहित्यक परिसरक उपलब्धि छथि- महेन्द्र जी ।
प्रकाशन एखन ससरि रहल अछि- डा. धीरेन्द्रक ठुमुकि बहु कमला, हैंगरमे टांगल कोट आदि पुस्तकक अतिरिक्त कौभर चढयबा लय मुँह तकैत किछु आर महत्वपूर्ण संग्रह छनि । महेन्द्र मलंगीयाक एकांकी संग्रह छपि कऽ बजारमे आबि गेल अछि । एकटा सहयोगी संग्रहक ओरिआओन चलि रहल अछि । आ मोने मोन बहुतो गोटे पुस्तकक भूमिका लिखि तिथिक प्रतिक्षा कऽ रहल छथि ।
प्रकाशन होइक तँ कोना ! पत्रिका बेचि पाइ नहि देब मैथिली पत्र बेचनिहारक काज होइछ । ग्राहक बनि चन्दा जम्मा नहि करब मैथिली पाठकक काज होइछ । आ कनेको त्रुटि भेल तँ चौबटियापर गारि पढि गहिकी हरकेनाइ सेहो

मैथिलक काज भेल करैत अछि। एहन अवस्थामे साहित्यक ठोस चरित्र ठाढ करब केहन मोश्किल भऽ सकैछ।

तथापि जनकपुर गतिशिल अछि। जोगेन्द्रजी कहियो काल अपन नाट्य परिषदमे मैथिली नाटक किवां गीत दऽ एकरा गतिकेँ आर बढाओल करैत छथि। कहियो काल साहित्य चर्चा लय किछु गोटे बैसि जीवित होएबाक बोध कऽ लैत छथि। माने किछुओ होइक-जनकपुर जीवंत अछि। लोक साफ सूतल तँ नहि अछि।

(माटिपानि,अगस्त १९८३, प्रवेशांक)

